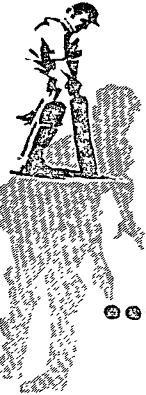
...और खेल अधूरा रह गया



...और खेल

ज्ञानस्वरूप भटनागर

६२५
उपन्यास

अधूरा रह गया

प्रकाशक : शब्दकार
२२०३, गली डकौतान,
तुर्कमान गेट, दिल्ली-६
मूल्य : दस रुपये
प्रथम संस्करण : सितम्बर, १९७२
आवरण : तूलिका
मुद्रक : विकास आर्ट प्रिंटर्स,
शाहदरा, दिल्ली-३२
आवरण मुद्रक : परमहंस प्रेस, दिल्ली
पुस्तक-बंध : पुराना बुक बाइंडिंग हाउस, दिल्ली

प्रकाशकीय

हिन्दी में प्रथम क्रीड़ा-उपन्यास (Sport-novel) के रूप मे '''''और खेल अधूरा रह गया' प्रस्तुत करते हुए हम गौरवान्वित हैं। न केवल हिन्दी, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी यदि यह अपने ढग का पहला उपन्यास हो तो कोई आश्चर्य न होगा।

क्रिकेट टैस्ट-मैच की पृष्ठभूमि पर खेल में जीवन के विविध मार्मिक पहलुओं की बारीकियाँ और जीवन मे खेल के घात-प्रतिघात का इतना सजीव, सटीक और प्रभावशाली चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है।

यह उपन्यास जहाँ उपन्यास-प्रेमियों के लिए एक अछूता अनुभव है, वहाँ खेल-प्रेमियों, विशेषतः क्रिकेट के शौकीनों के लिए, एक अद्भुत पठनीयता प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से यह उपन्यासकार की विशिष्ट उपलब्धि है।

देश के निरन्तर गिरते हुए खेल के स्तर को देखते हुए यह उपन्यास और भी महत्वशील है। क्रिकेट के माध्यम से इस उपन्यास ने पूरे देश की मेल-व्यवस्था को छुआ है। निहित स्वार्थों ने हमारे क्रीड़ा-जगत में जो दुर्व्यवस्था पैदा की है, उससे विश्व-क्रीडा-क्षेत्र में हमारा कहीं, कोई स्थान नहीं रह गया है।

यह उपन्यास वास्तव मे प्रत्येक क्रीडा-प्रेमी के लिए खुली चुनौती है और खेल-कूद के क्षेत्र मे निहित स्वार्थों के विरुद्ध जेहाद भी।

हम इस उपन्यास को अपने विशिष्ट प्रकाशन के रूप में प्रस्तुत करने का गौरव प्राप्त कर रहे हैं। *

पहचान पुरानी और नयी

कनकपुर की विजय वाटिका का क्रीड़ांगन गगनभेदी विजयोल्लास के नारों, चीखों, घंटे, सीटियों और दूसरी तरह-तरह की आवाजों से गूँज उठा।

अंसारी ने जबरदस्त चौका लगाकर ह्वाइट की गेंद को सीमा तक पहुँचा दिया था।

सभी उमर के लड़के, लड़कियाँ, स्त्रियाँ और पुरुष, अपना आपा भूलकर उछल-कूद रहे थे! चीख और चिल्ला रहे थे! घंटे और घड़ियाल भी बजा रहे थे!

इस उल्लसित चीख-पुकार के वातावरण से चकित भुवन की दृष्टि एकाएक अपने आगे की सीटों पर उछलने-कूदने वाले स्त्रियों और पुरुषों में सबसे अधिक उत्साह प्रदर्शित करने वाली एक जानी-पहचानी-सी महिला पर पड़ी जो काली रेशमी जाली पर जरी के काम की साड़ी पहने हुए थी। वह अपने पास बैठे हुए एक मोटे-से संपन्न दिखायी देने वाले व्यक्ति से जोर-जोर से बातें कर रही थी और मारे खुशी के अपने अगल-बगल बैठे दर्शकों पर बार-बार गिर-गिर पड़ती थी।

कुछ गौर से देखने पर भुवन ने उसे पहचान लिया।

यह मिसेज कमलिनी कौशल थी। भुवन की मिसेज कौशल से मुलाकात प्रायः पंद्रह वर्ष पहले हुई थी। कमलिनी उस समय नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम थी और अपने घनिष्ठ जानकार क्षेत्रों में कमर के नाम से जानी जाती थी। भुवन ने नवाबजादी कमर से मुलाकात होने से

६ : और खेल अधूरा रह गया

पहले उसके पास अक्सर आने-जाने वाले अपने दोस्त सत्येन्द्र कौशल से सुना था कि कमर की सारी खूबसूरती उसकी कनपटी के पार तक पहुंचने वाली बड़ी-बड़ी आंखों में है।

कौशल नवाबजादी कमर के बारे में दूसरों से कोई बात नहीं करता था पर जब कभी वह भुवन के पास बैठता तो घूम-फिरकर उसी का जिक्र आ जाता था।

लखनऊ की पुरानी नवाबी जमाने की कोठियों के मोहल्ले में कौशल का डेरा था। जिस कोठी में कौशल रहता था उसके दोनों ओर सड़कें थीं। एक तरफ सड़क के बाद बड़ा-सा फाटक था और उसके बाद लंबा-चौड़ा वह सहन था जहां आज़ादी से पहले विशालगढ़ के राजा कृष्णप्रताप सिंह के हाथी बंधते थे।

राजा साहब के पोतों के जमाने में हाथी गायब हो गये थे और कोठी को भी कोई पूछने वाला नहीं रह गया था। कौशल उस कोठी में ऊपर के दो कमरों में रहता था, बाकी आठ कमरे बंद रहते थे। फाटक की तरफ खूब चलने वाली सड़क के बजाय कौशल ने पीछे की तरफ से अपना आना-जाना कर रखा था। इसी में उसे सहूलियत थी। नवाबजादी कमर भी अक्सर पर्दे बंधे तांगे या फिर एक पुरानी-सी मोटर से कोठी के पिछवाड़े ही बुरका पहने उतरती थी।

पहली बार जब भुवन की नवाबजादी कमर से अचानक ही भेंट हुई तब उसने बगैर नकाब उठाये ही भुवन से बात की थी।

कौशल ने भुवन का परिचय देते हुए कहा था, "यह मेरे पुराने दोस्त भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा हैं। इन्होंने यहां दवाइयों की संसार प्रसिद्ध फर्म कोहेन एंड कंपनी के क्षेत्रीय व्यवस्थापक की हैसियत में कुछ दिन पहले ही चार्ज लिया है। मेरे साथ ही ठहरे हैं। मुझे इनका बड़ा सहारा है।"

नवाबजादी कमर के चेहरे का नकाब हिल उठा था। उसके पास बैठी उसकी बड़ी बहन बेगम जेबुन्निसा ने भी अपनी हमशीरा के साथ ही फरमाया था, "आपका जिक्रे-खैर तो कौशल साहब अक्सर करते रहते हैं, आज बड़ी मसर्रत हुई कि दीदार भी हो गया।"

कौशल ने ठहाका लगाया और कहा, "आपको तो हो गया पर इन्हें तो नहीं हुआ।"

उत्तर में हल्के-हल्के बजने वाले सरोद के उर्ध्वगामी स्वरों और खिंची हुई सितार की भीनी-भीनी झंकारों की तरह दो सम्मिलित नारी कंठों की युगल हँसी ने भुवन को झकझोर दिया था। ज़ेबुन्निसा बेगम ने फरमाया था, "इशाल्लाह, यह भी हो जायेगा।"

नवाबजादी कमर ने कहा, "अरे आपसे तो अरसे से कोई पर्दा नही है। कौशल साहब तो हमेशा ही आपकी बात किया करते है। मुझे यह भी मालूम है कि यह अपनी सभी जा, बेजा बाते भी आपसे कहते रहते है।"

भुवन से कुछ कहते नही बना। वह सकुचाया हुआ चुप बैठा रहा। किशोरावस्था से ही उसे धीरे-धीरे अपनी इस कमी का एहसास होने लगा था कि बातों ही बातो में लोग कैसे-कैसे आगे बढ जाते हैं और किस तरह से वह बातों-ही-बातो में एक व्यवधान के बाद दूसरा व्यवधान पार करते हुए अपने लक्ष्य के पास तक पहुँच जाते हैं। जिंदगी का वर्षों लंबा रास्ता किस तरह बातो-ही-बातों मे कभी-कभी कुछ घंटों में ही तय हो जाता है। पर भुवन को अक्सर, यह सब तभी मालूम पड़ता था जब उसके दूसरे साथी कुछ कर गुजरते थे और बड़ी-से-बडी सफलता पा जाते थे। बातों के इस महान माध्यम का कुछ विशेष ज्ञान न होने के कारण भुवन को कभी-कभी यह भी पता नही चलता था कि कब किसने उसके सामने नवजीवन का प्रवेश द्वार खोला? कब वह उसके अनजाने ही बंद हो गया और उसने एक सुअवसर खो दिया।

बीते दिनों के स्वर्णावसरों की यादों पर जब तब अफ़सोस करते रहना उसकी आदत हो गयी थी।

व्यतीत की इस मानसिक जुगाली में वह वर्तमान को ही नही, भविष्य को भी खो देता था। जीवन में दिशाहीनता के कारण ही महान आर्थिक क्षति उठाकर तथा बीस वर्षों तक देश के बड़े-बड़े नगरों में रहने के बाद, वह अपनी जन्म-भूमि कनकपुर मे जीवन को किसी ऐसे रास्ते पर ले जाने के लिए लौट आया था जिस पर उसे कोई ऐसा शांत भवन मिले जहाँ वह अपनी इच्छानुसार ठहर सके।

वह जीवन के तीव्र बहाव से घबरा गया था और उसे ठहराव के प्रति मोह हो गया था।

लक्ष्य-हीनता के कारण एक द्वार से दूसरे द्वार तक भटकते हुए भुवन अपने उस समय के अड़तीस वर्षों के जीवन में कुछ भी संजो नहीं पाया था। उसमें उच्छ्वास था, आगे बढ़ने का उत्साह भी था और यह विश्वास भी सदा बना रहता था कि अंततः वह सही दिशा भी खोज लेगा, पर उसे यह पता नहीं था कि वह किधर जा रहा है। उसे यह भी ज्ञात नहीं था कि उसके उच्छ्वास और उत्साह की दिशा क्या है और उसकी वास्तविक परिणति का क्या रूप होगा ?"

कौशल के पास ठहरने में उसका यही उद्देश्य था कि वह लखनऊ में कहीं जमकर रहने से पहले अपने मन में जीवन का कोई स्तर तथा अपने भविष्य के लिए कोई दिशा निर्धारित कर ले और फिर उन्हीं के अनुरूप अपने लिए घर तथा रहने के सामान का प्रबंध करे।

दो पर्दानशीन नवाबज़ादियों की इस तरह खुली बातों से भुवन एक ऐसी दुनिया में पहुंच गया जहाँ उसकी अब तक की सोची-समझी बातें सहसा अर्थहीन हो गयीं। उसके मन में आया कि वह कहे, "अगर पर्दा नहीं है तो नकाब उठाने में देर करने की क्या जरूरत है।" पर पहली ही मुलाकात में वह संकोचवश कुछ कह न सका और चुप रहा।

उस समय दोनों बहनों को जल्दी थी। उन्होंने कौशल को अलग ले जाकर दो-चार मिनट कुछ बातें कीं और भुवन को 'आदाब अर्ज़' करती हुई चली गयीं।

व्यतीत से वर्तमान तक

कमलिनी कौशल उर्फ नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम के जाहिरी रूप और उसकी हकीकत मे उतना ही फ़र्क था जितना उसकी काली साडी और उसमें लिपटे हुए उसके कुंदन जैसे शरीर मे था। कमलिनी की रेशमी काली जाली की जरी की साडी विजय वाटिका मे आये हुए शौकीन-मिज़ाज तमाशाइयों का ध्यान अपने ओर खीचे हुए थी और कमलिनी को अपनी साडी के असर का पूरा-पूरा एहसास था। हजारो ललचायी हुई नजरें उसके इकहरे जिस्म की हर अदा पर इस उम्मीद से जमी थी कि कब और कैसे उसकी किस 'सावधान' असावधानी से उसके शरीर का कौन-सा अग अनावृत होकर झलक जाये।

कमलिनी की उम्र अरसा हुए संकोच की उस सीमा को तय कर चुकी थी जिसकी आवृत निचाइयों मे गजब की ऊँचाइयाँ होती हैं और जिसकी बेपर्दा ऊँचाइयो तक दुनिया की नजरें कम-से-कम पहुँच पाती है।

रेशमी काली जरी की साड़ी के नीचे काली जाली पर बड़े-बड़े जरी के बूटो वाले एक बालिश्त से कम चौडे ब्लाउज के नीचे कमलिनी का पेट और पीठ दोनों ही खुले हुए थे। उन बूटों और जाली के अनगिनत छिद्रों तथा खुली गोरी पीठ पर पड़ी जरी की साडी के कारण उसके प्रत्येक अंग-संचालन के साथ ही दिन मे भी हज़ारो जुगनू एक साथ चमक उठते थे। कमलिनी बार-बार असारी को शाबाशी दे रही थी और उसके आगे, अगल-बगल और पीछे के दर्शक किसी अदृश्य शक्ति के जोर से उसके साथ खड़े होकर उसकी दी हुई शाबाशी में कभी-कभी

बिना समझे-बूझे योगदान दे रहे थे।

यह जोश-खरोश दर्शकों की दूर-दूर तक विस्तृत परतों तक फैल गया। विजय वाटिका में जमा हजारों की भीड़ को कमलिनी एक सारथी की तरह संचालित कर रही थी। उसकी आवाज़ पर उठने-बैठने वालों को देखकर ऐसा लगता था कि विजय वाटिका ने स्वयं अपने विस्तृत प्रांगण में सिमटे हुए उस विशाल जन-समुदाय के भारतीय खिलाड़ियों के क्रिकेट कौशल के प्रति उत्पन्न उत्साह के साथ एकरूप होकर अपने उस तूर्य समूह के आरोह और अवरोह के संचालन का भार कमलिनी को निश्चित होकर सौंप दिया है।

अंग्रेजों के समय विजय वाटिका में जनसाधारण का आवागमन नियंत्रित था। उस जमाने में विजय वाटिका एक नयी दुल्हन की तरह जन-संसर्ग से दूर विशेष रूप से सम्मानित रही। आजादी के बाद उसका विस्तृत प्रांगण औपचारिक रूप से साधारण नगर निवासियों के लिए भी खुल गया था। पर शीघ्र ही वह नगर सेठों का प्राधान्य प्राप्त एक ऐसी प्रबंध समिति के अधिकार में आ गयी थी जो विभिन्न नियंत्रणों के बहाने उसे जनसाधारण से दूर रखकर उसका एक उच्चस्तरीय रखैल की भाँति रख-रखाव करती थी और दूसरे-तीसरे वर्ष क्रिकेट टैस्ट मैच के अवसर पर उसकी रूप-सज्जा निखारकर उसके विभिन्न रूपायित अंगों को पाँच रुपये से साठ रुपये तक के दामों के अनुसार दर्शकों को पाँच रोज के लिए समर्पित कर देती थी।

पाँच रुपये वालों को उसके विशाल प्रांगण की सीढ़ियों पर बैठने मात्र का हक प्राप्त होता था। अधिक दाम देने वालों को क्रमानुसार गद्देदार कुर्सियाँ और सोफे तक मिलते थे। यह बात दूसरी है कि पाँच दिन के टैस्ट मैच में उसके विशाल प्रांगण में जाने वाले पचास हजार से भी अधिक तमाशाइयों में जहाँ हजारों विशिष्ट मुफ्तखोरे भी सादर निमंत्रित किये जाते थे, वहाँ सैकड़ों दूसरे अविशिष्ट मुफ्तखोरे भी प्रबंधकर्ताओं की आँख बचाकर जहाँ-तहाँ घुस जाते थे। प्रबंध समिति के प्रमुख कार्यकर्ता एक तरफ तो इन अविशिष्ट मुफ्तखोरों में से दो-चार निरीह क्रिस्म के क्रिकेट शौकीन बच्चों या किशोरवय लड़कों को पकड़-

कर वाह-वाही प्राप्त करते रहते थे और दूसरी ओर अपने कृपा-पात्रों को बेहिसाब बिना टिकट विभिन्न कक्षों के अन्दर पहुँचाते रहते थे।

सादर निमंत्रित मुफ्तखोरों में अधिकतर वे लोग थे जिनका दबदबा नगर सेठों तक को मानना पड़ता था, क्योंकि वह प्रदेश की राजधानी लखनऊ और नगर के ही कुछ केंद्रीय तथा प्रदेशीय दफ्तरों में ऊँचे पदाधिकारी होते थे। इस वर्ष नगरपालिका के कुछ सदस्य भी इन विशिष्ट मुफ्तखोरों की श्रेणी में शामिल कर लिये गए थे, क्योंकि नगर सेठों के परिवार के कुछ सदस्यों में नगरपालिका पर कब्जा करने की आकांक्षा जाग उठी थी और उनकी अभिलाषा-पूर्ति में निमंत्रित सदस्य-गण नगरपालिका के चुनाव के समय उपयोगी सिद्ध हो सकते थे। मुफ्तखोरों का यह जमघट कुछ पासों और कुछ मुफ्त वितरित टिकटों के जरिये जमा किया गया था। इन विशिष्ट निमंत्रित मुफ्तखोरों में से अधिकांश के लिए लंच और चाय का भी प्रबंध था।

इस वर्ष विजय वाटिका के टैस्ट मैच की यह खूबी थी कि वहाँ मैच भर के लिए बीयर की बिक्री का भी प्रबंध कर दिया गया था। लेकिन बीयर की यह दूकानें केवल उच्च वर्ग के लिए थी। टैस्ट मैच के प्रबंधकों ने इस बात का विशेष ध्यान रखा था कि यह दूकानें प्रथम श्रेणी और महिलाओं के कक्ष के बीच में रहें। इसी जगह निमंत्रित मुफ्तखोरों, विशिष्ट तमाशाइयों, क्रिकेट के खेल की विशेष जानकारी का दावा करने वाले क्रिकेट विशारदों, क्रिकेट के जानकार छुटभइयों और इतिहासकारों तथा क्रिकेट के तथाकथित विशेषज्ञों का जमघट रहता था।

इस मोड़ में कल के खेल की विशेष चर्चा थी। अपने अज्ञान के कारण ऐसी मंडलियों में भुवन अधिकतर चुपचाप ही खड़ा रहता था। कनकपुर के व्यापारियों और विशेषकर इस वर्ग के नवयुवकों के क्रिकेट के समकालीन या प्राचीन ऐतिहासिक ज्ञान से वह आश्चर्यचकित रह जाता था।

श्याम मनोहर कानोडिया उर्फ श्यामू भइया इस जमघट के अनिर्वाचित प्रमुख थे। बयालीस-वर्षीय, जूट के बहुत बड़े व्यापारी श्यामू भइया सन् उन्नीस सौ बावन में कनकपुर में प्रथम बार खेले जाने वाले

प्रेमियों और विशारदों की भीड़ पर आतंक छा गया।

सब यह सुनने के लिए आगे बढ़ आये कि अब श्यामू भइया क्या कहते हैं। पर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब श्यामू भइया कमलिनी को देखकर दब गये और बोले, "अरे मिसेज़ शाह आपसे कौन जीत सकता है। आपके सामने तो अच्छे-से-अच्छे क्रिकेट के पंडित पानी-पांड़े बनकर रह जाते हैं।"

मिसेज़ शाह के नाम से कमलिनी का नया संबोधन सुनकर भुवन ताज्जुब में पड़ गया। इसी समय कमलिनी ने जीते हुए खिलाड़ी की तरह चारों ओर अपनी गर्व भरी दृष्टि डाली।

भुवन को देखकर वह एकदम उसके पास चली आयी और स्नेह से उसके कंधे पर हाथ रखकर बोली, "अरे! भुवन भाई आप यहां कैसे ?"

भुवन ने देखा कि उससे कमलिनी के इस तरह खुले मैत्रीपूर्ण भाव से बात करने के कारण भीड़ का ध्यान उसी की ओर आकर्षित हो गया है।

श्यामू कानोडिया भी, जो अभी तक उसकी ओर कुछ विशेष ध्यान नहीं दे रहा था, बहुत प्रभावित होकर हक्का-बक्का-सा उसकी ओर देखने लगा। कमलिनी ने श्यामू भइया की ओर मुड़कर कहा, "श्यामू बाबू, आप इन्हें जानते हैं ? यह मिस्टर भुवनेश्वर प्रसाद सिनहा हैं। एक बार इन्हीं की वजह से मेरी जान बची थी। यह देश की दवाइयों की सबसे बड़ी कम्पनी के सेल्स मैनेजर हैं।"

कानोडिया के कुछ उत्तर देने के पहले ही कमलिनी ने कहा, "आइये, भुवन भाई एक कॉफी हो जाये इस मैच में कुछ धरा नहीं है। यह तो ड्रॉ ही होगा। अफसोस सिर्फ़ यही है कि बम्बई में तो कुछ खेल भी देखने को मिला था पर यहां तो बस कल से आंखें फोड़ रही हूँ कि कहीं कुछ खेल दिखाई दे जाये।"

कमलिनी की बातों में योगदान देते और उसके साथ कॉफी स्टाल की तरफ बढ़ते हुए श्यामू कानोडिया ने कहा, "सिनहा साहब को तो मैं वर्षों से जानता हूँ। यह तो अपने प्रदेश के माने हुए पत्रकार हैं।"

"पत्रकार और बरसों से ?" कमलिनी ने आश्चर्य से रेस्ट्रां को

तरफ बढ़ते हुए पूछा, "यह कब से और कैसे ? ' और फिर कुछ सोचते हुए बोली, "भुवन भाई, बम्बई के बाद आप कहाँ रहे ?"

"अब इन सब सवालों का जवाब मैं एक साथ तो दे नहीं सकता", भुवन ने उत्तर दिया, "पर हाँ, अब कनकपुर में कुछ सालों से 'नेशनल आबज़र्वर' के संवाददाता की हैसियत से काम कर रहा हूँ।"

कमलिनी ने हँसकर कहा, "भुवन भाई, खूब केंचुली बदलते हो। कभी कुछ, कभी कुछ । वह बेचारी मालिनी तो बम्बई से तुम्हारे नाम की माला जपती-जपती जयन्त भंडारकर के साथ इंग्लैंड ही चली गयी। जाते वक्त मुझसे कह गई थी कि सिनहा साहब कभी मिलें तो मेरी तरफ से माफी माँग लीजियेगा ।"

लखनऊ में नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम, बम्बई में मिसेज़ कमलिनी कौशल और कनकपुर में आज अपने नये रूप में अपरिचित मिसेज़ शाह ने अपने बारे में भुवन के मन में उठते हुए प्रश्नों को एक क्षण में ही भाँप लिया था और पाँसा पलटकर उसके व्यतीत को श्यामू कानोडिया के सामने खड़ी भीड़ में ऐसे खोलकर रख दिया था कि भुवन का मुंह बन्द हो गया था। कमलिनी की मालिनी के लिए कही बात से भुवन को सवेरे समाचार पत्रों में विदेशी पत्रकारों की टिप्पणी याद आ गयी । "क्या यह क्रिकेट है, जो हम कनकपुर में विजय पार्क पर देख रहे हैं ?"

भुवन ने देखा कि श्यामू कानोडिया उसकी और कमलिनी की घनिष्ठता को जानकर कुछ अप्रतिम-सा होकर उसके पीछे हो गया। सब रेस्ट्रां की ओर चल पड़े । भुवन भी एक झेंपी-सी मुस्कराहट के साथ कमलिनी के बराबर-बराबर चलने लगा।

दोपायों का नगर

ऊब और घुटन से हमेशा पस्त और उदास !

बेकारी और भूख से सदा ही बदमिजाज और चिड़चिड़े रहने वाले कनकपुर की फितरत उस दिन कुछ बदली हुई नजर आ रही थी।

जाड़ों में कनकपुर को शाम से सवेरे तक ढँके रहने वाले धुँए और कुहरे का घटा-टोप उस दिन कुछ जल्दी ही उठ गया था। धूप के निकलने में अभी कुछ देर थी, पर कुहरे का धुँधलका भी तेजी से बिखर रहा था। धूप न होते हुए भी धूप की चमक से आँखों को बचाने वाले क्रिकेट के रंगीन चश्मे और छाया-पट्टियाँ पहने हजारों बच्चे, किशोर, युवा, प्रौढ़ और बूढ़े सवेरे से ही कनकपुर की गलियों और सड़कों पर निकल पड़े थे। सब विजय वाटिका की ओर जा रहे थे। उस हँसती हुई भीड़ के बीच-बीच में चलते हुए या जहाँ-तहाँ खड़े बेबात हँसने-बोलने वाले झुंडों को देखकर ऐसा लगता था कि मसखरों की किसी फ़ौज ने कनकपुर पर कब्जा कर उसकी सदा ही रिरियाती हुई उदासी को कैद कर, किसी जेल में बन्द खुशी को आजाद कर दिया है और वह एक अरसे के बाद कनकपुर की गलियों और सड़कों पर बच्चों की तरह किलकारियाँ भर रही है।

बहुरंगी साड़ियों और सलवारों, रंग-बिरंगे कुरतों और चूड़ीदार पाजामों में सजी हजारों किशोरियों, नवयौवनाओं और प्रौढ़ाओं ने अपने-अपने घरों से बाहर आकर नगर को एक इन्द्रधनुषी छटा से भर दिया था।

उत्साह और उल्लास से भरी सड़कों पर सब तरफ विजय वाटिका की ओर जानेवाली भीड़ ही दिखाई पड़ती थी।

उस दिन कनकपुर खुश था।

और खुश थे, भूखे पेट रिक्शा खींचने वाले—वह आठ-दस हज़ार दोपाये जिन्हे पिछले दिन तबीयत से भर पेट खाने को मिला था।

भारतीय तथा विदेशी टीम के क्रिकेट टैस्ट मैच के प्रथम दिन ही उमड़ पड़नेवाली भीड़ के कारण नागरिक यातायात के नियमों के बदल जाने से इन रिक्शापायों ने कोई पच्चीस हज़ार सवारियो को चक्करदार लम्बे रास्तो से दूनी-तिगुनी मजदूरी लेकर सवेरे विजय वाटिका पहुँचाया था। अठन्नी का रास्ता रुपये भर का हो गया था। फिर उन्ही सवारियों को शाम को और भी ज्यादा पैसे लेकर उन्हें उनके घर तक ढोया था। रिक्शापायो की जेबें भरी थी और उन्हे विश्वास था कि आज क्रिकेट टैस्ट के दूसरे दिन उन्हे और ज्यादा मजदूरी का मौका मिलेगा क्योंकि पहले ही दिन भारतीय कप्तान देशमुख के 'सनमच्छी' (टॉस) जीतने के बाद भारतीय टीम ने सिर्फ तीन खिलाड़ी खोकर दो सौ ग्यारह रन बना लिये थे।

विजय वाटिका के खेल मे तेजी आ गयी थी।

सारा नगर भारतीय टीम द्वारा मैच जीतने की आशा से उजागर हो गया था। विजय वाटिका मे अपार भीड़ थी। सवारियों से ज्यादा पैसे कमाने की उम्मीद मे रिक्शा चलाने वालो की आँखों में ताज़गी और खुशी भर गयी थी। उनके उल्लास ने कनकपुर का कायापलट कर दिया दिया था। रिक्शापायों द्वारा नगर की गली-गली मे हमेशा सुनायी पड़ने वाली ललकारें और गालियाँ उनकी उस दिन की सम्पन्नता के उल्लास मे उड़ गयी थीं। उस दिन कनकपुर में साधारणतया दुर्लभ, शिष्टता की एक अनोखी बयार बह रही थी।

आज़ाद पार्क में रोज सवेरे टहलने वालों को भी आज जल्दी थी, वह अपनी सवेरे की सैर जल्दी ही खत्म करके वक़्त से पहले विजय वाटिका पहुँचना चाहते थे। सभी टहलने वालो ने मनकेकर के कल के दुर्भाग्य पर सहानुभूति प्रकट की थी।

मनकेकर के शतक में सिर्फ तीन रन की कमी रह गयी थी। अपने शतक को पूरा करने के लिये उसने बड़े विश्वास के साथ हैमंड की गेंद पर अपना खड्ग प्रहार किया था, परन्तु उसका आघात जरा-सा विचलित हो गया था और नाइट ने उसे *वाम पृष्ठिका (स्लिप)* पर अपने कर-संपुट में समेट लिया था।

विजय वाटिका का हृदय विदीर्ण होकर दर्द से कराह उठा था। पचास हजार से अधिक दर्शकों के दिल से बेसाख्ता एक आह निकल पड़ी थी। यह आह उन दूर-दराज लाखों श्रोताओं के दिलों से भी एक साथ ही निकली थी जो कनकपुर में ही नहीं, वरन् देश के कोने-कोने में रेडियो से *भिड़े आकाशवाणी के चुने हुए क्रिकेट के समीक्षाकारों से विजय पार्क* के मैच का विवरण सुन रहे थे।

दूसरे दिन का सवेरा

आज पाँच नवम्बर के खेल में रंगीनी आयेगी, यह विश्वास कानपुर में सवेरे से ही चलने वाले हजारों छोटे-बड़े चायखानों में भी व्यक्त किया जा रहा था। चौक के मछली बाजार के सामने सवेरे चार बजे से ही चलने वाली जगन्नाथ साईं की चाय की दूकान पर भुवन गया छः बजे अपनी प्रातःकालीन सैर से लौटते वक़्त अखबार देखने के लिए ठहर गया था।

'आज का खेल मजेदार होगा।" वहीं उसने सुना था।

उस दूकान पर सवेरे शहर की सभी दिशाओं से विलसन मिल, रेस्टन टैनरी, बिजली घर, गारफील्ड बुलेन मिल तथा मैकलीन काटन मिल की पहली पाली पर काम के लिए जाने वाले और सवेरे साढ़े छह बजे इन मिलों की रात की पाली से लौटने वाले मजदूरों तथा स्टेशन से इससे भी जल्दी अखबारों के बंडल लेकर आनेवाले हॉकरों की भीड़ लगती थी।

अलस्-सवेरे ब्रह्म मुहूर्त में शहर की ओर से गंगा स्नानार्थियों की एक बड़ी भीड़ भी इस दूकान के सामने से निकलती थी।

जगन्नाथ साईं के हाथ जल्दी-जल्दी चलते थे। धोये-अधधोये करीब चौबीस छोटे-छोटे शीशे के गिलासों में वह एक साथ चाय बनाता रहता था। उसकी दूकानदारी सवेरे पाँच बजे से सात बजे तक चाय के पहले घूँट की तरह गरम रहती थी और उसके बाद धीरे-धीरे पी जाने वाली चाय की प्याली की तरह ठंडाती हुई किसी ऐसी उम्र-रसीदा

औरत की तरह सिठा जाती थी जिसकी मिठास गरमाई की कमी से और भी गहरी हो जाती थी।

जगन्नाथ की दूकान दिन भर खुली रहती थी परन्तु जो तेजी और ताजगी सवेरे सात बजे से पहले रहती थी उसकी याद उसे किसी किशोर-वय प्रेमिका के संसक्त आलिंगन की तरह दिन भर बनी रहती थी। सवेरे के उन दो घंटों में जगन्नाथ साईं को प्रतिदिन अपनी क़िस्मत की मुहब्बत भरी अँगड़ाइयों का प्यार मिल जाता था।

भुवन ने भी अपने हॉकर के अनुरोध पर एक दिन जगन्नाथ की चाय पी थी और गिलास मुँह से लगाते ही स्वयं को अपनी उस कमज़ोरी के लिए कोसा था जिसकी वजह से वह दूसरों के अनुरोध का विरोध नहीं कर पाता था। जिस हॉकर के अनुरोध पर भुवन ने जगन्नाथ की चाय का गिलास मुँह से लगाया था उसका नाम था, राम नारायण अवस्थी, पर गरीबी ने उसका नया नामकरण कर उसे रम्मन बना दिया था।

रम्मन ने गांधीजी के नेतृत्व में लड़ी जाने वाली पच्चीस वर्ष पुरानी आजादी की आखिरी लड़ाई में जेल काटी थी। अगस्त उन्नीस सौ बयालीस में उसने अपने साथियों के साथ कचहरी पर हमला किया था। पुलिस की लाठियों से उसका सिर फट गया था, पर वह भाग निकला था और फरार हो गया था। दो महीने के बाद वह गिरफ्तार कर लिया गया था। जमानत पर छूटने के बाद मुकदमें में उसका अपना मकान बिक गया था। सात वर्ष की सजा हुई थी। तीन वर्ष की जेल काटकर रम्मन आजादी के बाद ही गंगा के किनारे बनी लम्बी, सपाट, लाल दीवारों वाले जेल के फाटक के बाहर आया था।

भुवन के मन में रम्मन के लिए बड़ा आदर था। जब भुवन बीस वर्ष बाद अपने जन्म स्थान कनकपुर वापस आया था तब से वह रम्मन से ही अखबार खरीदता था। भुवन को अपने पेशे के कारण दिल्ली और लखनऊ में प्रकाशित होने वाले कई समाचार पत्र, दो स्थानीय दैनिक पत्र और कुछ अन्य पत्रिकाएँ भी खरीदनी पड़ती थीं। रम्मन भी उसको एक बड़े ग्राहक के नाते आदर की दृष्टि से देखता था।

जगन्नाथ साईं की चाय की दूकान पर रम्मन हॉकरो में सबसे पहले साईकिल के डंडे के दोनों ओर झोलों में अखबार भरे पहुँचता था। 'देना भइया' की ऊँची आवाज के साथ वह साईकिल टिकाकर बेंच पर उकड़ूँ बैठ जाता।

आज उसके अखबारो के झोले रोज से ज्यादा भरे थे, पीछे कैरियर पर भी बड़ा-सा गट्ठर बन्धा था और आगे हैंडिल पर भी अखबार बँधे थे। अखबारो मे कल प्रथम दिन के क्रिकेट टैस्ट मैच का विवरण छपा था और रम्मन ने हर अखबार की दस से बीस तक ज्यादा कापियाँ ली थी। रोज अखबार न पढने वाले भी बहुत-से लोग उस दिन अखबार खरीदेंगे, यह बात रम्मन को वर्षों के अनुभव से मालूम हो चुकी थी।

कनकपुर में आधुनिक नागरिक सुविधाओं का नितात अभाव था। इसी कारण कनकपुर टैस्ट मैचो के लिए उपयुक्त नही समझा जाता था।

गंगा के किनारे बसे, कनकपुर मे चमड़ा और रुई की पुरानी मंडियो की उन्नति के कारण चमडे और सूती कपड़े के कुछ मिल लग गए थे। इन मिलों के कारण आस-पास के गांवो और बस्तियो के लाखों मजदूर कनकपुर आकर बस गए थे।

कनकपुर की पुरानी तग गलियों के गिरते हुए कच्चे मकानो मे इन मजदूरो के रहने के लिए जगह नही थी। गंगा के किनारे की सात मील लम्बी और मील भर चौडी पट्टी मे अंग्रेज मिल मालिकों और अफसरों के वह बगले थे जो अब अधिकतर सफल मारवाडी उद्योगपतियों ने आजादी के बाद उनके मिलों के साथ ही खरीद लिए थे। जब अंग्रेजो का बोलबाला था, उस समय इस क्षेत्र में साधारण नागरिको के प्रवेश पर पाबन्दी थी और कुछ श्रेष्ठ-जन ही उनके ऐश्वर्य-सदनों के फाटक तक पहुँच सकते थे। आजादी के बाद अंग्रेज अपनी सम्पत्ति बेचकर स्वदेश चले गये थे, पर उनकी यह श्रेष्ठ बस्ती अब भी वैसी ही थी।

इस क्षेत्र के बाद नगर की सबसे चौडी सड़क थी जिसके दोनों ओर सात मील तक घने पत्तो वाले पेड लगे थे। इन पेड़ो के कारण उस सडक पर अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा ठंडक रहती थी और इस कारण वह सडक, ठडी सडक कहलाती थी। इस सड़क के दूसरी ओर छोटे-छोटे घने बसे

गन्दे मोहल्ले थे। इन्ही मोहल्लो मे कनकपुर के वे बाजार थे जहाँ चमड़ा और रुई की आढतें थी और यहाँ से ही यह दोनों वस्तुएँ ठंडी सड़क को पार कर मिलों में जाती थी। बाद मे मिलो में इनसे बना चमडे का सामान और ऊनी, सूती कपड़ा ठेलो पर लदकर कनकपुर के बाजारों में बिकने के लिए आ जाता था।

नगर के इस निकृष्ट भाग से टैस्ट मैच की टीमो के सदस्य दूर ही रहते थे क्योंकि यहाँ के मोहल्लों की गन्दगी से भाग्य के धनी, देश के उन लाड़लों के स्वास्थ्य को खतरा हो सकता था। इन मोहल्लों की गन्दी गलियो में बनी आलीशान कोठियाँ भी उनके ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान नही समझी जाती थी। नगर के दूसरी ओर अंग्रेजो के बँगले तो थे पर आधुनिक होटलों की कमी थी।

ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान के अभाव के कारण नगर मे टैस्ट मैच होने की सम्भावना एक अरसे तक कल्पना मात्र ही बनी रही। कनकपुर के किसी नागरिक को विश्वास नही था कि यह सम्भावना कभी पूरी हो सकेगी। पर क्रिकेट कनकपुर के वातावरण में ऐसा रम-बस गया था कि जगह-जगह उसकी चर्चा से अनदेखा, देखा हुआ-सा और अनसुना भी जाना हुआ-सा लगता था। जैसे किंवदंतियो और अन्य उपादानो के आधार पर बीते हुए काल की कल्पना की जाती है, उसी प्रकार से कनकपुर के अतीत और वर्तमान की आकांक्षाओं तथा भविष्य की सम्भावनाओं ने सुवन की सज्ञा में कनकपुर क्रिकेट टैस्ट मैच का एक कालहीन काल्पनिक चित्र प्रस्तुत कर दिया जो समय पाकर शब्दों में बँध गया।

लाजवाब सवाल

खेलों के शौकीन कनकपुर के लघु उद्योगपति रामकृष्ण शर्मा संस्कृत के पंडित होने के अतिरिक्त अंग्रेजों के विशेष भक्त भी थे और हर अंग्रेजी तौर तरीके को बड़े आदर के भाव से देखते थे।

शर्मा ने नगर के कलक्टर की कृपा से कनकपुर की ऐतिहासिक विजय वाटिका (जो अब विजय पार्क भी कहलाने लगी थी) में क्रिकेट खेलने भर के स्थान के चारो तरफ ईंटों की कच्ची सीढ़ियाँ बनवाकर उसे एक स्टेडियम का रूप दे दिया था और फिर उसकी कोशिशों से सन् उन्नीस सौ बावन में एक विदेशी टीम के भारत भ्रमण के समय कनकपुर में प्रथम बार एक टैस्ट मैच भी खेला गया था। इस आयोजन से रामकृष्ण शर्मा नगर के विशिष्ट वर्ग और विशेषकर कनकपुर के बड़े भारतीय उद्योगपतियों की नजरों मे खटकने लगे थे।

टैस्ट मैच में उन्हें बड़ी अड़चनों का सामना करना पड़ा था। मैच बराबर रहा था। उस समय नागरिकों में क्रिकेट के प्रति चाव की कमी थी और प्रबंध समिति को लंबा घाटा हुआ था। दो वर्ष बाद एक अन्य विदेशी टीम के भ्रमण के समय भी कनकपुर में टैस्ट मैच हुआ था। वह मैच भी बराबर ही रहा था। इसके अगले वर्ष आनेवाली विदेशी टीम ने कनकपुर मे भारत की टीम को ढाई दिन में ही हरा दिया था और प्रबंध समिति को इतना लंबा घाटा हुआ था कि वह प्रायः मरणासन्न हो गयी थी।

इस धक्के से रामकृष्ण शर्मा को भी एक लंबी बीमारी के बाद

मृत्यु हो गयी थी। फिर एक लंबे अंतराल में कनकपुर में कोई टेस्ट मैच नहीं खेला गया और ऐसा लगता था कि वहाँ टेस्ट मैच की नवजात परंपरा का अंत हो जायेगा। पर पाँच वर्ष बाद एक नयी प्रबंध समिति ने प्रदेश क्रिकेट संघ के माध्यम से राष्ट्रीय क्रिकेट संघ को साठ हज़ार रुपये पेशगी भेजकर कनकपुर में टैस्ट मैच का पुनः आयोजन किया था। भारत की टीम उस वर्ष के टैस्ट मैच में विदेश की टीम के बराबर रही थी। इस मैच में प्रबंध समिति को घाटा भी नहीं हुआ था। कनकपुर में टैस्ट मैच की मृत-प्राय परंपरा की साँस फिर चलने लगी थी, और एक वर्ष बाद एक विदेशी टीम कनकपुर के विजय पार्क पर भारतीय टीम से हार गयी थी। इस विजय से कनकपुर की गिनती राष्ट्रीय क्रिकेट केंद्रों में होने लगी और प्रत्येक विदेशी टैस्ट टीम के आगमन पर कनकपुर में भी एक मैच खेला जाने लगा।

रम्मन ने भारतीय विजय के उस ऐतिहासिक टैस्ट मैच के दिनों में अपनी प्रतिदिन की बिक्री के अलावा हर रोज सौ से ज्यादा ही अखबार बेचे थे। रिक्शे चलाने वाले दोपायों की तरह ही उस क्रिकेट मैच के दिनों में अखबार बाँटने वाले दोपायों को भी कुछ अधिक आमदनी के कारण रोज ही खुशी का एक इन्जेक्शन मिल जाता था।

कनकपुर में खेले जाने वाले एक ऐसे ही टैस्ट मैच के दूसरे दिन भुवन को सवेरे की सैर से लौटते देखकर रम्मन ने जगन्नाथ साईं की दूकान के सामने लंबा सलाम किया और कहा, "अरे साईं, तुमने विजय पार्क के मैदान में दूकान क्यों नहीं लगायी? हमारे साहब से कहते तो फौरन जगह मिल जाती।"

"भइया, आजकल तो सारा मजा विजयपार्क के मैदान में है।" उस दूकान पर खड़े ऊनी मिल के एक मजदूर ने कहा।

जगन्नाथ ने भुवन को सलाम करते हुए कहा, "हुजूर, विजय पार्क में दूकान तो मैं भी लेना चाहता था पर सुना, किराया बड़ा ऊँचा है। एक-एक चाय की दूकान के लिए हज़ार-हज़ार रुपये तक लिये गये हैं और फिर कमेटी के इंतज़ाम करने वालों की धौंस अलग है।"

रम्मन बोला, "अरे चाय के दाम भी तो वहाँ दूने-तिगुने हैं और

दूसरी चीजो के तो मुँह माँगे दाम मिलते हैं। लोग बताते है कि कुछ दूकानें तो इन्ही पाँच दिनों मे साल-भर की कमाई कर लेती है।"

भुवन ने कुछ जवाब न देकर रम्मन से अखबार लेकर देखना शुरू किया। पिछले दिन के टैस्ट मैच के बारे मे हर अखबार के क्रिकेट के विशिष्ट संवाददाता ने कनकपुर के मैच को प्राणहीन अथवा निश्चेष्ट या स्पदनहीन बता-कर उसकी आलोचना की थी।

दिन-भर के खेल में केवल दो सौ ग्यारह रन बनाने वाली भारतीय टीम और उसके खिलाडियों की धीमी रन प्रगति की भर्त्सना करते हुए क्रिकेट संवाददाताओं ने लिखा था कि भारत ने इस टैस्ट का गला घोट-कर उसे अधमरा कर दिया है। देशमुख, चौधरी तथा मनकेकर के क्रमशः अट्टारह, बहत्तर और सत्तानवे रनों की कच्छप गति की चर्चा करते हुए विदेशी टीम के साथ आये हुए विशेष संवाददाताओं ने प्रश्न किया था, "क्या, यह क्रिकेट है?"

भुवन क्रिकेट के खेल की पेचीदगियों से अनजान था। कनकपुर में टैस्ट मैच देखने का उसका प्रथम अनुभव था। पाँचवी नवंबर को टैस्ट के पहले दिन विजय पार्क मे बैठे-बैठे वह ऊब भी गया था।

भारतीय कप्तान देशमुख और चौधरी ने भारत की ओर से आरंभक बल्लेबाजों का उत्तरदायित्व लेकर कोई पचास हजार की भीड़ के कर्ण-भेदी उत्साह-भरे नारो के साथ विजय वाटिका के क्रिकेट प्रांगण में प्रवेश किया था।

क्रिकेट देखने वालो की भीड़ में जितना उत्साह था, उतना उत्साह भुवन ने कनकपुर में आजादी के दिन के बाद कभी नही देखा था। कुछ दिनों से शहर मे हर जगह क्रिकेट की ही चर्चा थी। भुवन ने भी उस उल्लासपूर्ण वातावरण मे घुल-मिल जाने का भरसक प्रयास किया था। उसने जल्दी-जल्दी क्रिकेट के खेल को समझने की कोशिश की थी और भारतीय तथा विदेशी टीमों के सदस्यों के नामो और उनके पिछले वर्षों की स्मरणीय बल्लेबाजी, गेंदबाजी, क्षेत्रीय हस्तलाघव तथा वृत्त-वेष्टन आदि को समझने और रखने का भी प्रयत्न किया था। क्रिकेट की बातचीत करने वाले लोगों के बीच में वह नासमझ न समझा जाये,

इसीलिए वह हफ्तों से निरंतर चलने वाली क्रिकेट चर्चा में अक्सर बिना श्रधिक बोले सम्मिलित हो जाता था, जिससे वह जानकार लोगों की बात-चीत से भी कुछ सीख सके, परन्तु इस सारे प्रयास श्रौर चर्चा के बीच वह श्रपने से यह प्रश्न पूछे बिना नहीं रह पाता था :

"इस सब में क्या रखा है श्रौर लोग क्रिकेट के पीछे इतने दीवाने क्यों हैं ?"

मैदान के पीछे

क्रिकेट तमाशाइयों की भीड़ में कमलिनी के साथ विजय पार्क में मैच-भर के लिए बने 'रश्मि' रेस्ट्राँ की ओर जाते समय भी भुवन के ऊबे हुए मन में एक बार फिर वही पुराना प्रश्न उमड़ रहा था—'क्रिकेट के पीछे लोग इतने बदहवास क्यों हो जाते है?'

शहर के मशहूर रेस्ट्राँ 'रश्मि' के मालिक शम्भूनाथ कपूर ने श्यामू भइया को कुछ दबे-दबे से कमलिनी के पीछे आते देखकर, बड़े तपाक से स्वयं आगे बढ़कर उसका तथा उसके पीछे आने वाले लोगों का स्वागत किया।

शामियाने के नीचे लगे 'रश्मि' रेस्ट्राँ में पिकनिक का वातावरण था।

कपूर साहब स्वयं निरामिष थे। नगर में तीस वर्ष से चलने वाला उनका रेस्ट्राँ 'रश्मि' भी पहले अपने निरामिष व्यंजनों के लिए ही प्रसिद्ध था, लेकिन कुछ समय से उसके सामिष भोज भी प्रसिद्ध हो गये थे। वह स्वयं बताते थे कि सामिष भोजों में वह पाक-विद्या के किसी कुशल मुसलमान बावर्ची द्वारा पकाये हुए ऐसे मुर्ग रोस्ट का प्रबंध करते थे जो लखनऊ के नवाबों के बावर्चीखानों में ही मिल सकता था, पर असल में किसी पंजाबी सरदार द्वारा लबड-धो-धोकर बनाये हुए उस मुर्ग का एक छोटा-सा निवाला भी शौक से खाना मुश्किल होता था।

जब नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम विजय पार्क के टैस्ट मैच में मिसेज शाह का नाम धरे हुए शम्भूबाबू के रेस्ट्राँ में प्रवेश कर रही थी

तब भुवन को उसकी देखरेख में बने, मुंह में बालाई की तरह घुस जाने वाले मुर्ग की याद आ गयी। भुवन को कनकपुर में उतना लज्जतदार मुर्ग खाने का अवसर तभी मिलता था जब कनकपुर में टैस्ट क्रिकेट मे आयोजन समिति के मंत्री जनाब अलबर्ट अली खां के द्वारा दी गई दावत में शरीक होता था। अलबर्ट अली खां के बाप-दादे बिसाती थे। गदर के समय उसके बाबा ईसाई हो गये थे। ईसाई होने के बाद उनका कार-बार बहुत बढ़ गया था, और फौज को समान पहुँचाने का काम भी मिल जाने के कारण वह पहले महायुद्ध में लखपती हो गये थे। बड़े होने पर नौजवान अलबर्ट को यह धंधा पसंद नहीं आया था। उसने औद्योगिक रासायनिक पदार्थों के बनाने का एक कारखाना लगाकर अपनी पैतृक संपत्ति को इतना बढ़ा लिया था कि अब उसकी गिनती शहर के करोड़पतियों में होती थी। ईसाई होने के बावजूद भी रहन-सहन मुसलमानी होने के कारण अलबर्ट को शहर में अनकरीब नवाब साहब का दर्जा मिला हुआ था।

कनकपुर में क्रिकेट के आयोजन के लिए जिस अपार धनराशि की मैच से पहले जरूरत होती थी, उसे अलबर्ट अपने सहयोगी उद्योगपतियों को स्वागत समिति का सदस्य तथा संरक्षक बनाकर हासिल कर लेता था। अपनी इस कार्यकुशलता के कारण वह स्वयं इस आयोजन की प्रबंध समिति का मंत्री बन गया था। टैस्ट मैच के समय विजय वाटिका अपना तीस एकड़ क्षेत्रफल का घाघरा अलबर्ट के इशारे पर ही उठाती, लहराती अथवा समेटती थी।

अलबर्ट टैस्ट मैच से पहले प्रबंध समिति के सदस्यों तथा नगर के कुछ अन्य प्रमुख व्यक्तियों को अपने यहाँ शाम के खाने की दावत देता था। ऐसे ही एक अवसर पर भुवन ने वह मुर्ग-मुसल्लम खाया था जिसने उसकी जबान को वह दिन याद दिला दिया था जब नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम ने अपने कमलिनी कौशल बनने की खुशी में खुद मुर्ग-मुसल्लम पकाकर उसे बड़ी मुहब्बत से खिलाया था।

शम्भुनाथ ने सबको आदर से अंदर ले जाते हुए पूछा, "क्या हाजिर किया जाये?"

इसके पहले कि सब किसी मेज पर बैठते, रेस्त्रां की बगल से कनकपुर क्रिकेट संघ के प्रेसिडेन्ट बाबू कमलकिशोर ने आगे आकर कहा, "अरे, मिसेज शाह, आप यहाँ कहाँ बैठ रही हैं, इधर आइये"—और फिर उन्होंने शम्भूनाथ की तरफ देखकर कहा, "शम्भूबाबू, मिसेज शाह हमारी मेहमान हैं। इनकी खातिर करना हम लोगों का फर्ज है। देखिये कहीं कोई शिकायत न हो जाये, नहीं तो फिर बम्बई क्रिकेट क्लब में मैं मिस्टर शाह को मुँह दिखाने के काबिल भी नहीं रहूँगा।"

"मुँह दिखाना तो क्या, कमल, हम और तुम वहाँ घुसने भी न पायेंगे।" एकाएक कहीं से कमलकिशोर के आगे आकर अलबर्ट अली खाँ ने कहा।

अपने मित्रों में कमल के नाम से मशहूर कमलकिशोर कनकपुर क्रिकेट संघ का प्रेसिडेन्ट तो जरूर था लेकिन विजय वाटिका के टैस्ट मैचों में अलबर्ट और उसके सहयोगियों के एकाधिपत्य के कारण कमल की हैसियत एक सम्मानित दर्शक मात्र की होती थी। कमल की प्रेसिडेन्टशिप का एकमात्र प्रतीक था—गुलाबी साटन का वह बड़ा-सा फूल जिसके बीच में एक नीला गोला बना था और फूल के नीचे कच्चे रेशमी कपड़े के दो छोटे से फुंदने निकले हुए थे। लम्बे कद, कसरती बदन का कमल किशोर टैस्ट मैच में थोड़ी ही देर के लिए आता था और जितनी देर वह विजय वाटिका में ठहरता था उतनी देर वह प्रेसिडेन्टशिप के बिल्ले को लगाये हुए घूम-घूमकर ऊँचे दर्जे के दर्शकों से मिलता-जुलता रहता था।

कमल को यह बात बहुत खलती थी कि उसका चार इंच चौड़ा बिल्ला अलबर्ट के पाँच इंच के बिल्ले से कुछ छोटा था। पर एक पुराने सम्पन्न तथा सुसंस्कृत खत्री खानदान का सदस्य होने के नाते कमल अपनी खलिश कभी सर्वसाधारण के सामने जाहिर नहीं करता था।

जब कभी कोई ऊँचे दर्जे का मुफ्तखोरा दर्शक अपनी कोई उलझन उसे प्रेसिडेन्ट समझकर बताता था तो वह हमेशा कह देता था, "अभी ठीक करता हूँ, आप जरा अलबर्ट से भी कह दें।" इस तरह काम भी हो जाता था और उसकी इज्जत भी रह जाती थी।

कमलिनी और उसके साथ के झुंड के सामने अलबर्ट ने कमल की बात

का ऐसे समर्थन किया जैसे दोनों एक-दूसरे की बात पर मरते मिटते हों, पर हकीकत यह थी कि दोनों की आपस में बोल-चाल भी नहीं थी।

अलबर्ट और कमल दोनों कमलिनी के दायें-बायें हो गये और दोनों ने उससे बगल में लगे एक छोटे-से दूसरे शामियाने की तरफ चलने का अनुरोध किया। कनकपुर की उन दो महान् विभूतियों को देखकर अनजाने ही श्यामू कानोडिया के साथ कमलिनी के पीछे चलने वाले उसके पुराने प्रशंसकों की भीड़ कुछ छंट गयी। उस भीड़ में बहुत से अपनी सफलता के लिए अलबर्ट अथवा कमल का मुंह जोहते थे और उन दोनों के सामने नहीं पड़ना चाहते थे।

अलबर्ट उस उद्योग समूह का एक प्रमुख सदस्य था जिसके संस्थापकों ने कनकपुर की किशोरावस्था के समय ही वहाँ अपना स्थान बना लिया था। बाद में कनकपुर की उन्नति के साथ-साथ उस उद्योग समूह की समृद्धि भी बढ़ती गयी।

अब स्थिति यह थी कि उस उद्योग समूह की नयी योजनाओं और उसकी सफलता पर ही कनकपुर की उन्नति निर्भर करती थी, क्योंकि अब नगर में उस उद्योग समूह के अतिरिक्त किसी में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह आजकल की पूँजी-बहुल औद्योगिक योजनाओं को चलाने की बात भी सोच सके। इस उद्योग समूह के संचालकों की व्यापारिक कुशलता का एक स्वयं-भू परिणाम यह भी था कि विजय वाटिका की प्रबन्ध समिति पर उसका एकाधिपत्य था और उसी उद्योग समूह का एक संचालक होने के नाते अलबर्ट खेलकूद के क्षेत्र में नगर, प्रदेश और देश में मशहूर उस भगवान गणेश उद्योग संस्थान का प्रतिनिधि माना जाता था, जो बी० जी० उद्योग समूह के नाम से प्रसिद्ध था।

कमलकिशोर के पूर्वजों ने नगर में किसी समय एक शिक्षा-संस्था के स्थापन में योग दिया था। समयानुसार कनकपुर की आबादी बढ़ने के साथ-साथ वह शिक्षा-संस्था भी बढ़ती गयी थी और अब उसके द्वारा प्रबंधित शिक्षा संस्थाएँ प्रदेश के प्रत्येक जिले में फैल गयी थी। इस विशाल शिक्षावट के घने झुरमुट के बहुसंख्यक कोटरों में अनेक शिक्षाविदों ने अपने नीड़ बना लिए थे। इस प्रकार कमलकिशोर का प्रभाव प्रदेश के

प्रत्येक नगर मे फैल गया था। उसने धीरे-धीरे प्रदेश की राजनीति में भी अपना एक स्थान बना लिया था। यह सब होते हुए भी कनकपुर के उद्योगपतियों की अतरंग बैठको मे कमल किशोर को कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नही था, क्योंकि किसी जमाने में उसके पूर्वज किसी-न-किसी उद्योगपति के यहां कुछ काम करके पैसा पाते रहे थे। यह एक ऐसी गांठ थी जिसपर समय पाकर कुछ और नयी गाँठें लग गयी थी।

जब कमलकिशोर ने बीसियो शिक्षा संस्थाओं के संचालक होने के नाते प्रदेश की खेल-कूद की संस्थाओ मे अपना स्थान बनाने का प्रयास किया तो कम-से-कम क्रिकेट के क्षेत्र मे अलबर्ट अली खां को बहुत खटका, क्योंकि वह मरहूम नवाब पटौदी के साथ एक बार एक फर्स्ट क्लास के कम्पार्टमेंट मे बम्बई से दिल्ली तक सफर कर चुका था और इस कारण वह क्रिकेट को, कनकपुर मे ही नही वरन् सारे प्रदेश में अपना विशिष्ट प्रभाव-क्षेत्र समझता था। उसके एक ही झटके ने कमलकिशोर को प्रदेश के खेल के क्षेत्र से बाहर कर दिया था। पर, कमल भी कोई मामूली प्रतिद्वंदी नही था। उसने फिर बाजी बिछा दी थी और अब दोनों के दांव पेच चल रहे थे।

शहर मे खेल-कूद मे शौक रखने वालों को इन दांव-पेचों की हर गतिविधि का पता था और यही कारण था कि जब अलबर्ट और कमल किशोर कमलिनी के दायें-बायें होकर विजय वाटिका के प्रबंधकों की ओर से विशिष्ट अतिथियों के लिए लगाये गए छोटे से खूबसूरत, पर बंद वी० आई० पी० शामियाने की तरफ चले। तब जहां कमलिनी के साथ हो जाने वाले उसके बहुत से अपरिचित प्रशंसक इधर-उधर हो गये, वहां आस-पास खड़े गप्पें लड़ाने वाले कमल और अलबर्ट के बहुत से विश्वासपात्र तथा कुछ पुराने खिलाडी और प्रबंध समिति के प्रमुख कार्यकर्ता जल्दी-जल्दी गप्पबाजी छोड़कर अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार उन दोनो के दांये-बांये हो गये जिसमे मौके के अनुसार खेलो के दोनो सरगना एक-दूसरे की बात का बराबर से जवाब दे देने मे एक-दूसरे से पीछे न रहें।

भुवन ने देखा कि जो भीड कमलिनी के साथ श्याम् भइया की बात-चीत के वक्त हो गयी थी वह किसी अज्ञात प्रेरणा से एकदम बदल गयी।

पुरानी भीड़ में से केवल वह और श्यामू भइया ही कमलिनी के साथ रह गये। श्यामू कानोडिया की चुप्पी और जरा हटकर चलने से भुवन को अंदाज हुआ कि वह भी खिसकना चाहता है। उसकी गतिविधि को देखकर भुवन ने भी सोचा कि उसे भी कमलिनी का साथ छोड देना चाहिए। उसकी इस नीयत को कमलिनी ने फौरन ताड लिया और बी० आई० पी० शामियाने के दरवाजे पर पहुँचकर उसने भुवन की बाँह पकड कर कहा, "आओ भुवन भाई, तुम्हारे नये शहर की उन लज्जतों का भी मजा लिया जाये जो अलबर्ट साहब वर्षों से बम्बई में पेशकर रहे हैं, पर जिनसे मैं बदनसीब अब तक महरूम ही रही हूँ, क्योंकि इनका दावतनामा मेरे पास पहुँचने के बजाय कहीं रास्ते में गुम हो जाता है।"

अलबर्ट और कमलकिशोर दोनों ही भुवन को देखकर कुछ हिचके। उन दोनों को उसके स्वाभिमान के साथ काम करने के तरीके का पता था। वह यह भी जानते थे कि उन दोनों में से किसी के कहे बगैर वह बी० आई० पी० शामियाने के अंदर कदम नहीं रखेगा। अलग-अलग अलबर्ट और कमल किशोर दोनों में से कोई उससे अपनी घनिष्ठता दिखाना नहीं चाहता था, क्योंकि उनमें से यदि कोई भी भुवन को उस समय बढ़ावा देता तो बाद में दूसरा यह कहने का हकदार हो जाता कि भविष्य में प्रदेशीय खेल-कूद या क्रिकेट टैस्ट मैच के बारे में जो कुछ समाचार किसी के खिलाफ प्रकाशित होगा, उसमें दूसरे की प्रेरणा होगी। दोनों शामियाने के दरवाजे पर ठिठक गये। कमल ने अपना खानदानी परपरागत चातुर्य दिखाते हुए श्यामू कानोडिया के गले में हाथ डालकर कहा, "अरे चलिये, श्यामू बाबू आप तो खेल में ऐसे रम जाते हैं कि फिर अपना हाथ ही नहीं दिखता, हम गरीबों की कौन कहे ?"

कमल जानता था कि अलबर्ट को श्यामू कानोडिया के बी० आई० पी० शामियाने में आने से कोई एतराज नहीं हो सकता। श्यामू कानोडिया का व्यापार बी० जी० उद्योग संस्थान की कृपा पर ही निर्भर था इसलिए उस पर यह भरोसा किया जा सकता था कि वह उस शामियाने में कोई ऐसी-वैसी बात देखकर या सुनकर उसका कहीं बाहर ज़िक्र करने की जुर्रत नहीं करेगा, पर भुवन की उपस्थिति खतरनाक भी हो सकती

थी। अलबर्ट कुछ सोच में पड गया कि भुवन को अंदर चलने के लिए कहे या न कहे। तब तक कमलिनी ने भुवन को शामियाने के दरवाज़े पर रुकते देखकर कहा, "अलबर्ट साहब, आपकी हमारे भुवन भाई से तो मुलाकात होगी ?"

अलबर्ट के सामने अब कोई रास्ता नही रह गया, उसने कहा, "हाँ, क्यों नही, इन्हे यहाँ कौन नही जानता ? इनके कनकपुर मे आने के बाद से यहाँ के लोगों की जिंदगी मे नयी ताजगी आ गयी है।"

अब कमल ने मौके का फायदा उठाते हुए अलबर्ट पर एक अप्रत्यक्ष वार करते हुए कहा, "यह तो हम सबको रोज ऐसी नयी-नयी खबरें देते हैं जिनको पढकर यह लगता है कि इनके आने से पहले हमे खुद पता नही था कि हमारे शहर मे कहाँ क्या हो रहा है।'

कमलिनी ने भुवन को बढ़ावा देते हुए कहा, "अच्छा तो, भुवन भाई, आपने यहाँ भी नाम कमा लिया है, बम्बई मे तो लोग आज तक आपकी उन शामों को याद करते है जो उन्होंने दस वर्ष पहले आपके साथ गुजारी थी। लेकिन, देखिये यहाँ आप अपनी अखबारनवीसी चाहे जैसी भी करें पर हमारे अलबर्ट साहब को बचाये रखियेगा। मुझे इनसे ज्यादा नेक आदमी देखने को नही मिला है।"

भुवन ने कहा,"इसमें क्या शक है ? रही मेरी अखबारनवीसी, तो यह कमलबाबू और अलबर्ट साहब की मेहरबानी है कि वह मुझ पर इतनी कृपा करते हैं, वरना मैं किस काबिल हूँ। अलबर्ट साहब का तो यह सारा शहर ऋणी है कि वह किसी तरह जोड़-तोडकर कनकपुर के खोये हुए क्रिकेट टैस्ट को फिर यहाँ वापस ले आये हैं। इन पर मैं क्या, कभी कोई और भी उँगली नही उठा सकता।"

अब अलबर्ट ने मजबूर भुवन की बाँहो मे हाथ डालकर कहा, "चलिये सिनहा साहब, एक प्याला कॉफी पी लीजिये, फिर खेल देखियेगा।"

कमलिनी ने कमल और अलबर्ट की हिचक को अंदाज लिया था। वह अलबर्ट को भुवन से इतनी निकटता से बातें करते देखकर मुस्करायी और सबके साथ अंदर बढ़ते हुए बोली, "अच्छा, भुवन भाई, आपका इस मैच मे भारत की टीम में नये शामिल किये जाने वाले नारीमैन और मेहता

के बारे में क्या खयाल है, मैं तो समझती हूँ कि कृष्णन् को हटाना ठीक नही हुआ।"

भुवन ने कहा, "भाभी साहबा, आप तो यह जानती है कि मुझे क्रिकेट के बारे मे कोई विशेष ज्ञान नही है।"

भुवन की बात सुनकर कमल ने हँसकर कहा, "मिनहा, तुमने यह खूब कहा कि तुम्हे क्रिकेट का कोई ज्ञान नही है।"

अलबर्ट ने कमल की बात पर अपनी बात जोडी, "अरे मिसेज शाह, वड़े छुपे रुस्तम हैं। मैं तो आपको आगाह करना चाहता था कि इनसे संभलकर रहियेगा। इनके अखबार में कल के खेल का हाल ही पढ़ देखिये। सारा शहर इस बात पर उछल रहा है कि सिर्फ़ तीन विकेट खोकर भारत ने दो सौ ग्यारह रन बना लिये और यह है कि लिखते हैं कि कनकपुर के इस बेमजा टैस्ट की सबसे बडी कशिश इसके वक्त की पाबंदी है और यह फिकरा लिखने के बाद यह कहते हैं कि इन्हे क्रिकेट का कोई ज्ञान नही है।"

कमलिनी ने कहा, "बड़ा नाजुक तज किया है, भुवन भाई। पर मैं कहती कि यह नारीमैन बला का हसीन है। वह क्रिकेट कैसी भी खेले, पर उसको शामिल करबोर्ड ने इंडिया की टीमको रौनकतो जरूर बख्शी है।"

सब लोग खाने के सामान से लदी मेजों तक पहुँच गये थे। अलबर्ट को देखते ही 'रश्मि' रेस्त्राँ की इस भव्य शाखा की देखरेख मे लगे शम्भूनाथ के छोटे भाई विश्वनाथ ने जल्दी से आगे आकर पूछा, "क्या पेश करूँ?"

कमलिनी की ओर देखते हुए अलबर्ट ने कहा, "मिसेज शाह, सिर्फ कॉफ़ी से क्या होगा, साथ में खाने के लिए भी कुछ होना चाहिए।"

अलबर्ट के बहुत इसरार करने पर भी कमालिनी ने खाने से इनकार किया और सबके लिए सिर्फ़ कॉफी ही मँगायी गयी। कॉफी की प्याली लेकर धीरे-धीरे सब शामियाने मे एक तरफ पडे सोफो पर बैठ गये। भुवन ने शामियाने के चारो तरफ अपनी नजर डाली तो देखा कि वहाँ दूसरी तरफ प्रदेशीय सरकार के सर्वोच्च अधिकारियों का झुड जमा था और उनकी खातिरदारी में बी० जी० उद्योग संस्थान के कई सचालक एक

साथ लगे थे। उनके सामने की मेज पर बीयर की खुली बोतलें भी रखी थी और सबके हाथ में बीयर से भरा एक-एक गिलास था। उस समय शामियाने में कमलिनी को छोडकर कोई और महिला नही थी।

अफसरों के झुड में सबसे ज्यादा शौकीन-मिजाज उत्पादन शुल्क आयुक्त वीरेन्द्र कुमार ने अपने पास खड़े बिक्रीकर के प्रदेशीय आयुक्त कृष्णकान्त का ध्यान कमलिनी की ओर आकर्षित किया, फिर धीरे-धीरे बढ़कर अलबर्ट के पास आकर कहा, "भाई अलबर्ट, तुम्हारा इंतजाम तो कमाल का है, यहाँ हर चीज मुहय्या है। मैं तो समझता था कि कनकपुर में इतना बड़ा काम जरा मुश्किल से हो सकेगा, पर देखता हूँ कि यहाँ जैसा कुछ है, वह लखनऊ में भी नही हो सकता था, प्रदेश के किसी और शहर की तो बात ही क्या है।"

वीरेन्द्रकुमार के साथ कृष्णकान्त भी आगे बढ़ आया था। उसने कमल किशोर से कहा, "कमल, धूल और धुएँ भरे तुम्हारे इस गदे शहर को टैस्ट मैच की जो नियामत बख्शी है उसके लिए तुम सबको उसका हमेशा-हमेशा के लिए शुक्रगुजार होना चाहिए।"

कमल ने इस व्यग को समझते हुए हंसकर कहा, "इसमें क्या शक है ?"

वीरेन्द्रकुमार और कृष्णकान्त को अलबर्ट और कमल के बीच में बैठी कमलिनी की तरफ़ बढ़ते देखकर दूसरे और अफ़सर भी उसी तरफ बढ़ आये।

कमलिनी को प्रायः सभी ने दूर से देखा था। कुछ ने उसे भारत के खिलाडियों के क्रिकेट कौशल पर शाबाशी देते हुए उसकी टीका भी सुनी थी। उन्होने देखा था कि इस टैस्ट मे विजय वाटिका मे ऊंचे दर्जे के दर्शक प्रायः उसी के संचालन मे चीखते-चिल्लाते थे तथा उसी के इशारे पर सारी की सारी विजय वाटिका उठती, बैठती और मायूसी की आहें भरती या खुशी से उछलने लगती थी। बी० आई० पी० शामियाने मे बीयर पीने वाले बहुत से अफ़सर भी स्टेडियम में कमलिनी के नेतृत्व मे उठने वाली चीख और चिल्लाहट में अनजाने ही शामिल हो चुके थे।

उन्होंने जब उस जन समूह के उत्साह और निराशा की सचालिका

को अलबर्ट के पास बैठे देखा तो वह भी उससे मिलने के लिए बढ़ आये।

कृष्णकान्त द्वारा अलबर्ट की तारीफ़ और कमल के जवाब का सहारा लेकर कमलिनी की गंध से आकर्षित, प्रदेश का वह अधिकार पुंज उसके सौंदर्य की चुम्बक शक्ति से खिंचकर उसके पास सिमट आया। प्रदेश शिक्षा विभाग के सचिव हरिशंकर गुप्ता ने कृष्णकान्त के कटाक्ष और कमल बाबू के जवाब का मजा लेते हुए हँसकर कहा, "शुक्रगुज़ार होना तो जरूर चाहिए पर इस दुनिया में बड़े-बड़े नाशुक्रे हैं।"

शिक्षा सचिव गुप्ता को प्रदेशीय क्रीड़ा-क्षेत्र में अलबर्ट और कमल की पारस्परिक स्पर्धा का पता था और वह इस द्वंद में पूरी तरह कमल का साथ देता था। इसी नाते उसने अलबर्ट पर ऐसा व्यंग किया था जो साधारणतया कमल के बहाने अलबर्ट का मज़ाक उड़ाता था।

अलबर्ट ने स्वाभाविक शिष्टाचार के नाते अपने पास आकर खड़े हो जाने वाले सभी बड़े-बड़े अफसरों का कमलिनी से परिचय कराते हुए कहा, "यह मिसेज शाह हैं जो बंबई में क्रिकेट क्लब में होने वाले मैचों के इन्तजाम की ऐसी देखभाल करती हैं कि आज तक वहाँ किसी बात की शिकायत ही नहीं हुई। पर हम गरीब यहाँ कनकपुर में जितना कुछ हर मैच के समय में ठीक कर पाते हैं उतना ही बाद में बदनामी के बायस होते हैं। अब यही देखिये, इस वर्ष पचास हजार रुपया खर्च करके स्टेडियम के चारों तरफ़ बैठने के लिए सीढ़ियाँ बनायी गयी हैं और क्रिकेट बोर्ड को साठ हज़ार रुपये की नकद जमानत दी जा चुकी है, पर इस सबके बदले दो लफ्ज़ तारीफ के तो दूर, हाँ, चारों तरफ़ आलोचना जरूर हो रही है।"

कृष्णकान्त ने कहा, "अरे छोड़ो, मियाँ अलबर्ट, इन पुरानी बातों को। मौसम के लिहाज से हवा में ठंडक और गर्मी दोनों ही रहती है और इसी तरह दुनिया में हर काम की अच्छाई की चर्चा के साथ बुराई भी होती रहती है। उसे भूलकर अब तुम खेल की बात करो।" और फिर कमलिनी की ओर घूमकर कहा, "मिसेज़ शाह, कल के खेल के बारे में आपकी क्या राय है?"

कमलिनी के जवाब देने से पहले अलबर्ट ने कहा, "आज यहाँ जो

भीड़ उमड़ी पड़ रही है यह कल के खेल का ही नतीजा है। मैं तो समझता हूँ कि कल मनकेकर ने सत्तानवे रन बनाकर इण्डिया को ऐसी मजबूती दे दी है कि यह टैस्ट यहाँ जीता भी जा सकता है।"

कमलिनी ने टोकते हुए कहा, "मैं तो मनकेकर के खेल से ऊब गयी थी, असल में जनवासे की चाल और मनकेकर के रनों की रफ्तार में कोई फर्क नहीं था। मनकेकर से कहीं ज्यादा दिलकश बल्लेबाजी तो चौधरी ने की थी। उसने अपने बहत्तर रनों में आठ चौके तो उड़ाये, जबकि मनकेकर ने अपने सत्तानवे रनों में सिर्फ तीन चौके लगाये।"

कमल बाबू ने अपने क्रिकेट ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए और कमलिनी की बात का अनुमोदन करते हुए कहा, "मिसेज शाह, आप ठीक कहती है, चौधरी का अंतिम छक्के वाला प्रहार तो बड़े गजब का था। उसने अपने निष्प्रयत्न प्रयास से हेस्टिंग्स की गेंद को उड़ाकर दीर्घ दक्षिण (लाग ऑफ) सीमा के पार पहुँचा दिया था। सारा स्टेडियम तड़क उठा था। उसके प्रबल प्रहार की वह अनुगूंज अभी तक मेरे कानों में प्रतिध्वनित हो रही है।"

अलबर्ट ने कमल की बात पर व्यंग करते हुए प्रश्न किया, "और फिर उसके बाद क्या हुआ?" अपने सवाल का खुद जवाब देते हुए अलबर्ट ने आगे कहा, "अभी उस गूंजते हुए छक्के की बधाइयों की तालियों की गड़गड़ाहट मद्धिम भी नहीं पड़ी थी, तभी चौधरी ने बढ़कर दूसरी गेंद की रफ्तार का बिना सही अंदाज किये अपने ओछे वार से उसे एक्स्ट्रा कवर (अतिरिक्त व्यवधा) पर हार्पकिंस के हाथों में रख दिया। कमल बाबू मैं कहता हूँ कि दुनिया में जिन्दगी की तरह क्रिकेट का खेल भी जोर और जोश का ही नहीं, बल्कि समझ का भी है।"

अलबर्ट के मन में वह दाँव कसकता रहता था जो कमल किशोर ने अपनी बीसियों शिक्षा संस्थानों को प्रदेशीय क्रिकेट संघ का सदस्य बना कर चलाया था, जिसके फलस्वरूप कमलकिशोर के बहुमत के सामने प्रदेशीय क्रिकेट संघ में अलबर्ट अल्पमत में हो गया था।

प्रदेशीय क्रिकेट संघ की कार्यकारिणी में अपना बहुमत बनाये रखने के लिए इस दाँव का जवाब अलबर्ट कुछ छद्म क्लबों को संघ का

सदस्य बनाकर ही दे सकता था। पर अलबर्ट के लिए बोगस क्लबों का यह आयोजन करना पूरी तरह संभव नहीं था। अपनी मजबूर झुँझलाहट में वह कमल किशोर के प्रदेशीय क्रिकेट संघ पर कब्जा करने के प्रयास को 'लौंडों का जोश' कहा करता था।

कमलिनी अलबर्ट द्वारा अपनी बात कटते देखकर तड़प उठी और कहा, "जिस खेल में हिम्मत से काम न लिया जाये, वह कोई खेल है? तीन घंटे तक इकन्ना, एक-दूनी दो करके बनने वाले रनों के खेल को देखने का सब्र मुझमें नहीं है। मैं तो वह खेल पसंद करती हूँ जो जवाँमर्दी से खेला जाये, फिर चाहे हार हो या जीत।"

अलबर्ट ने उत्तर में अनजाने ही कह दिया, "ऐसा खेल तो दो ही दिन में खत्म हो सकता है।"

कमल को मौका मिला और उसने जड़ दिया, "नहीं, खेल तो धीरे-धीरे ही होना चाहिए जिससे पाँच दिन बाद बराबर ही छूटे और प्रवेश शुल्क से लाखों रुपयों का फ़ायदा हो।"

महीनों से अलबर्ट का ध्यान प्रवेश-शुल्क की आय की तरफ ही लगा हुआ था। कमल की बात से वह भड़क उठा और आग्नेय नेत्रों से कमल को देखते हुए बोला, "जी हाँ, गेट मनी के पूरा हुए बगैर कोई माई का लाल टैस्ट मैच करा ही नहीं सकता।"

कमलिनी को अब तक अलबर्ट और कमल में चलने वाली विद्वेष की अंतर्धारा का पता चल गया था और उसने बात बदलने की गरज से भुवन को आगे खींचकर कहा, "आप दोनों तो खेल के बजाय गेट मनी की बात करने लगे। आप बताइये, भुवन भाई, क्या कल के भारतीय खिलाड़ियों ने विदेशी टीम को अपने सामने से परसी थाली हटा लेने का मौका नहीं दिया?"

भुवन ने बड़ी नम्रता से कहा, "अब, भाभी साहबा, आप लोगों के सामने मेरी क्या वकत? लेकिन कल भारत की स्थिति तो चौथे बल्लेबाज भंसारी की संकल्पहीनता के कारण ही कमजोर हुई।"

हरीशंकर गुप्ता ने भुवन का अनुमोदन करते हुए कहा, "बंबई में तो इस सड़े बल्लेबाज ने एक सौ निन्यानवे मिनट में पूरा सैकड़ा ही

पीट दिया था, पर यहाँ···"

भुवन और गुप्ता की बातों से जब कमलिनी का ध्यान अंसारी की कल की बल्लेबाजी पर गया तो वह चिढकर बोली, "आप ठीक कहते हैं भुवन भाई, कल तो अंसारी को जैसे साप सूंघ गया था। वह बानवे मिनट तक फील्ड को खरोंचता और टटोलता ही रहा और 'खोदा पहाड निकली चुहिया' की कहावत को साबित करते हुए बनाये सिर्फ नौ रन।"

अब सबकी पकड़ मे कल का खेल आ रहा था।

कमलिनी ने बातचीत में सबकी दिलचस्पी कायम रखने के लिए श्यामू कानोडिया पर नजर डाली और पूछा, "श्यामू बाबू, आप तो अंसारी के पुराने मुरीद है, आपकी उसके खेल के बारे मे क्या राय है ?"

श्यामू ने क्रिकेट की उस विद्वमडली के सामने अपनी अकिंचनता दिखाते हुए कहा, "मेरा ख़याल है कि कल गोधूलि के समय अंसारी को गेंद देखने मे कठिनाई हो रही थी।"

कृष्णकान्त ने कहा, "यही बात थी वरना अंसारी के प्रवेश के समय तक तो मनरेकर और चौधरी की साझेदारी में बने शतक ने विदेशी आक्रमण को शिथिल कर दिया था, और अगर···"

"शिथिल क्या बिलकुल अपंग कर दिया था।" कमल ने कहा।

अब सबका ध्यान अंसारी के खेल की विसगतियो पर पहुँच गया और सब उसकी असफलता पर सहानुभूति प्रकट करने लगे।

"भाई यह लबे, इकहरे बदन का अंसारी जंचता तो खूब है !" कृष्णकान्त ने कहा।

"जंचता क्या, मिसेज शाह, कल जब वह विकेट की ओर चला था तो सारे स्टेडियम मे यह विश्वास था कि वह अपने शक्तिपूर्ण प्रहारो से विदेश के आक्रमण को छिन्न-भिन्न कर देगा।" श्यामू कानोडिया ने अपनी व्याख्या का विस्तार करते हुए कहा, "जब अंसारी ने चाय से दस मिनट पहले अपनी निरुद्वेग बल्लेबाजी आरम की तब भी ऐसा लगा था कि शीघ्र ही उसके विविध प्रहार भी देखने को मिलेगे।"

अलबर्ट बडी देर से चुप था, उसने अपनी बात मे बड़ा बल देकर कहा, "अरे नही साहब, इस बीच मे एक बार तो वह हैमंड की गेंद से

आउट होते-होते बचा और तभी यह जाहिर हो गया था कि रोशनी की कमी की वजह से वह गेंद को ठीक तरह से देख नहीं पा रहा है।'

क्रिकेट का पुराना खिलाड़ी होने के नाते वीरेन्द्र कुमार अधिकारी वर्ग में क्रिकेट का विशेषज्ञ समझा जाता था। उस वर्ग में उसकी राय के बगैर क्रिकेट का कोई भी विवाद अर्थहीन समझा जाता था। पर, उस समय कमलिनी आकर्षण का प्रमुख केंद्र बन गयी थी। अपने प्रशंसकों की सूची में प्रदेश के तत्कालीन उच्च अधिकारियों को सम्मिलित होते देखकर वह मन ही मन खुश हो रही थी। कमलिनी को यह तो पता नहीं था कि वीरेन्द्र कुमार क्रिकेट का अध्येता है लेकिन वी० आई० पी० शामियाने में वीरेन्द्र कुमार को अपना प्रथम प्रशंसक समझकर उसने अपनी कृतज्ञता दिखाने तथा कुछ और मेल-जोल बढ़ाने की गरज से कहा, "वीरेन्द्र कुमार जी, आप क्यों चुप हैं, क्या आपको अंसारी के खेल के बारे में यह राय ठीक नहीं लगती कि उसके कल के खेल की वजह से ही आज का सारा खेल बेमजा हो गया है?"

वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "यह मानने के बाद कि अंसारी को शुरू से ही रोशनी की कमी की वजह से गेंद ठीक नहीं दिखायी दे रही थी, किसी के लिए कुछ कहने को रह ही नहीं जाता। फिर इस मजबूरी के बावजूद भी यदि वह सौ मिनट तक अपने विकेट को बचाये रहा तो उसकी प्रशंसा ही की जानी चाहिए। शुरू में तो उसने हेस्टिंग्स की गेंद पर बड़ा ही कुशल कवर ड्राइव (व्यवधा भेद) किया था और इसी तरह आखिर में उसने वहत्थे हेस्टिंग्स को चौको चार भी पढा दिये थे।"

कमलिनी ने वीरेन्द्र कुमार की सराहना करते हुए कहा, "आप ठीक कहते हैं मिस्टर वीरेन्द्र कुमार। हमको राय बनाते वक्त खिलाड़ी की मजबूरी का भी ध्यान रखना चाहिए।"

अलबर्ट बड़ी देर से चुप था। अब उससे न रहा गया और उसने कहा, "अब आप लोग जो कुछ भी कहें पर कल का सेहरा तो मनकेकर के माथे पर बंधा है।"

वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "मिसेज शाह, असल में कल का खेल तो देशमुख की बल्लेबाजी से कमज़ोर हुआ था। वह सत्तर मिनट तक जमा तो

रहा पर बनाये केवल सत्रह रन।"

"आप क्या कह रहे हैं," कृष्णकान्त ने टोका, "देशमुख ने रोजर्स के पहले मेडेन ओवर (अक्षत सक्षम) के बाद ह्वाइट की गेंद पर चौका लगाकर भारत के रनों का जो शुभारंभ किया था, उससे खेल का रंग ही बदल गया था।"

अलबर्ट ने भी देशमुख की तारीफ करते हुए कहा, "अरे साहब, यही देखिये कि आज भी देशमुख भारत का सबसे छोटी उमर का कप्तान है। वह सन् उन्नीस सौ छप्पन में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलने के लिए चुना गया था। तब से हर भारतीय टीम में खेलता रहा है और इस टैस्ट से पहले पाकिस्तान से मैच के समय भी भारत का कप्तान था। अरे साहब, मैं कहता हूँ देशमुख की कप्तानी में अपनी टीम मजबूती और भरोसे के साथ खेलेगी, क्योंकि वह कोई जल्दबाजी नहीं करेगी।"

कृष्णकान्त ने कहा, "मुझे शुरू का खेल सबसे ज्यादा पसंद आया। यह देशमुख की सावधानी का ही नतीजा था कि भारत के आरंभक बल्लेबाजों को पहले घंटे में चौंतीस रन मिले और गेंददाजों के बार-बार बदले जाने पर भी देशमुख और चौधरी ने विदेशी क्षेत्र-रक्षा को इतना क्षत-विक्षत कर दिया था कि हमारी पहली जोडी ही एक घंटे से ज्यादा देर तक खेलती रही। अब कोई कहे कि इसके लिए उन्हें कोई प्रयास नहीं करना पडा तो मेरी समझ में यह बात नहीं आती। देखिये, जिस प्रकार से विदेश के क्षेत्ररक्षकों ने देशमुख को पूरी तरह घेर रखा था, उससे यही कहा जा सकता है कि मैकगिल सबसे ज्यादा खतरा देशमुख से ही समझता था। जब देशमुख इकतालीस के भारतीय योग पर ह्वाइट की एक ऊँची गेंद पर घुमाकर खुला वार करते समय चूक गया था, उस समय तक भारतीय पहरुओं के सामने विदेशी आक्रमण के सभी रहस्य आ चुके थे। यदि आप इस खेल की अंतर्धारा पर ही अपनी नजर रखें तो आप देखेंगे कि देशमुख ने आउट होने तक अपनी कप्तानी का हक अदा कर दिया था, उसने अपने खेल द्वारा आगंतुकों को अपनी रणनीति के हर पहलू को नुमायां करने के लिए मजबूर कर दिया था। यह दूसरी बात है कि इस कोशिश में वह स्वयं सत्तर मिनट तक जमने के बाद भी

सिर्फ़ सत्रह रनों पर बलि हो गया। परन्तु मैं पूछता हूँ, वह और क्या खेलता ?"

हरिशंकर गुप्ता ने फिर कहा, "मिसेज शाह, आप देखिये, देशमुख का नेतृत्व और खेल कितना निष्कलंक था। वास्तव में विदेश की गेंददाजी शुरू से ही बहुत हद तक बचाव की थी और एक समय तो हेस्टिंग्स ने बगैर किसी पृष्ठ (स्लिप) रक्षक के गोलंदाजी की थी। इस सुरक्षापूर्ण नीति के लिए विदेशियों को कोई दोष भी नहीं दिया जा सकता। यह तो अलबर्ट साहब की कारीगरी है कि कनकपुर में गेंद का बल्ले से द्वंद्व असमान है, क्योंकि यहाँ की दूर्वाहीन भूमि तेज अथवा मंद गेंददाजी दोनों ही के लिए निर्मम है।"

वीरेन्द्र कुमार ने कहा,"अँगुली में चोट लग जाने के कारण जेम्स की अनुपस्थिति से विदेशी आक्रमण आरंभ से ही कमजोर हो गया था बावजूद इसके कि मैकगिल ने पश्चिम की तरफ से स्वयं तेज गोलंदाजी की और मंडप की ओर से मंद गति वाले हेस्टिंग्स और हैमंड को जल्दी-जल्दी बदला भी, पर आगंतुक टीम का आक्रमण निस्तेज ही रहा।"

कमलिनी ने श्याम कानोडिया से पूछा, "कहिए श्याम बाबू, अब आपकी क्या राय है ? आप तो विदेशियों के कप्तान के बड़े गुण गाते है।"

इसी समय हरिशंकर ने अपनी कटी हुई बात को पूरा कर लेने के लिए कहा, "मैं तो कहूँगा कि शुरू में मनकेकर मैकगिल की गेंद को बारम्बार इधर-उधर लुढ़का-लुढ़का-कर रनों की जो लड़ी पिरोता रहा, वह भी देशमुख के पद-चिह्नों पर चलकर ही संभव था।"

रहा पर बनाये केवल सत्रह रन।"

"आप क्या कह रहे है," कृष्णकान्त ने टोका, "देशमुख ने रोजर्स के पहले मेडेन ओवर (अक्षत संक्रम) के बाद ह्वाइट की गेंद पर चौका लगाकर भारत के रनों का जो शुभारंभ किया था, उससे खेल का रंग ही बदल गया था।"

अलबर्ट ने भी देशमुख की तारीफ करते हुए कहा, "अरे साहब, यही देखिये कि आज भी देशमुख भारत का सबसे छोटी उमर का कप्तान है। वह सन् उन्नीस सौ छप्पन में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलने के लिए चुना गया था। तब से हर भारतीय टीम में खेलता रहा है और इस टेस्ट से पहले पाकिस्तान से मैच के समय भी भारत का कप्तान था। अरे साहब, मैं कहता हूँ देशमुख की कप्तानी में अपनी टीम मजबूती और भरोसे के साथ खेलेगी, क्योंकि वह कोई जल्दबाजी नहीं करेगी।"

कृष्णकान्त ने कहा, "मुझे शुरू का खेल सबसे ज्यादा पसंद आया। यह देशमुख की सावधानी का ही नतीजा था कि भारत के आरंभक बल्लेबाजों को पहले घंटे में चौंतीस रन मिले और गेंदबाजों के बार-बार बदले जाने पर भी देशमुख और चौधरी ने विदेशी क्षेत्र-रक्षा को इतना क्षत-विक्षत कर दिया था कि हमारी पहली जोड़ी ही एक घंटे से ज्यादा देर तक खेलती रही। अब कोई कहे कि इसके लिए उन्हें कोई प्रयास नहीं करना पड़ा तो मेरी समझ में यह बात नहीं आती। देखिये, जिस प्रकार से विदेश के क्षेत्ररक्षकों ने देशमुख को पूरी तरह घेर रखा था, उससे यही कहा जा सकता है कि मैकगिल सबसे ज्यादा खतरा देशमुख से ही समझता था। जब देशमुख इकतालीस के भारतीय योग पर ह्वाइट की एक ऊँची गेंद पर घुमाकर खुला वार करते समय चूक गया था, उस समय तक भारतीय पहरुओं के सामने विदेशी आक्रमण के सभी रहस्य आ चुके थे। यदि आप इस खेल की अंतर्धारा पर ही अपनी नजर रखें तो आप देखेंगे कि देशमुख ने आउट होने तक अपनी कप्तानी का हक अदा कर दिया था, उसने अपने खेल द्वारा आगंतुकों को अपनी रणनीति के हर पहलू को नुमायां करने के लिए मजबूर कर दिया था। यह दूसरी बात है कि इस कोशिश में वह स्वयं सत्तर मिनट तक जमने के बाद भी

सिर्फ़ सत्रह रनों पर बलि हो गया। परन्तु मैं पूछता हूँ, वह और क्या खेलता ?"

हरिशंकर गुप्ता ने फिर कहा, "मिसेज शाह, आप देखिये, देशमुख का नेतृत्व और खेल कितना निष्कलंक था। वास्तव में विदेश की गेंददाजी शुरू से ही बहुत हद तक बचाव की थी और एक समय तो हेस्टिंग्स ने बग़ैर किसी पृष्ठ (स्लिप) रक्षक के गोलंदाजी की थी। इस सुरक्षापूर्ण नीति के लिए विदेशियों को कोई दोष भी नहीं दिया जा सकता। यह तो अलबर्ट साहब की कारीगरी है कि कनकपुर में गेंद का बल्ले में द्वंद्व असमान है, क्योंकि यहाँ की दूर्वाहीन भूमि तेज अथवा मंद गेंददाजों दोनों ही के लिए निर्मम है।"

वीरेन्द्र कुमार ने कहा,"अँगुली में चोट लग जाने के कारण जेम्स की अनुपस्थिति से विदेशी आक्रमण आरंभ से ही कमजोर हो गया था बावजूद इसके कि मैंकगिल ने पश्चिम की तरफ से स्वयं तेज गोलंदाजी की और मंडप की ओर से मंद गति वाले हेस्टिंग्स और हैमंड को जल्दी-जल्दी बदला भी, पर आगंतुक टीम का आक्रमण निस्तेज ही रहा।"

कमलिनी ने श्याम कानोडिया से पूछा, "कहिए श्याम बाबू, अब आपकी क्या राय है ? आप तो विदेशियों के कप्तान के बड़े गुण गाते हैं।"

इसी समय हरिशंकर ने अपनी कटी हुई बात को पूरा कर लेने के लिए कहा, "मैं तो कहूँगा कि शुरू में मनकेकर मैंकगिल की गेंद को बार-बार इधर-उधर लुढ़का-लुढ़का-कर रनों की जो लड़ी पिरोता रहा, वह भी देशमुख के पद-चिह्नों पर चलकर ही संभव था।"

नयी पौध

हरिशंकर अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि एक हँसती किलकारी मारती चूड़ीदार पोड़पी तेजी से भागती हुई शामियाने में आयी और अलबर्ट से जा भिड़ी। वह संभल भी न पायी थी कि उसके पीछे चीखती-चिल्लाती चौदह-पंद्रह वर्ष की कई लड़कियाँ और लड़के भागते हुए उस सुरक्षित वी० आई० पी० शामियाने में घुस आये। इस धमाचौकड़ी से शामियाने के सम्मानित दर्शक स्तब्ध रह गये। अपने ऊपर गिरने वाली पोड़पी के धक्के से कुर्सी के सहारे टिका हुआ अलबर्ट का इकहरा बदन लुढ़कते-लुढ़कते बचा और उसको संभलने में भी कुछ समय लगा, पर इसके पहले कि कोई कुछ बोले कमलिनी ने उस पोड़पी को अपनी बाँहों में समेटते हुए कहा, "अरे अजरा डियर, यह क्या धूम मचायी हुई है। अपने साथियों से क्या लेकर भाग रही है?"

"कुछ नहीं आंटी, मैंने तो सलमा और महमूद वगैरह से सिर्फ इतना ही कहा था कि मैं पहले पापा को दिखा लूँ, फिर किसी और को दिखाऊँगी?" कमलिनी की बाँहों का सहारा पाकर स्वस्थ होती हुई खिलती कली-सी अजरा ने कहा।

"नहीं, आंटी, यह झूठ बोलती है, हम सबने अपनी-अपनी ऑटोग्राफ बुक्स इसे दे दी थीं और इसने वादा किया था कि यह हम सब की बुक्स पर इंडियन टीम के खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ करा देगी,' अजरा के पीछे भागकर सबसे आगे आने वाली लड़की ने हाँफते हुए कहा, "लेकिन इसने सिर्फ अपनी बुक पर तो ऑटोग्राफ करा लिये और हम

सबसे कह रही है कि भारतीय टीम मिली ही नही, ऑटोग्राफ कहाँ से होते ?"

"यह झूठ है, आटी," अजरा ने कहा, "मेरी ऑटोग्राफ बुक पर इंडियन टीम के किसी खिलाडी का कोई ऑटोग्राफ नही है, पर मेरे यह कहने पर भी, यह सब मेरे पीछे पड़े है कि दिखाओ। इस पर मैंने कहा कि मै पापा के सामने ही दिखाऊँगी। पर पापा तो यहाँ भी नही है। अच्छा आटी, तुम्ही मेरी ऑटोग्राफ बुक देख लो और इन्हें बता दो कि क्या इसमे कही इडियन टीम के किसी खिलाडी का कोई ऑटोग्राफ है।" अजरा ने अपनी ऑटोग्राफ बुक कमलिनी को देते हुए कहा. "लेकिन आटी तुम मेरी ऑटोग्राफ बुक इन्हे देना मत और न यह बताना कि इसमें और किस-किसके ऑटोग्राफ है।"

अब तक अलबर्ट सभल गया था और वह कुछ झुंझलाकर बोला, "अजरा, यह क्या हिमाकत है, क्या तुम यह सब पलटन लेकर इंडियन टीम के पवेलियन मे घुस गयी थी ? भई, बडा गजब करती हो, कहाँ है तुम्हारे पापा ? देखो, मैं उनसे तुम्हारी कैसी शिकायत करता हूँ।"

"पापा को ही तो देखने मैं आयी थी अंकल, अब मुझे क्या मालूम वह कहाँ हैं ? इंडियन टीम के मंडप मे नहीं, मैं तो सवेरे ही इडियन टीम के होटल मे चली गयी थी। वहाँ घंटों तो होटल के बेयरो और मैनेजर ने यह पता ही नही लगने दिया कि टीम के खिलाड़ी कहाँ है और कब आयेंगे। फिर जब वह आये तो उन्हें यहाँ फील्ड पर आने की इतनी जल्दी थी कि किसी ने मेरी बात ही नही सुनी। सारी टीम यहाँ चली आयी और मैं वहाँ अकेली रह गयी। मेरे पास गाडी तो थी ही नही। सवेरे सलमा की गाडी मुझे वहाँ छोड़ आयी थी और मैंने सोचा था कि बाद में मैं एस० एस० पी० चेतन सिंह से कहकर फील्ड तक पहुँच जाऊँगी, पर एस० एस० पी० साहब वहाँ आये ही नही। मैं इडियन टीम के मेम्बरों से बात भी नही कर पायी थी कि सारी टीम अपनी बस में सवार हो गयी और उसके साथ चलने वाली पुलिस की गाडी भी टीम की बस के आगे-आगे चली गयी। वह तो रघुनाथ बीमार पड़ा है, और कोई रास्ता न देखकर मैं उसी के पास बैठी रही। उस बेचारे

ने अपनी बीमारी में भी मेरा बड़ा खयाल किया। उसे देखने के लिए आगे हुए अपने एक मोटर वाले दोस्त से कहकर उसने मुझे यहां पहुँचा दिया और यहां आते ही यह लोग मेरे ऊपर टूट पड़े। आप बता दीजिये न आंटी, मेरी बुक में कहीं इंडियन टीम के किसी भी मेम्बर के ऑटोग्राफ है, और तो और इसमें रघुनाथ के भी आटोग्राफ नहीं हैं, क्योंकि मैंने उससे कहा ही नहीं। अब बीमार आदमी से भी ऑटोग्राफ के लिए क्या कहती—क्या यह अच्छा लगता ? क्यों आंटी, आप ही बताइये।" यह कहती हुई अजरा कमलिनी से और जोर से लिपट गयी।

अलबर्ट मन-ही-मन बड़ा परेशान हुआ। अजरा उसके दोस्त और प्रदेश पुलिस के नव-नियुक्त इंस्पेक्टर-जनरल नियाज अहमद की लड़की थी। कानवेन्ट में पढ़ने से उसके व्यवहार में अपनी उमर के हिसाब से संकोचशीलता का तो सर्वथा अभाव था। साथ ही सर्वोच्च पुलिस अधिकारी की इकलौती बेटी होने के नाते उसे प्रदेश की राजधानी लखनऊ में प्रदेश के अधिकारी वर्ग का भी इतना दुलार मिलता था कि उसके सामने किसी प्रकार का कोई बंधन तो रह ही नहीं गया था। प्रदेश के जो अधिकारी उस समय वी० आई० पी० शामियाने में उपस्थित थे वह सब उसे जानते थे। उसके पिता नियाज अहमद का भी, अपने नेक और मिलनसार स्वभाव के कारण समस्त अधिकारी वर्ग में बड़ा आदर किया जाता था।

दस वर्ष हुए अजरा की माँ शाहिदा की मृत्यु हो गयी थी और तब से लखनऊ में प्रदेश के अधिकांश उच्च अधिकारियों के परिवारों में अजरा का विशेष ध्यान रखा जाता था। उसकी साल-गिरह पर उपहारों का तांता लग जाता था। उसके लिए रोज ही किसी-न-किसी घर से तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन भी भेजे जाते थे। अजरा और उसके पिता को कमलिनी एक अरसे से जानती थी। उस शोख लड़की से कमलिनी को एक खास किस्म का लगाव था। उसका लंबा इकहरा बदन, कंधे से ऊपर तक कटे हुए सुनहरी भलक के बाल, लंबी काली आँखें, पतले-पतले होंठ, हल्के रक्ताभ गौर मुख-मंडल पर पतली छोटी सलोनी नाक, सदा मोती से चमकने वाले दांत, कमलिनी की आँख के आगे उस कल्पना को जाग्रत

कर देते थे जो एकबार अज़रा की माँ शाहिदा से बातें करते-करते उसके मन मे आयी थी कि किसी आगे आने वाले समय मे यदि संभव हो सका तो वह अज़रा को अपने पहले पति नवाब नसीरुद्दीन खाँ से प्राप्त अपने बड़े बेटे असगर से ब्याहकर उसे अपनी बहू बनाकर अपनी कोठी मे ले आयेगी। पर, उसकी पहले की जिंदगी की यह कल्पना पुरानी होकर उसकी दूसरी जिंदगियों के खडहरों के मलबे के नीचे दबकर रह गयी थी। अब उस कोठी पर उसके बड़े भाई का कब्जा था। वह स्वयं बबई में उस कोठी से दूर जा पड़ी थी, जहाँ वह कभी अज़रा को अपनी बहू बेगम बना कर लाना चाहती थी।

असगर भी अब अमरीका मे पढ़ रहा था और वह उसे कई बार लिख चुका था कि पढ़ाई खत्म करने के बाद वह पाकिस्तान चला जायेगा। कमलिनी भी सोचती थी कि शायद असगर के लिए यही ठीक होगा और असगर का भविष्य भी बन सकेगा, क्योंकि उसने सुना था कि हिन्दुस्तान मे लायक मुसलमान लड़कों को अपनी योग्यता के अनुसार जगहें कम मिलती हैं। सरकारी प्रतियोगिताओं द्वारा मिली कुछ नौकरियों को छोड़कर निजी क्षेत्र के उद्योगों में मुसलमान लड़कों को बहुत ही कम जगहे मिलती थी। पुलिस और फौज में तो मुसलमानो के प्रति विशेष रूप से दुराव किया जाता था। आजादी से पहले पुलिस मे मुसलमानों को जो तरजीह दी जाती थी वह खत्म कर दी गयी थी, और अब पुलिस मे उनका पुराना अनुपात चौबीस प्रतिशत से गिरकर केवल नौ प्रतिशत ही रह गया था। फिर, असगर तो अपनी पढाई पूरी करने के बाद रासायनिक विज्ञान का डॉक्टर होने वाला था। कमलिनी के मिलने वालो ने उसे बताया था कि इस क्षेत्र मे आगे काम करने के लिए हिन्दुस्तान मे बहुत ही कम सुविधायें हैं।

अज़रा को देखकर कमलिनी अपने कल्पना संसार मे डूब गयी थी, तब तक अजरा के पीछे आए हुए झुड मे से एक लडकी ने आगे बढकर कहा, "अच्छा तो आंटी, आप ही देखकर बता दीजिये जिससे हम लोग मैच तो देखें।"

कमलिनी ने इस बीच मे ऑटोग्राफ़ बुक खोलकर देखना शुरू किया

और लड़के-लड़कियों का झुंड उसके पास आने लगा तो अजरा ने कमलिनी को छोड़कर उन सबके आगे आकर कहा, "पर तुम सब दूर रहो। हाँ, आंटी यह न बताइयेगा कि इसमें और किस-किस के ऑटोग्राफ हैं। आप बस इतना ही बताइयेगा कि इसमें इंडियन टीम के किसी सदस्य के ऑटोग्राफ हैं या नहीं ?"

अजरा के सामने आने से लड़के-लड़कियों का झुंड तो थोड़ा-सा पीछे हुआ पर वी० आई० पी० शामियाने में स्वयं कमलिनी के साथ बात करने वाले विशिष्ट निमंत्रित दर्शकों को कुतूहल हुआ। वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "देखिये मिसेज शाह, इन लोगों को न बताइयेगा, पर हम लोग तो देखें कि यह सब क्या माजरा है।"

"नहीं, नहीं···नहीं,"—अजरा ने अपनी आवाज़ को एकाएक पंचम से सप्तम में ले जाते हुए कहा, "देखिये आंटी, आप किसी को भी कुछ न बताइयेगा।"

इसी समय सलमा के पीछे खड़े और गहरे पीले रंग की टी शर्ट पहने सोलह वर्ष के एक लड़के ने कहा, "इसमें ऐसी क्या बात है जो अजरा ने इतना रहस्य बना रखा है !"

"उसमें साँप, कनखजूरा या फिर कुत्ता, बिल्ली कुछ भी हो, इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं अनिल, तुम लोग तो सिर्फ इंडियन टीम के किसी खिलाड़ी के ऑटोग्राफ होने पर ही मुझसे शिकायत कर सकते हो।" अजरा ने अपनी लंबी-लंबी आँखों को मटकाते हुए और अपने दोनों हाथों को निषेध की मुद्रा में नचाते हुए कहा।

कमलिनी ने तब तक ऑटोग्राफ बुक खोलकर देख ली थी। उसमें सिर्फ शुरू के दस बारह पृष्ठों पर हस्ताक्षर (ऑटोग्राफ) थे और बाकी सब पृष्ठ खाली पड़े थे। कमलिनी ने गौर से देखा तो उसे पता चला कि विदेशी टीम के तीन खिलाड़ियों को छोड़कर बाकी सबके ऑटोग्राफ उस पुस्तिका में थे। कमलिनी के चेहरे पर कुछ आश्चर्य की रेखायें खिंचती देखकर अजरा फिर बोल पड़ी, "देखिये आंटी···"

कमलिनी ने उन लड़के-लड़कियों से कहा, "मैंने देख लिया, इसमें भारत की टीम के किसी खिलाड़ी के ऑटोग्राफ नहीं हैं।"

सलमा ने पूछा, "फिर इसमें क्या है आंटी ?"

कमलिनी ने अब रहस्य का आनन्द लेते हुए कहा, "नही सलमा, अब यह तो मैं बता नही सकती, क्योंकि अजरा ने मना किया है।"

कमलिनी की बात से सब लड़के-लड़कियों के चेहरे उतर गये। उनमे से कई ने कहा, "चलो मैच देखें, *अब हम अजरा को अपने साथ नही रखेंगे।* यह हमारे साथ बड़ी चालाकी करती है।"

अजरा ने तेजी से कहा, "मैं क्या चालाकी करती हूँ ? बात तो इंडियन टीम के ऑटोग्राफ की थी, वह अगर मैं करा पाती तो सब बुक्स मे कराती, पर इसके अलावा मेरी ऑटोग्राफ बुक मे और किस-किस के ऑटोग्राफ हैं, यह दिखाने की बात तो नही हुई थी।"

"हाँ, हाँ, हमें मालूम है तू इंडियन टीम के होटल मे ठहरी ही नही और टीम के सवेरे घूमकर लौटने के पहले ही कही और चली गयी थी और अब कहती है, वहाँ घंटे-भर तक बैठी रही।" एक दूसरी लड़की ने कहा।

"अच्छा जा, न बता। देख लेना, हम भी इसका कैसा मजा चखाते हैं।" अजरा की मित्र-मंडली के विभिन्न सदस्य अपने-अपने ढंग से विरोध प्रदर्शन करते हुए चले गये और अजरा वी० आई० पी० शामियाने मे विशिष्ट आमन्त्रित दर्शकों के साथ अकेली रह गयी।

मैदान से बाहर

अपने साथियों के चले जाने के बाद अजरा को उदास देख कर कमलिनी ने उससे बड़े प्यार से कहा, "अजरा बेटी, भागते-भागते हाँफ गयी हो, यहाँ बैठकर थोड़ा सुस्ता लो फिर खेल देखना। इस बार तुम मेरे पास बैठ जाना।"

अलबर्ट को भी अजरा पर स्नेह आ गया था और उसने कहा, "लो बेटी, कॉफी पियो और कुछ खा लो।"

कृष्णकान्त ने कहा, "अरे अजरा, तू भारतीय खिलाड़ियों के स्वाक्षर (ऑटोग्राफ़) के पीछे खुद इतनी पागल क्यों होती है। अलबर्ट साहब को अपनी बुक दे देती, यह दोनों टीमों के हस्ताक्षर एक साथ करा देते।"

अजरा अपने साथियों और सहेलियों के नाराज़ होकर जाने से कुछ खिसिया गयी थी। उसने चुपचाप बेयरे द्वारा बढ़ाया हुआ कॉफी का प्याला ले लिया और फिर प्लेट से एक समोसा लेकर कमलिनी के पास ही सामने बैठ गयी।

कॉफी का पहला घूंट पीकर और फिर मुंह में थोड़ा-सा निवाला लेकर बोली, "हाय आंटी, सचमुच बड़ी भूख लगी थी। सवेरे से जल्दी-जल्दी घर ऑटोग्राफ के लिए निकली थी। पहले सलमा के यहाँ गयी। वहाँ यह सब मिल गये, मैंने कहा, "मैं इन सबको नहीं ले जा सकती, इतनी भीड़ देखकर होटल का मैनेजर भी मेरी एक न सुनेगा और हम सब होटल के गेट पर ही रोक दिये जायेंगे। कोई फ़ायदा नहीं होगा, पहले तो सलमा से ही तय हुआ था कि सिर्फ़ हम दोनों ही जायेंगी।"

"हम दोनों लड़कियाँ के अंदर जाने में कोई दिक़्क़त भी नहीं होती। वह होटल का मालिक मुझे खूब जानता है। पापा जब कनकपुर में थे तब उसके होटल में एक खून हो गया था। इसलिए वह पापा के पास आया करता था। वह लाख शुक्रगुज़ार हो, पर आंटी तुम ही बताओ, मैं इस भीड़ को कैसे होटल के अंदर ले जा सकती थी।"

अजरा कुछ उदासी से बोले जा रही थी और वी० आई० पी० शामियानें में जमा सब लोग उसकी बात तन्मयता से सुन रहे थे।

अजरा ने आगे कहा, "जब मैंने मना कर दिया और कहा 'मैं भी नहीं जाती' तब अंजली ने यह सुझाया कि मैं अकेली ही सबकी ऑटोग्राफ बुक्स अपने साथ ले जाऊँ और होटल के मालिक की मदद से भारतीय टीम के सब खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ़ सभी की बुक्स पर करा लूं।"

अजरा की समस्या धीरे-धीरे वी० आई० पी० शामियाने में मौजूद सभी अधिकारियों की समस्या बन गयी थी। सब अजरा से सहानुभूति रखते थे।

कृष्णकान्त ने पूछा, "लेकिन बेटी, वह ऑटोग्राफ़ बुक्स है कहाँ?"

"वह सब मेरी मोटर में ही फेंक आये हैं और मैं सब ऑटोग्राफ बुक्स अपने ड्राइवर को सौंप आयी हूँ।"

अजरा के दुख से दुखी कमलिनी की समझ में एक बात आ गयी और वह बोली, "क्यों अलबर्ट साहब, आपने आज टीमों के लंच में मुझे नहीं बुलाया है?"

अलबर्ट एकाएक चौंक पड़ा, "आपको बुलाने की क्या बात है? आप सब लोग तो मेरे साथ ही लंच पर चलेंगे।"

"तो फिर ठीक रहा"—कमलिनी ने कहा, "अजरा, तुम भी मेरे साथ चलो, पर पहले वह सब ऑटोग्राफ बुक्स अपनी मोटर से ले आओ।"

अजरा का उतरा हुआ चेहरा खिल-उठा, वह कमलिनी से लिपट गयी और रुँधे गले से कहा, "अरे, मेरी अच्छी आंटी, तुम बम्बई क्यों चली गयी? तुम्हारे बिना तो लखनऊ सूना हो गया है।"—और यह कहती हुई अजरा शामियाने से दौड़कर बाहर चली गई।

हरिशंकर ने अजरा की बात सुनकर कहा, "मिसेज शाह, आप क्या

पहले लखनऊ मे थी और हम लोगो के पहुँचने से पहले ही शहर छोड़कर चली गयी। अब पता चला कि पुराने लोग इस शहर की क्यों इतनी तारीफ करते है और आज कल लखनऊ क्यों इतना वीरान-सा लगता है।"

"अच्छा, गुप्ता साहब अब आप लखनऊ की इस पुरानी तहज़ीब का इजहार रहने दीजिये।' कमलिनी ने हरिशंकर गुप्ता पर पुरानी स्मृतियों से छलछलाती हुई अपनी कृतज्ञ नजरें जमाते हुए कहा।

अलबर्ट को ज़रा उलझन हो रही थी, उसने कहा, "लेकिन मिसेज शाह, अजरा के पास तो आठ-दस ऑटोग्राफ बुक्स होंगी। अगर वह उन सब पर एक साथ ऑटोग्राफ कराने लगेगी तो बड़ी मुश्किल होगी।"

कमलिनी ने मुस्कराते हुए कहा, "आपने तो हम सबको ही लंच पर बुलाया है।"

"हाँ, हाँ, इसमे क्या शक है ?"

"फिर हम सब एक-एक ऑटोग्राफ बुक अजरा से ले लेंगे और भारत की टीम के खिलाड़ी हम मे से हरेक की बुक पर ऑटोग्राफ करने मे कोई उलझन नही महसूस कर सकते।" कमलिनी ने अपने प्रशंसकों की ओर देखते हुए पूछा, "क्यों फागुन बाबू ?"

"यह बात तो ठीक है, इसमे कोई दिक्कत भी नही हो सकती।" सभी उपस्थित विशिष्ट दर्शकों ने एक मन से समर्थन किया।

अजरा भागती हुई वापस आ गयी। उसके हाथ में कई ऑटोग्राफ पुस्तिकाएँ थी। उसने यह सब कमलिनी की गोद में डाल दी और कहा, "आंटी, यह ऑटोग्राफ बुक्स आप संभालिये। अब मैं तो मैच देखने जाती हूँ, मेरी ऑटोग्राफ बुक तो आपके पास है ही। इन सब पर भारत की टीम के खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ हो जायें तो फिर मैं इन सबके कान पकड़वा कर उठा-बैठाकर ही इनकी बुक्स वापस दूँगी।"

अलबर्ट ने कहा, "चलो अजरा, तुम भी लंच में चलो।"

"नहीं, अंकल, मैं तो लंच के बाद आकर यह ऑटोग्राफ बुक्स ले लूँगी। तब तक ज़रा मनसा और मनिन्दर से निबटूं। इन दोनों ने ही मन को [illegible] खिलाफ कर दिया,"—यह कहती हुई अजरा भागकर [illegible] हो गयी।

जब कमलिनी एक-एक ऑटोग्राफ बुक सबको बाँट रही थी उसी समय विजय वाटिका के पास वाले सूती मिल की घड़ी में साढ़े ग्यारह के घंटे बजने शुरू हुए और साथ ही सारे स्टेडियम ने बेसाख्ता एक आह भरी। पचास हज़ार कंठों से निकली हुई वह आह वी० आई० पी० शामियाने में भी प्रतिध्वनित हुई। उल्कापात सी उस आह के बाद शोक-ग्रस्त स्टेडियम एकदम शांत हो गया।

श्यामू कानोडिया ने क्रिकेट समीक्षा पर पहले ही मंद स्वर में लगे अपने ट्रांज़िस्टर को तेज कर दिया।

वी० आई० पी० शामियाने में आकाशवाणी के क्रिकेट समीक्षक की आवाज आने लगी, "अंसारी का खेल खतम हो गया। अंसारी को हेस्टिंग्स ने स्क्वेयर लेग (वर्गपद क्षेत्र) पर कैच कर लिया। अब अंसारी उनतालीस रन बनाकर लंच से चालीस मिनट पहले फील्ड से विदा हो रहा है।

"उसका स्थान लेने के लिए मंडप के भारतीय भाग से मणिधर कुमार चल पड़ा है। अंसारी ने आज सवा घंटे में उनतीस रन बनाये।

"अंसारी कल चाय से दस मिनट पहले खेलने के लिए आ गया था और दिवसांत तक एक घंटे चालीस मिनट में दस रन बनाये थे। आज अंसारी ने सवा घंटे में उनतीस रन और बनाये। दो दिन के खेल में अंसारी दो घंटे पचपन मिनट खेला और उसकी रनसंख्या उनतालीस रही।

"अंसारी अब विकेट से मंडप के भारतीय कक्ष की ओर वापस जा रहा है और चारों ओर से दर्शक मंडली तालियाँ बजा-बजाकर उसे शाबाशी दे रही है।

"लोगों का कहना है कि उसका खेल संतोषजनक नहीं रहा। वह इस शृंखला में बचाव की दृष्टि से खेलता रहा है। उसके रनों की प्रगति इतनी मंद रही कि यह लगा कि विजय वाटिका की भूमि पर क्रिकेट का खेल केंचुए की तरह रेंग रहा है। अंसारी मैकगिल की गेंद पर आउट हुआ है। मैकगिल के बाउन्सर (अक्षसामादाघात) में सदा ही एक अनपेक्षित घातक संभावना रहती है। आज यह उसका पहला बाउन्सर था जिसने

को ईर्ष्यायुक्त मुस्कान के साथ देखा और 'लंच पर मिलेंगे,' कहते हुए वह दोनों हरिशंकर के साथ शामियाने के बाहर चले गये ।

कमल किशोर हरिशंकर का साथ नहीं छोड सकता था, उसे अपने नये कालेज के लिए सरकारी अनुदान के बारे मे बात करनी थी । वह भी कमलिनी से विदा लेकर हरिशंकर के साथ चला गया ।

अलबर्ट ने कमलिनी से कहा, "आप यहां आराम से बैठें"—और कुछ दूर बा-अदब खड़े विश्वनाथ को इशारा करते हुए कहा, "देखिये किसी चीज की कमी न हो"—फिर बाहर जाते हुए उसने कमलिनी से माफ़ी मांगते हुए कहा, "मैं जरा बाहर देख लूं, लंच से पांच मिनट पहले यहां आकर आपको ले चलूंगा ।"

अब शामियाने में कमलिनी, भुवन और श्यामू कानोडिया ही रह गये थे । विश्वनाथ अपने बेयरो का काम देखने मे लगा था ।

कमलिनी ने श्यामू कानोडिया से कहा, "श्यामू भाई आप भी मैच देखें, मैं तो लच तक भुवन भाई के साथ यहीं बैठूंगी । हां, इतना करें कि यह ट्रांजिस्टर जरा हल्का कर यहां छोड दें, मैं जब खेल देखने के काबिल समझूंगी तब अदर आ जाऊंगी ।"

श्यामू कानोडिया के चले जाने के बाद कमलिनी ने भुवन से अपनी कुर्सी पास लाकर बैठने का इशारा करते हुए कहा, "देखा आपने भुवन भाई, यह लोग कुमार का खेल देखने गये है । यह क्या बम्बई है ? यहां कुमार लंच से पहले इन चालीस मिनटों मे दस-बारह से ज्यादा रन बना ही नही सकता । हां, अगर अब इस टैस्ट में क्रिकेट का खेल देखना है तो लंच के बाद विट्ठल का खेल देखियेगा ।"

इसी समय आकाशवाणी के समीक्षक की आवाज में फिर तेजी आ गयी ।

"कुमार ने पीछे घूमकर हैमंड की गेंद पर स्क्वायर कट (वर्गाकुश) लगाया है । गेंद सीमा की ओर भाग रही है । उसको रोकने के लिए क्षेत्ररक्षक हार्पकिस भाग रहा है । कुमार और विट्ठल दोनों एक-दूसरे की ओर भाग रहे हैं ।

"स्टेडियम मे करीब पचास हजार दर्शक सभी तरफ खुशी के नारे

लगा रहे है। दूर विद्यार्थी-कक्ष मे सबसे ज्यादा जोश है। वहाँ पर विद्यार्थी उछल-कूद रहे है और घंटे, घड़ियाल एवं भोंपू बजाये जा रहे हैं।

"विट्ठल और कुमार एक-दूसरे के विकेट (यष्टि) पर पहुँच गये है, पर गेंद अभी भी हार्पकिस के आगे-आगे दौड़ रही है। कुमार और विट्ठल फिर वापस दौड रहे है।

"हार्पकिस अभी भी गेंद तक नही पहुँचा है। वह उसके पीछे भाग रहा है। विट्ठल और कुमार उसकी तरफ देखते हुए भाग रहे हैं।

"वह विकेट पर पहुँच गये है। उन्होने दो रन बना लिये, पर हार्पकिस अब भी गेंद से कुछ दूर है।

"कुमार और विट्ठल एक-दूसरे के संकेत पर फिर तीसरे रन के लिए दौड पड़े हैं।

"अब हार्पकिस गेंद के पास पहुँच गया है।

"हार्पकिस गेंद उठा रहा है। उसने गेंद उठा ली है पर अभी कुमार और विट्ठल विकेट से दूर हैं।

"यह क्रिकेट की अनपेक्षित संभावना का क्षण है।

"हार्पकिस गेंद को हैमड की ओर फेंक रहा है।

"हैमड ने गेंद को रोक लिया है पर अब वह अर्थ-पूर्ण क्षण बीत चुका है। कुमार और विट्ठल अपने विकेटों पर पहुँच चुके है। कुमार ने हैमंड की इस गेंद पर तीन रन बनाये हैं। यह तीन रन इस टैस्ट मैच मे उसकी प्रथम उपलब्धि हैं।

"हैमड गेंद फेंकने की तैयारी कर रहा है। अब उसके सामने विट्ठल है..."

कमलिनी ने ट्राँजिस्टर को हल्का करते हुए कहा, "कहिये भुवन भाई, आपके दोस्त कौशल साहब का क्या हाल है?"

"यही तो मैं आपसे पूछना चाहता था। मेरी तो उससे करीब पाँच बरस से मुलाकात ही नही हुई। कहाँ है वह..." भुवन ने पूछा।

"होने को तो कहाँ होते, बम्बई में ही हैं और मजे में हैं।"

"मैंने तो सुना था कुछ बीमार है?"

"अरे वह तो आप कई बरस पहले की बात कर रहे हैं, *उस बीमारी*

में ही तो उन्होंने नये-नये गुल खिलाये थे।"

भुवन ने देखा कि कमलिनी की तबियत कुछ पुरानी बातों की चर्चा करने की हो रही है। उसने बात बढ़ाने की गरज से कहा, "सुना था कि उसकी बीमारी बड़ी लंबी और आशंकापूर्ण थी।"

"हाँ, सो तो थी ही और लंबी बीमारी ही ने कृष्णा को वह मौका दिया जिसकी उसे वर्षों से तलाश थी।"

भुवन को कृष्णा का नाम कुछ जाना हुआ-सा लगा, पर वह ठीक से *याद नहीं कर सका। उसने पूछा, "यह कृष्णा कौन है ?"*

कमलिनी ने अपनी आँखें भुवन पर जमाकर और एक आह खींचकर कहा, "अरे अब आप भी हद करते है, पूछ रहे है, 'कृष्णा कौन है ?' अरे, वही लखनऊ के म्युजिक कालेज वाली कृष्णा जो मुझसे पहले कौशल साहब के दिल मे बसी हुई थी।"

कमलिनी की बात ने भुवन की स्मृति मंजूषा को खोल दिया।

उसे दस वर्ष पहले का वह दिन याद आ गया जब कमलिनी ने एक दिन अजीब हालत में उसके पास आकर ऐसी विचित्र स्थिति उत्पन्न कर दी थी जिसकी कल्पना मात्र से कभी-कभी उसका रोम-रोम अब भी भय से सिहर उठता था।

अपनी उसी हालत मे कमलिनी ने स्वयं अपने शब्दों मे—'कौशल के ऊपर डोरे डालने वाली, काली, कलूटी, खूसट-सी कृष्णा' के उस रूप का परिचय दिया था जिसे वह कृष्णा को बरसों से जानने के बाद भी नही जानता था।

बिना तरद्दुद

कौशल का काम छूट गया था और भुवन उसके घर में मेहमान होने के बजाय मेज़बान बन गया था। नवाबज़ादी कमरुन्निसा बेगम अपनी बहन जेबुन्निसा के साथ नैनीताल गई हुई थी।

कौशल की बेकारी में उसके बीसियों लेनदार उसे तलाश करते हुए हर वक्त कोठी पर आते-जाते रहते थे। कौशल अपने काम के ज़माने में अपनी खातिरदारी के लिए मशहूर था। वह अपने पुराने अंदाज में सबका स्वागत सत्कार करता हुआ, देने के नाम पर आज के बाद कल करता हुआ किसी से कुछ-न-कुछ और उधार ही ले लेता था। उसे उधार लेने में कोई हिचक भी नहीं थी। शहर में कुछ जमीन और एक मकान होने की वजह से थोड़ा-बहुत रुपया उसे आसानी से उधार मिल भी जाता था, और इस तरह उसका ऊपरी खर्चा चल जाता था।

कोठी के खर्चे का भार भुवन पर पड़ गया था। यह उसकी बिसात के बाहर था। उसे लगता था कि अपनी पहली अच्छी नौकरी के शुरू में ही वह एक आर्थिक उलझन में फंस गया है। परन्तु, दो महीने तक कौशल के पास ठहरने के बाद अब उसकी कठिनाई के समय वह पीछे भी नहीं हट सकता था। खर्च के अतिरिक्त भुवन को विशेष चिंता इस बात की थी कि कौशल के साथ दो ही काम हो सकते थे और वह थे, 'शराबखोरी' या फिर 'उसकी या उसके दोस्तों की औरतबाजी के चर्चे।'

भुवन भरसक इन दोनों से दूर रहना चाहता था। इसलिए वह अधिकतर शाम को देर तक अपने दफ्तर में ही बैठा रहता था या फिर

सिनेमा देखने चला जाता था।

एक दिन शाम को सात बजे जब भुवन घर पहुँचा तो कौशल अपनी आदत के अनुसार कहीं जा चुका था। भुवन कपड़े बदल ही रहा था कि एक मोटर फाटक पर रुकी और नवाबज़ादी कमर के ड्राइवर ने ऊपर आकर कहा, "कौशल साहब को नवाबज़ादी साहबा याद कर रही हैं।"

भुवन के यह कहने पर कि कौशल कहीं बाहर गया है, ड्राइवर लौट गया। पर, फिर शीघ्र ही वापस आया और कहा, "नवाबजादी साहबा दरख्वास्त कर रही हैं कि आप ही ज़रा तकलीफ करें।"

पहली मुलाक़ात के बाद भुवन की कमरुन्निसा बेगम से फिर कभी भेंट नहीं हुई थी। पर्दानशीन नवाबज़ादी कौशल की गैरहाजिरी में उससे बात करना चाहती हैं, यह सुनकर भुवन को ताज्जुब भी हुआ, पर बचने का कोई रास्ता भी नहीं था। उसे यह भी ध्यान आया कि कौशल की सूचना के अनुसार नवाबज़ादी नैनीताल गयी हुई थी और वहाँ महीने-भर तक ठहरने वाली थी। इतनी जल्दी कैसे वापस आ गयीं, भुवन ने आश्चर्य से सोचा।

कौशल और नवाबज़ादी के संबंधों के बारे में सोचता हुआ भुवन मोटर के पास पहुँचा तो क़मरुन्निसा बेगम ने बुरके का नकाब उलटकर हाथ के इशारे से उसे करीब बुलाकर कहा, "मेरी तबियत ठीक नहीं है, आप ज़रा डॉ० मिस जोजेफ़ को टेलीफोन करके उसे यहाँ बुला लें। उसे मेरी बीमारी का हाल मालूम है। उसके आने तक मैं यहीं ठहरती हूँ।"

फाटक पर जलने वाली रोशनी में भुवन ने कमरुन्निसा बेगम को पहली बार देखा। वह घबरा गया। नवाबज़ादी का चेहरा पीला पड़ रहा था। गढों में घुसी हुई आँखों के नीचे कालिमा छायी हुई थी। रंग गोरा जरूर था, और नक्श भी अच्छे थे पर उस समय पीले गालों पर हल्के गढे पड़े हुए थे। उसकी आवाज से कमजोरी झलक रही थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से पीड़ा फटी पड़ती थी। अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध नवाबज़ादी क़मरुन्निसा के उस रूप को देखकर भुवन अवाक् रह गया। वह कुछ कह न सका। कमरुन्निसा ने फिर कहा, "मैं ऊपर

चलती हूँ अगर आपको पता हो कि कौशल साहब कहाँ मिलेंगे तो ड्राइवर को उन्हें खबर करने के लिए भेज दिया जावे।"

"यह तो पता नही है कि वह कहाँ गया है। ज्यादातर तो वह ग्यारह बजे रात तक ही लौटता है," भुवन ने कहा।

"अच्छा तो फिर, आप जरा टेलीफोन कर आइये।" यह कहते हुए नवाबजादी मोटर से उतरकर जीने की तरफ बढ़ गयी।

भुवन का ऑफिस पास ही था। वहाँ रात को भी दवाइयाँ बेचने का प्रबन्ध था। जब उसने अपने दफ्तर मे जाकर डॉ० मिस जोजेफ़ को टेलीफोन मिलाया तो उसे लगा कि वह आने के लिए तैयार ही बैठी थी। कमरुन्निसा बेगम का संदेश मिलते ही उसने कहा कि वह पन्द्रह-बीस मिनट मे कोठी पहुँच जायेगी। जब भुवन कोठी का पता बताने लगा तो उसने कहा कि उसे पता मालूम है और वह वहाँ आ भी चुकी है।

टेलीफ़ोन करके लौटने के बाद भुवन ने देखा कि कमरुन्निसा बेगम ने कौशल के कमरे मे अपना सामान रखवा लिया था। नौकर सुलेमान को बुलाकर कमरे के बाहर की तरफ खुलने वाली खिडकी के पास से पलंग हटवाकर अंदर वाले कमरे मे बिछवा लिया था और वही स्टोव मंगवाकर एक बड़े से भगोने मे पानी गरम होने के लिए रखवा दिया था। पलग के पास एक छोटी-सी मेज पर दवाइयों के पैकेट, पट्टियाँ और रूई के बंडल रखे थे। वह स्वयं पलंग के सिरहाने से टिकी अधलेटी-सी बैठी थी।

कमरे का वातावरण रोगिल हो गया था पर उसमें कही जिंदगी के इकतारे का अत्यंत मंद और संसार की अन्य आवाजो से दबा, प्राय: न सुनाई पड़ने वाला स्वर भी हल्के-हल्के झंकृत हो रहा था।

कौशल का वह कमरा उसके कपड़े पहनने के काम में आता था। एक सूटकेस, एक अटैची और दो पुराने बड़े संदूक पीछे वाले कमरे के बंद दरवाज़े के सामने रखे थे। बाँयी तरफ दीवार मे मिली कपड़े रखने और टाँगने की अलमारी थी। दाहिनी तरफ दीवार के साथ एक पुरानी ड्रेसिंग टेबल पर दो-चार कंघे, दो-तीन बुरुश, तेल, क्रीम, और स्नो की शीशियाँ तथा दाढ़ी बनाने का समान बिखरा पड़ा था।

कमरे के बीच में पलंग बिछवाकर कमरुन्निसा सिरहाना लगाये बैठी थी। कमरे के एक कोने में स्टोव पर पानी गरम हो रहा था। पलंग के पास एक छोटी मेज और उसके पास दो कुर्सियाँ रखी थीं। भुवन को देखकर उसे बैठने का इशारा करते हुए नवाबजादी ने कहा, "माफ कीजिये, आपको बड़ी जहमत दे रही हूँ, पर क्या करूँ बड़ी मजबूरी है।"

"नहीं कोई बात नहीं है,"—भुवन ने औपचारिक रूप से कहा।

"आप तो अच्छे हैं, और कौशल साहब के क्या हाल है?"

"मैं तो अच्छा ही हूँ, हाँ कौशल को किसी नये काम की तलाश है।"

"अरे, काम की ऐसी क्या फ़िक्र है? अब जब फ़ुरसत मिली है तो कुछ दिन आराम कर लेना चाहिए। मैंने तो उनसे नैनीताल चलने को कहा था, पर वह काम की तलाश की वजह से ही नहीं चले थे। आजकल उनका क्या प्रोग्राम रहता है?"

भुवन को ताज्जुब हुआ कि नवाबजादी को कौशल की फिक्र तो थी पर उसके काम की नहीं। उसने कहा, "प्रोग्राम तो वही पुराना है। आज दिन-भर तो वह यहाँ कोठी में ही था। अब शाम हुई है, दोस्तों के साथ कहीं खाने-पीने चला गया होगा।"

"शराब तो ज्यादा नहीं पीने लगे है?" नवाबजादी ने आशंकापूर्ण स्वर में पूछा।

"नहीं, शराब तो जैसी पहले पीता था वैसी ही अब भी पीता है। हाँ, उसको अपने दोस्तों के साथ देर जरूर हो जाती है।" भुवन ने अपनी तरफ से कौशल को बचाते हुए उत्तर दिया।

"और वह उनकी कृष्णा तो नहीं आई?"

"कृष्णा, यह कौन है?" भुवन ने पूछा।

"आप नहीं जानते कृष्णा को? अरे वही जो इनके साथ इलाहाबाद में पढ़ती थी। उसकी बड़ी बहन कमला ने कौशल साहब के चचाजाद भाई रामनाथ के साथ लव-मैरिज की है। कृष्णा भी अब यहीं अपने जीजा के यहाँ रहकर म्युजिक कॉलेज में पढ़ रही है।"

"नहीं, उसे तो मैंने नहीं देखा।" भुवन ने उत्तर दिया।

"आपको याद नहीं है। आप उसे जानते जरूर होंगे। आप भी

तो उन्ही दिनों युनिवर्सिटी मे थे। आपने भी देखा या सुना होगा कि उस समय कौशल साहब एक मोटी-सी, काली लडकी के पीछे चक्कर लगाते रहते थे।"

"हाँ याद आ गया,"—भुवन ने कहा, "हम लोगो के साथ एक कृष्णा पढती थी, पर वह बी० ए० में कुछ महीने पढने के बाद ही चली गयी थी। उससे तो कौशल का कोई खास मिलना नही था।"

"तो फिर आप क्या जानते हैं, खाक ? कृष्णा ने ही तो इनको बरबाद किया था। यहाँ आने के बाद जो उसका इनसे मिलना-जुलना दुबारा शुरू हुआ तो सब हदें टूट गयी। सारे शहर और रिश्तेदारों में चर्चा होने लगी। वह रोज ही अपने कॉलेज के बाद यहाँ आ जाती थी। कुछ अरसे पहले यह कोठी ही कृष्णा भवन के नाम से मशहूर हो गयी थी। मेरा तो उन दिनों कौशल साहब से कम ही मिलना-जुलना था, नई मुलाकात थी।"

"अच्छा," भुवन ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "मगर पिछले दो महीने से, जब से मैं यहाँ आया हूँ, मुझे तो वह यहाँ कही दिखायी नही दी।"

"अरे नही दिखाई दी तो खुदा का शुक्र है।" कमरुन्निसा ने एक लंबी सास लेकर कहा, "पर एक जमाना था जब वह रोज शाम को पाँच बजे यही चाय पीती मिलती थी।"

"जब वह घंटे दो घंटे बैठकर चली जाती थी तब कौशल साहब उसकी जुदाई के गम को गलत करने के लिए अपने कुछ दोस्तों के साथ शराब पीना शुरू करते थे और साथ ही यहाँ रमी, ब्रिज या फलाश की मजलिस लग जाती थी। यह सिलसिला आधी रात के बाद तक चलता रहता था। इसी दौरान कौशल साहब को गाना सुनने का शौक भी लग गया था और बरबादी का एक नया रास्ता खुल गया था।"

"लेकिन अब यह कुछ नही होता। यह सब रुका कैसे ?" भुवन ने पूछा।

"रुका क्या खुद ही ? रोका गया, और इस रोकने में मेरी इज्जत धूल मे मिल गई। चार बरस हुए जब इनमे मेरी मुलाकात हुई, तब मैंने देखा

कि यह बरबादी की तरफ बढ़ ही नहीं रहे है बल्कि दौड़ रहे है। मुझसे न रहा गया। एक दिन मैं यहाँ चार बजे शाम को अपनी जेब बाजी के साथ ग्राकर बैठ गई। कौशल साहब ने हम लोगों के लिए चाय मगाई। चाय पीते हुए बाजी ने कहा, 'कौशल साहब ग्राज हम लोग यही खाना खायेंगे।' कौशल साहब इनकार कैसे करते। सुलेमान को हुक्म हो गया। खाना बनने लगा। सुलेमान जाकर मुर्गा ले ग्राया।

"थोड़ी देर बाद कृष्णा भी ग्रा गई।

"भुवन जी, उस दिन, मैंने कृष्णा को पहली ही बार देखा ग्रौर हैरत मे पड़ गई। फिटकार बरस रही थी उसके लंबे काले मोटे-से चेहरे पर, बेरौनक़ शक्ल, बुझी हुई-सी ग्राँखें। पता नहीं क्या देखते थे, ग्रापके कौशल साहब उस नूसट-सी लड़की मे? कपड़े भी ऐसे पहने थी, जैसे हमारी बेबी की मास्टरनी पहनती है।

"कौशल साहब ने हमारी मुलाकात करवाई।

"जेब बाजी ने पूछा, 'ग्राप म्युज़िक कॉलेज मे पढती है पर यहाँ कौशल साहब से कौन-सा राग सीखती हैं।'

"बस जवाब क्या देती वह, देखती ही रह गई हम दोनो को।

"बाजी ने फिर कहा, 'ग्राज तो ग्राप हमारे साथ ही खाना खाइये, कमर खुद मुर्ग पका रही है। कौशल साहब ने हमारी दावत की है।'

'नही जी, माफ़ कीजिये,' उसने सकपकाकर कहा, 'मुझे तो जरा जल्दी ही घर जाना है।'

"कौशल साहब भी कुछ कह न सके ग्रौर कुछ देर बाद ही वह चुप-चाप चली गई।

"फिर तो हम दोनों बहनों ने दस्तूर बना लिया। हम दोनो रोज़ चाय के वक्त यहाँ ग्रा जाती थी ग्रौर फिर ख़ाना खाकर ही वापस जाती थी।"

"ग्रौर कृष्णा ?" भुवन ने पूछा।

"कृष्णा दो-तीन दिन तक तो ग्रायी, पर जब उसने देखा हम दोनों रोज ही यहाँ मिलती हैं तो उसने ग्राना ही छोड़ दिया।"

"कौशल साहब के दोस्तों ने भी धीरे-धीरे ग्रपनी तफ़रीह के दूसरे

कूवत से भाटे में तब्दीलकर उतार नहीं देता, तब तक वह बदहवास-सी मन ही मन तड़पती रहती है। दरअसल उनकी सारी चुप्पी उनके अदरूनी उफान के ऊपर नकाब-भर होती है।"

भुवन ने कहा, "रमाकान्त भी तो बड़ी सूझ-बूझ का आदमी था। वह हम लोगों से दो वर्ष पहले युनिवर्सिटी से एम० ए० पास करके दिल्ली में ऊँची सरकारी नौकरी पा गया था।"

कमरुन्निसा ने कहा, "रमाकान्त से तो मैं कभी मिली नहीं, पर जहाँ तक मैंने सुना है, वह ज्यादातर पढ़ने-लिखने में मशगूल रहता था और लंबी उम्र तक उसकी शादी नहीं हुई थी। मेरा खयाल है कि लड़कियों से दूर और किताबों में ही लगे रहने की वजह से उसकी भी जिस्मानी ख्वाहिश इतनी तेज़ हो चुकी थी कि जब कृष्णा से उसकी मुलाकात हुई तब तक उसको औरत के मामले में अच्छे-बुरे की तमीज करने की तबियत ही नहीं रह गई थी। कृष्णा भूखे रमाकान्त के सामने परसी थाली की तरह पहुँच गयी। बस औरत मर्द का वही पुराना ज्वार-भाटा इन लोगों का इश्क बनकर बरसों चला। अरसे तक दोनों कुदरत का वही पुराना खेल खेलते रहे। जब रमाकान्त को होश आया और उसने कृष्णा की असली सूरत देखी तब उसने शादी करने का इरादा छोड़ दिया पर जाहिरा तौर पर शादी की बात बरसों टालता रहा। लेकिन कृष्णा उस पैसे वाले कामयाब ऊँचे सरकारी अफसर को कब छोड़ने वाली थी? उसने इश्क का ऐसा दम भरा कि खुदा की पनाह! फिर सोसाइटी का दबाव, बेचारा शरीफ रमाकान्त अपने पागलपन की बेहोश बातों से मुकर भी न सका और शादी हो गयी। यही नहीं, यहाँ तक कहा जाता है कि एक दिन कृष्णा के वालिद ने रमाकान्त की छाती पर पिस्तौल रख दिया, और कहा, 'तुम क्या समझकर मेरे घर आते-जाते रहते थे? क्या समझकर कृष्णा के साथ घूमते-फिरते थे? क्या तुमने मेरे घर को कोई रंडी का कोठा समझा था? तुम्हारी तबियत बदलने की वजह से मेरी इज्जत तो सरे बाजार धोई नहीं जा सकती।'

"रमाकान्त ने मजबूर होकर शादी कर ली पर कृष्णा से यह भी कह दिया कि शादी के बाद खाना, कपड़ा और खर्चा देने के सिवाय मेरा तुम से कोई वास्ता नहीं रहेगा।

"वही हुआ। कृष्णा, कई बरस दिल्ली में रमाकान्त के पास रहने के बाद और उससे हर तरह से मायूस होने के बाद यहाँ अपने जीजा के यहाँ आकर म्यूज़िक कालेज में पढ़ने लगी। तभी उसकी कौशल साहब से दुबारा मुलाकात हुई। यूनिवर्सिटी की पुरानी जान-पहचान, कुछ दूर-दराज़ की मजाक करने की रिश्तेदारी, कौशल साहब की लच्छेदार बातें करने की आदत, कृष्णा को घूमने-फिरने की छूट, फिर क्या था रोज़ ही यहाँ चाय पर सगत होने लगी और इश्क की वह पुरानी मुरझाई हुई क़लम, जो कृष्णा के दिल्ली जाने के बाद बिलकुल ही सूख गयी थी, मुहब्बत की नयी कोंपलों और कलियों से भर गयी।"

भुवन से कौशल ने कभी कृष्णा का जिक्र नहीं किया था। वह यह सारी दास्तान सुनकर चुप रह गया।

उसी समय मोटर का हार्न बजा और सुलेमान, मिस जोजेफ के साथ उसका बैग लिये ऊपर आया। डॉ० मिस जोजेफ के साथ एक नर्स भी थी।

नवाबजादी क़मरुन्निसा बेगम ने कुछ उठते हुए डॉक्टर मिस जोजेफ का स्वागत किया और कहा, "आइये, डॉक्टर साहब, मैंने आपके हुक्म के मुताबिक सब सामान तैयार कर लिया है।"

फिर उसने भुवन का परिचय देते हुए कहा, "यह कौशल साहब के दोस्त हैं, मि० भुवनेश्वर प्रसाद सिनहा। यहीं ठहरे हुए हैं। कौशल साहब कहीं गये हैं, अभी आते ही होंगे।"

डॉ० जोजेफ ने पूछा, "क्या उनका इंतजार करना होगा। किसी के दस्तखत तो जरूरी है।"

नवाबजादी ने कहा,"नहीं, उनका इंतजार करने की कोई जरूरत नहीं है। भुवन जी ज़रा आप ही दस्तखत कर दें।"

डॉक्टर जोजेफ ने अपने छपे हुए पैड पर अपने हाथ से लिखी हुई एक चिट्ठी भुवन के सामने रख दी और कहा, "आप इस पर दस्तखत कर दीजिये।"

भुवन ने उस कागज पर नजर डाली तो देखा कि उसमें किसी मोहम्मद उमर का नाम लिखा था, "आपकी बीवी हाजरा बेगम को गर्भस्राव

हो रहा है। उसकी हालत देखते हुए गर्भपात कराना आवश्यक है। मेहर-बानी कर इस कागज पर दस्तखत कर गर्भपात के लिए अपनी मजूरी दे।"

भुवन ने आश्चर्य से नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम की तरफ देखा। वह खिलखिला कर हँस पड़ी और बोली, "लीजिये घर बैठे आपको बिना किसी तरद्दुद के बीवी मिल गयी। मोहम्मद उमर के नाम से दस्तखत कर दीजिये और लिख दीजिये 'मुझे कोई एतराज नहीं है'।"

भुवन कुछ समझ नहीं पाया, उसने कुछ कहना चाहा लेकिन उसके मुँह खोलने से पहले ही नवाबज़ादी कमर ने कहा, "अरे आप क्यों परेशान होते हैं, ऑपरेशन तो मेरा होने वाला है, और डॉक्टर जोज़ेफ मेरे ऐसे तीन ऑपरेशन कर चुकी हैं। यह कागज़ तो सिर्फ़ डॉक्टर जोज़ेफ के रेकार्ड के लिए है।"

प्यार का उत्तराधिकारी

पन्द्रह वर्ष बाद विजय-वाटिका के उस बी० आई० पी० शामियाने में भुवन को उस दिन एग्ज़ीबिशन से पहले खिलखिलाकर हँसती हुई नवाबज़ादी कमरुन्निसा की याद आ गयी। जब कमलिनी कृष्णा का ज़िक्र कर रही थी तब उसको शायद याद नहीं था कि वह खुद किस होशियारी से कृष्णा और कौशल के इश्क को तोड़कर, कौशल को हथियाकर बम्बई ले गयी थी। वहाँ दोनों पति और पत्नी की तरह रहते थे। यद्यपि जहाँ तक भुवन को मालूम था कि उन दोनों ने शादी की सिर्फ वही रस्म अदा की थी जो दुनिया की आँखों से बचकर ही पूरी की जाती है। हाँ, यह जरूर था कि बम्बई जाने से पहले नवाबज़ादी कमरुन्निसा बेगम ने अपने उस शौहर से तलाक ले लिया था जिसे वह हमेशा गँवार और हूस कहा करती थी।

भुवन ने पूछा, "पर बम्बई में कृष्णा कैसे पहुँच गयी?"

"मैं आपको क्या बताऊँ?" कमलिनी ने जवाब दिया, "चार वर्ष हुए कौशल के आप ही सरीखे एक दोस्त शाह साहब इंग्लैंड जा रहे थे। चार महीने का प्रोग्राम था। मैंने कहीं शाह साहब से कह दिया कि आप मेरे चलने का भी इन्तज़ाम कर दीजिये। बरसों से इंगलैंड गयी नहीं थी—सोचा दो-चार महीने घूम-घाम आऊँगी। उस ज़माने में बाहर जाने में इतनी दिक़्कत भी नहीं थी। शाह साहब के साथ आने-जाने का इन्तज़ाम होने से बड़ी आसानी हो गयी। कौशल साहब का जाना तो हो नहीं सकता था और पूछने पर खुद ही उन्होंने मेरे जाने पर बहुत ज़ोर

दिया पर मेरे जाते ही यह बीमार पड गये। उस समय कृष्णा बम्बई में भारतीय समुद्री सेना के अफसर कैप्टेन रघुवीर के साथ रहती थी, मेरी गैर-मौजूदगी में वह इनको देखने जा पहुँची। रमाकान्त के बाद कौशल से दोबारा इश्क चलाने और फिर कैप्टेन रघुवीर के साथ नेवी के अफसरों से मिलते-जुलते रहने से उसकी सब झिझक दूर हो चुकी थी। कौशल को भी तीमारदारी की जरूरत थी और जब कैप्टन रघुवीर अपनी समुद्री ड्यूटी पर चले गये तो वह कौशल के पास ही आकर रहने लगी। कुछ ही दिनों मे कौशल की बीमारी तो चली गयी पर तीमारदारी होती रही। फिर खुदा जाने कैसी और क्या बीमारी थी? मैं तो भला-चंगा ही छोड़कर गयी थी और जब चार महीने बाद लौटी तब भी भला-चगा पाया।"

"शाम को जब कौशल का दोस्त गिडवानी क्लब मे मिला तब मालूम हुआ कि कौशल बम्बई मे ही है, यह सुनते ही मैं गिडवानी के साथ टैक्सी लेकर सीधी घर गयी तो देखा कौशल साहब अपनी पुरानी अदा मे गाव-तकिया लगाये बैठे थे, सामने शराब का गिलास रखा था और कृष्णा पास बैठे गुनगुना रही थी।

'गर मुझसे प्यार होता,
मेरी खामियों से दुलार होता'

यह देखकर मेरे बदन में आग लग गयी और मैंने कहा, "कौशल तुम्हें शर्म नही आती?"

कौशल ने जवाब दिया, "शर्म किस बात की, तुम अपने नये प्रेम-पात्र शाह के साथ इंगलैंड में ऐश करने जाओ, लौटकर क्रिकेट क्लब में ठहरो और मैं यहाँ बीमार पड़ा-पडा शर्म करता रहूँ।"

मैंने कहा, "कौशल मैंने तुम्हें कहाँ-से-कहाँ पहुँचा दिया। बेकार थे फिर भी शानो-शौकत से रखा, हजारों रुपये तुम्हारे ऊपर खर्च किये और उसका यह बदला दे रहे हो।"

कौशल ने उसी बेहयाई से जवाब दिया, "तुमने जो खर्च किया उसके बदले मे अपने पुराने शौहर नवाब नसीरुद्दीन को छोडने के बाद तुमने मुझसे पूरी-पूरी खिदमत ली। तुम्हारे लिये मैंने घर-बार छोड दिया। पर

यहाँ आने के बाद तुमने अपना बुरका क्या छोड़ा, हर किस्म की शर्म और हया को भी छोड़ दिया। अब तुम क्रिकेट क्लब में शाह की सोहबत का शौक पूरा करो, उनकी बगलें गर्म करो और मुझे मेरे हाल पर छोड दो।"

"मैं पहले ही से उसकी हरकतों से ऊब चुकी थी। उलटे पैर लौट आयी। कई महीने तक क्रिकेट क्लब में ही रही। हम दोनों एक-दूसरे से अलग हो गये। शाह साहब ने मुझसे अपने ही घर रहने के लिए बार-बार इसरार किया तब मैंने उनकी बात मान ली।"

भुवन ने पूछा, "क्या आपकी कौशल से फिर कोई मुलाकात नहीं हुई?"

"मुलाकात तो कभी-कभी हो ही जाती है। हम दोनों बम्बई में ही रहते हैं। पर कौन क्या करता है इससे हम दोनों को कोई वास्ता नहीं है। हाँ, कभी-कभी सोचती हूँ कि अगर मैं इंगलैंड न जाती तो शायद कृष्णा, कौशल पर काबू न पा सकती। फिर यह खयाल भी आये बगैर नहीं रहता कि अपने इंगलैंड घूमने के शौक की वजह से ही मुझे यह खमियाजा उठाना पड़ा।"

हमेशा जीवन के उत्साह से उमगती हुई कमलिनी की आँखों से अपने व्यतीत की त्रुटियों के प्रति एक अपराध भावना झाँक रही थी।

वह उदास हो गयी। लेकिन यह भी स्पष्ट था कि उसकी उदासी कौशल को खोने के कारण नहीं थी। उसकी ग्लानि का कारण थी—कृष्णा। जिसने उसे उसके ही मोहरे से मात दे दी थी। यों शायद वह चार महीने शाह के साथ इंगलैंड में घूमने-फिरने के बाद क्रिकेट क्लब में कौशल को छोड़ने के ही इरादे से ठहरी थी। पर उसके आत्मसम्मान को इस बात से ठेस लगी थी कि कौशल ने उसे वह मौका ही नहीं दिया कि वह उसे भी नसीरुद्दीन की तरह छोड दे। उसने कमलिनी की अनुपस्थिति में खुद ही उसे छोड़ने का उपक्रम कर लिया, और वह भी उस काली, बगूटी-सी कृष्णा के लिए, जिसे कमलिनी अपनी जूती के बराबर भी नहीं समझती थी।

कमलिनी को उदास देखकर और कुछ-कुछ उसकी उदासी को समझने के कारण भुवन के मन में एकाएक यह प्रश्न उठा कि क्या नवाब-

जादी कमरुन्निसा कभी अपने पहले शौहर नवाब नसीरुद्दीन खाँ के बारे में भी कुछ सोचती होगी या नहीं ?

भुवन को याद था कि उसका पहला शौहर नसीरुद्दीन, नवाब तो कहलाता था पर उसके बाप-दादों की जायदाद सब कर्ज़े में बिक गयी थी। वह अपने जेब-खर्च तक के लिए नवाबजादी कमर पर निर्भर रहता था। जब कमरुन्निसा कौशल की मदद से उसे तलाक देने की तजवीजें बना रही थी तब वह बेबस होने की वजह से तरह-तरह की खुशामद करके अपनी शादी कायम रखना चाहता था। यहाँ तक कि कमरुन्निसा बेगम के कौशल के पास आने-जाने में भी कोई बाधा नहीं डालता था।

नवाबजादी उन दिनों उसे दुरदुराती रहती थी।

इंगलैंड से लौटकर क्रिकेट क्लब में ठहरने की योजना भी शायद कमलिनी ने इसीलिए बनायी थी कि कौशल उसकी खुशामद करने लगे और उसको शाह के साथ घूमने-फिरने तथा मिलने-जुलने की पूरी छूट मिल जाय।

कृष्णा से भी कमलिनी को यही शिकायत थी कि उसने अपने अप्रत्याशित अकस्मादाघात से नवाबज़ादी कमरुन्निसा बेगम की यष्टि-भंग कर उसे कौशल के जीवन-प्रांगण के बाहर कर दिया था।

भुवन स्वयं कौशल से वर्षों से नहीं मिला था लेकिन वह यह जानता था कि कौशल किन्हीं मजबूरियों और अपनी शराफ़त की वजह से बंबई में कमलिनी को लेकर रह तो रहा था, पर, उसके मन में कहीं-न-कहीं यह बात उठती रहती थी कि उसने गलती की है। तलाक से बहुत पहले नवाब नसीरुद्दीन से कौशल की दोस्ती हो गयी थी। नसीरुद्दीन ही बड़े आदर से कौशल को पहले-पहल अपने घर ले गया था। उसी ने जिद करके कमर को कौशल से मिलाया था और फिर बुरक़ा हटाकर बात करने पर भी ज़ोर दिया था।

नसीर मछली का छोटा-मोटा व्यापार करता था। उसी सिलसिले में वह कलकत्ते जाता रहता था। उसकी किस्मत ऐसी थी कि उसको अक्सर अपने काम में घाटा होता था। हर नुकसान के बाद वह नवाबज़ादी कमरुन्निसा से रुपया माँगने के लिए मजबूर हो जाता था।

व्यापार के सिलसिले मे नसीर की गैरमौजूदगी के लंबे अरसे में कौशल का कमरुन्निसा से मिलना-जुलना बढ गया था। लेकिन जब नवाबजादी ने जिद करके नसीर को तलाक दिया तब तक किसी को खयाल भी नही था कि वह कौशल के साथ बम्बई मे रहने चली जायगी।

कौशल को भी इसकी कोई सभावना नही दिखायी देती थी और न उसके मन मे इस बात की कोई उत्सुकता ही थी। इसलिए उसने कमर को समझा-बुझाकर तलाक के एवज मे नसीर को ज्यादा-से-ज्यादा रुपया दिलवाया था। तलाक के कुछ समय बाद ही कौशल खुद बेकार हो गया था। उधर कमर ने अपने तलाक की खुशी मे अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बम्बई-भ्रमण की योजना बना डाली थी।

इस अरसे मे उसका कौशल से लगाव इतना बढ गया था कि उसने कौशल को अपने साथ बम्बई चलने का निमत्रण दिया था। अपनी बेकारी मे कौशल ने भी सोचा कि बम्बई मे अपनी किस्मत आजमाकर देखे। नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम और कौशल बम्बई के एक होटल मे अलग-अलग कमरो मे कई महीने ठहरे थे। कुछ समय बाद कौशल का काम चल निकला था और वह लखनऊ के चिकन के काम की साडियों और दूसरे कपडो का बडा व्यापारी बन गया था। इस काम मे उसे नवाबजादी से रुपये की भी मदद मिली थी।

धीरे-धीरे कौशल ने बम्बई मे ही रहने का निश्चय कर लिया था और दादर में एक अच्छा-सा फ्लैट लेकर होटल मे रहना छोड़ दिया था।

कुछ अरसे के बाद कमरुन्निसा परिवार के सदस्यो के साथ लौट गयी थी, लेकिन फिर कुछ हफ्तों बाद वह अकेली बम्बई वापस आकर कौशल के फ्लैट मे ही ठहर गयी थी। कौशल भी अकेला ही था और साथ रहने की वजह से दोनो ने अपने को पति-पत्नी बताना शुरू कर दिया था। अपने पुराने जान-पहचान वालो से वह दोनो आवश्यकतानुसार यह कह देते थे कि उन्होने सिविल मैरेज कर ली है।

एक परेड

वक्त ने कौशल और कमरुन्निसा बेगम को साथ तो कर दिया था, पर उनकी जिंदगी की हकीकत सिर्फ उन दोनों को ही मालूम थी।

भुवन जब-जब अपने काम के सिलसिले में बंबई जाता था तब-तब दोनों उसकी बड़ी आवभगत करते थे। यह सिलसिला बरसों चलता रहा था।

नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम, दादर के फ्लैट में कमलिनी कौशल ही बनकर अवतरित हुई थी। उसने शीघ्र ही अपनी तहज़ीब और मिलनसार तौर-तरीकों से आस-पास के रहने वालों तथा कौशल के मिलने-जुलने वालों का मन मोह लिया।

गुलाम मोहम्मद शाह से कौशल की मुलाकात अपने व्यापार के सिलसिले में हुई थी। शाह निर्यात का व्यापार करता था और कौशल द्वारा मँगाई हुई उत्तर प्रदेश की निर्यात योग्य सामग्री को बड़ी मात्रा में कौशल से खरीदकर विदेशों में बेचा करता था। शाह की कौशल से दोस्ती हो गयी थी और कुछ समय बाद शाह और कमलिनी की मुलाकात भी हो गयी।

समय पाकर यह मुलाकात घनिष्ठता में बदल गयी। जब कौशल अपने काम के सिलसिले में लखनऊ या उत्तर प्रदेश के दूसरे जिलों में जाता था तब दोनों को एक-दूसरे से मिलने तथा साथ-साथ घूमने-फिरने का और भी मौका मिल जाता था। कमलिनी से ताल्लुकात बढ़ने के बाद शाह ने कौशल को बड़े-बड़े आर्डर देने शुरू कर दिये थे। उनकी पूर्ति के

लिए कौशल को अधिक समय तक बम्बई के बाहर रहना पड़ता था। यहां तक कि कौशल कभी-कभी महीने-महीने भर बम्बई से बाहर रहता था। उसकी अनुपस्थिति में कमलिनी अपने घूमने-फिरने के लिये शाह पर ही निर्भर हो जाती थी क्योंकि वह बंबई में नयी थी और कम लोगों को जानती थी।

कौशल की व्यापारिक समृद्धि और शाह तथा कमलिनी की घनिष्ठता समानुपात से बढ़ती गयी। अंत में स्थिति यह आ गयी कि कौशल अपने व्यापार के सिलसिले में बाहर जाता था तब कभी-कभी शाह उसके फ्लैट में ही अड्डा जमा लेता था। बंबई-भर में गुलाम मोहम्मद शाह ही एक ऐसा व्यक्ति था जो कमलिनी को कभी-कभी उसके पुराने नाम 'कमर' से संबोधित करता था। पर यह नाम वह तभी लेता था जब कौशल के कुछ खास राजदां ही बैठे होते थे। पहले कमलिनी इस बात से चिढ़ती भी थी। पर धीरे-धीरे शाह का प्रभाव, कौशल और कमलिनी दोनों ही के ऊपर चढ़ता गया और जो कमलिनी अपने मिलने-जुलने वालों के लिए मिसेज कौशल थी, वह शाह के लिए कमर ही बनी रही।

कौशल के पास ठहरने के अरसे में भुवन की भी शाह से मुलाकात हो गयी थी। भुवन के सामने भी शाह कमलिनी को 'कमर' के नाम से पुकारता था। ऐसे अवसर पर कमलिनी एकाएक सिहर उठती थी और सम्भलकर बैठ जाती थी। उसका हाथ किसी अदृश्य शक्ति से परिचालित होकर उसके माथे तक चला जाता था और वह क्षण भर किसी काल्पनिक वस्तु को अपने सिर से मुँह पर लाने की चेष्टा करती प्रतीत होती थी। कई बार उसकी इस चेष्टा को देखकर भुवन को आश्चर्य भी हुआ।

एक दिन उसने कमलिनी से इस यंत्र-चालित चेष्टा का कारण पूछा तो उसने बताया, "कमर का नाम सुनते ही मुझे अपने घर की कोठी याद आ जाती है। सारा वातावरण बदल जाता है, लगता है कि कोई घर का आदमी मुझे आवाज दे रहा है और मेरा हाथ सिर से नकाब गिराने को उठ जाता है।"

उस आवाज पर वह कायदे से बैठ जाती थी।

'कमर' के नाम से उसके सामने उसका पुराना जीवन फिर आकर

खड़ा हो जाता था और वह उदास हो जाती थी।

कनकपुर के विजय-वाटिका के वी० आई० पी० शामियाने में कमलिनी की उदास आँखों में भुवन को उसका वह सारा व्यतीत झाँकता दिखाई दिया जिसे उसने बरसों बहुत निकट से देखा था। वह बहुत कोशिश करने पर भी उन आँखों में क्रिकेट के पीछे दीवानी और वाक्-पटु मिसेज शाह के दर्शन नहीं कर सका। हाँ, उन उदास आँखों में उसे उस पुरानी कोठी में गर्भपात कराने से पहले की बीमार, पर खिलखिला कर हँसती, पीली पड़ी हुई नवाबज़ादी कमरुन्निसा बेगम की कुछ झलक जरूर दिखायी दी।

इसी समय फील्ड में फिर शोर हुआ।

कमलिनी ने ट्राँजिस्टर को थोड़ा ऊँचा किया। आकाशवाणी के क्रिकेट समीक्षक की आवाज वी० आई० पी० शामियाने में तैरती हुई आने लगी। "कुमार ने फाइन लेग (सूक्ष्म पद-कोण) पर क्षेत्र-रक्षक की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर मैकगिल के बाउन्सर (अकस्मादाघात) को अपने विकराल प्रहार से सीमा के पार पहुँचा दिया है। क्रीडांगन में गर्जन-तर्जन हो रहा है। दर्शक कुमार को उत्साहित कर रहे हैं। "अब मध्यान्तर का समय हो गया है।"

"आज भारत ने मध्यान्तर के पहले दो घंटे में पिछहत्तर रन बनाये हैं। इस योग में अंसारी आज उनतीस रन बनाकर अपने कल के योग को उनतालिस पर पहुँचाकर पराजित हुआ था।

"विट्ठल दास ने आज सैंतालीस रन बनाये हैं। वह कल से खेल रहा है। अब उसका योग अर्धशतक से पाँच रन अधिक हो चुका है। कुमार ने फील्ड में पैंतालीस मिनट पहले प्रवेश किया था और अभी तक अट्ठारह रन बनाये हैं। अब विदेशी गेंददाज तथा भारतीय बल्लेबाज सभी लंच के लिए बाहर जा रहे हैं और प्रांगन की भीड़ भी छँट रही है।"

इसी समय अजरा और उसके साथ के लड़के-लड़कियाँ फिर दौड़ते हुए शामियाने में आ गये। सभी ने कमलिनी को घेरकर चिल्लाना शुरू कर दिया, "अरे, आँटी तुम बड़ी अच्छी हो।"

"आँटी, तुम वहाँ बम्बई में क्या करती हो?"

"आँटी, तुम तो लखनऊ ही वापस आ जाओ," और कहते हुए सभी बच्चे कमलिनी से लिपट-से गये ।

इस प्यार के उफान के बीच में कभी-कभी कोई लडकी यह भी कह देती थी । "आँटी अब लंच टाइम हो गया है । तुम्हें लंच पर चले जाना चाहिए, नहीं तो देर हो जाएगी ।"

कमलिनी खिलखिलाकर हँस पडी और कहा, "देखो भुवन जी, प्यार भी कितना स्वार्थी होता है । अभी यही बच्चे मुझसे अनमने होकर गये थे और अब यही अच्छी आँटी, प्यारी आँटी करते हुए मुझसे लिपटे जा रहे है, क्योंकि अजरा ने इन्हे बता दिया है कि हम लोग लंच में इनके लिए भारत की टीम के ऑटोग्राफ ले लेंगे ।" कमलिनी की हँसी से, उसकी उदास आँखो से झाँकती व्यतीत की वेदना रात को मुरझाये हुए फूल की तरह झर गयी और उसके चेहरे पर प्रतिदिन नया उल्लास लेकर आने वाला जीवन प्रभात फिर उद्भासित हो गया ।

कमलिनी ने अजरा की तरफ घूम कर कहा, "क्यो अजरा तू तो कहती थी इन लोगो को ऑटोग्राफ देने से पहले कान पकडकर उठाऊँगी-बैठाऊँगी।"

अजरा ने कहा, "आँटी वह तो यह कर चुके है । जब फील्ड से भीड जाने लगी तब यह सब लोग गवर्नर के पवेलियन से निकलने वाली भीड के सामने एक-साथ कान पकड कर उठक-बैठक कर रहे थे···।"

कमलिनी ने आश्चर्य से कहा, "अरे सच ?"

अजरा ने जवाब में कहा, "और आँटी इनको इस वायदे पर यहाँ लायी हूँ कि यह सब तुम्हारे लंच पर जाने से पहले तुम्हारे सामने भी कान पकडकर उठक-बैठक करेंगे ।"

'हाँ, आँटी हम सब तैयार है"—कहते हुए सब लड़के-लडकियाँ एक लाइन मे कान पकड कर खडे हो गये ।

उनकी इस तत्परता को देखकर कमलिनी और भुवन एक-साथ ही हँस पडे । इसी समय अलबर्ट वीरेन्द्र कुमार आदि के साथ शामियाने मे आया।

"अरे, यह क्या हो रहा है ?" उसने पूछा ।

"यह ऑटोग्राफ परेड है ।" कमलिनी ने हँसते हुए कहा ।

अजरा ने स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कहा, "अंकल, मैंने इन लोगों से कहा था कि जब तुम सब चलकर आँटी के लंच पर जाने से पहले उनके सामने कान पकड़कर उठो-बैठोगे तभी तुम्हें भारतीय टीम के ऑटोग्राफ मिलेंगे। क्योंकि मेरी आँटी शाह, और अंकल अलबर्ट तुमसे बहुत नाराज है और कह रहे थे कि ऐसे लडके-लडकियो के लिए हम कुछ नही कर सकते ।"

हँसी के ठहाकों के साथ सबने कहा, "अच्छा रहने दो । हम सबके ऑटोग्राफ़ करा देंगे ।"

अजरा ने चिल्लाकर कहा, "बोलो, थ्री चियर्स फार आँटी शाह एण्ड अंकल अलबर्ट···और डिसमिस ।"

सब लडके-लडकियो ने तीन बार आँटी शाह एण्ड अंकल अलबर्ट हिप-हिप हुर्रे ···" कहा और फिर शामियाने के बाहर भाग गये।

भुवन ने देखा कि कमलिनी की आँखें फिर नम हो गयी थी। अपने बम्बई के लम्बे प्रवास मे उसने क्या कुछ खोया था वह सब उसके सामने नाच उठा।

अलबर्ट ने भुवन को फिर एक बार लंच के लिए निमन्त्रित करते हुए कहा, "चलिये मि० सिन्हा आप भी चलिये ।"

'आप भी' एक ऐसा निमत्रण था, जिसकी अन्तर्धारा से भुवन भली-भाँति परिचित था। उसने माफी माँगते हुए कहा, "इस लंच का पहले कोई निमन्त्रण न होने के कारण मैंने अपने कुछ बाहर के आए हुए पत्र-कार मित्रों को स्वय लंच के लिए निमन्त्रित कर लिया है। इसलिए न चल सकूँगा।"

अलबर्ट ने कुछ आश्वस्त होकर कहा, "अच्छा तो फिर मजबूरी है।"

भुवन सबके साथ शामियाने से निकला और बाहर से आने वाले सवाददाताओं की प्रेस-दीर्घा की ओर चल पडा ।

आकुल पीढ़ी

एक प्रेस-दीर्घा वी० आई० पी० शामियाने के बाद प्रथम श्रेणी के शामियाने के बायीं ओर थी और दूसरी स्कोरबोर्ड के नीचे। वी० आई० पी० शामियाने की बायीं ओर वाली प्रेस-दीर्घा स्थानीय पत्र-प्रतिनिधियों के लिए थी और गगनापट के नीचे वाली प्रेस-दीर्घा कनकपुर के बाहर से आये हुए अखिल भारतीय स्तर के पत्रों तथा विदेशी समाचारपत्र प्रतिनिधियों के लिए थी।

टेस्ट मैच के निम्नस्तरीय प्रबंधकर्ता, मुतज़िम छुटभइयों, निम्न श्रेणी के पुलिस अधिकारी वर्ग और मैजिस्ट्रेट आदि अपने मिलने-जुलने वालों के लिए उस प्रकार के मुफ्त प्रवेश का प्रबंध नहीं कर सकते थे जो अलबर्ट ने अपने मिलने-जुलने वालों के लिए किया था। साथ ही उनकी यह भी मजबूरी थी कि बाहर उनकी गिनती टेस्ट मैच के प्रमुख प्रबंधकों में होती थी। अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए वह कुछ इष्ट मित्रों को मुफ्त मैच देखने की सुविधा देने के लिए बाध्य थे। कुछ को यह काम मजबूर होकर अपनी इज्जत बचाने या अपना प्रभाव जमाने के लिए करना पड़ता था और कुछ बड़े शौक से यह काम करते थे।

ऐसे साधारण प्रबंधकर्ताओं के लिए उच्चस्तरीय प्रबंधकों ने मुफ्त पास की कोई आधिकारिक सुविधा नहीं दी थी। किसी ऐसे स्थान का प्रबन्ध भी नहीं किया गया था जहाँ साधारण प्रबन्धकर्त्ता अपने कुछ मिलने-जुलने वालों को मुफ्त मैच देखने की सुविधा दे सकें।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ इन सभी श्रेणियों में टिकट खरीद

कर आने वाले प्रत्येक दर्शक के लिये उसके टिकट नंबर के अनुसार कुर्सियाँ सुरक्षित थीं। उसके बाद जनसाधारण के कक्ष मे सीढ़ियो पर बैठने का ऐसा असुरक्षित स्थान था कि जब तक बैठे रहो तब तक जगह आपकी और जब उठो तो हर कोई उस जगह बैठने का अधिकार रखता था। इस जनसाधारण-कक्ष के बाद विद्यार्थी-कक्ष था जहाँ उसी प्रकार की 'असुविधाओं' का मूल्य कुछ घटाकर रखा गया था। दोनो ही कक्षो मे भीड उमड रही थी। बैठने के लिए स्थान नही रह गया था। इसके अतिरिक्त इन कक्षों मे किसी प्रबन्धकर्त्ता द्वारा अपने इष्ट-मित्रो को बिना टिकट बैठाना भी उसकी मर्यादा के विपरीत था।

इन सब बातों की वजह से हर निम्नस्तरीय प्रबन्धकर्त्ता स्थानीय प्रेस-दीर्घा को अपना मित्र-कक्ष समझता था। यहाँ कुर्सियो पर नंबर नही पड़ा था, और हर निम्नस्तरीय प्रबन्धकर्त्ता अपने मुफ्तखोरे मिलने-जुलने वालों को स्थानीय पत्र प्रतिनिधियों की प्रेस-दीर्घा मे बैठाना अपना अधिकार समझता था। यहाँ स्थानीय पत्र-प्रतिनिधियों की अपेक्षा प्रबन्धकर्त्ताओं और पुलिस अधिकारियो के मिलने-जुलने वालों की संख्या अधिक थी।

स्थानीय प्रेस-दीर्घा के बाद ही महिलाओं का कक्ष था इसमें कुर्सियाँ नहीं थीं और बैठने वालों की सख्या निर्धारित न होने के कारण बेहिसाब भीड़ थी। इस महिला-कक्ष में अधिकाश किशोरियाँ तथा नवयुवतियाँ थीं, और प्रौढ़ाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम थी।

वी० आई० पी० शामियाने से निकलकर जैसे ही भुवन विशिष्ट पत्रकार-दीर्घा की ओर बढा वैसे ही उसके सहयोगी नेशनल क्रानिकल के सवाददाता सतीश ने उसे रोक लिया और बोला, "भुवन भाई, आजकल तो बड़े ठाठ है—वी० आई० पी० हो रहे हो।"

"वी० आई० पी०, क्या पी० आई० वी० हो रहे हैं।" सतीश के पीछे आने वाले न्यू इंडिया के संवाददाता बलराज ने कुछ और गहरा गहरा व्यंग किया,

भुवन ने दोनों को कुछ आश्वस्त करते हुए कहा, "मैं क्या वी० आई० पी० हूँगा, घर में बीवी और तीन बच्चे रूठे हुए बैठे हैं। बच्चों को मैच

देखने की जिद है पर चार टिकट कहाँ से लाऊँ—वह इतने छोटे हैं कि विद्यार्थी-कक्ष मे जा नहीं सकते और किसी दूसरे दर्जे का टिकट खरीदने का मेरा बूता नही है। हाँ, बड़ा लड़का जरूर विद्यार्थी-कक्ष में चला गया है इस वजह से सब नाराज हैं। वी० आई० पी० होता तो सबके सब विशिष्ट-कक्ष मे सोफो पर बैठकर मैच देखते होते।"

बलराज ने कहा, "मैं तो खुद कह रहा हूँ वी० आई० पी० नही, पी० आई० वी० कहो।"

"यह क्या हुआ ?" सतीश ने प्रश्न किया।

बलराज ने कहा, "देखा नही भुवन के आगे-पीछे किशोरियों का झुंड-का-झुंड था, जिन्हें आप अपनी मादरी-जबान मे 'टीन-एजर्स' कहते हैं। भुवन आज ऐसे ही लोगो के साथ था जो सब के सब जाने-माने हुए पी० आई० वी० है, यानी परसन्स इन्टरेस्टेड इन वर्जिन्स।"

भुवन ने दांतों से जीभ काटते हुए कहा, "यह क्या कह रहे हो बलराज, सब-के-सब उम्र-रसीदा जिम्मेदार भले आदमी है। सिर्फ क्रिकेट के शौकीन है।"

"जी हाँ, क्रिकेट के शौकीन है। जनाब, यह उम्र-रसीदा भले लोग ही ज्यादातर कम-उम्र लड़कियों के शौकीन होते हैं" —सतीश ने कहा।

"भाई मैं तो यही जानता हूँ कि सब क्रिकेट-दाँ हैं और क्रिकेट पर जान देते हैं।" भुवन ने अपनी बात पर जोर दिया।

बलराज ने फिर व्यंग किया, "अगर क्रिकेट के शौकीन हैं तो फील्ड पर खेल देखते। वहाँ बंद सुरक्षित वी० आई० पी० शामियाने में क्या करते रहते है।"

तीनों बात करते हुए स्कोरबोर्ड के नीचे वाली उच्चस्तरीय प्रेस-दीर्घा की ओर बढ रहे थे।

रास्ते में राज्यपाल तथा खिलाड़ियो के मंडप पड़ते थे। इन दोनों मंडपो के आगे सैंकड़ों किशोर लड़के और लड़कियो की भीड़ लगी थी। सबके हाथ मे ऑटोग्राफ-बुक थी। क्रीड़ांगन से बाहर आकर अपनी बस पर पहुँचने के लिए खिलाड़ियो को उस भीड़ का सामना करना पड़ता था। बस में चढ़ने से पहले कुछ एक खिलाड़ी किसी-किसी ऑटोग्राफ

चुक पर हस्ताक्षर करते हुए बढ जाते थे। पर अधिकांश ऑटोग्राफ के इच्छुक लडके-लड़कियों को निराश ही लौटना पड़ता था। पुलिस के जवान अपने अधिकारियों के नेतृत्व में उन लडके-लड़कियो को बेदर्दी से ढकेल कर खिलाडियो का रास्ता साफ कर रहे थे।

भुवन, सतीश और बलराज इस धक्कम-धक्के को देखने के लिए रुक गये। जब सब खिलाड़ी अपनी बसो मे बैठ गये और बसें चल दी तब एकाएक किसी निराश लडके ने पीछेवाली बस पर एक छोटा-सा कंकड फेंक दिया। कंकड खिड़की से होता हुआ किसी खिलाड़ी को लग गया। खिलाडी को कुछ साधारण-सी चोट लग गयी। कुछ सनसनी भी फैली पर पुलिस वालों ने बसें तेज़ चलवा दीं और वह लड़के-लडकियो की भीड़ से आगे निकल गयी। जब भीड बसों के पीछे दौड़ी तो पुलिस के जवानों ने एक दूसरे के हाथ और लाठियाँ पकड़कर भीड के रास्ते मे एक इन्सानी दीवार खडी कर दी। भीड रुक गई और फिर कुछ पुलिस के अधिकारियो ने अपनी बेंते हिलाकर उसको तितर-बितर कर दिया।

ऑटोग्राफ के लिए इतनी उत्तेजना और हडबड़ी को देखकर भुवन को अजरा और उसके साथ के लडके-लडकियों की याद आ गयी। सवेरे से टीम के होटल मे धरना, बाद मे किसी अनजाने आदमी के साथ विजय-पार्क पहुँचना, आपस में झगडा और फिर ऑटोग्राफ़ के लिए खुशी-खुशी कान पकडकर उठना-बैठना, कमलिनी और अलबर्ट तथा जिम्मेदार उच्च-स्तरीय सरकारी पदाधिकारियों का इन लड़के-लड़कियों के लिए खिला-डियो का एहसान लेने के लिए तैयार हो जाना। जबकि, अपने को इस प्रकार गिराकर बात करने वाले इन अधिकारियों में कुछ ऐसे भी थे जो अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी क़ीमत पर किसी से दब कर बात करने को तैयार नहीं हो सकते थे।

इस बातों के मन में आने पर भुवन ने अपनी शंका के समाधान के लिए सतीश से कहा, "सतीश, तुम तो इस मुर्दा शहर में एक अर्से से काम रहे हो क्या, तुमने यहाँ पहले भी कभी इतना उत्साह देखा है या ऑटोग्राफ जैसी छोटी चीज के लिये जो आकुलता है क्या वह कभी किसी और बात

के लिए भी देखने को मिलती है ?"

सतीश ने कहा, "तुम्हारी मूलभूत मान्यता ही गलत है। यह शहर मुर्दा नही है। बडा प्राणवान है। अपार शक्ति से परिपूर्ण है। परन्तु जीवन होते हुए भी यह नगर सुषुप्त है। इसकी समता कुछ अर्थों मे कुम्भकर्ण की कल्पना मे की जा सकती है। वस्तुतः आज़ादी के बाद यह नगर सो गया है। इसमे काम करने की शक्ति का अभाव नही है परन्तु शक्ति का उपयोग करने के लिए सही दिशा का ज्ञान न होने के कारण यह किसी ओर प्रयास नही कर पाता और विवश निद्रालस रहता है। क्रिकेट टैस्ट मैच, ऐसे अवसरों पर, कुछ देर के लिए, इसकी नीद उचट जाती है और फिर यह अपनी तंद्रावस्था मे ही उत्तेजना प्राप्ति के लिए किसी भी ओर भागने लगता है। आज यह स्वाक्षरों के लिए पागल है और कल ही यह क्रिकेट को एक अवांछित विदेशी प्रभाव कहकर उखाड फेंकने के लिए भी तत्पर हो सकता है।"

बलराज ने टोक कर कहा, "सतीश, तुम ऐसे भाषण-व्याकुल हो कि कोई एक ज़रा-सी बात भी पूछी जाने पर मतलब की बात भूलकर दस दूसरी बातें कहने लगते हो। बात तो स्वाक्षर की थी और प्रश्न यह था कि हमारे यह उदीयमान किशोर क्यों इस व्यर्थ-सी चीज़ के लिए इतने उत्सुक रहते है।"

सतीश ने उत्तर दिया, "इसलिए कि इनकी पूर्व-पीढ़ी इनके उमडते हुए जीवनोच्छ्वास को कोई उपयुक्त मार्ग दिखाने में असमर्थ है। यह किशोर अपने मन में स्वयं को किसी जीवन क्षेत्र के नायक के रूप में देखना चाहते है। अपनी रुचि के अनुसार वह स्वयं को टैगोर जैसा कवि, रमन जैसा वैज्ञानिक अथवा नेहरू जैसा राजनीतिज्ञ समझते हैं। यहाँ जमा क्रिकेट के शौकीन किशोर भी क्रिकेट मे खुद नायडू, पटौदी या दिलीपसिंह जैसे क्रिकेट के खिलाडी बनना चाहते है। पर तुम्हारे इस महानगर में इनके क्रिकेट खेलने के लिए आवश्यक क्रीडा-भूमियाँ नही है और कुशल खिलाडी बनने की सम्भावना समाप्त होने के कारण यह खिलाडियों के प्रशंसक मात्र बनकर रह गये हैं। फिर जब अच्छे भारतीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाडियों को इस देश में एक विशिष्ट स्थान देकर इनसे दूर रखा जाता

है तब यह किशोर उन खिलाडियों से मिलने-जुलने के लिए और इसके भी अभाव में उनके दर्शन के लिए व्याकुल हो जाते हैं। स्वाक्षर की माँग इसी आकुलता की परिचायक है। जो विडंबना इस खेल के शौकीन किशोरों की है वही दुर्भाग्य जीवन के अन्य क्षेत्रों मे रुचि रखने वाले अन्य अभावग्रस्त नवयुवकों का है। इसलिए युवक निष्क्रिय है जबकि प्रौढ तथा वृद्ध व्यक्तियों का जीवन-क्रम अपनी नियमित दिनचर्या पर ही चलता रहता है। यही कारण है कि तुम्हें यह नगर मुमूर्षु दिखायी देता है। क्योंकि यहाँ का युवक अवसर के अभाव तथा दिशाहीनता के कारण अधिकतर अचेतन और तद्दिल रहता है, और जब किसी चीज़ में दिलचस्पी लेता है तो सही दिशा न होने के कारण उसका उत्साह असंयमित, उद्दंड और उच्छृंखल लगता है।"

जब सतीश अपनी बात कह रहा था उसी समय भुवन का ध्यान, सहेलियों और दोस्तों के साथ, थोड़ी दूर पर खड़ी अजरा की ओर गया। अजरा भी भुवन को देखकर उसकी ओर बढ़ी। पर रास्ते में कुछ दूसरे किशोर लड़कों के झुंड में से एक लड़के ने उसे छेड़ने के लिए कहा, "हलो स्वीट।"

अजरा यह सुनते ही तमककर उस लड़के के पास गयी और आनन-फ़ानन उसके गाल पर कसकर एक तमाचा लगाते हुए कहा, "नॉट-सो स्वीट, माई डियर बट ऑफुली बिटर फ़ॉर यू।"

वह लड़का अपने गाल पर हाथ रखकर स्तभित खड़ा रह गया। उसके साथी एकदम चिल्ला पड़े, "तुम इसी लायक हो महेश।"

निशंक अजरा ने उन उद्दंड लड़कों के सरगना की जिस अप्रत्याशित ढंग और बहादुरी से ताड़ना की उसे देखकर भुवन दंग रह गया। वी० आई० पी० शमियाने में अजरा की बातों को सुनकर भुवन ने सोचा था कि वह आजकल की ढुलमुल लड़कियों की तरह ही चंचल तथा प्रगल्भ है और अपनी अधीरता में आसानी से किसी भी भुलावे में आ सकती है। परन्तु जिस प्रकार से आगे बढ़कर उसने महेश को तमाचा लगाया उससे भुवन को अजरा के निडर आत्मविश्वास, साहस तथा उसकी तीक्ष्ण बुद्धि का भी परिचय मिला।

इसी बीच में अजरा उन लड़कों की ओर बगैर कुछ ध्यान दिये भुवन के पास आ गयी और निस्संकोच भाव से बोली, "अंकल, आप दोनों टीमों के लंच में नहीं गये ?"

भुवन ने कहा, "नहीं मैं तो नहीं जा सका, मुझे कुछ और काम था।"

"तो फिर अंकल, अजरा ने कुछ अप्रतिम होकर कहा, "एक ऑटोग्राफ बुक बच गयी होगी।"

"नहीं ऐसा नहीं है, अलबर्ट ने सभी पुस्तिकाएँ लंच पर जाने वालों को एक-एक कर बाँट दी थीं।" भुवन ने अजरा को ढाढस बँधाते हुए उत्तर दिया।

अब तक अजरा के साथ के लड़के-लड़कियों ने भुवन को घेर लिया था। सब को आश्वस्त करते हुए भुवन ने कहा, "तुम लोगों में से किसी को परेशान नहीं होना चाहिए। मेरा खयाल है कि मिसेज शाह के प्रभाव के कारण अब सब पुस्तिकाओं पर भारतीय टीम के हस्ताक्षर हो जायेंगे।"

इसी समय बी० जी० उद्योग के जनसंपर्क अधिकारी प्रेम कृष्ण ने भुवन के पास आकर हँसते हुए कहा, "दिल्ली से आये हुए कुछ प्रेस सवाददाता आपको ढूँढ रहे हैं। आपने उन्हें लंच के लिए निमंत्रित किया था और स्वयं लड़कियों से गप्पें लड़ा रहे हैं।"

प्रेम कृष्ण की बात से भुवन को सहारा मिला और वह अजरा तथा उसके साथियों से माफी माँग कर सतीश और बलराज को साथ लेकर जल्दी-जल्दी क्रिकेट के विशेष संवाददाताओं के कक्ष की ओर चल पड़ा।

इस कक्ष में प्रत्येक संवाददाता के लिए एक मेज और कुर्सी लगी थी। प्रायः हर मेज पर एक छोटा वहनीय अंग्रेजी टाइपराइटर रखा था। कक्ष के एक कोने में अंग्रेजी की कई टेलीप्रिन्टर मशीनें लगी थीं।

यहाँ प्रत्येक संवाददाता को यह सुविधा थी कि वह अपनी मेज पर बैठे-बैठे देश अथवा विदेश में, अपने समाचार पत्र को तार भेज सकता था। उनके हाथ हिलाते ही तारघर के तार-बाबुओं या दो चपरासियों में से कोई एक बढ़कर उसका तार ले लेता था और उसी समय उसका टंकन आरम्भ हो जाता था।

पहले दिन भुवन को इस साज-सज्जा पर बड़ा आश्चर्य हुआ था।

क्रिकेट के उस विशाल प्रागण मे सभी जगह अंग्रेजी का बोलबाला था। प्रेस-दीर्घा के पीछे स्कोर बोर्ड था। उस पर गेंददाजों, बल्लेबाजों के नाम और उनके योग आदि को अंग्रेजी के इतने बडे अक्षरों मे प्रदर्शित किया जाता था कि प्रागण के सभी दर्शक किसी भी समय खेल की प्रगति को आसानी से जान सकते थे।

भुवन के लिए यह भी एक अचम्भे की बात थी कि जहाँ हजारों अंग्रेजी न जानने वाले दर्शक थे और अग्रेजी जानने वालो का अत्यत छोटा सा अल्पमत था वहाँ आयोजकों को अपना सभी काम अंग्रेजी मे करने की छूट मिली हुई थी।

उसे एकाएक ध्यान आया, क्रिकेट स्वयं एक अंग्रेजी सामतवादी खेल है। भारत में इस खेल की इतनी व्यापक स्वीकृति का भी, स्वातत्र्य युग के पूर्व की दास-भावना तथा भारतीय मीडिया-धमान की प्रवृत्ति के अतिरिक्त और कोई कारण नही है, फिर यदि इस अंग्रेजी खेल के प्रागण मे उसकी प्रगति तथा व्याख्या का प्रबंध सिर्फ अग्रेजी मे ही हो और चारों ओर केवल अंग्रेजी का ही बोलबाला हो तो क्या आश्चर्य हो सकता है। यही क्या कम था कि कुछ वर्षों से आकाशवाणी के कार्यक्रम में हिन्दी की समीक्षा को भी अंग्रेजी में क्रिकेट की समीक्षा के साथ ही एक सौतेली बेटी सा स्थान मिलने लगा था!

एक ग़ैरमौज़ूं आदमी

जब भुवन सतीश और बलराज के साथ बातें करते-करते विशिष्ट पत्रकार-दीर्घा में पहुँचा तो दिल्ली से आये हुए उसके पत्र के क्रिकेट संवाददाता कृष्णास्वामी ने उसे ज़ोर से पुकार कर कहा, "आओ सिनहा, यह देखो 'इंगलिश हैरल्ड' के हावर्ड स्टीवेन्सन और 'ब्रिटिश क्रानिकल' के जार्ज वाटरहाउस भी तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। मैंने तुम्हारी तरफ़ से इन दोनों तथा अपने दोस्त मरुचा को भी लंच के लिए निमंत्रित कर लिया है,"—कृष्णास्वामी ने इंगलैंड से आये हुए उन दोनों अंग्रेज पत्रकारों का परिचय कराने के बाद कुछ दूर खड़े एक गोरे से पारसी युवक को भी बुला कर कहा, "और यह मरुचा हैं, दिल्ली के 'इंडियन वायस' समाचार पत्र ने मरुचा को इस टैस्ट श्रृंखला की समीक्षा के लिए अनुबंधित किया है।"

भुवन ने भी सबका सतीश और बलराज से परिचय कराया और सब 'रश्मि' रेस्तराँ की ओर चल पड़े। इसी समय प्रेस-दीर्घा के सामने लगे खेमे के सामने खड़े एक रोबीले पुलिस अफसर ने भुवन को आवाज़ दी, "अरे, भुवनेश्वर, तुम यहाँ कहाँ?"

भुवन ने पीछे घूम कर देखा कि प्रयाग विश्वविद्यालय में उसका सहपाठी नियाज़ अहमद उसे आवाज़ दे रहा था।

अहमद के आगे बढ़ कर आवाज़ देने पर प्रेस-कक्ष की बायीं बगल में राज्यपाल मंडप के द्वार पर खड़े बीसियों पुलिस के जवान, दारोगा और दो-चार पुलिस उप-अधीक्षक सतर्क हो गये। अहमद से थोड़ी दूर पर

खड़ा अपने कुछ मित्रों से बात करता हुआ नगर तथा जिले की पुलिस का मुख्य अधीक्षक चेतन सिंह और उसके पीछे नगर पुलिस अधीक्षक खन्ना दोनों ही सचेत हो गये।

भुवन ने पुलिस अफ़सरों की सतर्कता को देखकर समझा कि अहमद अब कोई बहुत बड़ा पुलिस अफ़सर हो गया है। उसने एम० ए० पास करने के बाद भारतीय पुलिस की प्रतियोगिता परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। आवश्यक प्रशिक्षण के बाद दिल्ली में पुलिस विभाग में नियुक्त हो गया था। विश्वविद्यालय के साथ के बाद भुवन की उससे दिल्ली में दो-चार बार ही मुलाकात हुई थी। उस समय के बाद भुवन को अहमद का एक अरसे तक पता नहीं रहा था। अहमद की सहृदयता, नेकनीयती और ईमानदारी के कारण उसके मित्र उससे अक्सर कहते रहते थे कि वह पुलिस के लिए अनुपयुक्त है।

अहमद ने दिल्ली में एक-आध बार हँसकर भुवन से कहा था, "यार, भुवनेश्वर यह कैसी अजीब बात है कि जिस डिपार्टमेण्ट मे ईमानदारी और रहमदिली की सबसे ज्यादा जरूरत है उसी डिपार्टमेण्ट में ईमानदार और रहमदिल आदमी को गैरमौजूं समझा जाता है।"

अहमद ने आगे बढ़कर भुवन से हाथ मिलाया और कहा, "आओ यार, अब मिल गये हो तो मेरे साथ ही खाना खाओ।"

अहमद के पीछे नम्रभाव से खड़े चेतनसिंह और खन्ना ने भी आगे बढ़कर कहा, "आइये, आइये सिनहा साहब, खाना लग ही रहा है।" अनुरोध के अतिरिक्त उन दोनों की आँखों में भरे विनय भाव को देखकर भुवन उलझन में पड़ गया। चेतनसिंह और खन्ना से उसे रोज ही वास्ता पड़ता था और यह स्पष्ट था कि उसकी और अहमद की घनिष्टता देख कर दोनों ही उत्सुक थे कि वह अहमद के साथ खाना खाये। यह भी जाहिर था कि खाने का प्रबंध चेतनसिंह और खन्ना की तरफ से ही किया गया था।

भुवन ने अपनी मजबूरी जाहिर करते हुए कहा, "भाई अहमद, इस वक्त तो साथ खाना नहीं हो सकता। मैंने अपने इन मित्रों को लंच के लिए निमंत्रित किया है और 'रश्मि' में इनके लिए पहले ही खाने का

आर्डर दे रखा है।"

"अरे गोली मारो, 'रश्मि' के आर्डर को, वह साले खाना बनाना क्या जानें, यह तो तुम्हारा शहर ही बदजायका है वरना जो लोग सालों से रोज ही एक-सी चीजें पकाते हों उनका काम ही बन्द हो जाना चाहिए था।" उसने पीछे घूमकर हुक्म दिया, "खन्ना किसी से कहो इनका आर्डर रद्द कर दे," और भुवन पर जोर देते हुए कहा, "तुम्हारे मेहमान हमारे मेहमान है, और यार जब इन बाहर वालों को खाना खाने के लिए बुलाया है तो फिर कुछ कायदे की चीजें तो खिलाओ।"

अहमद ने बड़े उत्साह से भुवन के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। "आओ, पहले अपने दोस्तों से मेरी मुलाकात तो कराओ फिर मैं सबको अपने साथ खाने के लिए राजी कर लूंगा।"

कृष्णास्वामी, हावर्ड स्टीवेन्सन, जार्ज वाटरहाउस, भरुचा, सतीश और बलराज से अहमद का परिचय कराते हुए भुवन ने कहा, "मेरे मित्र नियाज अहमद से मिलिए।" फिर उसने अहमद से कहा, "अरे, यार लगता है, कोई बड़े अफसर हो गये हो, पर हो कहाँ।"

इस पर चेतनसिंह ने आगे बढ़कर कहा, "साहब ने पिछले हफ्ते प्रदेश पुलिस के मुख्य निरीक्षक की हैसियत से चार्ज लिया है।"

भुवन ने अहमद को बधाई दी, और अहमद के इसरार पर सब खाना खाने के लिए उसके खेमे की तरफ बढ़ गये।

अहमद ने कहा, "यहाँ आप लोग भीड़ मे खाना तो क्या धक्के खाते। दो लुक्मे खाना मुश्किल हो जाता। यहाँ आप सब लोग अपने एनक्लोजर की बगल ही में हैं और इत्मीनान से खा सकते हैं।"

खेमे मे एक बड़ा मेज पर दस-बारह आदमियों के खाने का इन्तजाम था। सब के बैठते ही चेतनसिंह और खन्ना ने खेमे मे खड़े एक पुलिस उप-अधीक्षक, दो दारोगा, चार कान्सटेबिलों को खाना लगाने का इशारा किया और बगल के खेमे से गर्म-गर्म चिकन-सूप लाकर शीघ्र ही सबके सामने लगा दिया गया।

अहमद ने सबसे शुरू करने का आग्रह करते हुए पूछा, "मि० कृष्णा-स्वामी आप और आपके साथियों ने तो देश और विदेश के सभी क्रिकेट

मैदानों को देखा है। कनकपुर के इस नये क्रिकेट-सेन्टर के बारे में ग्रापका क्या खयाल है ?"

कृष्णास्वामी ने स्टीवेन्सन की ग्रोर देखकर कहा, "स्टीवेन्सन, तुम तो इस बार पहली दफा भारत ग्राये हो, तुम्हारी कनकपुर टैस्ट सेन्टर के बारे में क्या राय है।"

स्टीवेन्सन ने कहा, "यहाँ का इन्तजाम तो बम्बई से भी ग्रच्छा है पर दर्शकों में क्रिकेट-भावना की कमी है।"

जार्ज बाटरहाउस ने कहा, "मैं तो यहाँ कई बरसों से ग्रा रहा हूँ ग्रौर मुझे यह देखकर खुशी होती है कि यह टैस्ट-केंद्र प्रबन्ध ग्रौर सुविधाग्रों की दृष्टि से बराबर उन्नति कर रहा है।"

मरुचा ने कहा, 'मुझे यहाँ का गणना-पट्ट बहुत पसन्द है, ऐसा गणना-पट्ट किसी केन्द्र में नहीं है।"

तीनों प्रसिद्ध क्रिकेट समीक्षकों को कनकपुर के टैस्ट-केन्द्र का कोई न कोई रूप पसन्द था ग्रौर सबकी राय मिला देने से कनकपुर टैस्ट-केंद्र की सर्वांगीण प्रशंसा हो जाती थी।

ग्रहमद ने कहा, "ग्राप लोग सब इस केन्द्र के किसी न किसी रूप को पसन्द करते हैं फिर ग्रधिकतर जाने-माने क्रिकेट समीक्षक इसको टैस्ट केन्द्र बनाने के विरोध में क्यों लिखते रहते हैं ?"

कृष्णास्वामी ने कहा, "यह टैस्ट-केन्द्र तो ठीक है परन्तु यह नगर क्रिकेट के लिए ग्रनुपयुक्त है। इसकी प्रगति एकांगी है। यहाँ पाँच दिन ठहरना मुश्किल हो जाता है। यहाँ ग्रच्छे होटल नहीं है। हमें दो-एक ग्रच्छे होटल वालों की खुशामद करके ठहरने के लिये स्थान प्राप्त करना पड़ता है या फिर प्रबन्धकों की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता है। हम इन दोनों में से कोई बात नहीं करना चाहते, पर मजबूर हैं।"

ग्रहमद कृष्णास्वामी की बात सुनकर कुछ कहने ही जा रहा था, उसी समय ग्रजरा कहीं से ग्रपनी सहेलियों ग्रौर साथियों के साथ दौड़ती हुई ग्रायी ग्रौर ग्रहमद की प्लेट से भुनी मछली का एक टुकड़ा उठाकर मुंह में रखती हुई बोली, "पापा ग्रापने खाने पर हम लोगों का इन्तजार भी नहीं किया, मैंने तो ग्रपने सब साथियों को खाने के लिए बुला लिया है।"

अहमद ने प्यार से अजरा को अपने पास खींचते हुए कहा, "अरे तेरा कहीं पता भी लगता है, सवेरे से गयी है और शमशाद ड्राईवर तुझे जगह-जगह ढूंढता फिर रहा है। जहां-जहां वह गया वहां-वहां पता चला कि तू किसी और के साथ कुछ देर पहले ही किसी और जगह के लिए चल पड़ी है।"

फिर उसने अजरा की सहेलियों और साथियों की ओर मुखातिब होकर कहा, "लो बेटा बैठो, तुम लोगों के लिए रूमाली रोटियां और मुर्ग का सालन भी तैयार है। हम लोग तो सूप, कबाब, मुर्ग रोस्ट और भुनी मछली ही खा रहे हैं।"

अजरा ने कहा, "नहीं, हम लोग उस दूसरे खेमे में जाते हैं। आप अपने दोस्तों के साथ यहां बैठें। लेकिन पापा, पहले मैं आपको अपनी बात तो बता दूं। यह भुवन अंकल भी तो वहां थे। अंकल अलबर्ट से शाह आंटी के कहने से हम सबके लिये भारतीय खिलाड़ियों के ऑटो-ग्राफ्स का ऐसा उम्दा इन्तजाम किया है कि लंच के बाद हर खिलाड़ी द्वारा ऑटोग्राफ की हुई हमारी बुक्स हमें मिल जायेंगी। पापा यह शाह आंटी कितनी अच्छी है—आपको तो खूब जानती हैं।"

अजरा यह कहकर अपनी सहेलियों और साथियों के साथ दूसरे खेमे में चली गयी।

अहमद ने वात्सल्य से पूर्ण स्वर में भुवन से कहा, "अजरा क्रिकेट के खेल और खिलाड़ियों के लिए दीवानी हो रही है।" फिर कुछ याद करते हुए भुवन से पूछा, "भुवनेश्वर, वह शाह आंटी कौन हैं ?"

भुवन ने कहा, "तुम जानते तो हो, नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम को, जो हम लोगों के पुराने दोस्त सत्येन्द्र कौशल के साथ बम्बई में रह-कर मिसेज कमलिनी कौशल हो गयी थी। वही अब मिसेज जी० एम० शाह है। शाह का बम्बई में निर्यात का बड़ा भारी कारोबार है और वह बम्बई क्रिकेट क्लब का बड़ा असरदार मेम्बर है। मिसेज शाह या मिसेज कमलिनी कौशल उर्फ नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम को क्रिकेट का हमेशा से बड़ा शौक रहा है और यहां भी टैस्ट मैच देखने आयी है।"

अहमद ने कहा, "हां, हां याद आया नवाबजादी कमर ! लखनऊ

मे उसकी बडी भारी कोठी है। पहले नवाब नसीरुद्दीन से शादी हुई थी। फिर तलाक ले लिया था। इन दोनों का लडका असगर आजकल अमरीका मे पढ़ता है। मेरी मरहूम बीवी शाहिदा से क़मर की बडी दोस्ती थी। उस ज़माने में यह अक्सर इसरार करती रहती थी कि अजरा की शादी असगर से हो जाए। शाहिदा ने उस वक्त भी हामी नही भरी थी जब यह लखनऊ में बडी इज्जत से रहती थी, और अब तो सवाल ही क्या है। अब तो उसका और कौशल का इश्क और उस इश्क का यह नया शाह-रग जगजाहिर है। उस पर लुत्फ यह है कि जब कभी यह मुझे मिल जाती है तभी अजरा और असगर की शादी की बात करने लगती है। कहती है कि हिन्दुस्तान मे उसकी लाखों की जायदाद सब असगर की है और इसके अलावा पाकिस्तान मे भी असगर के नाम से बहुत-कुछ इन्तजाम कर दिया गया है। असगर अमरीका से पढ़कर पाकिस्तान ही चला जायेगा। भाई भुवनेश्वर खुदा के फज़ल से असगर हर तरह से लायक है पर यह भी तो देखना पड़ेगा कि माँ कैसी है। उधर नवाब नसीर ने भी कमर के जाने के बाद तलाक मे मिले रुपये से अपना काम कुछ अच्छा बैठा लिया है और उस ऐंग्लो-इंडियन लडकी को रख लिया है जो बरसों हुए लखनऊ में 'चला' करती थी। एक मजा और भी है भाई भुवनेश्वर, यह नवाबज़ादी हमेशा इस बात पर भी जोर देती है कि हिन्दुस्तान में मुसलमान लड़कियों को अच्छे लडके नही मिलते। जिसके घर मे हिन्दू, मुसलमान और इसाई का कोई फर्क नही है, वही मुसलमान होने का दावा भी करती है।"

भुवन ने पूछा, "तुमने उसे क्या जवाब दिया है ?"

"इस हालत मे मैं क्या जवाब दे सकता हूँ। जब कभी कमर ने मुझसे अज़रा के लिए कहा, मैंने यही जवाब दिया कि 'अभी बच्ची है' खैर, छोडो इन बातों को।"

फिर अहमद ने मेज पर बैठे और लोगो से कहा, "माफ़ कीजियेगा भुवनेश्वर को देखकर कुछ पुरानी बातें याद आ गयी।"

इसी समय अज़रा दूसरे खेमे से अपनी सहेलियों और साथियों के साथ निकलकर आ गयी उसके साथ में एक बड़ा-सा टिफिन कैरियर था।

अहमद ने पूछा, "यह क्या तुम लोगो ने खाना नही खाया। और अजरा यह टिफिन कैरियर कहां ले जा रही है।"

इसके पहले कि अजरा कुछ जवाब देती, सलमा ने आगे बढकर कहा, "अंकल, यह अजरा होटल में बीमार पडे भारतीय गेंददाज रघुनाथ से सवेरे वायदा कर आयी थी कि उसके लिए खाना लेकर आयेगी और हम सब लोग भी उसके साथ वही होटल मे खाना खायेंगे।"

अजरा ने कहा, "पापा, वह बेचारा अकेला पडा रहता है और फिर तीन रोज से उस सड़े से मनहूस होटल का बदजायका खाना खाते-खाते उसका जी ऊब गया है।"

अहमद ने अप्रतिभ होकर भुवनेश्वर की ओर देखा और फिर मेज पर बैठे दूसरे लोगों की प्रतिक्रिया जानने के लिए सब पर एक नजर डाली।

कृष्णास्वामी ने कहा, "हां मैं जानता हूँ रघुनाथ यहां पहुँचते ही बीमार हो गया था। आज भी डाक्टर ने उसे खेलने के लिए इजाजत नही दी इसीलिए ज्यादा से ज्यादा रन बना लेने पर भारतीय टीम द्वारा आज डिक्लेयर किये जाने की कोई संभावना नही है क्योंकि रघुनाथ ही तो भारत की ओर से गेंददाजी शुरू करता है।"

हावर्ड स्टीवेन्सन और जार्ज वाटरहाउस ने पहली बार अजरा के आने पर ज्यादा गौर नही किया था। पर इस बार स्टीवेन्सन ने उसे पहचान लिया। स्टीवेन्सन ने भुवन से कहा, "यही लडकी तो सवेरे हमारी टीम के ऑटोग्राफ लेने के लिये आयी थी।"

वाटरहाउस ने भी अजरा को पहचानते हुए कहा, "हां बड़ी तेज लड़की है। इसने वहां मौजूद एक-एक प्लेयर से लडकर उसके ऑटोग्राफ ले लिये थे।"

"अच्छा पापा, जल्दी से हो आऊँ, फिर लंच के बाद भाटी शाह से ऑटोग्राफ बुक लेनी हैं।"

खेमे के बाहर जाते समय अजरा ने भी स्टीवेन्सन और वाटरहाउस को पहचाना और उन दोनो की तरफ हाथ हिला कर उनका अभिवादन भी किया।

मजरा के जाने के कुछ देर बाद जब सब खाना खा ही रहे थे तभी अहमद के खेमे के दूसरी तरफ लगे लोहे के बड़े फाटक के बाद विद्यार्थी-कक्ष में एकाएक बड़े जोर का शोर हुआ और फिर लोहे के फाटक पर ईंटें बरसने लगी। शोर सुनते ही मुख्य पुलिस अधीक्षक चेतनसिंह और नगर पुलिस अधीक्षक खन्ना के मुँह का कौर मुँह में ही रह गया और वह दोनों एक साथ ही अपना कांटा-छुरी छोड़कर उठ खडे हुए। अहमद के कुछ कहने के पहले ही खन्ना ने कहा, "हुजूर माफ़ करें, हम जरा देखें यह क्या माजरा है।"

अहमद का मुस्कराता हुआ चेहरा भी गभीर हो गया और वह बोला, "हाँ, हाँ देखो, अगर कुछ खास बात न हो तो लौटकर खाना तो पूरी तरह खा लेना वरना फिर खुदा हाफ़िज़।"

अहमद की बात पूरी होते न होते चेतनसिंह और खन्ना खेमे से बाहर चले गये।

अहमद ने भुवन की तरफ़ देखते हुए कहा, "देखा, यह है पुलिसवालों की ज़िन्दगी। कभी-कभी दो लुक्मे भी चैन से खाने का वक्त नही मिलता।" फिर भुवन, सतीश और बलराज को भी उठते देख कर वह आश्चर्य से बोला, "मगर आप लोग क्यों उठ रहे है। आप तो इतमीनान से खाना खायें।"

सतीश ने कहा, "अहमद साहब, पुलिस की तरह पत्रकारिता भी एक ऐसा ही पेशा है जिसमे काम का कोई वक्त नही है।"

बलराज ने कहा, "हम लोग भी कल से तमाशबीनी कर रहे हैं, क्योंकि दिल्ली से हमारे विशेष संवाददाता इस टैस्ट के खेल के समाचारो को भेजने के लिए आये हुए है। पर इस शोर से लगता है कि हमें भी आज अपनी ड्यूटी अदा करनी पड़ेगी। अफसोस रहेगा कि इतने लजीज कबाब और इतनी अच्छी मछली के साथ हम पूरा न्याय नही कर सके।"

भुवन ने भी माफी माँगते हुए कहा, "अच्छा तो चलूँ अहमद, शोर बढ रहा है, तुम्हारे खेमे के पास वाले लोहे के फाटक पर ईंटो के फेंके जाने की आवाजें भी बढ रही हैं। हम लोगों को चेतनसिंह और खन्ना के पास ही रहने की कोशिश करनी है वरना फिर तुम्हारे पी० ए०सी०

के जवान कहीं एक-आध हाथ हम पर भी न धर दें।''

फिर उसने कृष्णास्वामी, स्टीवेन्सन और वाटरहाउस की तरफ़ घूम कर कहा, "लंच का समय समाप्त होने में अभी कुछ देर है, आप लोग खाना खत्म करें और हम लोगों को इजाजत दें।"

कृष्णास्वामी, स्टीवेन्सन और वाटरहाउस पुराने अखबारनवीस होने के नाते भुवन, सतीश और बलराज की आशंका को समझ गये, उन्होंने मुस्करा कर उन तीनों को बगैर पूरा खाना खाये उठ जाने की अनुमति दे दी।

भुवन, सतीश और बलराज के साथ उन लोगों से यह कहता हुआ खेमे के बाहर हो गया, "आप लोग अच्छी संगत में हैं और मुझे विश्वास है कि अहमद आप सबका पूरा-पूरा खयाल रखेगा।"

आग !—पर पानी नहीं

जब भुवन, सतीश और बलराज खेमे के बाहर आकर विद्यार्थी-कक्ष की ओर लगे लोहे के फाटक की तरफ बढ़े तब तक वहाँ पुलिस के क़रीब सौ, लाठी-बंद जवान जमा हो गये थे।

पुलिस की तेज़ सीटियों की आवाज़ें गूँज रही थीं और सब तरफ से पुलिस वाले उसी तरफ़ भागते हुए चले आ रहे थे।

फाटक पर दूसरी तरफ तेज़ी से ईंटें बरसाई जा रही थीं और उसे खुलवाने के लिए या फिर उसे तोड़कर गिराने के लिए उत्तेजित आवाज़ें लग रही थीं।

शोर बढ़ रहा था।

एकदम फाटक खोलने से उस पर बरसने वाली ईंटों से, खोलने वालों को चोट लगने का ख़तरा था।

फाटक के सामने की जगह ख़ाली कर उसी के पल्लों की आड़ लेकर खन्ना के हुक्म से पुलिस के जवानों ने एकदम फाटक खोल दिया और लोहे के टोप लगाये सौ-डेढ़ सौ पुलिस के जवान अपनी लाठियाँ फटकारते विद्यार्थी-कक्ष में घुस पड़े। फाटक खुलते ही, भुवन ने देखा कि विजय पार्क में स्थानीय प्रेम-दीर्घा से लेकर पुलिस के खेमों तक उच्च श्रेणियों के दर्शकों की ओर जो सुरुचिपूर्ण प्रबंध तथा साज-सज्जा थी उसका विद्यार्थी-कक्ष की ओर नाम निशान भी नहीं था।

जगह-जगह कूड़े के ढेर पड़े थे। हर जगह खाना खाकर फेंके हुए पत्तों और काग़ज़ों की भरमार थी। फलों के छिलके और चाय के ख़ाली

कुल्हड पैरो के नीचे आते थे। इसी तरह की रोज उपयोग में आने के बाद अनावश्यक वस्तुएँ अन्य विशिष्ट कक्षो मे जहाँ-तहाँ फेंकी जाती थी पर वहाँ उनकी सफाई का प्रबन्ध था, परन्तु विद्यार्थी-कक्ष और उससे मिली साधारण दीर्धा मे इसका कोई समुचित प्रबन्ध नही था। यद्यपि वहाँ भीड भी बहुत ज्यादा थी और इस किस्म की बेकार चीजे वहाँ और भी ज्यादा फेंकी जाती थी। मैच से पहले विशिष्ट श्रेणियों की साज-सज्जा से बची लकडी और कबाड़ के ढेर मे आग लगी हुई थी। ऊँची-ऊँची लपटें उठ रही थी। आग के चारों तरफ थोडी दूर पर जल्दी आग पकडने वाले सामान के और भी ढेर थे। आग बढने की आशंका से भीड़ बेकाबू हो गई थी।

भीड इतनी थी कि पीछे-वाले दर्शकों को कुछ पता नही था, आग कहाँ और कैसे लगी है ?

डर के मारे भगदड मची हुई थी। उस भगदड़ में छोटे-छोटे लडके-बच्चों के कुचल जाने का खतरा पैदा हो गया था। कुछ समझदार बड़े लडके बढती हुई आग के आस-पास पड़े कबाड़, घास, पत्तों, रद्दी कागजों तथा ऐसी दूसरी चीजों को जल्दी-जल्दी हटा रहे थे जिससे आग को बढने का मौका न मिले।

कुछ लडके पानी-पानी चिल्ला रहे थे, परन्तु उस जगह पानी का कोई प्रबन्ध नही था। आग बुझाने के वास्ते पानी का प्रबन्ध करने के लिए कुछ लड़कों ने अपने कक्ष के फाटक के दूसरी ओर विशिष्ट दीर्घाओं की तरफ तैनात पुलिस के जवानों से फाटक खोलने के लिए कहा था पर उन्हे उत्तर मिला था "हुक्म नही है।"

इस निर्मम इनकार से उत्तेजित होकर भयाकुल भीड ने फाटक पर पत्थर बरसाने शुरु कर दिये थे और लड़कों की चीख-पुकार से सारा स्टेडियम गूँज उठा था।

फाटक खुलते ही सैकडो पुलिस के जवानों को लाठी-चार्ज की मुद्रा मे घुसते देखकर भीड़ में भगदड़ मच गयी और ऊपर की सीढियों पर खडे लोगो की चीख-पुकार और भी तेज हो गयी।

चेतन सिह और रग्ना ने यह हालत देखकर फौरन पुलिस के जवानों

को आग पर पानी डालने का हुक्म दिया। उप-अधीक्षक राजाराम सिंह ने पुलिस के कुछ जवानों के साथ आग के चारों तरफ़ घेरा डाल कर भीड़ को उसकी तरफ आने से रोक दिया।

बीसियों पुलिस के जवान पानी की बाल्टियाँ लेकर विशिष्ट कक्ष की ओर से विद्यार्थी-कक्ष की ओर दौड़ पड़े। विशिष्ट कक्ष की ही ओर खड़े फायर ब्रिगेड ने जल्दी-जल्दी हौज-पाइप फैलाने शुरू कर दिये। पर उसकी कारगुजारी शुरू होने के पहले ही आग पर सैकड़ो बाल्टी पानी एक साथ पड़ने लगा।

पानी पड़ने से वह आग शीघ्र ही काबू मे आ गयी। आग बुझ जाने पर जब धीरे-धीरे विद्यार्थी-कक्ष में शांति होने लगी तब कुछ विद्यार्थी नेताओ ने चेतन सिंह और खन्ना को घेर कर टैस्ट-प्रबन्धो पर आरोप लगाना शुरू कर दिया।

राममोहनराय डिग्री कालेज की यूनियन के अध्यक्ष करुणा शकर दीक्षित ने कहा, "खन्ना साहब, यह क्या मजाक है? स्टेडियम की तीस-पैंतीस हजार से अधिक की भीड़ तो इस तरफ़ के एक-एक चौथाई हिस्से में है और यहाँ पानी का कोई समुचित प्रबन्ध नही है और उस तरफ़ के तीन-चौथाई से ज्यादा हिस्से में जहाँ दस-पन्द्रह हजार से अधिक दर्शक नही है, वहाँ हर प्रकार की सुविधाओं का इन्तजाम है। दर्जनों पानी के नल लगे है। फायर ब्रिगेड भी खड़ा है।"

क्रिश्चियन कालेज की यूनियन के मंत्री कैलाश निगम ने कहा, "चेतन सिंह साहब, आपके पुलिस वाले तो बगैर ईंटों के कोई बात सुनते ही नही। आग लगने पर इनसे लाख कहा—यहाँ आग लग गयी है, फाटक खोल दो, हम उधर से पानी लाकर इसे बुझा दें वरना यह आग फैलती जायेगी और इतनी बड़ी भीड में, जहाँ दस हजार की जगह मे तीस-पैंतीस हजार आदमी भर दिये गये है, बहुतों की जान पर बन आयेगी। पर नही, वह तो एक ही बात जानते है 'हुक्म नही है'।"

"यह बेचारे बगैर हुक्म के कोई काम नही करते, यहाँ तक कि रिश्वत भी यह हुक्म मिलने के बाद ही लेते है," किसी ने भीड़ मे कहा और सब हँस पड़े।

विक्रम कालेज यूनियन के उपाध्यक्ष रामनरेश त्रिपाठी ने कहा,"इस टैस्ट मैच मे हम लोग खुद विद्यार्थियों की ओर से पुलिस के वालंटियर बन कर काम कर रहे हैं और बदनामी भी उठा रहे है, पर हमारी कौन सुनता है ? करते तो आप लोग सब अपने मन की हैं। इन्तजाम के नाम पर तो पुलिस सिर्फ़ विशिष्ट कक्षो में बी० जी० इन्डस्ट्रीज के मेह-मानों की खातिर और जी-हुजूरी मे लगी हुई है और यहां जनता पानी के लिये तरस-तरस कर आग मे भुन रही है ।"

पूरा टकट खरीद कर साधारण कक्ष में आने वाले आस-पास खड़े सैंकडो दूसरे उम्र-रसीदा दर्शकों ने भी लड़को की बात का समर्थन किया ।

पुलिस और प्रवन्धको पर अरोपों की झड़ी लग गयी और भीड़ फिर उत्तेजित होकर फाटक की तरफ़ विशिष्ट दीर्घाओ की ओर बढ़ने लगी । परिस्थिति विगडती देखकर नगर पुलिस अधीक्षक खन्ना ने होशियारी से काम लिया । उसने विद्यार्थी नेताओं से कहा, "इस कमी की ओर आपने मेरा ध्यान पहले आकर्षित नही किया । आप जानते हैं कि मैंने आप से वायदा किया था कि मैं आपकी हर मांग और ज़रूरतों को पूरा कराऊँगा । हज़ारो की भीड़ मे पानी से ज्यादा जरूरत किस चीज की हो सकती है । चलिए पहले वह जगहे देखें जहाँ पानी का इन्तजाम हो सकता है ।"

खन्ना की बात से भीड तब कुछ शाँत हो गयी । इस बीच में चेतन सिंह और खन्ना ने आपस म अलग बात कर यह तय किया कि चेतन सिंह तो नियाज अहमद के पास लौट जाय और खन्ना उन लड़कों से बात करके उन्हें संतुष्ट कर बाद मे पहुँचे ।

खन्ना के साथ पुलिस के कई उपअधीक्षक, दस-पाँच दारोगा और सौ-पचास पुलिस के जवान चल पड़े । खन्ना स्वयं विद्यार्थी नेताओ तथा दूसरे स्वयंभू जन-नेताओ और उत्तेजित दर्शको के साथ बात करते हुए लंबे विद्यार्थी-कक्ष के बाद बने साधारण कक्ष की ओर बढ गया ।

चेतनसिंह बाक़ी पुलिस जवानों को लेकर विशिष्ट दीर्घाओं की ओर वापस लौट गया ।

वह लोहे का फाटक जो साधारण को असाधारण से अथवा अकिंचन

को सम्पन्न से अलग करता था, एक का दूसरे से क्षणिक साक्षात्कार कराने के बाद फिर प्रजातंत्रीय समता को विशिष्ट तथा अविशिष्ट वर्गों में विभाजित कर और क्रीड़ांगन पर दोनों ही वर्गों में फैली हुई हार-जीत के उल्लास की समान भावना को भी पुनर्विभक्त कर—फिर बन्द हो गया।

भेड़ियों की श्रेणियाँ

विद्यार्थियो और निम्न श्रेणी के साधारण दर्शकों को विजय पार्क के उस भाग मे वड़ी-वड़ी ऊँची दीवारो और लोहे की लंबी काँटेदार जालियों के पीछे स्टेडियम की सीढियो पर आस-पास ही वैठने का स्थान दिया गया था। दोनों कक्ष एक-दूसरे की अगल-बगल मे थे और सिर्फ काँटेदार तारो का जाल ही उन्हें एक-दूसरे से अलग करता था। दो तरफ ऊँची-ऊँची दीवारो तथा काँटेदार तारों के जाल के कारण वह भाग दो जेलो जैसा लगता था।

मैच के पहले विद्यार्थी-कक्ष के सीजन टिकट का दाम आठ रुपया रखा गया था तथा निम्न श्रेणी के सीजन टिकट का दाम दस रुपया रखा गया था। विद्यार्थियो ने हो-हल्ला मचाकर अपने सीजन टिकट का दाम पाँच रुपया करवा लिया था। प्रबंधकों की कृपा से यह टिकट वड़ी तादाद मे अन्य लोगों ने भी उपलब्ध कर लिये थे और विद्यार्थी-कक्ष मे हजारो ऐसे लोग उपस्थित थे जो विद्यार्थी नही थे।

दोनों कक्षों को मिलाकर कुल पन्द्रह-बीस हजार से ज्यादा लोगों के वैठने की जगह नही थी। परन्तु वहाँ तीस-पैंतीस हजार से भी ज्यादा लोगो की भीड जमा होने के वाद भी आने वालो की संख्या वढ़ती जा रही थी। वैठने के स्थान से दूने से भी ज्यादा दर्शकों के जमा होने तथा उनके वरावर आते-जाते रहने के कारण उन दोनो कक्षों में हर समय धक्कम-धक्का, और गाली-गलौज और कहा-सुनी होती रहती थी।

भुवन, वलराज और सतीश के साथ खन्ना इन कक्षों के फाटक के

अन्दर घुस गया और उसके आगे-पीछे पुलिस वालों का एक दस्ता भी अपनी लाठियो को फटकारता हुआ चलने लगा।

सतीश ने कहा, "खन्ना साहब, यहाँ तो प्रबधकों ने दर्शकों को भेड़-बकरी की तरह भर दिया है।"

बलराज ने कहा, "ऐसा लगता है कि इस भाग मे खेल देखने के लिए आये हुए लोगो को आदमी ही नही समझा जाता।"

खन्ना ने कुछ अप्रतिभ होकर कहा, "क्या बताऊँ मुझसे अलबर्ट साहब ने कहा था कि यहाँ दस-बारह हज़ार से ज्यादा आदमी नही आयेंगे औरयहाँ बनी हुई सीढ़ियो पर पन्द्रह हजार तक लोग आसानी से बैठ सकेंगे।"

भुवन ने कहा, "यह जगह तो वास्तव में दस हज़ार आदमियों के लिए भी मुश्किल से काफ़ी होगी और फिर ऐसा लगता है कि यहाँ मैच शुरू होने के बाद से सफाई भी नही हुई है।"

सतीश ने कहा, "गदी धूल-भरी बिना झाड़ की सीढ़ियाँ स्टेडियम के हर भाग मे ऊँची हैं, और इन पर आने-जाने का रास्ता भी इतना सँकरा है कि यहाँ हर प्रकार का खतरा है।"

"यह तो बड़ा भाग्य था कि विद्यार्थी नेताओं की कोशिश से वह आग बढ़ने नही पायी। यहाँ महिलाओं और लडके-लड़कियों की संख्या भी तो कम नही है। भगदड मे पतली बिना झाड की ऊँची-ऊँची सीढियो पर उनका क्या हाल होता, यह सोचकर ही कलेजा कांप जाता है।" खन्ना के साथ-साथ चलने वाले विद्यार्थी नेता करुणाशकर दीक्षित ने कहा।

एक दूसरे विद्यार्थी नेता ने भुवन से कहा, "सिनहा साहब, पत्रकार के नाते आप, सतीश जी और बलराज भाई तो जानते ही हैं कि अगर आग लगने की उत्तेजना, दर्शकों की अधिकता और भयाकुल भीड़ की भगदड़ से कोई दुर्घटना हो जाती तो सबसे पहले हम लोग ही पकडे जाते, बावजूद इसके कि हम लोग ऐसी दुर्घटना को बचाने की भरसक कोशिश में लगे हुए थे। फिर एक बार पकड़े जाने के बाद कम-से-कम टैस्ट मैच भर तो हम लोग सरकार के मेहमान हो ही जाते।"

कैलाश निगम ने कहा, "खन्ना साहब, हम लोगों की इस बार हर तरह से मुसीबत है। पुलिस तथा मैच के आयोजकों को सहयोग देने के कारण विद्यार्थीगण हम पर आरोप लगाते हैं कि हम आपके गुर्गे हैं और यदि आग बढ़ती तथा कुछ गड़बड़ी होती तो आप लोग और जिला अधिकारी भी हम लोगों को ही जिम्मेदार ठहराते।"

विजय पार्क की सीमा की दीवार और स्टेडियम के इस भाग की गोल घूमती हुई सीढ़ियों के पिछवाड़े के बीच में बहुत कम स्थान था। इसके विपरीत विशिष्ट कक्षों और विभिन्न दर्शक-दीर्घाओं के पीछे विजय पार्क की सीमा की दीवार तक विस्तृत खुला मैदान था। वहाँ सैकड़ों पिकनिक करने वाले झुंडों ने लंच के समय एक आमोद-प्रमोद का वातावरण उपस्थित कर दिया था, जबकि विद्यार्थी-कक्ष तथा उसके समीप की दस रुपये के सीजन टिकट वाली साधारण दीर्घाओं में पीछे की ओर स्थान की कमी के कारण बदहवासी, कहा-सुनी, धक्कम-धक्का और उत्तेजना का आशंकापूर्ण वातावरण था।

"आराम न हो, सुविधा तो हो,"—रामनरेश ने चारों तरफ़ से उमड़ती हुई भीड़ को दिखाते हुए कहा। उसने खन्ना से दर्शकों के बैठने वाली सीढ़ियों के नीचे भी झाँक कर देखने को कहा। वहाँ जगह-जगह पिछले दिन के खाने-पीने के बाद की जूठन, गंदे पत्तों, कागजों, फलों के छिलके और चाय-पानी पीने के बाद फेंके गये कुल्हड़ों के ढेर-के-ढेर पड़े थे और सड़ांध भर रही थी।

"यह वह इंतजाम है जिसके लिए आप लोग ही नहीं वरन् प्रदेशीय अधिकारी भी मैच के प्रबंधकों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते नहीं थकते।" कैलाश निगम ने तीनों पत्रकारों पर लाँछन लगाते हुए कहा।

खन्ना ने कहा, "यहाँ वाकई बड़ी भीड़ है और बेहद गंदगी है। देखिए, आज मैच के बाद मैं इसका इंतजाम करवाता हूँ। कल से आपको कोई शिकायत नहीं रहेगी।"

करुणाशंकर ने कहा, "आप अगर यहाँ सफ़ाई और पानी का ही प्रबंध कर सकें तो भी बहुत है। भीड़ का तो अब कोई प्रबंध हो नहीं सकता।"

खन्ना ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों?"

सतीश ने बताया, "अब तक इन दीर्घाओं के पच्चीस हजार से ज्यादा सीजन टिकट बिक चुके हैं। और रोजाना टिकट भी हजारों ही बिकते हैं। जो टिकट खरीदेगा वह तो मैच देखने आयेगा ही।"

बलराज ने कहा, "मैच शुरू होने से पहले पाँच लाख रुपये के टिकट बिक गये थे और टिकटों का काला बाजार खूब गर्म था। ऊँची श्रेणी का पच्चीस रुपये का सीजन टिकट चालीस रुपये तक बिका है। तुर्फा यह है कि टिकट बिकने के घोषित स्थानों पर पहले ही दिन किसी को पच्चीस रुपये का टिकट नहीं मिला।"

करुणाकर ने कहा, "असल में प्रबंधकों ने इन टिकट बेचने वालों को टिकट दिये ही इसलिए थे कि यदि वह चाहें तो अपने टिकटों का ब्लैक कर लें, या अपने मिलने-जुलने वालों को बेच कर उन्हें खुश कर लें। साधारण विद्यार्थियों के लिए हर तरह की बंदिश थी। उन्हें अपने *कॉलेज में अपना परिचय-पत्र दिखा कर मैच के एक दिन पहले ही टिकट* मिले क्योंकि टिकट कालेजों में आये ही आखिरी दिन और रईसजादे विद्यार्थियों को जो इधर प्रवेश लेकर फिर प्रबंधकों की सहायता से उच्च श्रेणियों की ओर निकल जाते हैं और वहाँ भी सिर्फ लड़कियों को घूरने और छेड़ने के लिए ही जमा होते हैं, उन सबको घर बैठे ही टिकट मिल गये थे।"

इसी समय स्टेडियम के बाहर बड़े जोर का शोर उठा। खन्ना के साथ भुवन, सतीश और बलराज ने भाग कर देखा तो पता चला, सड़क के उस पार वाले, 'उषा किरण' नामक बंगले से खिलाड़ी लंच के बाद वापस आ रहे थे।

उन्हें स्टेडियम तक जाने में सिर्फ एक सड़क पार करनी थी। पर भीड़ की उतावली के कारण उनका आसानी से अंदर आना संभव नहीं था। इसलिए दोनों टीमों के खिलाड़ी अलग-अलग बस में बैठ कर गोल चक्करदार स्टेडियम के विशिष्ट दर्शक कक्ष के चौड़े फाटक से अंदर आ रहे थे। उनकी बसों के आगे-पीछे, दायें-बायें पुलिस की तत्परता के बावजूद हजारों की भीड़ तरह-तरह के नारे लगाती चल रही थी। खन्ना ने विद्यार्थी नेताओं से कहा, "अब मुझे विशिष्ट कक्ष के फाटक पर रहना

होगा। मुझे इजाजत दें। मैंने आपकी सब शिकायतें सुन ली है और भरसक कल सवेरे तक दूर करा दूंगा। आपके अब तक के सहयोग के लिए मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ और आपसे अपील करता हूँ कि आप ऐसा ही सहयोग देते रहें।"

करुणाशंकर ने कहा, "लेकिन आप इस समय विद्यार्थी-कक्ष से विशिष्ट कक्ष की तरफ़ खुलने वाले फाटक पर होने वाली सख्ती तो बन्द करवा दें। इस फाटक से हमें आने-जाने की सहूलियत रहनी चाहिये और यदि ऐसा न हो सके तो कम-से-कम आगया किसी फसाद के वक्त तो यह आसानी से खुल जाए जिससे हम लोग बिना किसी दिक्कत के आप तक पहुँचकर अपनी फरियाद कर सकें।"

खन्ना ने कुछ सोचकर कहा, "अच्छा यह हो जाएगा।"

उसने वहाँ खड़े एक पुलिस-उप-अधीक्षक को बुलाकर कहा, "देखो, जंगबहादुर, तुम यहाँ कोई समझदार इन्सपेक्टर तैनात करो जो इन लोगों को जानता हो। उसको ताकीद कर दो कि जब यह लोग मुझसे या और दूसरे पुलिस के अधिकारियों से मिलना चाहें तब इन्हें आने दिया जाए।"

विद्यार्थी नेता इस हुक्म से कुछ सतुष्ट होकर पीछे की तरफ़ लौट पड़े और भुवन अपने सहयोगियों के साथ खन्ना के पीछे-पीछे विशिष्ट कक्ष में वापस आ गया।

उस समय तक दोनों टीमों के खिलाड़ियों की बसें अन्दर आ चुकी थीं।

पुलिस के जवानों ने भीड़ से उसकी सुरक्षा के लिए दो समानान्तर इन्सानी दीवारें बनायी थीं जो एक-दूसरे से पाँच गज दूर थीं। पुलिस के बीसियों जवान पाँच गज की दूरी पर एक-दूसरे के आमने-सामने कन्धे से कन्धा मिलाकर फाटक से खिलाड़ियों के कक्ष तक खड़े हो गये थे। इन दो इन्सानी दीवारों के बीच में एक गली-सी बन गयी थी। खिलाड़ी इस पाँच-गज़ी इन्सानी गली में चलकर राज्यपाल-दीर्घा के बगल में बनी अपनी दीर्घा में जा रहे थे।

उन दोनों इन्सानी दीवारों के पीछे सैकड़ों लड़के-लड़कियों की भीड़

थी उनमे से कुछ उछल-उछलकर खिलाडियों को देखने का प्रयत्न कर रहे थे। कुछ अपने पैर के पंजो पर खड़े होकर उनकी एक झलक पाने की कोशिश में थे। लंच के लिये बाहर जाते समय एक खिलाड़ी के कंकड से लगी चोट के कारण सभी खिलाडी भीड़ से भयाक्रान्त दिखायी दे रहे थे और सही सलामत अपनी दीर्घा मे पहुँचने के लिए जल्दी-जल्दी बस से उतरकर अपने मंडप के फाटक में जा रहे थे। उनमे से किसी ने इस उत्सुक भीड की ओर एक नज़र भी नही डाली।

जब सब खिलाडी अन्दर चले गये तो पुलिस के जवान भी अपनी जगह से हटकर इधर-उधर हो गये। उनके हटने के बाद उनके आगे-पीछे की भीड एक-दूसरे की तरफ बढ़कर आपस में गुंथ गयी और इस गुत्थम-गुत्था मे फँसी हुई लडकियो के कपडो की छीना-झपटी शुरू हो गयी। भीड़ में फँसी लडकियो की चीखों, लड़कों की आवाजाकशी और आपसी खींचातानी से राज्यपाल-दीर्घा के पीछे एक नया आशंकापूर्ण दृश्य उपस्थित हो गया।

इस हलचल मे बहुत से लड़को का एक झुंड एकाएक एक जगह जमा हो गया। उस झुंड के लडके झुक-झुककर कोई चीज उठाते या खीचते दिखायी पड रहे थे। एकाएक लड़कों के इस झुंड से किसी लडकी की चीखें सुनायी पडने लगी। लड़की की चीखों से उत्तेजना फैल गयी। सब तरफ से लोग उस तरफ दौड पड़े और लगा कि अब कोई झगड़ा-फ़साद होकर रहेगा।

लेकिन इसके पहले कि स्थिति बेकाबू होती वहाँ पर तैनात उप-पुलिस अधीक्षक ने अपना बेंत चलाकर पुलिस के जवानो की मदद से उस झुंड को तितर-बितर कर दिया।

इस भगदड़ में एक तेरह-चौदह बरस का लड़का गिर पड़ा। जब पुलिस के बेंतों के डर से वह भीड़ इधर-उधर भागी तब कुछ लड़के-लड़कियाँ जल्दी मे उस गिरे हुए लड़के पर पैर रखकर भागे। वह लडका बुरी तरह कुचलकर बेहोश हो गया और कुछ पुलिस वाले उसे उठाने मे लग गये।

भीड़ छँटने के बाद भुवन ने देखा कि जहाँ लडको का झुंड बहुत

घना था वहाँ एक पन्द्रह-सोलह बरस की लड़की अपने घुटनों को अपनी छाती से लगाये बैठी है और जोर-जोर से सिसकियाँ ले रही है। कुछ पुलिस के जवानों ने उस लड़की को चारों तरफ से घेर लिया। कुछ दूसरे पुलिस के जवानों ने उस बेहोश पड़े लड़के को उठाकर एम्बुलेंस गाड़ी में लिटा दिया।

पुलिस के घेरे के अन्दर जाकर भुवन ने उस सिसकियाँ लेती हुई लड़की को पहचान लिया। वह अजरा की सहेली थी, जिसे उसने अजरा के साथ वी० आई० पी० शामियाने में देखा था।

अजली की चुन्नी गायब थी। उसकी कीमती कमीज भी आगे-पीछे से फटकर इधर-उधर लटक रही थी। उसकी पीठ करीब-करीब नंगी थी। और उसकी कंचुकी की तनियाँ भी टूटकर लटक रही थीं। जाहिर था कि उसकी छाती के सामने की कमीज भी फट गयी थी और वह उकड़ूँ बैठी अपनी लाज को अपने घुटनों से छुपाये हुए थी।

लड़के-लड़कियों की गुत्थम-गुत्था और छीना-झपटी में अजली बुरी तरह से भीड़ के बीच में फँस गयी थी। वह एक-दूसरे पर झपटती हुई अपने सामने तथा अपने पीछे वाली दोनों भीड़ों का शिकार बन गयी थी। उस भीड़ में फँसी दूसरी लड़कियाँ तो जल्दी से इधर-उधर होकर निकल गयी थीं, पर अंजली निकल न सकी थी। उसके पीछे वाली भीड़ ने उसे ठेलकर उसके आगे आने वाली भीड़ की ओर ढकेल दिया था और आगे जाने वाली भीड़ की पहली कतार के लड़कों ने मौके से लाभ उठाकर उसे दबोच लिया था। इस तरह अजली अपने आगे और पीछे से एक-दूसरे पर बढ़ती हुई लड़कों की दो भीड़ों की गिरफ्त में आ गयी थी। दोनों भीड़ों के पीछे वाले लड़कों को पता भी नहीं था कि यह छीना-झपटी किस बात के लिये हो रही है। जिन लड़कों की गिरफ्त में वह आ गयी थी उनमें से किसी ने उसकी चुन्नी खींची तो किसी ने उसकी कमीज को पीछे से ऐसा खींचा कि वह फटकर लटक गयी। कमीज के फटने से ही दो-चार लड़कों ने भीड़ का फायदा उठाते हुए उसकी छातियों को दबाने के लिए अपने हाथ बढ़ा दिये।

इस चतुर्दिक आक्रमण से प्रताड़ित अंजली ने भाग्यवश अपना हाथ

नहीं छोड़ा। अपने को बचाने के लिये वह मठ में दुबक कर बैठ गयी। अपनी छाती को घुटनों से सटाकर उसने दोनों हाथों से अपने घुटनों को बंद लिया और अपना मुँह भी घुटनों में डालकर वह एक मांसपिंड-सी बन गयी थी।

पुलिस की डंडों की मार से जब लड़कों की भीड़ छंटी तब सबने देखा कि मंजरी की नंगी पीठ पर से उसकी लाल कमीज फटकर इधर-उधर लटक रही थी। उसके बालकट बाल बिखरे हुए थे। नंगी पीठ पर जहाँ-तहाँ [illegible] नाखूनों के निशान भी उभरे हुए थे और जगह-जगह खून छलक आया था।

गठरी बनी हुई घायल मंजरी को देखकर भुवन को ऐसा लगा कि जब भेड़ियों का खूंखार झुंड अपने शिकार को नोच-नोच कर खाने ही वाला था तभी वह कोई खतरा देखकर भाग खड़ा हुआ।

पुलिस के घेरे के अन्दर मंजरी के पास खड़े खन्ना, भुवन, सतीश तथा धनराज सब हतप्रभ थे। एक क्षण उनकी समझ में कुछ नहीं आया। पर जब उन लोगों ने इस घटना की निर्ममता को समझा तो सभी को अपने पुरुष होने पर ग्लानि हुई।

एकाएक खन्ना की नजर कुछ दूर पर खड़े लड़कों पर पड़ी। उनमें से एक के हाथ में एक फटी चुन्नी थी। खन्ना के इशारे पर कुछ पुलिस वालों ने दौड़ कर उन लड़कों को पकड़ लिया। इसी समय अपने खेमे से एक बड़ा-सा तौलिया लेकर महमद जल्दी-जल्दी वहाँ भागता हुआ आया और उसने वह तौलिया मंजरी के ऊपर डालकर उसे पूरी तरह ढँक कर अपनी बाहों में उठा लिया।

क़रीब-क़रीब रुंधी-सी आवाज में महमद ने कहा, "चलो बेटी, मेरे कैम्प में चलो। वहाँ मजरा के बहुत-से कपड़े हैं जो ठीक आये पहन लेना।"

अपने खेमे की ओर चलते हुए उसने खन्ना की तरफ़ देखकर कहा, "जल्दी डॉक्टर भेजो।"

महमद के मुँह से बात निकलते ही एक दूसरा पुलिस उप-अधीक्षक, "बहुत अच्छा हुजूर," कहते हुए चिकित्सा-सेवा-शिविर की तरफ भागा।

महमद के पीछे-पीछे चेतन सिंह भी लपकता हुआ जा रहा

उसने अंजली को अहमद से लेते हुए कहा, "दीजिये, मुझे दीजिये मैं इसे ले चलता हूँ।" और वह *तौलिये मे लिपटी सिसकती अंजली को अपनी* गोद मे लेकर अहमद के खेमे की तरफ बढ गया।

जब चेतन सिंह अजली को लेकर चलने ही वाला था तभी चुन्नी लिये हुए लडके को पकड़ कर लाते हुए पुलिस वाले भी आ गये। उस लडके को देखते ही अहमद ने उसके बायें गाल पर कसकर अपने कसरती हाथ का एक भरपूर थप्पड लगाया और चीखते हुये कहा, "कुत्ते, शरम और हया को बिलकुल बेच दिया है, क्या ?"

अहमद के थप्पड़ से जितनी घृणा और रोष उस एक क्षण मे व्यक्त हुआ उतनी घृणा और उतना रोष भुवन ने अपने जीवन मे पहले कभी नही देखा था। अहमद के नथुने फूल गये थे और वह बड़ी मुश्किल से अपने पर काबू पा रहा है। अहमद को इस हालत मे देखकर भुवन को ऐसा लगा कि यदि अहमद कठोर आत्म-नियंत्रण कर स्वयं को रोक न लेता तो वह उस लडके का उसी समय खून कर देता।

अहमद के आत्मनियंत्रण को देखकर दूसरे पुलिस वाले भी संभल *गये। खन्ना के इशारे पर एक दारोगा, उस लड़के को पुलिस-गाड़ी मे* बैठाकर विजय पार्क के बाहर ले गया।

करुणा शंकर दीक्षित भी शोर सुनकर उसी समय विद्यार्थी-कक्ष से विशिष्ट कक्ष में आ गया था। वह सब-कुछ देख रहा था।

जब भीड छँट गयी तब उसने भुवन के पास खडे खन्ना से कहा, "खन्ना साहब, यह है आपका विशिष्ट कक्ष जहाँ आप लोग अफसरों और धनाढ्यों के शोहदे लडकों के लिये हर सुविधा जुटाते हैं। यहाँ सरे-आम लडकियों के कपड़े फाड़े जाते हैं। उन पर घृणित आक्रमण होते हैं। फिर भी आप और समाज इन्ही लोगों को इज्जत देते हैं, क्योंकि इन लोगों के पास अधिकार और धन है। अपनी वासना की तुष्टि के लिए यह वर्ग प्रत्येक सामाजिक मान्यता का विखंडन करता है। समाज को इसी वर्ग मे सबसे बडा खतरा है पर इसे सभ्य समझा जाता है और हमारे उस मिले-जुले साधारण और विद्यार्थी-कक्ष में हम और दूसरे निर्धन लोग उन कक्षों में आने वाली क्रिकेट-प्रेमी महिलाओं और लड़कियों का

ध्यान रखते हैं। वहां यहां से ज्यादा स्त्रियां और लड़कियां हैं, जगह भी कम है, भीड भी बेतहाशा है। पुलिस का इन्तजाम भी नही के बरावर है फिर भी इस क़िस्म की वारदात तो अलग, आपने यह भी नही सुना होगा कि किसी महिला को धक्का भी लगा हो या किसी के साथ किसी प्रकार अभद्र व्यवहार हुआ हो।"

खन्ना ने कहा, "मैं सब जानता हूँ करुणा शकर, मगर क्या करूँ। इन्सान की खाल मे भेड़िए तो हर समाज मे होते है।"

इसी समय प्रदेश के राज्यपाल महोदय भी लंच से वापस आ गये। उनकी बग़ल मे श्रीमती लीला मिस्त्री थी। लेडी डॉक्टर मिसेज प्रतिमा कपूर और डॉक्टर विश्वनाथ मल्होत्रा राज्यपाल महोदय के पीछे-पीछे चल रहे थे। इसके अतिरिक्त और भी बहुत-से सभ्रांत व्यक्ति उनके साथ-साथ चल रहे थे।

उन लोगों को देखकर सतीश ने भुवन से कहा, "चलो, यार, हम लोग अपनी स्थानीय प्रेस-दीर्घा मे चलकर बैठें। यहां तो उबकाई आ रही है। जहां देखो वहां खुशनुमा कपड़ों से ढँकी और सेंट से भीगी ऐसी सड़न और गंदगी है जो असह्य सामाजिक दुर्गंध उड़ा रही है।" फिर उसने डॉक्टर मल्होत्रा और लेडी डॉक्टर प्रतिमा कपूर की ओर इशारा किया और कहा, "राज्यपाल महोदय दोपहर का खाना खाने के बाद इनके यहां भी ज़िला समाज कल्याण समिति की कार्यकारिणी की मीटिंग में गये थे।"

वलराज ने हँस कर कहा, "खन्ना साहव, यह दोनों तो आपकी विरादरी के हैं आपको तो मालूम होगा कि दोनों का नगर-प्रसिद्ध समाज कल्याण कैसा है।"

वलराज की बात सूनकर खन्ना भी हँसने लगा।

भुवन को कुछ पता नही था। उसने पूछा, "इन लोगो के समाज कल्याण का क्या राज है, खन्ना साहब ?"

खन्ना ने हँसते हुए कहा, "मुझे तो इजाजत दीजिये। मुझे एस० एस० पी० साहब को रिपोर्ट देनी होगी। आप यह राज सतीश जी से पूछ लें।"

खन्ना चला गया तब सतीश ने कहा, "बस, बड़ा दम भरते हो अपनी अखबारनवीसी का और तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि डॉक्टर मल्होत्रा और लेडी डॉक्टर प्रतिमा कपूर दोनों मिलकर क्या समाज कल्याण करते हैं।"

भुवन ने कुछ झेंपते हुए कहा, "नहीं जानता तभी तो पूछ रहा हूँ।"

बलराज ने कहा, "अच्छा चलो बतायेंगे, पर जब तुम किसी शाम को ह्विस्की का प्रबंध करोगे।"

भुवन ने कहा, "ह्विस्की तो जब तुम कहोगे तभी पिला दूंगा। पर बात उठायी है तो बताओ तो क्या रहस्य है।"

सतीश ने कहा, "वह तो खैर बताया ही जायेगा, पर तुम तो कहो कि जिला समाज कल्याण समिति की अध्यक्ष श्रीमती मिस्त्री सिर्फ तुम्हें ही क्यों अपने यहाँ बुलाती है और किसी दूसरे अखबार वाले को घास भी नहीं डालती।"

भुवन ने कहा, "भाई मुझे तो मालूम नहीं, बुलाती है तो चला जाता हूँ। जब जाता हूँ तब कोई खास बात भी नहीं होती। हमेशा ही दो-चार और लोग भी मौजूद होते हैं। काफी या चाय पर कुछ सामाजिक और राजनीतिक बातें होती है, और इससे ज्यादा कुछ नहीं होता।"

सतीश ने पूछा, "आने-जाने वालों मे हमेशा वही लोग होते है या फिर हर बार अलग-अलग लोग आते है।"

भुवन ने उत्तर दिया, "मुझे तो बुलावा तभी मिलता है जब कनकपुर के पुराने कलक्टर श्यामलाल मित्तल दिल्ली से आते हैं, या फिर देहरादून से प्रभाशंकर शर्मा आते है। वह कभी यहाँ कलक्टर थे। इन दोनों से मेरी पुरानी मुलाकात है। लीला मिस्त्री से भी मेरी मुलाकात मित्तल ने ही करवायी थी।"

बलराज न पूछा, "तुम्हारी कभी इसके पति से भेंट नहीं हुई।"

भुवन ने कहा, "भेंट क्यों नहीं हुई। जब कभी इसके घर जाता हूँ, वह हमेशा मिलता है। पर बहुत बूढ़ा होने के कारण ज्यादा देर साथ नहीं बैठता। थोड़ी देर बाद ही नम्रतापूर्वक विदा लेकर चला जाता है।"

सतीश ने कहा, "यह लीला मिस्त्री वास्तव में नगर के पुराने कलक्टर

मित्तल की देन है। उसी ने इसको पाँच वरस पहले नगर के विशिष्ट समाज को पेश किया था। तभी तुम्हारी मुलाकात करवायी होगी। तुम्हें याद होगा, उस समय यह कितनी दुवली-पतली थी और सहमी-सहमी-सी कलक्टर के यहाँ की मीटिंगों मे दबी बैठी रहती थी। उस समय इसकी शादी को भी दो ही वरस हुए थे। पर अब तो यह निखर गयी है। डट कर बात करती है। सामाजिक दायरे के साथ ही साथ इसका शरीरिक दायरा भी बढ गया है, और दोनों ही निरंतर बढ रहे है। बूढा मिस्री तो ज्यादातर बीमार रहता है। उसकी पहली बीबी की लडकी शैला ही ज्यादातर उसकी देखभाल करती है। शैला की उम्र मिसेज मिस्री से कुछ ही कम होगी।'

बलराज ने आगे बढते हुए कहा, "लोग कहते हैं कि यहाँ से झाँसी तबादला होने के बाद भी मित्तल साहब कई बरस तक अवसर सिर्फ इसी से मिलने कनकपुर आते रहते थे। वही इसे स्थानीय कल्याण समिति के अध्यक्ष पद पर सुशोभित कर गये थे, अब तो यह राज्यपाल से भी आगे बढ़कर राष्ट्रपति तक पहुँच चुकी है।"

भुवन ने कहा, "किसी जमाने में अंग्रेज कलक्टरों ने इसी मिस्री परिवार को नई सड़क के किनारे नगर की सबसे अच्छी जमीनें नाम मात्र के मूल्य पर बख्श दी थी। बताया जाता है कि उस जमाने मे जिन परिवार की महिलाओं को अंग्रेजों के साथ सध्या के आमोद-प्रमोद मे सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त था, उनमें मिस्री परिवार प्रमुख था। मित्तल साहब ने उसी परपरा का पुनरुद्धार किया और बूढ़े मिस्री की इस जवान पत्नी को अपनी छत्रछाया मे लेकर इसे नगर की सबसे प्रमुख सामाजिक सस्था का अध्यक्ष बना दिया।"

सतीश ने कहा, "इस समाज कल्याण समिति में बहुत से इसी प्रकार के लोगो को मान्यता मिली हुई है। लेडी डाक्टर प्रतिमा कपूर और डॉक्टर मल्होत्रा को देखो। दोनों साथ ही हर सामाजिक अथवा राजनीतिक आयोजन में जाते हैं। हर जगह इन्हें बड़ा आदर मिलता है, जबकि इनके कारनामे ऐसे हैं कि इनका सामाजिक वहिष्कार होना चाहिए। प्रतिमा कपूर और मल्होत्रा का खुला यौनाचार वरसों से चल रहा है।

कहते हैं कि पाँच वर्ष हुए प्रतिमा कपूर के पति डॉक्टर मोहन की मृत्यु भी इसी दुःख से हुई थी। मोहन के जीवनकाल मे भी यह डॉक्टर मल्होत्रा रात-दिन प्रतिमा कपूर के यहाँ ही पाये जाते थे। इत्तफ़ाक से डाक्टर मोहन की प्रैक्टिस कम थी। जबकि प्रतिमा कपूर रोज़ ही दस-पाँच अवैध गर्भपात कराकर हजारों रुपये महीना कमा रही थी।"

बलराज ने कहा,"उस बेचारे डॉक्टर मोहन ने तो भरी गर्मी में महीनों खड़े रहकर इसकी नयी कोठी बनवायी और अब उसकी मृत्यु के बाद से वहाँ डॉक्टर मलहोत्रा का कब्जा है। अब यह हजरत अपनी बीवी और तीन बच्चों को छोड़कर वहीं रहते हैं।

भुवन ने पूछा, "डाक्टर मोहन और प्रतिमा कपूर के भी तो बच्चे होंगे!"

बलराज ने कहा, "हाँ, क्यों नहीं, मोहन के दो बच्चे हैं।"

सतीश ने कहा, 'व्यक्तिगत जीवन में आदमी जो करता है उसे दर-गुज़र भी कर दिया जाय, तब भी यह कैसे स्वीकार किया जा सकता है कि ऐसे ही लोगों को सामाजिक मान्यता भी दी जाय।"

बलराज ने कहा, "डाक्टर मोहन से मेरी अच्छी-खासी दोस्ती थी। पर वह अपनी ज़बान पर कभी अपना दुःख नहीं लाया। बस एक बार ऐसा हुआ कि जब मैं दोपहर को घर लौट रहा था, तब वह पेड़ के नीचे खड़ा मकान बनाने वाले राज-मजदूरों के काम का निरीक्षण कर रहा था। मैं उधर निकला तो उसने मुझे आवाज़ दी। जून का महीना था। दोपहर का वक़्त था। नये कनकपुर की उस सड़क पर सब तरफ सन्नाटा था, और गर्मी के वह दिन थे जब कनकपुर में हमेशा ही लू से दो-चार मौतें होती हैं।'

"डॉक्टर मोहन की आवाज पर मैं रिक्शे को रोककर उसके पास गया, और देखा कि वह पसीने-पसीने हो रहा था। पसीने पर गर्द के जमने और लू में घंटों झुलसने से उसका गोरा मुँह काला हो रहा था।

"कहाँ जा रहे हो भाई बलराज" डॉक्टर मोहन ने कहा, "कभी-कभी धूप में तपने वाले हम ग़रीबों की ओर भी देख लिया करो।"

"खूब, तुम गरीब हो, जो इतनी बड़ी कोठी बनवा रहे हो।"

प्यार की एक क़िस्म

बलराज ने उस दिन कहवा-खाने में बैठकर डॉक्टर मोहन के बारे में जो कुछ बताया उसे सुनकर भुवन को विश्वास नहीं हुआ कि किसी आदमी में इतनी बरदाश्त और इतनी नफरत साथ-साथ हो सकती है जितनी डॉक्टर मोहन के मन में अपनी पत्नी डॉक्टर प्रतिमा कपूर और उसके सर्व-विदित अवैध प्रेमी डॉक्टर मल्होत्रा के लिए थी।

डॉक्टर मोहन की बात पर बलराज को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने कहा, "ऐसा क्यों कहते हो यार ! यह कोठी तो तुम्हारा स्वप्न-प्रासाद है।" फिर बात बदलने की गरज से बलराज ने पूछा, "डॉक्टर मिसेज़ कपूर कहाँ है।"

डॉक्टर मोहन हँसा, "डॉक्टर साहिबा, डाक्टर मल्होत्रा के साथ लंच पर गयी हैं।"

मोहन के-छोटे से जवाब में इतनी कड़वाहट थी कि बलराज स्तब्ध रह गया। उसे जल्दी थी, दोपहर का एक बजा था, जून की तपती धूप का सूरज एकदम सिर पर था— चारों तरफ आग-सी लगी हुई थी। उस तपिश में डॉक्टर मोहन की हँसी किसी पिंजड़े के बंद हिंसक जन्तु की बेबस गुर्राहट-सी लग रही थी। असीम घृणा और अपार अमर्ष से उफनती हँसी की कुंठा के मुकाबले में चारों ओर की वह चिलचिलाती धूप चाँदनी-सी प्रतीत होती थी।

बलराज मोहन की उस उबलती हुई घृणा और असह्य रोष मिश्रित हँसी की तीव्रता से काँप उठा और उससे विदा लेने का उपक्रम करते

हुए कहा, "अच्छा तो अब चलूं, बड़ी तेज धूप है।"

डॉक्टर मोहन ने आगे बढ़कर बलराज का हाथ पकड़ लिया और कहा, "भागने की कोशिश मत करो। घर चलो एक बीयर हो जाय। आज मैं तुम्हें वह सब बताऊँगा जिसे तुम एक दोस्त के नाते याद रखना और मेरे मरने के बाद एक अख़बारवाले के नाते मेहरबानी कर जिस तरह हो सके भरसक इन बातों का ज्यादा-से-ज्यादा प्रचार करते ही रहना।"

डॉक्टर मोहन को उस समय छोड़कर जाना बलराज को अनुचित के अतिरिक्त असंभव भी लगा।

उसी सड़क पर जिस पर वह कोठी बन रही थी थोड़ी दूर आगे एक छोटा चार कमरों का बंगला था जो मामूली ढग से बना हुआ था। डॉक्टर मोहन अपनी पत्नी प्रतिभा के साथ उसी बँगले मे किराये पर रहता था। रिक्शे पर बैठकर मोहन बलराज को अपने बंगले मे ले गया। मोहन पढ़ने का शौक़ीन था और जिस कमरे मे वह बलराज को ले गया उसमे चारो तरफ़ अलमारियों में राजनीति तथा साहित्य के बड़े-बड़े लेखकों की पुस्तकें सजी हुई थी।

दो अलमारियों के बीच की दो फुट चौड़ी और चार फ़ुट लम्बी खाली दीवार पर जोगिये रंग का एक पर्दा पड़ा था। बलराज से बैठने को कहकर मोहन ने उस पर्दे को एक तरफ हटा दिया। उसके हटने से दीवार पर टँगी एक कलाकृति दिखाई देने लगी।

बलराज की नजर उस कलाकृति पर रुकते देखकर मोहन ने कहा, "वहाँ सोफे पर बैठो जिससे कि यह चित्र तुम्हारे सामने रहे, यह चित्र मेरा ही बनाया हुआ है।"

बलराज ने सोफे पर बैठते हुए कहा, "समझ मे नही आता।"

"खूब समझ में आएगा, जरा इत्मीनान से देखते रहोगे तो एक एक संकेत साफ़ हो जाएगा।" मोहन ने उत्तर दिया। उस कलाकृति के सामने बैठकर बलराज ने उसे गौर से देखा।

काली स्याह पृष्ठभूमि पर कुछ टेढ़ी-मेढ़ी घुमावदार सफ़ेद मोटी रेखाएँ थी। वे एक बिन्दु पर एक-दूसरे से मिलकर, एक-दूसरे से दूर

होती हुई, ऊपर और नीचे की ओर चली गयी थी। मिलन-बिन्दु पर हल्की महीन, काली रेखाओं का समूह था जो किसी रहस्य को ढँके हुए प्रतीत होता था।

डॉक्टर मोहन ने बगल के कमरे में जाकर फ्रिज खोला तो उसका बारह वर्षीय पुत्र अशोक और दस वर्षीय पुत्री अनिता दोनों ही 'डैडी-डैडी' करते उसके पास आ गये और पूछा, "डैडी आप नही गये लंच पर ?"

"नही बेटी।" मोहन ने प्यार से उत्तर दिया।

"फिर मम्मी और अंकल मल्होत्रा ?" बच्चो ने प्रश्न किया।

"वह दोनो लच पर गये है। उन्हे लच के बाद भी आगे उसी तरफ़ कुछ काम था।" मोहन ने दुलार से जवाब दिया।

"फिर तुम क्या खाओगे डैडी ?" अनिता ने पूछा, "हम दोनो ने तो खाना खा लिया है।"

"कोई बात नही बेटी," मोहन ने कहा, "तुम छोटू से कहो वह हमारे लिए दो आमलेट बनाकर डबल रोटी और मक्खन दे देगा। तब तक मैं तुम्हारे अकल बलराज के साथ थोड़ी बीयर लूंगा।"

दोनों बच्चे कैरम खेल रहे थे। मोहन की बात सुनकर दोनों भागते हुए रसोईघर की तरफ़ चले गये।

मोहन जिस नफरत से उफनता हुआ आया था, वह बच्चो से बात करते ही पलक-भर मे उड़ गई थी। उसकी जगह उसकी आवाज़ मे स्नेह का सागर उमड़ आया था।

उसके इस रूपान्तर को देखकर बलराज आश्चर्य चकित रह गया। मोहन ठडी बीयर की बोतल और दो गिलास लेकर बलराज के सामने बैठ गया। वह एक प्लेट में पनीर के पतले-पतले कटे टुकड़े भी ले आया था।

बीयर खोलकर उफनते गिलास को बलराज की तरफ बढाते हुए डॉक्टर मोहन ने कहा, "*गौर किया तुमने इस चित्र पर ?*" फिर अपना गिलास उठाकर कहा, "लो, पियो, व्यभिचार-जन्य सुख, समृद्धि और सामाजिक आदर के लिए पियो।"

बलराज गिलास उठा चुका था पर जब उसने मोहन का पीने का आह्वान सुना तो उसने घबराकर गिलास रख दिया। बलराज को गिलास रखता देखकर मोहन ठहाका लगाकर हँसा।

इस बार उसकी हँसी मे घृणा नही थी। वह हँसी जीवन की कौतुक-पूर्ण स्वीकृति थी। ऐसी हँसी जिसे वही मनुष्य हँस सकता है जिसने जिन्दगी की रंगीनियों और तलखियों—दोनों को ही निर्विकार रूप से स्वीकार कर लिया है।

वह हँसी एक बालक की हँसी थी, जो गिर-गिरकर उठता था और हँसता-हँसता आगे बढ़ता जाता था।

चारो ओर से बन्द होने के कारण कमरे मे अन्धेरा हो रहा था। इस अन्धेरे को दूर करने के लिए हल्की हरी रोशनी का एक बल्ब उस कलाकृति के ठीक नीचे जल रहा था। बल्ब का हरा प्रकाश चित्र पर नीचे से ऊपर की ओर पड रहा था।

बगल के कमरे से कूलर की ठंडी हवा और कैरम खेलते हुए दोनों बच्चो की किलकारियाँ साथ-साथ आकर वातावरण को उत्फुल्ल बना रही थी।

मोहन से कहा, "घबराओ नही, बलराज पियो और मेरे बाद भी इस बात को याद रखना कि सामाजिक मान्यता प्राप्त करने का एक मार्ग व्यभिचार भी है। अगर समाज मे गुप्त व्यभिचार न हो तो लेडी डॉक्टरो का आदर और आमदनी बहुत कम हो जाए।"

बलराज ने बहस करने के बजाय गिलास उठाकर मोहन का पीने में साथ देना ज्यादा श्रेयस्कर समझा।

मोहन ने फिर कहा, "इस चित्र को गौर से देखोगे तो इसका रहस्य तुम्हारी समझ में आ जाएगा।"

बलराज के पीछे से रोशनदान से आने वाली प्रकाश की कुछ किरणें कमरे के अँधेरे को भेद कर उस चित्र पर पड़ रही थी। बगले के मैदान मे रोशनदान के पीछे लगे नीम के पेड़ की घनी पत्तियों के हवा से हिलने-डुलने के कारण कमरे में आने वाली प्रकाश की किरणें भी उस चित्र पर नाच रही थी। पत्तियों के हिलने से उस गहरे काले चित्र के विभिन्न

मार्गों पर रोशनी घटती-बढ़ती रहती थी।

एकाएक तेज हवा के झोंके से नीम के पेड़ की वह पत्तियाँ जो रोशनदान पर पड़ने वाली धूप को रोके हुए थी, एक तरफ हो गयी और सीधी धूप आने से कमरा कुछ क्षणों के लिए पूर्ण रूप से आलोकित हो गया।

उस आलोक मे बलराज ने देखा कि चित्र के काले पट पर खिंची सफेद रेखाओं के बीच के नीचे वाले भाग में हल्के नारंगी रंग का भी प्रयोग किया गया था और उन सफ़ेद रेखाओं के ऊपरी भाग में हल्के पीले रंग की झलक लिये हल्की सफ़ेद रेखाओं से एक-दूसरे की परिधि छूते हुए दो चौड़े गोले भी बने हुए थे। उन पीले से गोलो के बीच में फिर काले और सफेद रंग के मिश्रण से दोनों तरफ दो और हल्के काले छोटे गोले बने थे। हर काले छोटे गोले के मध्य में फिर कुछ बैंजनी रंग की आभा लिए फालसे के बराबर गहरे काले रंग के छोटे-छोटे गोले थे।

चित्र के ऊपरी भाग में पीले रंग की झलक के गोलों के अतिरिक्त बाकी सब हल्का नारंगी रंग था जो चित्र के निचले भाग की ओर धीरे-धीरे गहरे होने वाले नारंगी रंग के साथ ऐसा समन्वित किया गया था कि एक से दूसरे का बोध होता था। क्षणिक प्रकाश में बलराज को यह भी पता चला कि सफ़ेद रेखाओं के मिलन केन्द्र पर हल्के काले रंग की महीन रेखाओं से एक कोमल केश-गुच्छ सा बना हुआ था। क्षण भर बाद हवा के झोंके का वेग कम हो जाने के कारण नीम की पत्तियाँ यथावत हो गयी और रोशनदान से जाने वाली किरणों ने उस चित्र पर पुन अपना नृत्य आरम्भ कर दिया, जिसमे वह फिर अस्पष्ट हो गया।

उस क्षणिक प्रकाश के प्रभाव से बलराज की समझ में वह चित्र पूरी तरह से आ गया और समझ में आते ही उसने अचंभे से मोहन को गौर से देखा।

डॉक्टर मोहन इकहरे, कसरती बदन तथा गोरे रंग का खानदानी आदमी था। शराफत उसके रोम-रोम से टपकती थी। उसकी आवाज मे मिठास कूट-कूट कर भरी थी। उसके नीले शीशों के सुनहरे फ्रेम के दचमे से उसका कोमल व्यक्तित्व तथा प्रतिमा-शक्ति झाँकती रहती थी।

उस दिन से पहले जब कभी बलराज की उससे बात हुई थी तब उसने मोहन को सदा ही ऐसा संयमशील और व्यवहारकुशल व्यक्ति पाया था जो थोडी ही देर मे अपनी दिलचस्प बातचीत से हर सोसाइटी मे अपना स्थान बना लेता था।

मोहन ने स्वयं वह बीभत्स कामुक चित्र बनाया होगा बलराज इसकी कल्पना भी नही कर सकता था।

काली पृष्ठभूमि पर दोहरी सफेद लाइने किसी बेहया नंगी औरत के वक्ष से घुटनों के ऊपर तक के भाग की सीमा-रेखायें बन गयी थी।

हिलती-डुलती धूप की किरणों के घटते बढते प्रकाश से उन सफेद सीमा-रेखाओ की चौड़ाई भी कम या ज्यादा हो जाती थी और उन रेखाओं तथा उनके बीच के हल्के नारंगी रग से चित्रित उस नगी औरत के वक्ष तथा शरीर के मध्य भाग पर प्रकाश की हिलोर उसकी वासना के उतार और चढाव को भी प्रदर्शित करती थी।

जब डॉक्टर मोहन ने देखा कि बलराज उस चित्र को समझ रहा है तब उसने चित्र के नीचे जलने वाला बिजली का बल्ब बुझा दिया और उस रोशनदान के नीचे ही लगी मोटी डोरी को खींच कर उस रोशनदान को बिलकुल मंद कर दिया। हिलती-डुलती धूप की रोशनी के खत्म हो जाने मे कमरा बिलकुल अन्धेरा हो गया।

अन्धेरे कमरे मे वह चित्र अदृश्य हो गया पर शीघ्र ही प्रदीपी रंगो से बना उस चित्र का एक नया रूप उभर कर सामने आ गया।

मोहन ने कहा, "अब फिर देखो।"

प्रकाश के अभाव में चित्र की रेखायें अपनी काली पृष्ठभूमि मे विलीन हो गयी और उनके साथ ही चित्र के ऊपरी भाग में प्रदर्शित वक्ष का निमन्त्रण-भरा उभार तथा मध्य भाग की नग्न कामुकता दोनों को अन्धेरे ने ढँक लिया।

प्रदीपी रंगो से बनी और अन्धेरे में चमकती रेखाये अब किसी नारी के घुटनों से ऊपर और गर्दन से नीचे की पीठ को चित्रित कर रही थी। बीच की ओर सिमटती हुई औरत की नंगी पीठ, गोलाकार खिंचे, कसे नितम्ब तथा ऊपर को उठती हुई पीछे की जाँघें जिनके फैलाव और तनाव

मे किसी को अपने मे भर कर कस लेने की आकुलता, हल्की कांपती हुई पृष्ठ देश की रेखा से प्रदर्शित हो रही थी।

बलराज इस बात से चकित रह गया कि रोशनदान से आने वाले धुंधले, हिलते-डुलते प्रकाश मे दिखायी पडने वाले चित्र के प्रथम रूप मे उस नगी नारी के अग्र भाग की वासना-जनित विह्वलता तथा उन्माद की नग्न कामुकता से भी कही अधिक उत्कट कामातुरता तथा उत्कठा, विकुचित पीठ के उस चित्र मे परिलक्षित हो रही थी।

बलराज ने विस्मयाभिभूत होकर पूछा, "तुम्हें ऐसी बीभत्स कल्पना करने की प्रेरणा कैसे मिली ?"

मोहन ने कहा, "यह कल्पना नही यथार्थ से साक्षात्कार है। इस चित्र को मैं किसी के सामने प्रदर्शित भी नही करना चाहता। मैंने शरीर-विज्ञान का विशेष अध्ययन किया था। और नंगी औरत की अगाडी और पिछाडी, दोनो के ही सैकडो चित्र मेरे पास हैं, कहो तो तुम्हे भी दिखाऊँ।

बलराज ने कहा, "इस समय नही, इस समय तो यही काफ़ी है, पर यह तो बताओ कि इतनी बीभत्स कामुकता चित्रित करने से तुम्हे क्या मिला ? ऐसा चित्र बनाने में तुम्हारा उद्देश्य क्या था ? जबकि तुम स्वय ही उस चित्र का प्रदर्शन भी नही करना चाहते।"

मोहन ने कहा, "यह अशोक वास्तव मे मेरा लडका नही है, यह रहस्य मैंने अब तक किसी से नही कहा है। तुमसे आज इसलिए कह रहा हूँ कि मेरे मरने के बाद आवश्यकता पडने पर तुम इस तथ्य का समर्थन कर सको। अपने जीवन काल में प्रतिमा से मुझे जो शिकायत है उसमें मैं इन बच्चो को समेटना नही चाहता। यह लडकी अनिता भी मेरी बेटी नहीं है। प्रतिमा को अपने एक पुराने प्रेमी से अशोक का गर्भ रह गया था। जब वह उसे छोडकर इंग्लैंड चला गया, तब प्रतिमा ने अटूट प्यार दिखा कर मुझसे शादी कर ली। तुम जानते हो कि मेरी पैतृक सम्पत्ति बहुत है, उसी से इसने अपनी प्रैक्टिस बैठायी। मुझसे भी इसे एक लड़का हुआ था पर वह छह महीने बाद ही जाता रहा। फिर प्रतिमा का डॉक्टर मलहोत्रा से इश्क चल पड़ा। उस लडके के मरने के बाद मैंने प्रतिमा से कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं रखा। अनिता वास्तव

में मल्होत्रा की लडकी है। पर मुझे बच्चों से प्यार है और मैं जब तक जिन्दा हूँ तब तक प्रतिमा के कमीनेपन की कोई सजा इन बच्चों को नही दे सकता। मेरे मरने के बाद यही मेरी सम्पत्ति के वारिस होंगे और मेरा विश्वास है कि यह बडे हो कर प्रतिमा से कोई सम्बन्ध नही रखेंगे क्योंकि जब यह बालिग होकर मेरी सम्पत्ति पायेंगे तब मेरी वसीयत के साथ इन्हें मेरा वह पत्र भी मिलेगा, जिसमे मैं अपने जीवन की सारी कहानी लिख जाऊँगा। इस समय मैं अपना जीवन आप जीता हूँ। प्रतिमा मेरे साथ रहते हुए भी मेरी कोई नही है। हाँ, उसकी जो निर्लज्ज कामुकता मैंने शुरू मे देखी थी और जिसकी वजह से मुझे उससे मानसिक और शारीरिक घृणा हो गयी थी, उसी को मैंने इस जुडवे चित्र मे प्रदर्शित किया है।"

खेल के कुछ रंग

विजय पार्क का वातावरण उत्फुल्ल था। दर्शक, कुमार के पौरुषेय अभिरक्षण का आनन्द ले रहे थे। वह हेमंड की गेंदों पर आक्रामक प्रहार कर रहा था। उसने गेंद पर पीछे घूम कर तावड़तोड़ दूसरा कट (अंकुश) लगाकर तीन रन प्राप्त किये तो प्रागन में जमा भीड़ ने गगनभेदी नारे लगाकर अपने उत्साह का प्रदर्शन किया।

विदेशी टीम के कप्तान मैकगिल ने अपनी भ्रामक गेंदबाजी के समय विकेट व्यूह रचना कर फाइन लेग (सूक्ष्मपद कोण) पर से अपना क्षेत्रक हटा लिया था। कुमार ने इस अनुपस्थिति का लाभ उठाकर मैकगिल के एक बाउन्सर (अकस्मादाघात) पर प्रचंड प्रहार कर उसके कुशल वृत्तवेष्टन को भेदकर गेंद को सीमा के पार पहुँचा दिया था।

जब सतीश, बलराज और भुवन कॉफी पीकर स्थानीय प्रेस-दीर्घा की ओर बढे तब विजय पार्क के सभी क्षेत्रों में कुमार के कौशलपूर्ण सबल प्रहारों की चर्चा हो रही थी। उसने अपनी टीम के आगामी बल्लेबाजों के लिये मैकगिल के अनिश्चित दिशा लेने वाले अकस्मादाघातों को विदीर्ण करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

भुवन ने स्थानीय प्रेस-दीर्घा में प्रवेश करने के बाद देखा कि आगे की दो पंक्तियों को छोड़कर बाकी सब कुर्सियों पर ऐसे लोग बैठे थे जिनका प्रेस से कोई सम्बन्ध नही था।

प्रेस-दीर्घा के आधे भाग की कुर्सियों पर तो विजय पार्क में तैनात वावर्दी पुलिस वाले बैठे हुए थे। बाकी कुर्सियों पर थोड़े-से पत्रकारों को

छोड़कर सभी जगह बी० जी० उद्योग सस्थान की विभिन्न इकाइयों के छोटे-मोटे कर्मचारी और उनके इष्ट-मित्र बैठे थे ।

भुवन तो प्रवेश-द्वार से निकलकर कुछ आगे बढ गया पर उसके पीछे आने वाले सतीश से द्वार पर खड़े एक व्यक्ति ने कहा, "आप कैसे अन्दर जा रहे है, यह प्रेस-दीर्घा है ।"

सतीश इस अप्रत्याशित अवरोध से कुछ ठिठक गया पर उसके पीछे चल रहे बलराज ने उस व्यक्ति को जवाब दिया, "जी हाँ, यह प्रेस-दीर्घा है और शायद आपको इसका उसी प्रकार ठेका दे दिया गया है, जिस तरह से बी० जी० उद्योग की कुछ सप्लाई का काम आपको मिला हुआ है ।"

इसी समय आगे की पंक्ति में बैठे हुए पत्रकारों ने भुवन को देखकर उसे बुलाते हुए कहा, "आइये, आइये, सिनहा साहब, यहाँ आपके लिये जगह है ।"

भुवन ने कहा, "आऊँ तो पर जब यह गेट-कीपर महोदय हम लोगों को आने दें ।"

सतीश ने बलराज की बात सुनकर घूमकर देखा कि 'किशोर यार्न डीलर्स' का जवान मालिक रूपकिशोर चड्ढा उसे, भुवन तथा बलराज को रोककर उनका प्रवेश-पत्र माँग रहा था। शायद उसकी ड्यूटी उसी प्रेस-दीर्घा के द्वार पर थी और यही कारण था कि उसका सारा खानदान और मित्र-वर्ग प्रेस-दीर्घा की कुर्सियों पर बैठा हुआ था ।

सतीश ने बलराज की बात को आगे बढाते हुए कहा, "चड्ढा साहब यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपको प्रेस-दीर्घा का भी ठेका मिला हुआ है, पर यह तो बताइये इसकी आमदनी में से कितना कमीशन आपको बी० जी० उद्योग संस्थान के बिक्री-अफ़सर को देना पड़ेगा ।"

उसकी बात पर प्रेस-दीर्घा में बैठे हुए सभी अखबारवाले हँस पडे ।

चड्ढा ने चिढ़कर कहा, "आप कैसी बातें करते हैं, अपना पास दिखाइये वरना बाहर जाइये ।"

भुवन ने कहा, "चड्ढा साहब, आप जरा यह तो बताइये कि आप यहाँ किस हक से पास माँग रहे हैं, यह हक तो पिछली कनकपुर टेस्ट

कार्यकारिणी की समिति में, कम-से-कम इस प्रेस दीर्घा के लि दिया गया था। फिर आपके पास तो समिति का कोई बिल है।"

चड्ढा ने कहा, "मेरे दोस्त कोहली साहब यहां के इंचार्ज जरा चाय पीने गये हैं। उन्होंने अपने लौटने तक मुझे यहां की देर करने को कहा है।"

"और देखभाल आप यह कर रहे हैं कि हर ऐरे-गैरे को यहां बैठा जा रहे हैं, बगैर इसका खयाल किये कि यहां काम करनेवाले पत्रकार को भीड़ के कारण अपने काम में कितनी असुविधा हो रही है,"—सतीश ने जरा तेज होकर कहा।

आगे की पंक्ति में बैठे हुए स्थानीय, 'दैनिक कर्मयोगी' के खेलकूद के संवाददाता चन्द्रमोहन ने वहीं बैठे सतीश का समर्थन किया, "काम के उत्तरदायित्व के कारण ही हम लोग इस धींगामुश्ती को सहन कर रहे हैं। अखबारवालों के नाम पर यहां प्रबन्ध तो तीस-चालीस कुर्सियों का किया गया है पर दस-पांच अखबारवालों के अलावा सत्तर-अस्सी ऐरे-गैरे लोग बैठा दिये गए हैं। पुलिस वाले, और मजिस्ट्रेटों के मिलने-जुलने वाले तथा सारे स्टेडियम में ड्यूटी पर लगे पी० जी० उद्योग के कर्मचारियों के नाते-रिश्तेदार सभी यहां ठूंस दिये गये हैं। हमारा ध्यान फील्ड पर लगा हुआ है और यहां भीड़ बढ़ती जा रही है।"

स्थानीय प्रेस-दीर्घा, महिला-कक्ष और प्रथम श्रेणी के बीच में बीस फुट चौड़ी पट्टी में बनायी गई थी।

प्रेस-दीर्घा के बायीं ओर बने महिला-कक्ष में कुर्सियां नहीं थीं। वहां सीढ़ियों और नीचे की जमीन पर दरियां, चादरें, रूमाल या फिर अखबार ही बिछाकर सैकड़ों महिलाएं और लड़कियां बैठी हुई थीं।

रंग-बिरंगी साड़ियां, ओढ़नियां, कमीजों, सलवारों, चूड़ीदार पाजामों, स्ट्रेच पैंट्स, लहंगे और बेलबाटम पैन्ट्स तथा स्कर्टों की उलट-[illegible] किसी उद्यान में हजारों बड़ी-बड़ी तितलियों के एक साथ इधर-उधर उड़ने-बैठने का आभास दे रहा था। वहां इतनी [illegible] थी कि उस पूरे कक्ष में किसी एक लड़की या महिला के उठने-बैठने का

ग्राने-जाने से सारे-के-सारे कक्ष में एक बहुरंगी हिलोर ग्रा जाती थी।

प्रेस-दीर्घा के दाहिनी ग्रोर प्रथम श्रेणी मे ग्रपेक्षाकृत सुव्यवस्था थी। यहाँ प्रत्येक दर्शक के लिए कुर्सियों का प्रबन्ध था यद्यपि दर्शको की सख्या कुर्सियों से बहुत ज्यादा थी। बहुत-सी कुर्सियो पर एक के बजाय दो दर्शक थे, कही-कही पाँच या छह स्त्रियाँ तथा कम उम्र के लड़के लडकियाँ दो या तीन कुर्सियो को मिलाकर ग्रापस मे गुँथकर बैठे थे। इस दीर्घा मे भी कुर्सियों के पीछे बहुत-से किशोर-वय लड़के ग्रौर पुरुष खडे हुए थे।

प्रथम श्रेणी ग्रौर महिला कक्ष के बीच मे बनी हुई प्रेस-दीर्घा की चौड़ाई इतनी कम थी कि महिला कक्ष मे बैठी हुई लडकियाँ ग्रौर स्त्रियाँ प्रथम श्रेणी मे बैठे ग्रपने परिचितो से चिल्ला-चिल्लाकर बातें भी करती रहती थी। बीच-बीच में दोनो तरफ से लडके ग्रौर लड़कियाँ एक-दूसरे पर फल ग्रौर फूल भी फेंकते रहते थे। पर यह ग्रादान-प्रदान ग्रधिकतर फलो के छिलको का ही हो रहा था।

प्रेस-दीर्घा की कहा-सुनी मे दोनो ही कक्षों के दर्शको ग्रौर विशेषकर लड़के-लड़कियो ने भी उत्तेजित होकर भाग लेना शुरू कर दिया।

भुवन, सतीश ग्रौर बलराज की ग्रधिकारपूर्ण डाँट ग्रौर ग्रागे की पंक्ति में ग्रपने काम की मजबूरी के कारण सिमटे हुए बैठे स्थानीय पत्रकारों के विरोध से महिला कक्ष ग्रौर प्रथम श्रेणी के दर्शको मे से बहुतों का ध्यान क्रीड़ांगन से हटकर प्रेस-दीर्घा के प्रबंधकों के कुप्रबंध की ग्रोर ग्राकर्षित हो गया।

कनकपुर के नीरस जीवन से ऊबे हुए जो स्त्री-पुरुष ग्रपने मन-बहलाव के लिए क्रिकेट देखने ग्रा गये थे उन सभी को ग्रखबारवालो ग्रौर टैस्ट-मैच के प्रबंधको की कहा-सुनी से बड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा। वह मँहगे टिकट खरीदकर भी प्रबंधकों के ग्रनुग्रहीत थे क्योंकि उन्हें टिकट ही किसी-न-किसी की कृपा से मिले थे ग्रौर वह ग्रपने कक्ष में बढती हुई भीड के विरुद्ध एक शब्द भी कहने के हकदार नही थे।

प्रेस-दीर्घा में होने वाली बातों से महिला कक्ष ग्रौर प्रथम श्रेणी के दर्शकों का ग्रंतर्निहित विरोध भी मुखर हो गया। उन्होने भी ग्रपने-ग्रपने कक्षों की दुर्व्यवस्था ग्रौर प्रबंधको की खामियों पर प्रकाश डालना शुरू

कर दिया ।

एक तेज महिला ने अपने कक्ष की सबसे ऊँची सीढ़ी पर खड़े होकर जोर से कहा, "यहाँ देखिये, मुश्किल से दो-चार सौ औरतों के बैठने की जगह है पर टिकट बेचने वालों ने हज़ार से भी ज्यादा सीजन टिकट बेच दिये हैं और रोजमर्रा जो टिकट बिक रहे है वह अलग हैं ।"

प्रथम श्रेणी के दर्शको ने भी इसी तरह की आपत्तियाँ की। सतीश ने गेट पर खडे प्रबधको के प्रतिनिधि से कहा, "पहले आप इस प्रेम-दीर्घा मे अनधिकृत रूप से बैठाये हुए लोगो को यहाँ से हटायें फिर हम लोगों से पास माँगें ।"

अब सतीश को रोकने वाले रूपकिशोर चड्ढा की समझ में आ गया था कि उसने उन तीनों को रोककर कितनी बडी गलती की है। उस कहा-सुनी के बीच वह चुपचाप वहाँ से खिसक गया और उसने वहाँ के वास्तविक द्वार-रक्षक कोहली को भेज दिया । कोहली ने आते ही सतीश, बलराज और भुवन से माफी माँगी, फिर उस कक्ष में बैठे हुए पुलिसवालों से कहा, "आप लोग अपनी ड्यूटी पर जायें और यहाँ की कुर्सियाँ खाली कर दें ।"

पुलिस वालों के आना-कानी करने पर कोहली उस क्षेत्र के निरीक्षण के लिए नियुक्त मजिस्ट्रेट को बुला लाया । मजिस्ट्रेट के हुक्म से पुलिस वाले बाहर तो चले गये पर अधिकारी वर्ग की सुविधाओं पर किये गये इस आक्रमण से स्वयं मजिस्ट्रेट ने चिढ़कर प्रेम-दीर्घा के दूसरे सभी दर्शकों के पास देखना शुरू कर दिया और प्रबंधकों के बहुत से मित्रों को भी प्रेम-दीर्घा से बाहर निकाल दिया ।

एकाएक मैदान में जोर का शोर हुआ और सबका ध्यान मैकगिल की गेंद का सामना करने वाले कुमार की ओर चला गया ।

मध्यान्तर के बाद प्रायः घंटा भर की अवधि में एक भी भारतीय विकेट ([illegible]) का पतन नहीं हुआ था। कुमार बड़े विश्वास के साथ मैकगिल के आक्रमण को निष्फल कर रहा था ।

जब मैदान में शोर मचा उस समय कुमार मैकगिल की एक गेंद को लेग (बाम पर बॉल) की ओर भेजने का प्रयास कर रहा था परन्तु ...

वह गेंद कुमार के पैड से लग कर उसके विकेट (यष्टि-त्रयी) से टकरा गयी। मध्यांतर के बाद यह विदेश की प्रथम विजय थी और कुमार एक घंटे पैंतालीस मिनट में इक्कीस रन बनाकर प्रांगण से विदा हुआ।

वह मध्यांतर से पहले पैंतालीस मिनट तक खेलता रहा था। इतने समय में उसने विदेशी गेंद पर दो आक्रामक प्रहार किये थे। एक बार उसने हैमंड की गेंद पर घूम कर अंकुश लगाया था और तीन रन प्राप्त किये थे। दूसरी बार उसने फाइन लेग (सूक्ष्म पद कोण) पर क्षेत्ररक्षक की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर मैकगिल के अकस्मादाघात (बाउन्सर) का मत्स्यवेध कर उसे चौपदी पढ़ायी थी।

कुमार के विकेट के गिरने के बाद भारतीय टैस्ट टीम में खेलने का इसी वर्ष प्रथम बार अवसर पाने वाले मेहता ने क्रीड़ांगन में प्रवेश किया।

परंपरा का दिवसांत

पुलिस वालों और दूसरे बहुत से अनधिकृत दर्शकों के बाहर चले जाने के बाद प्रेस-दीर्घा में तीस-चालीस व्यक्ति ही रह गये थे। यह सब भी पत्रकार नहीं थे इनमें से कुछ तो जिला अधिकारियों की कृपा से बिना किसी समाचारपत्र के भी पत्रकार मान लिये गये थे और कुछ ऐसे थे जिनके पत्र साल भर में दस-पाँच बार ही निकलते थे। पर सबके पास किसी-न-किसी समाचारपत्र के नाम का प्रवेश-पत्र था। कुछ ऐसे भी थे जिनका अखबार से इतना ही संबंध था कि कुछ अखबार वाले उनके मित्र या रिश्तेदार थे। इस दीर्घा में बैठे वास्तविक दस-पन्द्रह पत्रकारों में से भी केवल पाँच-छह ही ऐसे थे जो क्रिकेट को समझते थे और अपने अखबार में मैच पर कुछ लिखते थे।

चन्द्रमोहन ने अगली पंक्ति में अपने पास की तीन कुर्सियों पर बैठे गैर पत्रकार दर्शकों से अनुरोध कर उन्हें पिछली पंक्ति में बैठा दिया और फिर भूषण, सतीश और बलराज को अपने पास बिठाकर सिगरेट देते हुए कहा, "बलराज तुम थोड़ी देर बैठकर मेहता का खेल देखो। यह इसी बार भारत की टेस्ट टीम में शामिल किया गया है। आज उसके टेस्ट जीवन का शुभारंभ है।"

चन्द्रमोहन स्थानीय पत्रकारों में क्रिकेट का सबसे अधिक जानकार माना जाता था। कांग्रेस का एक प्रभावशाली कार्यकर्ता होने के कारण उसे राजनैतिक क्षेत्रों में भी मान्यता मिली हुई थी। इसलिए सरासर असफल होते हुए भी उसे अपने संपादकीय पत्र 'कर्मयोगी' में दफ्तर

तथा नगर में भी संपादक जैसा ही मान मिलता था ।

चन्द्रमोहन ने बताया, "भारी कसरती बदन का मेहता आक्रामक बल्लेबाज है । उसके शक्तिपूर्ण प्रहार तीव्र गति के खेल में ही निखरते हैं। पिछले वर्ष वह भारतीय विश्वविद्यालयों की संयुक्त टीम की ओर से पाकिस्तान की टीम के खिलाफ खेला था और इक्यानवे रन बनाये थे । इसके बाद दूसरे मैच मे राष्ट्रपति की टीम की ओर से इसने पाकिस्तान की टीम के विरुद्ध नाबाद रहकर एक-सौ छः रन बनाये थे । इसने इस वर्ष पहली बार महाराष्ट्र की ओरसे राजी ट्राफी के राष्ट्रीय क्रिकेट मैचो मे भी भाग लिया था । इसकी बल्लेबाजी इन सभी उच्चस्तरीय क्रिकेट मैचों में संतोषप्रदायक रही और इसीलिए यह इस बार बावजूद निहित स्वार्थों के विरोध के भारतीय टेस्ट टीम में शामिल किया गया है । इसका भविष्य बड़ा आशापूर्ण और उज्ज्वल प्रतीत होता है।"

इस समय तक मेहता रोजर्स की गेंदों को रोक-रोककर उन्हे क्रीड़ाभूमि पर दाहिने या बायें लुढ़का रहा था । उसके मनोज्ञ प्रहारों को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि वह विदेशी दल के नायक मैकगिल के परिवेष्ठित क्षेत्र-रक्षण के रंध्रों, विवरो तथा छिद्रो के अन्वेष मे दत्तचित है । उसके हल्के आघात भी भावपूर्ण थे और किसी कुशल तैराक की नये तालाब में प्रारंभिक जल-क्रीड़ा-से लग रहे थे ।

इसी प्रकार से खेलते-खेलते और बिना कोई रन बनाये मेहता को लगभग बीस मिनट हो गये तब उसने एकाएक एक गेंद पर मनोहारी स्क्वेयर कट (वर्ग-कर्तन) लगाया और उसे संबद्ध क्षेत्र-रक्षण की एक संधि से कुशलतापूर्वक निकालकर उसने टेस्ट मैच में अपना प्रथम रन प्राप्त किया । फिर उसके बाद वाली गेंद पर अपने बल्ले के स्पर्श मात्र से इतना लघु पर इतना संतुलित प्रहार किया कि वह धरा चूमती हुई पश्चिमी सीमा को पार कर स्थानीय प्रेस-दीर्घा की बगल मे प्रथम श्रेणी की अगली पंक्ति मे बैठी एक महिला के गोरे-गोरे पैरों का वंदन करने लगी, और उस गेंद के पीछे दौड़ता हुआ व्हाइट अपने वेग को न रोक सकने के कारण प्रथम श्रेणी के आगे बँधे तारों से भिड़ गया ।

वह महिला हर्षातिरेक से चीख उठी ।

प्रथम श्रेणी मे बैठे अन्य दर्शकों तथा प्रेस-दीर्घा के बायें महिला कक्ष मे बैठी सैकडों स्त्रियो तथा लडकियों ने आनन्द-भरी किलकारियाँ लगाते हुए व्हाइट के ऊपर एक साथ ही दसियो सन्तरे, केले और अमरूद फेंक दिये। इस अप्रत्याशित आक्रमण से व्हाइट जब सँभला तो उसने रोषपूर्ण मुद्रा में अपनी मुट्ठी बाँधकर फेंकने वालो को दिखायी, पर उसके रोष के उत्तर मे लगे हँसी के ठहाकों से सब दर्शक दीर्घायें गूंज गयी। उन्मुक्त हँसी के उन ठहाकों से खिन्नचित्त व्हाइट भी एक क्षण स्तब्ध रह गया पर वह भी दूसरे ही क्षण दर्शकों की हँसी मे शामिल होकर स्वय भी हँसने लगा क्योंकि उसके क्रोधित होते ही महिला कक्ष से कुछ लडकियो ने उसके ऊपर फूल फेंकने शुरू कर दिये थे। इस बीच में उस महिला ने आगे बढ-कर गेंद को उठाकर व्हाइट की तरफ फेंक दिया और व्हाइट ने आगे बढ कर हँसते हुए उसे गेंददाज रोजर्स की ओर वापस कर दिया।

जब वह महिला गेंद देकर वापस अपनी कुर्सी की तरफ़ लौटी तब उसकी नजर अपने कक्ष के बगल मे प्रेस-दीर्घा मे बैठे सतीश पर पडी और उसने धीरे से अपने दोनो हाथ जरा ऊपर उठाकर महीन-महीन अदृश्य सी मुस्कराहट के साथ सतीश का छिपा-छिपा अभिवादन किया।

भुवन ने भी उसे पहचान लिया वह जान-एण्ड-कोल इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के संचालक तथा नगर के प्रतिष्ठित रईस अजीत प्रसाद सहगल की पत्नी श्रीमती मनमोहनी सहगल थी।

पैंतालीस वर्षीय प्रौढा मनमोहनी सहगल कानपुर के कला-प्रेमी समाज की नेत्री थी। वह सामाजिक तथा राजनैतिक गोष्ठियों में भी प्रमुख भाग लेती थी। नगर में प्रति वर्ष होने वाले संगीत, साहित्य, मूर्ति-कला तथा चित्रकला से संबन्धित अनेक आयोजनों की वह प्राण थी।

मनमोहनी सहगल ने न जाने किस मंत्रयोग से अब तक अपनी उस सलज्ज मुस्कान को अक्षुण्ण रखा था, जिसे लेकर वह, पंजाब के किसी छोटे से नगर से सत्ताइस वर्ष पहले नववधू के रूप मे कानपुर आयी थी और हाथी पर रखे रजत-वेष्टित हौदे पर बैठे बीस वर्षीय युवक अजीत प्रसाद की वापस आने वाली डेढ मील लबी वर-यात्रा में सोलह वर्दी-धारी कहारों के कंधो पर झूलती हुई स्वर्ण-मूलो से आविष्ठित डोली मे

बैठकर सुप्रसिद्ध 'अजीतमहल' में प्रवेश किया था।

तत्कालीन कनकपुर में सुप्रतिष्ठित सामंती परम्परा के दिवसात तक विदुषी मनमोहिनी सहगल असूर्यपश्या रही, पर आजादी के बाद अजीत-महल में अंग्रेज गवर्नर के अंतिम आगमन पर उसने मुस्कराते हुए प्रथम बार अपना अवगुंठन हटाकर उसे भाव-भीनी विदाई देते हुए हाथ मिलाया था।

उस मुस्कराहट से प्रदीप्त उसका पुराना नवयौवन आज भी कभी-कभी उसके कटाक्षों से झाँकता दिखाई देता था। पर सब प्रकार के संयमों के बावजूद उस समय के कृशांग की तन्यता उसकी तिजहरी में, उसकी गोरी-गोरी स्थूलता में विलीन हो गयी थी।

समय की इस सुनिश्चित क्रमिक विजय से अपनी यौवन-यष्टि की रक्षा के लिए वह सदा एक कुशल यामिक की तरह जूझती रहती थी और यही कारण था कि उसने कठोर नियंत्रण से अपनी स्थूलता को भी एक सर्वथा नवीन प्रौढ़ सौन्दर्य से उजागर कर अपनी काजल-अँजी आँखों को एक अनोखे सम्मोहन से भर लिया था। प्रतिक्षण पराजय की संभावना के बावजूद भी जीवन को जीतने के उसके सतत् प्रयास से उसकी मांसलता और भी निखर कर नगर के मनचलों का विशेष आकर्षण बन गयी थी।

पाँच वर्ष हुए कनकपुर लौटने के बाद एक साहित्यिक गोष्ठी में भुवन ने मनमोहनी सहगल को पहली बार देखा था। साधारण परिचय के अति-रिक्त उसका मनमोहनी सहगल से कोई विशेष संपर्क नहीं हो पाया था। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनमोहनी की क्षमता, सूझबूझ और उप-लब्धियों से वह प्रभावित भी हुआ था। मनमोहनी सहगल की सतुलित सौंदर्यपूर्ण स्थूलता ने उसे आकर्षित भी किया था। गत-यौवना होते हुए भी वह नवयौवना के नाज के भार से दबी हुई, संभल कर एक-एक डग रखती हुई चलती थी। यही कारण था कि जहाँ कनकपुर में मनमोहनी के ढलते सौंदर्य के प्रशंसकों की कमी नहीं थी वहाँ उसके अधिकांश प्रशंसक उसके अभिमुख सौंदर्य के बजाय उसकी परागमुखी मांसलता के अधिक कायल थे।

भुवन ने भी कभी-कभी उसके इन प्रशंसकों के साथ खड़े होकर उसको चलते हुए पीछे से देखा था। उसके हर कदम पर उसके कंधों से नितंबों तक दो जुड़वां मांसल हिलोरें उठती थीं जो पिंडलियों पर विभक्त हो जाती थीं, और ऐसा लगता था कि दो कदली खंभ एक-दूसरे को अर्ध-आलिंगन में लिए आगे बढ़ रहे हैं। मनमोहनी सहगल के ढलते सौंदर्य के प्रशंसक बहुधा कहते थे, "वह तो एक कलाप्रिय बौद्धिक स्त्री है, उसकी सुन्दरता तो गौण है।"

दुबला-पतला, नाटे कद का तीक्ष्ण-बुद्धि सतीश भी मनमोहनी सहगल के अनगिनत प्रशंसकों में से एक था। सतीश को मनमोहनी का वह अवगुंठित अभिवादन देखकर बलराज ने कहा, "लो भाई सतीश तुम्हें तो मिल गया।"

सतीश ने चौंककर कहा, "क्या ?"

बलराज हँसा, "अब बनो मत, मैं भी कुछ कम बौद्धिक नहीं हूँ और बौद्धिकता के आवरण में आवेष्ठित उत्कट मांसलता को भी खूब पहचानता हूँ।"

सतीश ने कहा, "तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ में नहीं आ रहा है।"

"समझ में क्यों आयेगा," बलराज ने उत्तर दिया, "क्या तुम समझते हो कि मनमोहनी सहगल ने आँखों ही आँखों में तुम्हें अभिवादन करते हुए कक्ष के बाहर मिलने का जो इशारा किया है, वह मैंने नहीं देखा?"

सतीश ने हतप्रभ होकर कहा, "यार बलराज वह संभ्रांत पढ़े-लिखे व्यक्तियों के परिवार की स्वामिनी है। वह क्यों मुझे इशारा करेगी ? वह उम्र में मुझसे कितनी बड़ी है ? उसका सामाजिक स्तर कितना ऊँचा है ? वह स्वयं एक औद्योगिक संस्था का काम संभाले हुए है और यदि वह चाहे तो मेरे और तुम्हारे जैसे दस लोगों को नौकर रख सकती है "

भुवन ने कहा, "भाई, मुझे तो समझाओ यह क्या बातें हो रही हैं ?"

बलराज ने कहा, "क्या समझाऊँ, सब जानते हैं कि यह मनमोहनी अपने यौवन की बुझती लौ की अन्तिम प्रभा को किसी पर न्यौछावर करने

के लिए व्याकुल है। पर, वह स्वयंवरा है और अन्य बीसियों अभ्यर्थियों में सतीश पर उसका विशेष अनुराग है। लेकिन, यह हजरत कहते हैं कि ऐसी कोई बात नहीं है। इनका खयाल है कि मनमोहनी]का इनके प्रति आकर्षण इनकी प्रतिभा और परिश्रमी प्रवृति की उपलब्धियों तथा राजनीतिक पांडित्य के कारण एक मनीषी नारी की ज्ञानपिपासा मात्र है। जबकि मैं कहता हूँ कि अपने यौन विचेतन से पहले अपनी अपूर्ण यौन-लिप्सा को तुष्टि के लिए आकुल मनमोहनी ने अन्तिम अभिसार के लिए बौद्धिकता का बुरका ओढ़ लिया है और किसी उपयुक्त पुरुष की खोज में बेताब है। जब कभी वह अपने किसी मनचाहे नवमीत के सामने अपना यह बौद्धिकता का बुरका उतारेगी तब वह भाग्यशाली अथवा अभागा मीत देखेगा कि उस बौद्धिक बुरके को ओढ़ने वाली अपने बुरके के नीचे नितान्त निरवस्त्र है। अपनी जवानी के अन्तिम चरण में जब उसकी यौन-लिप्सा का उसके लिए प्रथम सचेतन विस्फोट हुआ तब मनमोहनी को पता चला कि स्नय-पौरुष अजीतप्रसाद उसके सत्ताईस वर्ष के विवाहित जीवन में केवल एक यौन-यन्त्र मात्र था। फिर, समय रहते अपने मनचाहे पुरुष को खोजने की हड़बड़ी में उसने बौद्धिकता का बुरका तो ओढ़ लिया पर उस जल्दी में वह उस बुरके के नीचे कोई और वस्त्र पहनने का उसके पास समय ही नहीं रह गया था। यही कारण है कि मनीषी नारी का आवरण ओढ़े, एक अरसे से वह सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय है। वास्तव में मनीषी नारी कहो, या बौद्धिक स्त्री कहो, दोनों ही विराट विकृतियाँ हैं—नारी तो केवल नारी होनी चाहिये, मादक, मांसल और अभिसार के समय वासना-विह्वल। बौद्धिकता तो दूर की बात है, मैं कहता हूँ, नारी में सौंदर्य भी नगण्य है। नारी का प्रमुख उद्देश्य ही यौन-कर्म में समुचित सहभागिनी होना है। ऐसी सहभागिनी जो प्रत्येक यौन-चेष्टा में सम्यक् योगदान कर स्त्री-पुरुष के द्विशरीरीय सम्मिलन को इतना समन्वित कर दे कि उस संगमन से केवल एकतारे की ध्वनि ही उर्जस्वित हो।"

मुकुल ने व्यंग से कहा, "यौन संबंधों के बारे में तुम्हारा बौद्धिक निरूपण तो ठीक हो सकता है परन्तु तुम्हारी यह बात तो शायद ही कोई स्वीकार करे कि यौन-संबंधों में स्त्री का सौंदर्य नगण्य है।"

बलराज ने कहा, "तुम यौन-कर्म में जड़, एक सौदर्यमयी स्त्री की कल्पना करो फिर कहो कि तुम किसी जड़ सुन्दर स्त्री को पसंद करोगे अथवा किसी तथाकथित कुरूप लेकिन वासना-विह्वल स्त्री को, जो तुम्हारी प्रत्येक कामातुर क्रिया का द्विगुणित कामातुरता से प्रत्युत्तर दे।"

बलराज की बात सुनकर भुवन और सतीश दोनों ही असमंजस में पड़ गये। बलराज ने आगे कहा, "निरुत्साह सुन्दर स्त्री की जड़ता और कामातुर कुरूप स्त्री के सक्रिय योगदान से यौन-कर्म की क्रमश. नीरस अथवा आह्लादकारी परिणति होती है। सुन्दर पर अनुष्ण स्त्री यौन-कर्म के चरम आनंद को विवर्ण कर देती है, और रति-विह्वला कुरूप कही जाने वाली स्त्री अपने रति-विमर्ष में सहभोगी के प्रत्येक पौरुषेय विमर्द को आत्मसात् कर उसमें नवप्राण संचारित कर देती है। कुरूप और सुन्दर का यही अन्तर है। स्त्री वास्तव में केवल रमणी है और रमण को अर्थ-वत्ता प्रदान करने वाली स्त्री ही सुन्दर कही जा सकती है।"

बलराज स्वयं अपनी इस व्याख्या से सिहर उठा, उसने विषय परि-वर्तन के उद्देश्य से भुवन से हँस कर कहा, "संसार कुरूप कही जाने वाली स्त्री की कामातुरता का मखौल उड़ाकर उसे ठुकराता है और सुन्दर स्त्री के पीछे पागल बना उसकी ठोकरें खाता रहता है। अगर तुम्हें किसी कुरूप कही जाने वाली स्त्री की कामचेष्टा के भागीदार होने का अवसर मिले और यदि तुम उसे ललक कर स्वीकारो तो तुम्हें अनिवर्चनीय आनंद मिलेगा।"

बलराज चुप हो गया और ऐसा लगा कि वह किसी स्मृति में आत्म-विभोर होकर खो गया है।

कुरूप सौंदर्य

बलराज की बात सुनकर भुवन का मन एकाएक गहरे पश्चाताप से भर गया। भुवन ने भी अपने जीवन मे एक बार तथाकथित कुरूपता के हृदयहारी उद्दीप्त सौंदर्य की एक झलक देखी थी और अपनी मूढ़ता में उसका निरादर कर चला आया था।

वह वर्षों पुरानी बात अब भी उसके मन मे कभी-कभी कसक जाती थी।

मई का महीना था। वह बी० ए० की परीक्षा दे चुका था। कनकपुर के एक पुराने गंदे मुहल्ले की गलियों में उसका अभिन्न मित्र श्रीप्रकाश रहता था। दोनों घटों गप्पें लडाते थे। कुछ अरसे तक वहाँ बराबर आने-जाने के बाद एक दिन उसे ऐसा लगा कि जब कभी वह श्रीप्रकाश के टूटे-फूटे से मकान की कुंडी खटखटाता है तभी बगल के एक वैसे ही जीर्ण-शीर्ण मकान से कोई उसे अन्दर से देखने लगता है।

यह अहसास होने के बाद भुवन ने दो-चार बार यह चेष्टा भी की कि वह देखे कि बगलवाले घर से कौन उसे देखता रहता है। कई बार की कोशिश से वह सिर्फ इतना ही देख पाया कि दरवाजे की संधि से मैली-सी धोती पहने कोई स्त्री उसे देखती है। पर जब कभी वह अपने प्रयास में सफल हुआ तो वह केवल उस स्त्री के आधे वदन और एक आँख की झलक मात्र ही देख सका, क्योंकि भुवन के उधर नजर डालते ही वह दरवाजे की संधि से हट जाती थी।

एक दिन जब प्रखर धूप में भुवन श्रीप्रकाश के यहाँ गया तब

श्रीप्रकाश के घर का दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। भुवन को बड़ी तेज़ प्यास लगी थी। उस दिन भुवन को जल्दी थी और वह यह सोचकर गया था कि रास्ते में पड़ने वाले श्रीप्रकाश के घर में एक गिलास पानी पीकर अपने घर चला जायेगा। श्रीप्रकाश के घर के दरवाज़े की कुंडी खटकाते ही अन्दर से श्रीप्रकाश की बूढ़ी दादी ने कहा, "इंहा कौनो नाहीं है।"

भुवन ने अपना नाम बताते हुए कहा, "दादी, दरवाजा खोल दो मुझे प्यास लगी है, मैं पानी पीकर चला जाऊंगा।"

दादी ने वहां से उत्तर दिया, "भइया, हम तो ऊपर हन। तुम तो जानत हो बिना सहारा के हमार चलन-फिरन दूभर है, कहूँ और पी लैव।"

भुवन निराश होकर घूमा। इसी समय उसके पलटते ही बगल के घर का हमेशा बन्द रहने वाला दरवाजा खुल गया और अन्दर से किसी स्त्री ने कहा, "आइये पानी पी लीजिये।"

श्रीप्रकाश की दादी का निराशाजनक उत्तर सुनकर भुवन की प्यास और भी तीव्र हो गयी थी। उसे यह लगा कि यदि उसे शीघ्र ही एक गिलास पानी नहीं मिलेगा तो वह चक्कर खाकर गिर जायेगा। जब पड़ोस के घर पानी मिलने का आश्वासन मिला तो उसे प्राणदान मिल गया। उस निमंत्रण को स्वीकार कर उसने पहली बार उस घर में प्रवेश किया।

जिस स्त्री ने दरवाजा खोला था वह उसके अन्दर कदम रखते ही घूम गयी और आगे बढ़ते हुए गलियारे के बाहर आंगन से मिले छोटे से बरामदे में पड़ी चारपाई की ओर संकेत करते हुए बोली, "बैठिये मैं अभी पानी लाती हूँ।"

चारपाई पर एक दरी पड़ी थी। भुवन उसी पर बैठ गया। उस स्त्री ने भुवन की ओर पीठ किये ही पलटकर दरवाजा बन्द कर दिया। फिर उसी तरह उसकी तरफ पीठ किये वह आंगन पारकर सामने की कोठरी में चली गयी।

भुवन ने घड़े से पानी लेने की आवाज़ सुनी फिर कुछ बरतन खड़के। ज़रा-सी देर बाद एक हाथ में एक गिलास और दूसरे हाथ में एक तश्तरी लिये वह स्त्री उसके सामने आयी। चारपाई के पास रखे एक स्टूल पर

भुवन के गिलास रखते ही जरा आदेश भरी तेज आवाज में कहा, "पानी पी लीजिये, भगवान ने मेरी सूरत बिगाड़ दी है क्या इसीलिये आप बिना पानी पिये बाहर जाना चाहते हैं।"

उस आवाज़ मे कुछ ऐसी राजसी ध्वनि थी कि भुवन ने चुपचाप गिलास उठा लिया और एक लम्बा घूंट पीकर आधा खाली कर दिया। वह दूसरा घूंट पीकर उसे खाली करने जा ही रहा था कि उस स्त्री ने अपना काला चमकता हाथ बढाकर भुवन के हाथ से गिलास ले लिया और स्नेहसिक्त स्वर में कहा, "पहले कुछ खा भी लीजिये, बिना खाये पानी पीकर बाहर जाने से लू लग जाने का अंदेशा है।"

भुवन चकित रह गया। उसने जल्दी-जल्दी पहले दोनों लड्डू और फिर दोनो मठरी खाकर गिलास की ओर हाथ बढ़ाया। इस बीच में वह स्त्री उसके पास ही उसकी स्वामिनी की तरह खड़ी रही। जितने समय मे भुवन ने खाया-पिया उतने समय ही में उसके काले रंग की दीप्ति बढ गयी। जब भुवन ने उसके हाथ से गिलास लेकर शरबत भी पी लिया और चलने के लिए उठ खड़ा हुआ तब वह फिर बोली। लेकिन अब उसकी आवाज़ में आदेश के बजाय अनुनय था।

"बाहर आग बरस रही है ऐसे में इस वक्त न जाइये। कुछ देर ठहरिये जब धूप कम हो जाए तब चले जाइयेगा।" यह कहते हुए उसने बरतनों को उठाने के लिये अपना हाथ आगे बढ़ाया।

उसके हाथ बढ़ाते ही भुवन के मन मे न जाने क्यों यह डर भर गया कि वह उसे ऐसा कसकर पकड़ लेगी कि हिलना मुश्किल हो जायेगा। वह पीछे हटकर कुछ कहने ही जा रहा था कि उस स्त्री ने किसी अनजान पीड़ा से काँपकर अपना बढा हुआ हाथ वापस कर अपनी नाक पर रख लिया।

भुवन ने देखा कि किसी आकस्मिक उद्वेग से उसकी नकसीर फूट गई है और नाक पर रखे हाथ के नीचे से खून बह रहा है।

एक क्षण तो भुवन के मन में आया कि वह बढ़कर उसे सहारा दे परन्तु दूसरे ही क्षण उसके मन में फिर वही अज्ञात भय उमड़ पड़ा। उसकी नाक से खून बहते देखकर वह और भी घबरा गया। डर और

घबराहट में वह बिना कुछ सोचे-समझे जल्दी से दरवाज़ा खोलकर गली में निकल गया।

इसके पहले कि उसके पीछे कोई आवाज आए या कोई हलचल हो भुवन झपट कर गली के पार हो गया। लेकिन उस छोटी-सी गली के सिरे पर पहुँचकर जैसे ही भुवन ने उस घर के दरवाजे के बन्द होने की आवाज़ सुनी वैसे ही उसके हृदय के उस समय तक बन्द कोई अनजाने कपाट खुल गये। उसे अपनी मूढता पर घोर पश्चाताप हुआ और उसके मन में उस स्त्री के पैरों पर गिरकर क्षमा माँगने की तीव्र आकांक्षा जाग उठी।

वह लौट पड़ा और बन्द दरवाजे पर दस्तक देकर कहा, "खोलो मैं लौट आया हूँ।"

पर किसी ने दरवाजा नही खोला। कई बार दस्तक देने पर भी अन्दर कोई हलचल नही हुई और न किसी ने दरवाजे की सन्धि से झांककर उसे देखा। जब भुवन ने स्वयं दरवाज़े की सन्धि से झांका तो देखा कि बरामदे की चारपाई पर वह स्त्री चुपचाप औंधी पड़ी थी—निश्चल और निस्पन्द।

बारम्बार खटका करने पर भी जब अन्दर से कोई जवाब नही मिला तो निराश भुवन हिम्मत हार कर लौट पड़ा।

कुरूपता के उत्तप्त प्यार की जिस भभक से भुवन उस दिन एक कायर की तरह भाग आया था वह सदैव उसके अन्तर को, सीपी में बन्द मोती की तरह, विचलित करती रहती थी।

भुवन उस ओर फिर कभी नही गया, पर उस दिन चेचक के दाग भरे मुँह पर चमकती उस स्त्री की अनुनय भरी एक ज्योतित आंख और दूसरी दृष्टिहीन आंख से उभरती हुई सफ़ेद फुल्ली ने उसके हृदय के अन्तरतल में समझ और नासमझी का वह घोर द्वन्द छेड़ दिया था जिसने उसके जीवन को परस्पर संघर्षरत दो प्रतिद्वन्द्वी टुकड़ों में विभक्त कर दिया था।

भुवन ने जब से होश संभाला था तभी से उसकी बुद्धि उसे जो मार्ग दिखाती थी उसे वह कुछ समय बाद ही अपनी उछृंखलता अथवा

पर अब तक पैंतालीस मिनट रहा है और उसने अनेक चित्ताकर्षक प्रहार कर भारत के ३६८ रनों के योग में २८ रन बनाए हैं। नये टैस्ट खिलाड़ी के लिए यह स्कोर बुरा नहीं है।"

क्रीडा-भूमि के चारों ओर बैठे हुए दर्शकों की भीड़ तरह-तरह के शोर के साथ विभिन्न कक्षों से बाहर निकल रही थी। प्रथम श्रेणी की प्रथम पंक्ति से उठते हुए मनमोहिनी सहगल ने फिर सतीश को निमन्त्रण भरा अभिवादन किया।

भुवन ने भी उस अर्थपूर्ण अभिवादन को देखा और कहा, "भाई सतीश, तुम आगे-आगे चलो, हम तुम्हारे बाद ही आएँगे।"

सतीश ने आश्चर्य दिखाते हुए पूछा, "क्यों?"

"इसलिए कि जब तक हम लोग बाहर आयें, तब तक तुम अपनी मनमोहनी से उसकी बात सुन लो।"

"जब तुम भी यही कह रहे हो तो तुम्हारी बात रखने के लिए मैं आगे ही चलता हूँ, पर तुम दोनों बाहर आकर देख लेना कि यह बलराज बेकार ही मेरा मजाक बना रहा है।" सतीश यह कहकर अपनी खीज छुपाते हुए हँसता हुआ बाहर चला गया।

एक परिणति

सतीश के बाहर चले जाने के बाद भुवन और बलराज कुछ देर तक अपने दूसरे सहयोगियो से बातें करने के लिये ठहर गए।

स्थानीय प्रेस-कक्ष से दर्शक जोर-जोर से मेहता की बल्लेबाज़ी के कौशल की चर्चा करते हुए बाहर जा रहे थे। प्रेस-कक्ष के दोनो तरफ की दीर्घाओं, महिला-कक्ष तथा प्रथम श्रेणी से परस्पर परिचित लड़कियाँ और लड़के भी एक-दूसरे को पुकार-पुकार कर आपस मे मेहता के खेल तथा चायपान के अंतराल में अपने कार्यक्रम की बातें करते और इस बीच में एक-दूसरे पर फलों के छिलकों को फेंकते हुए बाहर की ओर बढ रहे थे।

प्रेस-दीर्घा की भीड़ छँट जाने के बाद जब भुवन बाहर जाने के लिए आगे बढा तो महिला-कक्ष से फेंका गया एक केले का छिलका उसके पास ही आकर गिरा और साथ ही आवाज़ आई, "ओह, सॉरी अंकल।"

भुवन ने अपना सिर घुमाकर माफ़ी माँगने वाली लड़की को तरफ देखा। वह अजरा थी।

भुवन मुस्कराया, उसने कहा—"अजरा तुम तो सारे विजय पार्क पर छाई हुई हो।"

अजरा ने कुछ झेंप कर कहा—"अरे, अंकल मैं तो आपको ही ढूंढ रही थी।"

"क्यों क्या हुआ, और वह तुम्हारी सहेली अंजली तो ठीक है?" भुवन ने पूछा।

"ओह अंकल, बेचारी अंजली और यह भेड़िये ! इन लोगों को खेल से तो कुछ मतलब ही नही है। यह तो यहाँ नोचने-खसोटने ही आते हैं।"

"तुम ठीक कहती हो, पर अजली कैसी है, उसे चोट तो नही लगी ?"

"नही अकल, अंजली को कोई चोट नही लगी। वह बिल्कुल ठीक है। पर दहशत के मारे वह खेमे मे बाहर निकल नही रही है। उसके डैडी और ममी को पापा ने फोन करके बुला लिया है। मैं भी वही थी पर मेहता का खेल देखने के लिए चली आयी, अब वापस जा रही हूँ।'

अजरा यह कहकर कुछ आगे बढ़ी पर फिर फौरन ही लौटी और बोली—"अंकल मैं कितनी बेवकूफ हूँ, आपको ही ढूँढ रही थी और अब आप मिल भी गये तो आपसे बगैर पापा की बात कहे बिना चली जा रही हूँ।"

भुवन ने पूछा—"क्यों, अहमद ने क्या कहा है ?"

"पापा ने मुझसे कहा था कि आपको ढूँढकर आपसे यह कह दूँ कि कि आप रात को खाना उनके साथ ही सरकिट हाउस मे खायें। उन्हें बहुत अफसोस है कि दिन में विद्यार्थी-कक्ष में गडबडी होने के कारण आप दोपहर को ठीक से खाना नही खा पाये।"

भुवन ने मजबूरी दिखायी, "मगर मैं तो देर तक दिल्ली से आये हुए अपने विशेष संवाददाता के साथ आज के खेल की रिपोर्ट भेजने मे लगा रहूँगा, पता नही कब छुट्टी मिले।"

"नही, अकल आप जरूर आइयेगा। रिपोर्ट का काम तो सात-आठ बजे तक पूरा ही हो जायेगा।"

"हाँ, आठ बजे तक तो खत्म हो सकता है,"—भुवन ने उत्तर दिया।

"पर फिर सरकिट हाउस पहुँचने···"

भुवन की बात काटते हुए अजरा ने कहा, "लीजिये मैं फिर भूल गयी। पापा ने कहा था कि वह शाम को छः बजे तक यहाँ से फ़ुरसत पाकर सरकिट हाउस पहुँच जायेंगे और सात बजे तक मोटर आपके पास भेज देंगे। आपको जब छुट्टी मिले तब आ जाइयेगा। और हाँ, अंकल, उन्होंने यह भी कहा था कि आंटी शाह भी आयेंगी। अकल, यह आंटी

शाह कितनी अच्छी है। आप जरूर आइयेगा। बताइये मोटर कहाँ भेजूं ?"

कमलिनी के आने की बात सुनकर भुवन के मन में भी कुछ उत्साह हुआ और उसने कहा—"अच्छा, मोटर तारघर भेज देना। मैं कृष्णा-स्वामी को होटल तक पहुँचाकर आ जाऊँगा।"

"तब ठीक रहा अंकल। शमशाद ड्राइवर ३०४४ नम्बर की गाडी लेकर सात बजे तारघर पहुँच जायेगा। आप अपनी सहूलियत से सरकिट हाउस आ जाइयेगा।"

जब अजरा चली गयी तब बलराज ने कहा, "तुम्हारा तो शाम का सहारा हो गया, और उधर देखो, मनमोहनी सहगल अपना सारा क्रिकेट-ज्ञान सतीश पर उँडेले दे रही है।"

बलराज के कहने पर भुवन का भी ध्यान कुछ दूर पर खड़े सतीश और मनमोहनी सहगल की तरफ गया।

वह दोनों एक-दूसरे से इस तरह घुल-मिलकर बातें कर रहे थे जैसे वह भीड में खड़े न होकर किसी सपन्न घर के सजे-सजाये ड्राइग रूम के एकान्त में बैठे हो। दोनो के हाथ मे काफी का एक-एक प्याला था।

भुवन ने कहा—"बलराज, तुम ठीक कहते थे, यह मनमोहनी वाकई सतीश पर बेहद फिदा दिखाई देती है।"

बलराज ने कहा, "तुम नही जानते। सतीश को अपने अखबार के लिए विज्ञापन का भी काम करना पडता है और मनमोहनी न सिर्फ अपनी कम्पनी के ज्यादा-से-ज्यादा विज्ञापन सतीश के अखबार को देती है बल्कि अपने प्रभाव से नगर की दूसरी बडी-बडी व्यावसायिक संस्थाओं के विज्ञापन भी दिलवाती रहती है। इस तरह अपनी तनख्वाह के अलावा विज्ञापन के कमीशन से भी सतीश की अच्छी आमदनी हो जाती है।"

भुवन ने कहा, "यह तो बड़ा अच्छा है। नवयौवना के प्रेम और प्रौढ़ा के प्यार में यही सुखद अन्तर है। नवयौवना के प्रेम में पीड़ा भी होती है और रुपये-पैसे की बरबादी भी क्योंकि दोनो युवा प्रेमी दीन-दुनिया के उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन ही नहीं, बेखबर भी हो जाते हैं। अंधाधुंध खर्च भी करते है और बदनामी भी होती है। प्रौढा के प्यार में

दुनियादारी पहले आती है। वह अपने प्रेमी पर भार नहीं बनती बल्कि उसकी दिक्कतों का खयाल करके उन्हें दूर करने के रास्ते भी निकालती है।"

फिर कुछ सोचकर भुवन ने हँसकर बलराज से कहा, "मेरी बात मानना बलराज! यह जो तुमने इतनी उम्र तक शादी नहीं की है, इसका लाभ उठाकर कुछ ज्यादा उम्र की पढ़ी-लिखी किसी ऐसी लड़की से शादी करना, जिसकी शादी में किसी कारण विलंब हुआ हो, जो कुछ काम करती हो या करने की योग्यता रखती हो।"

अपने ऊपर ढलती हुई बातों को सुनकर बलराज ने झेंपते हुए कहा, "अब रहने दो यार, तुम तो मुझ पर ही चालू हो गये।"

भुवन ने कहा, "मजाक की बात नहीं है। अगर वक्त से शादी कर लेते तो कोई बात नहीं थी। पर, अब तो तुम्हें सोच-समझकर काम करना चाहिये। पढ़ी-लिखी, काम करने वाली अट्ठाईस-उनतीस बरस की युवती, सभा-सोसाइटी में उठने-बैठने वाली किसी भी बीस-इक्कीस बरस की लड़की से कहीं ज्यादा अच्छी बीवी साबित होगी। तुम्हारी उम्र ऐसी है कि तुम्हें इन दोनों में से कोई भी मिल सकती है। बड़ी उम्र की बीवी के नखरे कम होंगे, वह अपनी जिम्मेदारी समझेगी। तुम्हें भी वह एक दुष्प्राप्य रत्न की तरह सजो कर रखेगी, जबकि कमउम्र बीवी की नजर में तुम अरसे तक, 'इससे तो अच्छा वह था,' की भावना के शिकार बने रहोगे।"

भुवन की हँसी-हँसी में कही बातों से बलराज के मन की कई गाँठें एक साथ खुल गयीं। उन गाँठों के खुलने पर, हर अखबारवाले की तरह, 'एकोहम् द्वितीयो नास्ति' में विश्वास करने वाले बलराज ने एकाएक बालक की तरह भोलेपन से कहा, "तुम ठीक कहते हो भुवन, मेरे माँ-बाप ने जिस लड़की से मेरी शादी तय की है वह एक कालेज में पढ़ाती है और कुछ कमउम्र भी नहीं है। करीब-करीब मेरी ही उम्र की है। उससे मिलने पर मुझे ऐसा लगा कि उसकी नजर में मुझ से बड़ा कोई नहीं है और उससे अपनी शादी की मंजूरी देकर मैं उसको किसी बड़ी संभावित आपत्ति से उबार लूँगा। देखने में भी वह अच्छी है। आज से

साल-भर पहले यदि यह प्रस्ताव आता तो मैं एक बार भी सोचे बग़ैर स्वीकार कर लेता। पर आज, आज तो मैं बुरी तरह उलझ गया हूँ। साल-भर पहले मेरी ब्रिटिश इलैक्ट्रिक के ब्रांच मैनेजर कपूर साहब की लड़की सौदामिनी से भेंट हुई थी। अब जब से वह दिल्ली से मिराण्डा कॉलेज से एम० ए० पास करके आयी है, रोज ही टेलीफोन करके क्लब बुला लेती है। यहाँ कनकपुर में तो उससे सुन्दर लड़की कोई दिखायी नहीं देती। अपने निस्संकोच व्यवहार के कारण वह क्लब की बैठकों में निष्कलंक मोती की सौम्य आभा सी दमकती रहती है। यों तो उसके संग-साथ के लिए दूसरे लोग हर तरह से खर्च करने के लिए तैयार रहते हैं पर चूंकि वह मेरे साथ जाती है, इसलिए सारी शाम का खर्च मेरे ही ऊपर आ जाता है। कर्ज में डूब गया हूँ और यह भी समझ में नहीं आता कि मेरे और उसके संबंधों की क्या परिणति होगी। वह इतने ऊँचे सामाजिक शिखर पर बैठी है कि मैं उससे कुछ कहने की हिम्मत भी नहीं कर पाता। मेरी आकुलता प्रतिदिन बढ़ती जाती है क्योंकि यदा-कदा यह भी लगता है कि कम-से-कम मेरे लिए वह दुष्प्राप्य है। सिवा दिलचस्प संग-साथ और रोचक खुश-गप्पियों के वह किसी बात का अवसर नहीं देती। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि वह मेरे सहारे अपना समय काट रही है और समय आने पर अपना अलग रास्ता ले लेगी। पर जब कभी मैं कुछ उखड़ता हूँ तब वह कुछ ऐसा संकेत दे देती है कि उसके लिए मैं ही सब कुछ हूँ। बड़ी दुविधा में पड़ा हूँ।"

भुवन ने कहा, "मुझे यह मालूम है और इसीलिये मैंने एक मित्र के नाते तुमसे यह बात कही है। मेरी राय मानो तो महीने भर की छुट्टी ले लो फिर जिस लड़की को तुम्हारे माँ-बाप ने चुना है और जिसे तुम भी ठीक समझते हो, उससे शादी करके ही यहाँ वापस आओ। जब तुम यहाँ लौटोगे तब तुम्हें पता चलेगा कि इस महीने भर में ही तुम इस नागफाँस से छुटकारा पा गये। बचे-खुचे जंजाल भी तुम्हारी पत्नी की उपस्थिति से दूर हो जायेंगे। यह काम तुम्हें सौदामिनी द्वारा प्रणय-भंग करने से पहले ही कर डालना चाहिये जिससे उसके द्वारा तिरस्कृत होने के बाद की हीन-भावना से बच जाओ और तुम्हारी भावी पत्नी को

भी यह न लगे कि तुम उसके पास किसी चपल वंचिका द्वारा ठुकराये जाने के बाद आये हो।"

इसी समय कुछ दूर से किसी कमनीय कंठ ने पुकारा, "हैलो बलराज!"

दोनों ने घूमकर देखा कि चार-पाँच गज की दूरी पर खड़ी एक सुदर्शना सुकन्या अपने कंधे पर पड़े लम्बे सुचारु रूप से कटे बालों को लहराकर बलराज को बुला रही है। वह अकेली ही थी और उन दोनों के पास भी आ सकती थी पर उसने बलराज को आवाज़ देकर, अपना मुँह दूसरी तरफ कर लिया था। जाहिर था कि वह भुवन से मिलना नहीं चाहती थी। अपना साहस बटोर कर बलराज ने भुवन से कहा, "यही सौदामिनी है। आओ आज तुम्हें भी मिला दूँ।"

पर भुवन ने कहा, "नहीं, मुझसे इस वक़्त न मिलाओ। इससे मैं तब मिलूँगा जब तुम या तो इससे शादी कर लोगे या फिर जब अपने माँ-बाप की चुनी हुई लड़की से शादी कर कनकपुर लौटोगे। तुम उसके पास जाओ, मैं ज़रा कृष्णास्वामी की खैर-खबर ले लूँ।"

संघर्ष भूमियाँ

बलराज के जाने के बाद भुवन फिर उच्चस्तरीय प्रेस-दीर्घा की ओर जाने के लिए बढ़ा पर उसी समय एक सोलह बरस का लड़का दौड़ता हुआ भुवन के पास आया और बोला, "अंकल, थोड़ी देर पहले पापा ने मुझे इस तरफ लेडीज गैलरी मे ममी के पास भेजा था, पर अब गेट बंद हो गया है और मुझे वापस उस तरफ़ सी क्लास मे अपनी सीट पर जाना है। गेट पर खड़े पुलिस वाले गेट नहीं खोलते। आप जरा कह दें।"

वह लड़का भुवन के बचपन के दोस्त और कपड़े के बड़े व्यापारी राजनाथ का लड़का शिवनाथ था।

भुवन ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "चलो मैं चलता हूँ, दो-चार मिनट राजनाथ से भी मिल लूँगा।"

महिला कक्ष के बाद वाले सी क्लास का शुल्क तीस रुपये था। इस दीर्घा के ज्यादातर दर्शक सही माने में क्रिकेट के शौकीन थे और उनमें से अधिकतर केवल मैच देखने के उद्देश्य से आये थे। उन्हें विजय पार्क की रंगीनियों में कुछ विशेष दिलचस्पी नहीं थी।

भुवन को पहचान कर गेट पर तैनात दारोगा ने गेट में बनी सी क्लास की तरफ़ खुलने वाली एक बड़ी खिड़की खोल दी और वह शिवनाथ के साथ सी क्लास के पीछे वाले विजय पार्क के सबसे बड़े मैदान में दाखिल हो गया। सी क्लास के आगे उसी से मिला हुआ डी क्लास था जिसका प्रवेश-शुल्क पच्चीस रुपये था।

सी क्लास और डी क्लास के बीच की गैलरी में दोनों तरफ कांटेदार तारों का जाल लगा था।

इस तरफ क्रिकेट आंगन का दूसरा सिरा था और इस दूसरे सिरे पर एक बड़ा सा सफ़ेद पर्दा लगा था।

डी क्लास के बाद विद्यार्थी-कक्ष से मिला हुआ साधारण कक्ष था और इन दोनों कक्षों के पीछे वाले मैदान को विजय पार्क के दूसरे हिस्सों से बिना दरवाज़े की ऊँची दीवारें बनाकर अलग कर दिया गया था। डी क्लास के पीछे यह दीवारें पार्क की सीमा तक बनी हुई थीं।

सब तरफ से अलग इस मैदान में प्रदेशीय सशस्त्र पुलिस दल का कैम्प था। इस कैम्प में करीब दो हज़ार पुलिस वाले थे। इन पुलिस वालों के आने-जाने के लिए डी क्लास की तरफ़ एक खिड़की थी और विजय पार्क की बाउन्ड्री की दीवार में सड़क की तरफ एक दरवाजा था।

प्रदेश का यह सशस्त्र पुलिस दल अपनी हृदयहीनता के लिए देश भर में प्रसिद्ध था। आवश्यकतानुसार, इसके दस्ते अन्य प्रदेशों में भी निमन्त्रित किये जाते थे। प्रदेश की पुलिस के उच्च अधिकारियों को अपने इस दल की, उस निर्दयता पर नाज था जिसकी शिक्षा इस दल के सदस्यों को अंग्रेज़ों के राज्यकाल में मिली थी। आज़ादी से पहले इस विशिष्ट पुलिस दल के सदस्यों को, अपने अधिकारी की आज्ञा मिलने पर, अहिंसक सत्याग्रहियों के समर्थन में जमा होने वाली निहत्थी शांतिपूर्ण स्त्री-पुरुषों, बूढ़े-बच्चों की भीड़ों पर बर्बरतापूर्ण आक्रमण करने के लिए शाबाशी मिलती थी। संयम, नियम तथा आज्ञापालन इस दल के लिए हृदय-हीनता, निर्दयता तथा बर्बरता के पर्याय थे।

तत्कालीन सत्याग्रहियों ने आज़ादी के बाद अपने राज्य-काल में इस विशिष्ट पुलिस दल की आवश्यकता को अच्छी तरह समझा, इसके गुणों को सराहा और स्वातंत्र्य युग की राज्य व्यवस्था में इसको विशेष स्थान देकर इसकी सदस्य संख्या में भी वृद्धि की। आज़ादी के बाद इस दल की वीरता के उदाहरण, शहरों में रोटी-रोज़ी के लिए आन्दोलन करने वाली सत्याग्रहियों की छोटी-छोटी टुकड़ियों अथवा अपने छात्रावासों में

न्यूनतम सुविधाओं की माँग करने वाले विद्यार्थी-समूहों पर आक्रमण के समय तो खूब देखने को मिलते थे पर गाँवों मे डाकेजनी से आतंकित रहने वाली जनता को आजादी के बाद पुलिस के इन बहादुरों के शौर्य और निडरता का कोई विशेष परिचय नहीं मिला।

टैस्ट मैच के दौरान लाठियों से लैस इस पुलिस दल के सदस्य क्रीड़ाभूमि के हर कोने मे दिखायी देते थे और अपने अधिकारियों की आज्ञा को आँख बंद कर पालन करते हुए किसी निरपराध व्यक्ति का सिर फाड देने मे भी कोई सकोच नहीं करते थे। इनका डेरा विद्यार्थी-कक्ष तथा जनसाधारण के सस्ते कक्ष से मिला हुआ था और इनका विशेष उपयोग विद्यार्थियों तथा जनसाधारण की उस भीड़ को भगाने या आतंकित करने के लिये होता जो टिकट खरीदने के बाद भी क्रीड़ांगन मे स्थानाभाव के कारण प्रवेश पाने में असमर्थ रहने से, विजय पार्क के बाहर वाली सडकों पर अथवा प्रांगन के अंदर उन कक्षों के पीछे जमा रहती थी।

सी क्लास और डी क्लास के पीछे वाले मैदान मे सस्ती खाने-पीने तथा पान-सिगरेटों की अनेक दूकानें थीं। सैंकडों स्त्री-पुरुष मैदान में जगह-जगह बैठे या खड़े चाय पी रहे थे और उस समय तक के खेल के बारे मे गर्मा-गर्मी से बहस कर रहे थे।

शिवनाथ ने सी क्लास की तरफ बढते हुए भुवन से कहा, "आप ठहरिये, मैं अभी पापा को भेजता हूँ।"

शिवनाथ के चले जाने के बाद भुवन ने अपने चारों ओर नजर दौडाई और देखा कि सी क्लास के पीछे वाला मैदान प्रथम श्रेणी वाले मैदान से बहुत बडा था।

वहाँ भुवन को ऐसे बहुत से लोग दिखायी दिये जो अक्सर शाम सवेरे कनकपुर के मुख्य व्यापार मार्ग विलसन रोड पर स्थित छोटे से मैदान में जमा होकर देश-प्रदेश तथा नगर की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अथवा नागरिक समस्याओं पर बहस करते हुए ऐसे सिद्धान्तों और राष्ट्रीय आदर्शों का निरूपण करते थे जिनकी हत्या वह स्वयं अपने जीवन मे, बिना किसी परोपेश के, नित्य ही करते रहते थे।

कनक-मैदान के नाम से प्रसिद्ध उस छोटे से भूखंड का अपना एक

अनोखा महत्त्व था। सौ वर्गमील से भी अधिक क्षेत्रफल मे फैले हुए कनकपुर के किसी कोने मे हुई किसी भी घटना की खबर सबसे पहले कनक-मैदान मे पहुँचती थी।

आजादी से पहले इस भूखंड का नाम 'संघर्ष-भूमि' पड गया था क्योकि उस समय वह सत्याग्रहियों और पुलिस की मुठभेड़ों की चर्चा का मुख्य केन्द्र था। उन दिनों इन चर्चाओ से ही जनता द्वारा पुलिस से टक्कर लेने के लिए नित्य नयी-नयी योजनायें निकलती थी और उन प्रेरणादायक गीतों और नारो का भी जन्म होता था जिनको गाते और चिल्लाते हजारो लोगो की भीड़ सत्याग्रहियों का उत्साह बढाती हुई सदा पुलिस के डंडे खाने के लिए तत्पर रहती थी।

आजादी के बाद 'संघर्ष-भूमि' की महत्ता मे मौलिक परिवर्तन हो गया था। वह भूखंड आजादी से लाभान्वित होने वाले त्यागियो अथवा आजादी के बाद की सुविधाओं का उपयोग न कर पाने वाले, पर उनकी ओर ललचाई हुई निराश निगाहो से देखने वालो की गपशप का केन्द्र बन गया था और 'मैदान' के नाम से पुकारा जाने लगा था। परन्तु, उसका यह रूप भी अधिक दिन तक नहीं चल सका क्योकि आजादी से लाभान्वित होने वाले स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानियो को वहाँ बैठकर अपनी सफलता की सीढी पर और ऊपर चढ़ने या उसी उद्देश्य से किये गये अपने दाँव-पेंचों की चर्चा करने मे दिक्कत महसूस होने लगी। ऐसे सफल सत्याग्रहियो ने वहाँ आना-जाना कम कर दिया। वह अपेक्षाकृत अधिक सुसंस्कृत और वैभवशाली जगहो पर उठने-बैठने लगे।

इस प्रकार आजादी के बाद कनक मैदान का पुराना जोर-शोर कुछ कम हो गया और वह श्रीहीन-सा लगने लगा। मन में आगे बढने की लालसा रखने वाले लोग वहाँ जमा होते रहते थे, पर आगे बढ जाने वाले लोग वहाँ जाना कम कर देते थे।

जब कनकपुर के वरिष्ठ काग्रेसी नेता रामकृष्ण द्विवेदी नगर से विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तब उन्होंने कनक मैदान में आना कम कर दिया, पर जब नगर पालिका के चुनावों का समय आया तब सभी दलों के प्रत्याशियों का वहाँ जमघट दिखायी पड़ने लगा।

इन उलट-फेरों से कनक-मैदान पर जमा होने वाली भीड में परिवर्तन तो अवश्य हुआ पर कमी नही आयी। जब विधान सभा भग होने पर रामकृष्ण द्विवेदी की विधान सभा की सदस्यता भी समाप्त हो गयी और दुबारा कांग्रेस टिकट मिलने पर वह हार गये तब वह फिर कनक-मैदान में दिखायी देने लगे। हाँ, अन्तर इतना अवश्य हुआ कि किसी-न-किसी काम से उनके पीछे लगे रहने वालो की पहले वाली भीड गायब हो गयी। अब रामकृष्ण द्विवेदी स्वयं लोगो को अपने पास बुलाते थे।

कनक-मैदान वास्तव मे एक अस्सी फीट लम्बी और तीस फीट चौड़ी उस सड़क का नाम पड गया था जहाँ रोज़ ही एक प्रकार की अनियत्रित खडी सभा होती थी। इस सभा के दो सत्र होते थे। पहले सत्र में सवेरे सात बजे से ग्यारह बजे दिन तक आने वालो और जाने वालो का तांता लगा रहता था। दूसरे सत्र मे यह सभा शाम को सात बजे से नौ-दस बजे रात तक जमती थी। साधारणतया वहाँ हर तरह के लोगो की भीड रहती थी। दोनों सत्रों में शहर के वह लोग जो बहुत-कुछ होने का दावा रखते हुए भी अधिकतर कुछ न हो पाये थे, कनक-मैदान में धीरे-धीरे जमा हो जाते थे और आते-जाते रहते थे। इन आने-जाने वालो का अपना-अपना वक्त था।

कनक भूमि कहलाने वाली इस सडक के दोनो ओर कई जलपानगृह थे, शुद्ध वैष्णव जलपान-गृह।

दुबे जलपान-गृह उस समय खुला था जब स्वतन्त्रता संघर्ष तेजी पर था। दुबे जी ने शुद्ध घी की कुछ स्वादिष्ट नमकीन और मिठाइयों तथा चाय और अन्य ठंडे तथा गर्म पेयों से काम शुरू किया था। उनका दावा था कि शुद्ध घी का जो सामान वह बनाते हैं वह शहर मे सबसे अच्छा और सस्ता होता है। उनका यह दावा कुछ हद तक सही भी था पर मिलावट के इस युग में यह कहना मुश्किल था कि उनका घी कितना शुद्ध होता था—क्योंकि वह स्वयं तो घी बनाते नही थे—बाज़ार से खरीदते थे।

अपनी सुरुचिपूर्ण व्यवस्था के कारण दुबे जी का जलपान-गृह और उसका सामान शीघ्र ही कनकपुर मे प्रसिद्ध हो गया। इस प्रकार से कनक-

पुर मे आधुनिकता का जामा पहने, पहली हलवाई की दूकान लगाने वाले ब्राह्मण ने सामाजिक आदर भी प्राप्त किया।

कुछ समय बाद दुबेजी की देखा-देखी कनकपुर के एक प्रसिद्ध समाज-सेवी वैश्य परिवार के नवयुवक शम्भूनाथ ने सडक के दूसरी तरफ दुबे जलपान-गृह के सामने वाली दूकान मे 'रश्मि रेस्तरां' खोल दिया। दोनों जलपान गृहो के अगल-बगल मे दो-चार और दूकाने भी थी और सभी विशेष ढग के आकांक्षा-समूहो के लिये उठने-बैठने का काम देती थीं।

खडे-खडे गपशप से थक जाने के बाद लोग इन जलपान गृहो या उनके आस-पास की किसी अन्य दूकान मे जा बैठते थे। भीषण गर्मी, वर्षा या तीखे जाडे मे भी कनक-मैदान के प्रेमी अवसर मिलते ही वहाँ एकत्र हो जाते थे। कनक-मैदान, वहाँ के जलपान गृहों और आस-पास की दूकानो मे दिन-भर गप्पो का आलम रहता था।

नगर मे जरा-सी हलचल होने पर कनक-भूमि की भीड बढ जाती थी और शान्तिमय वातावरण होने पर वहाँ आने-जाने वालो की सख्या कम हो जाती थी। चीनी हमले के समय कनक-भूमि मे जो गर्मी आयी थी उसकी तुलना में आजादी के समय के लाठी चार्जों और गोली-वर्षा के बाद वहाँ जमा होने वाली भीड भी कम थी। उन दिनो प्रतिदिन कनक-भूमि मे जमा होने वाली भीड़ के गर्जन-तर्जन मे एक सुप्त ज्वालामुखी के अपेक्षित विस्फोट का आभास मिलता था और एक जीवन्त तथा क्रुद्ध राष्ट्र की ललकार सुनायी पड़ती थी। परन्तु कनक-भूमि की भीड इस प्रकार से यदाकदा ही उद्वेलित होती थी। उसमे अधिकतर विचार-शून्य जड़ता ही दिखायी देती थी। वह हवा के रुख के अनुसार बहती थी। उसकी स्वयं कोई दिशा नही थी। चीनी हमले के समय सुरक्षा मंत्री कृष्ण मेनन के क्रिया-कलापों पर जो आक्रोश कनक-भूमि की भीड़ ने व्यक्त किया था उसकी अन्तर्धारा भी उस कामुक उच्छ्वास के समान ही थी जो वहाँ चीनी हमले के कुछ समय के बाद मशहूर क़व्वाली गानेवाली शकीला बानो भोपाली की दिलकश अन्दाजो के बारे में व्यक्त किया गया था।

इन दिनो वहाँ न मेनन की चर्चा थी और न शकीला बानो भोपाली

की। नगर की किसी समस्या पर भी वहाँ कोई हलचल नही थी और सिर्फ क्रिकेट मैच पर ही जोर-शोर से बातें होती थी।

भुवन को देखते ही सी क्लास के मैदान मे जमा कनक-भूमि के कुछ वार्ता-वीर उसके पास आ गये।

दयाशंकर ने आगे बढकर कहा, "सिनहा साहब, यह विट्ठल कल से खेल रहा है और अब तक उसने इक्यानवे रन भी बना लिये है, पर उसका खेल तो बड़ा बेजान है।"

दयाशंकर के पास ही प्रेमनारायण खडा था। वह किसी समय दयाशंकर के साथ साझे मे काम करता था पर दयाशंकर का व्यापार चातुर्य अपने भागीदार को भी नही बख्शता था। जब प्रेमनारायण ने यह बात समझ ली तो वह कुछ समय बाद, बिना किसी झगडे के चुपचाप अलग हो गया। ऊपर से दोनों पुरानी मित्रता का शिष्टाचार निभाते थे पर अन्दर से दोनों ही एक-दूसरे की काट मे रहते थे।

प्रेमनारायण ने दयाशंकर का मजाक उडाते हुए कहा, "यह टैस्ट मैच है। इक्यानवे रन कुछ कम होते हैं, यह स्कोर तो मनकेकर के अलावा सबसे ज्यादा है।'

दयाशंकर को क्रिकेट का साधारण शौक था। वह इस खेल की पेचीदगियो को ज्यादा समझने की कोशिश किये बगैर ऊपरी तौर से देखता था। दूसरे खेलों मे उसे ज्यादा दिलचस्पी थी। उसने बात बदलने की गरज से कहा, "सिनहा साहब, क्रिकेट तो इतना लाडला हो गया है कि देश में दूसरे खेलो के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है और उनका स्तर गिरता जाता है।"

भुवन ने पूछा, "आपका क्या मतलब है ?"

दयाशंकर ने कहा, "विजय पार्क का यह पच्चीस एकड़ का मैदान है। यह एक तरह से केवल टैस्ट क्रिकेट के लिए ही रिजर्व है, लेकिन इतना भी नही कि यहाँ सालभर हमारे नवोदित क्रिकेट के खिलाडियो को खेलने का अवसर मिलता हो। देखिये, पार्क का यह हिस्सा जहाँ हम-आप खडे है, चारों तरफ ऊबड़-खाबड़ है। इसकी कोई परवाह नही करता। और बडी मुश्किल से यह पीछे का मैदान हमे ऊँचे किराये पर फुटबाल और हॉकी

के जिला स्तर के मैचों के लिए मिलता है। पुराने खिलाड़ी के नाते मैं फुटबाल में और मेरे दूसरे मित्र हॉकी वगैरह मे दिलचस्पी रखते हैं और चाहते हैं कि हमारे नगर मे दूसरे खेल भी पनपें। पर शहर मे खेल के मैदान बहुत ही कम है। बहुत से कॉलेजों तक के पास खेलने के मैदान नही हैं। क्रिकेट तो धनी वर्ग के लड़कों का खेल है। विश्व के सात क्रिकेट खेलने वाले देशों मे सही रूप में हमारा पाँचवा स्थान भी नही है। हमारी क्रिकेट टीम को दूसरे देशों मे उस स्तर का खर्च और आदर-सत्कार भी नही मिलता जो भारत में आने वाली क्रिकेट की टीमों को देते हैं।"

प्रेमनारायण हॉकी का पुराना खिलाडी था, वह भी हॉकी के मैचेज आयोजित करता रहता था, उसने दयाशंकर से सहमति प्रकट करते हुए कहा, "सिनहा साहब, यहाँ तो हर चीज पर कब्ज़ा करने की मनोवृत्ति है। अलबर्ट साहब प्रदेश टैस्ट कमेटी से साठ हजार रुपये पर कनकपुर में होने वाले टैस्ट मैचों का ठेका ले लेते हैं। वही विजय पार्क की प्रबंध समिति मे कब्जा जमाये हुये हैं, कलक्टर इस कमेटी का अध्यक्ष जरूर है लेकिन होता वही है जो अलबर्ट साहब चाहते है।"

इसी समय पास मे खडे हुए केदार शर्मा ने कहा, 'आपको मालूम है सिनहा साहब, यह विजय पार्क नगरपालिका द्वारा पार्क कमेटी को लीज कर दिया गया है और जब हम लोगों ने यहाँ नगरपालिका के अध्यक्ष के संरक्षण मे अंतरदेशीय फुटबाल मैच संयोजित किये तो पहले साल अलबर्ट साहब ने यहाँ खेलने की इजाजत ही नही दी।"

केदार शर्मा नगरपालिका का प्रभावशाली नवोदित सदस्य था। उसके बगल में खडे दूसरे नगरपालिका के सदस्य मसूद हसन ने कहा, "अलबर्ट साहब तो क्रिकेट के नाम पर यहाँ अपनी यादगार बनवाना चाहते हैं। यह अमीरजादे शहर की तो रत्ती-भर परवाह नही करते। इनको इससे कोई मतलब नही है कि हमारे बच्चों के खेलने के लिए जगह नहीं है, लेकिन विजय पार्क क्रिकेट पिच के नाम पर ऊँची चहारदीवारी में बद रहता है और जब दूसरे-तीसरे साल टैस्ट मैच होता है तभी खुलता है।"

दयाशंकर ने कहा, "हम लोगो ने स्वयं कलक्टर से कहा था कि हम कनकपुर के बाजारो के धर्मादो से चार-पाँच लाख रुपया तक उगाह सकते

हैं और यहां एक बहु-उद्देशीय क्रीडांगन बन सकता है। हॉकी, फुटबाल, वालीवाल, कबड्डी, कुश्ती और दूसरे व्यायाम-आधारित शारीरिक निर्माण के खेलों के लिए यहां आसानी से प्रबंध हो सकता है। एक तैराकी-ताल तथा आने वाले खिलाड़ियों के ठहरने के स्थान की भी व्यवस्था हो सकती है पर कलक्टर ने कोई ध्यान ही नहीं दिया।"

प्रेमनारायण ने बात को साफ़ करते हुए कहा, "इस पार्क मे सदा ही खेलो और शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन का मेला लगा रह सकता है पर दुर्भाग्य है कि यहां बरसो उल्लू बोलते हैं। छोटे-छोटे साधनहीन क्लबों से ऊंचा किराया लेकर यह पीछे का ऊबड़खाबड मैदान, जहां हम लोग खड़े हैं, प्रदेशीय खेल प्रतियोगिताओं के लिए दिया जाता है। इस जबरदस्ती का अंत होना चाहिए।"

"पर कोई कलक्टर यह सब नही होने देता क्योकि इससे अलबर्ट साहब की सत्ता में कमी हो जायेगी। अबकी साल तो कमल बाबू ने प्रदेशीय क्रिकेट एसोसिएशन में अलबर्ट साहब से डट कर मोर्चा लिया था। पर कलक्टर ने दबाव डालकर अलबर्ट साहब के पक्ष में फैसला करा दिया।" दयाशंकर ने कहा।

"अरे वह अलबर्ट साहब हो या कमल बाबू, सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। इन्हें खेल और उसकी प्रगति से कोई दिलचस्पी नहीं है। इनकी लाग-डांट तो सिर्फ इस बात पर है कि प्रदेशीय तथा जिला स्तर के खेल सगठनो पर किसका कब्ज़ा रहे और कौन यहां होने वाले टैस्ट मैच का संयोजक हो। इस लडाई मे अलबर्ट साहब को बी० जी० उद्योग समूह के प्रभाव के कारण अधिकारियो का भी समर्थन मिल जाता है"—प्रेमनारायण ने कहा।

इसी समय भुवन का मित्र राजनाथ भी अपने-सी क्लास से निकलकर आ गया और बोला, "अरे भुवन तुम तो वहां ठाठ से प्रेस-गैलरी मे बैठे हो, पर यहां कोई अखबारवाला आने का कष्ट भी नहीं करता क्योकि यहां उन लोगो की खातिर के लिए सिर्फ सस्ती चाय और सस्ते जलपान का ही प्रबंध है। यहां के दर्शक भी ऊँचे कक्षों के दर्शको की तरह सम्पन्न नहीं हैं। यहां तीन सौ सीटो के कक्ष मे हजार से ज्यादा लोग घुसे हुए

हैं, बच्चों और महिलाओं को कोई मना भी कैसे करे? मैच देखना मुश्किल है, बस बैठे हुए है। वह तो शिवनाथ साथ है इसलिए हम लोग एक-दूसरे की सीट सुरक्षित रखते हैं वरना जो उठता है उसके लौटने पर उसे बहुत झगड़ा करने पर ही अपनी सीट मिलती है।"

भुवन ने कहा, "यहाँ सब जगह साधन और सम्पन्नता का ही बोल-बाला है। तुम तीस रुपये देकर रिजर्व कुर्सी पर बैठे हो, थोड़ा-बहुत झगड़ा कर वह जगह तुम्हें वापस मिल सकती है। अपने बायें देखो वहाँ पच्चीस रुपये लिये है पर पांच सौ की दीर्घा मे दो हजार से भी अधिक लोग घुसे हुए हैं। सीट भी रिजर्व नही है, जो उठा उसकी जगह गयी। फिर मेरी क्या कहते हो, मैं तो सारे स्टेडियम मे घूमता रहता हूँ। सबमे बुरी हालत तो महिला-कक्ष की है। उन्हें जमीन पर बैठाया गया है। वहाँ मुश्किल से पाँच सौ की जगह है। अपनी कीमती सलवारों, चूडीदार पाजामो और साडियों आदि के बावजूद सब लडकियाँ और औरतें ठंडी, नम घास पर या धूल भरी सीढियो पर बैठी हैं। उतनी कम जगह मे वहाँ दो हजार से भी अधिक लडकियाँ और औरतें ठुंसी है।"

प्रेमनारायण ने कहा, "हम लोग तो यहाँ मजबूरी मे आ जाते हैं क्योंकि इन दिनो शहर मे कोई काम तो होता नही है। बस सवेरे से भेड़िया-धसान शुरू हो जाती है। बडे-बडे टिफिन कैरियरों मे खाना भरा जाता है, थरमस मे चाय और बोतलो मे पानी भरकर सब यहाँ पिक-निक के लिए आ जाते हैं। बहुत से लोग तो यहाँ ऐसे है जो अपनी दीर्घा मे कभी-कभी झाँक भर आते है और बाहर ही अपना दस्तरख्वान लगाये खाते-पीते और घूमते-फिरते रहते हैं। वह ऐसी जगह के पैसे दे चुके होते हैं जो है ही नहीं, पर कोई सुनवाया नही। इधर तो पुलिस कान्स-टेबुलों और दो-चार मामूली टिकट देखने वालों को छोड़कर प्रबन्ध समिति का कोई आदमी आता ही नही है। यहाँ के कुप्रबन्ध की तो कल्पना करना भी मुश्किल है।"

"इससे बुरी हालत है साधारण कक्ष तथा विद्यार्थी-कक्ष मे। वहाँ एक स्टेडियम के तिहाई हिस्से मे सारे क्रीडांगन की अपेक्षा तिगुने आदमी ठूँसे हुए है, बेहिसाब टिकट दिये गये हैं। न पानी का समुचित प्रबन्ध है

और न पेशावघरो का, दो-चार छोटी-मोटी दुकाने फलो, मूंगफली, पान-सिगरेट और चाय आदि की हैं। जूठे प्याले एक पानी की बाल्टी मे डालकर फिर दूसरे गाहक को दे दिये जाते हैं। चारो तरफ गन्दगी के ढेर ही नही हैं बल्कि बांस-बल्ली और दूसरा सब मलवा भी वहाँ जमा है।" केदार ने बताया।

मनूद ने कहा, "सच पूछो तो राज्यपाल तथा खिलाडियो के मडपो और उनके आस-पास की जगहों को छोड़कर बाकी कही कोई इन्तजाम ही नहीं है। नागरिकों के शौक का फायदा उठाकर इस मैच के जरिये अलबर्ट साहब सिर्फ बड़े लोगो मे वाहवाही पाने की कोशिश मे लगे रहते है।"

केदार ने साम्यवादी लहजे मे कहा, "इस पर भी आप सब इस श्रेणी-विभाजन के साथ हैं, आप ही लोग कुछ निहित स्वार्थ लोगो द्वारा नागरिकों के शौक के इस अनैतिक दोहन के जिम्मेदार हैं।"

"इस किस्म की बदइन्तजामी, यह बेहिसाब रुपये की वसूली और उसका बड़े लोगो के आराम और खातिर के लिये उपयोग सिर्फ श्रेणी-विभाजन की वजह से ही मुमकिन है। अगर चारो ओर घास और सीढ़ियो पर ही लोग बैठे हों और खिलाड़ियो के अतिरिक्त और किसी कक्ष के लिये यह शामियाने वगैरह न लगे हो तो इस खेल के मैदान मे सब बराबर हों और एक स्वर से अच्छे इन्तजाम की माँग करें। इस समय तो जहाँ जैसा इन्तजाम है वहाँ का दर्शक अपने टिकटो के कमोबेश मूल्य के कारण अपने को दूसरो से बडा या छोटा मान लेता है और उसी दृष्टि-कोण से अपने कक्ष के इन्तजाम को देखकर सन्तुष्ट हो जाता है। खेल मे क्या राजा क्या कहार, यहाँ तो खेल की कुशलता से मतलब होना चाहिये, फिर फुटबाल जैसे खेल में तो दोनो टीमों के खिलाडियो को कधे से कंधा भिडाकर जूझना पडता है। इसी भावना के अनुसार खेल के मैदान में सब दर्शकों को एक सी स्थिति मे बैठना चाहिये। तब, इसी स्टेडियम मे दर्शकों के बैठने के लिये दूनी ही नही तिगुनी जगह हो जायगी और सब आराम से बैठ सकेगे क्योंकि सभी वर्ग एक स्वर से उचित प्रवन्ध की माँग करेंगे। सीढियो पर कुर्सियों की कई मन्जिले बन जायेंगी और यह खेलो

की ठेकेदारी तथा बदइन्तजामी भी खत्म हो जायगी।"

इसी समय बी० जी उद्योग समूह की पहरा तथा निगरानी शाखा के प्रमुख अधीक्षक किशनलाल ने भुवन के कंधे पर हाथ रखा और अलग चलने का इशारा करते हुए कहा, "सिनहा साहब जरा मेरी एक बात सुन ले।"

किशन की बात सुनकर भुवन ने दयाशंकर आदि से क्षमा मांगी और किशनलाल के साथ अपनी प्रेस-दीर्घा की ओर चल पड़ा।

दोस्ती का फ़र्ज़

किशनलाल भुवन का पुराना सहपाठी था। बीस बरस पहले जब भुवन कनकपुर के बाहर, प्रयाग विश्वविद्यालय मे पढ़ने गया था तभी हाईस्कूल पास किशनलाल बी० जी० उद्योग समूह के पहरा-निगरानी दस्ते मे भरती हो गया था और अपनी सेवा से संचालकों का विश्वास प्राप्त कर धीरे-धीरे उस उद्योग समूह के निगरानी-दस्ते का अधीक्षक बन गया था। वह भुवन का बडा आदर करता था और अपनी पुरानी दोस्ती के नाते भुवन को एक बार खतरे से आगाह भी कर चुका था।

भुवन के साथ आगे बढते हुए किशनलाल ने कहा, "सिनहा साहब, आप क्यों इन लोगों के खटराग मे पडते हैं। यह दयाशंकर वगैरह उस ग्रुप के लोग हैं जो अलबर्ट साहब को हर तरह से नीचा दिखाना चाहते हैं। इतनी मेहनत, सूझबूझ और पैसे से स्टेडियम के अन्दर बने क्रिकेट के मैदान को नेस्तनाबूद कर, यह लोग यहाँ फुटबाल, हॉकी और दूसरे खेल, यहाँ तक कि कुश्ती और कबड्डी आदि के लिए बहुत-से छोटे-बड़े अखाड़े बनाना चाहते हैं। फिर, शहर में क्रिकेट के लिए जगह रह ही नही जायगी। इस मंच की प्रबन्ध समिति और प्रदेशीय क्रिकेट तथा अन्य खेलों की एसोसियेशनों के मामले में भी इन लोगों की अलबर्ट साहब से मुकदमेबाजी चल रही है। इनमें से कुछ अपना एक नया गुट बना कर बन्दर-बाँट करना चाहते हैं।"

किशनलाल और भुवन बातें करते हुए फिर उस लोहे के फाटक के पास आ गये थे जो सी क्लास को महिला कक्ष के पास अन्य विशिष्ट

दीर्घाओं से अलग करता था।

किशनलाल को दूर से ही देखकर, गेट पर तैनात कान्सटेबुल ने सीटी बजाकर दूसरी तरफ के पुलिस वालों को आगाह कर दिया। किशनलाल के वहाँ पहुँचने से पहले ही फाटक खुल गया तथा फाटक के दोनों ओर के कान्सटेबुलों ने उसे बाकायदा सलाम किया। किशनलालकी प्रतिष्ठा वहाँ सबसे अधिक थी। अन्य लोगों के लिए तो फाटक खुल ही नहीं सकता था। भुवन को भी शिवनाथ को दूसरी तरफ भेजने के लिए फाटक के पहरे पर नियुक्त दारोगा से प्रार्थना करनी पड़ी थी और उसने फाटक खोल कर भुवन पर व्यक्तिगत रूप से अहसान ही किया था।

बी० जी० उद्योग समूह की निगरानी शाखा के अधिकारी को पुलिस द्वारा इतना आदर मिल रहा था जितना पुलिस उप-अधीक्षको को ही मिल सकता था।

भुवन ने फाटक से विशिष्ट दीर्घाओं की ओर बढ़ते हुए कहा, "मुझे तो इन झगड़ों का पता भी नहीं है। यह लोग तो यहाँ-वहाँ रोज ही मिलते हैं, पर अलबर्ट साहब के बारे में उन्होंने आज ही कुछ बातें की है।"

किशनलाल ने कहा, "आजकल ही तो मौका है। इतने बड़े इन्तजाम में जहाँ हजारों लोगों के बैठने की व्यवस्था करनी पड़ती है वहाँ कुछ-न-कुछ कमी तो रह ही जाती है। उसको नजर-अन्दाज भी किया जा सकता है और उसके सहारे असतोष भड़काकर, झगड़ा भी कराया जा सकता है। आप जैसे बड़े अखबारवालों से चर्चा कर यहाँ के बन्दोबस्त के खिलाफ अखबारों में खबरें भी छपवाई जा सकती है और उनका सरकारी स्तर पर अलबर्ट साहब को बदनाम करने के लिये उपयोग भी किया जा सकता है। इस तरह की बातें करने में इन लोगो का यही उद्देश्य रहता है।"

इसी समय किशनलाल के पीछे-पीछे आने वाले एक आदमी ने आगे बढ़कर कहा, "किशन जी, आप अगर आगे जा रहे हों तो मैं भी पलास में वापस लौट जाऊँ और देखता रहूँ कि वहाँ कोई गड़बड़ी न हो।"

किशनलाल ने उसकी बात सुनकर कहा, "यह ठीक है गुरुदेव, तुम लौट जाओ। अगर यह लोग वही मजमा लगाकर बढ़ा-चढ़ा कर बदइन्तजामी की बातें कर रहे हों तो अपने आदमियों की मदद से उन्हें तितर-

वितर कर देना। अब चाय का टाइम खत्म हो रहा है और मैं कुछ देर तक खिलाड़ियों के मंडप के पास ही रहूँगा।"

फिर किशनलाल ने भुवन के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "आइये सिनहा साहब, हम लोग खिलाड़ियों के मंडप की तरफ़ चलें। आपको भी तो वहीं जाना होगा।"

भुवन ने कहा, "हाँ चलना तो है, पर यह बताओ कि यह सुखदेव क्या तुम्हारे दस्ते में भरती हो गया है। इस पर तो दो वर्ष पहले कुसुम नाम की लड़की के साथ बलात्कार करने का मुकदमा चला था। उस खीचा-तानी में वह लडकी मकान की तीसरी मंजिल से कूदकर मर गयी थी।"

किशनलाल ने कहा, "उस मामले में तो यह बेदाग छूट गया था। पुलिस को इसके खिलाफ कोई सबूत नहीं मिला था। यही नहीं इस बात के भी विश्वसनीय प्रमाण मिले थे कि यह उस दिन लखनऊ में था।"

भुवन ने कहा, "पर वह मकान तो इसी सुखदेव का था और इसी ने कुसुम और उसके प्रेमी जगदीश को अपने उस घर की तीसरी मंजिल का कमरा मिलने-जुलने के लिए दिया था। जब एक दिन वह दोनों वहाँ थे तब सुखदेव ने अपने कुछ साथियों की मदद से जगदीश को कमरे से बाहर निकालकर उस लड़की से जबरदस्ती करनी चाही थी।"

किशनलाल ने कहा, "वह लड़की तो इस धीगामुश्ती में तीसरी मंजिल से गिर कर मर गयी थी। जगदीश उस कमरे में घुस जाने वाले लोगों को पहचानता नहीं था। वह लोग लडकी के कूदने के बाद सड़क पर लगने वाली भीड़ में मिलकर गायब हो गये थे और पुलिस उन लोगों का पता ही नहीं लगा सकी थी।"

भुवन ने पूछा, "तुमने भी सुखदेव की कुछ मदद की थी।"

किशनलाल ने कहा, "नहीं, मुकदमे के दौरान तो मैंने इसकी कोई मदद नहीं की। उस समय तो मैं इसे जानता भी नहीं था। हाँ, जब मुकदमे में क़रीब-करीब बरबाद हो जाने के बाद यह मेरे पास आया तब मैंने इसे अपने दस्ते में रख लिया। यह मौके पर काम आनेवाला आदमी है।" फिर उसने बात बदलते कहा, "लेकिन छोड़िये इन बातों को, मुझे तो सिर्फ़ इतना कहना है कि वह लोग जो आपको सी क्लास के पीछे घेरे हुए थे

वह सब हम लोगों के खिलाफ़ हैं और तरह-तरह की बातें करके इस भीड़-भाड़ के दौरान असन्तोष भड़का रहे हैं। इनको आप कोई बढ़ावा न दें। मेरी तरफ से यही दरख्वास्त आप-अपने दूसरे अखबारवाले दोस्तों से भी कर दें। इन लोगों को इस वक्त बढ़ावा देने से आपस की लाग-डाँट बढ़ सकती है। झगड़ा हो सकता है और फ़िज़ूल ही कुछ लोग भीड़ की भगदड़ में चोट खा सकते हैं।"

एकाएक खिलाड़ियों के मंडप के सामने क्रीडांगन के मुख्यद्वार पर पुलिस की सीटियाँ बजने लगीं।

चाय के अंतराल का समय समाप्त हो रहा था और सभी ओर से भीड़ विभिन्न कक्षों की ओर जा रही थी। पुलिस की सीटियों के बजने का कारण यह था कि प्रदेश के मुख्यमंत्री भी कुछ समय के लिए मैच देखने आ गये थे।

सीटियों की आवाज़ सुनते ही किशनलाल ने अपनी बात काटकर कहा, "अच्छा, सिनहा साहब अब मैं तो जाता हूँ, आप ज़रा मेरी बात का ख़याल रखें।" और लंबे-लंबे कदम रखता हुआ आगे बढ़ गया।

सैनिक सन्तुलन के साथ जमीन पर पड़ने वाले किशनलाल के क़दमों में एक खास प्रकार की धमक थी। उस धमक में विघ्न-बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ने वाले पाँवों की, केवल आत्म-विश्वस्त आहट ही नहीं थी वरन् वह ऐसे सशक्त क़दमों की पदचाप थी जो अपनी राह में पड़ने वाले जड़-चेतन सभी को रौंदते हुए आगे बढ़कर अपने अभीष्ट को प्राप्त करने की क्षमता रखते थे। उसके कदमों की धमक उस औद्योगिक शक्ति-पुंज की समर्थ ललकार की द्योतक थी, जो क्रीडांगन में बैठे हुए पचास हज़ार व्यक्तियों के नारों के शोर के ऊपर भी, विजय पार्क के हर कोने में सुनायी पड़ती थी और जो किशनलाल जैसे सैकड़ों छोटे-बड़े अहलकारों के स्टेडियम में जगह-जगह घूमने-फिरते रहने से प्रत्यक्ष प्रतिलक्षित हो रही थी।

किशनलाल ने कुछ कदम आगे बढ़कर कड़कती हुई आवाज़ में एक जगह खड़ी भीड़ को छँट जाने का आदेश देते हुए कहा, "मजमा न लगाइये, अपनी-अपनी जगह पर जाइये।"

इस आवाज पर भीड छंट गयी और किशनलाल बिना एक क्षण रुके अथवा अपने पीछे या दायें-बायें बिना कोई नजर डाले आगे बढ़ गया।

किशनलाल के जाने के बाद भुवन अकेला रह गया और उसकी बातें भुवन के मन में घुमड़ने लगीं। वह निश्चय नहीं कर पाया कि किशनलाल ने उससे वह बातें मित्रता के नाते कही थी अथवा उसने एक प्रकार की अप्रत्यक्ष चेतावनी दी थी। उसे लगा ऐसी चेतावनी उस समय विजय पार्क के कोने-कोने में कोई-न-कोई किशनलाल या सुखदेव किसी-न-किसी भुवनेश्वर सिनहा को बी० जी० उद्योग संस्थान की ओर से अपने-अपने ढंग से हर जगह दे रहा था। इतना ही नहीं उसे यह भी लगा कि इस प्रकार की चेतावनी उस औद्योगिक शक्ति-पुंज की ओर से किसी-न-किसी के माध्यम से सारे कनकपुर में किसी-न-किसी को बर्षों से हर समय दी जाती है। भुवन ने इस चेतावनी को आज दूसरी बार सुना था। पहली बार भी यह चेतावनी उसे किशनलाल द्वारा ही मिली थी।

कुछ बरस पहले कनकपुर लौटने के बाद जब भुवन की भेंट किशनलाल से विद्यार्थी-जीवन की समाप्ति के बाद पहली बार हुई थी, तब भी उसने भुवन को इसी प्रकार से कनकपुर के अप्रत्यक्ष शक्ति-केन्द्रों के बारे में आगाह किया था।

आज भी वह कुछ प्यार से अप्रत्याशित घटनाओं का भय दिखाता हुआ चला गया था।

भुवन के मन में वह बरसों पुरानी घटना फिर कौंध गयी। उस दिन किशनलाल ने अप्रत्यक्ष रूप से भुवन को बताया था कि जो लोग उसकी चेतावनी पर ध्यान नहीं देते वह कभी-कभी चलते-फिरते अनायास ही चोट-चपेट खा जाते हैं।

छूम छनन्, छूम छनन्, छूम छनन्,
छूना ना, छूना ना, छूना ना।

फिल्मी संसार की उदयीमान पार्श्व-गायिका नीना धर्मदास कनक-क्लब के मंच पर सशरीर खड़ी थी और धीरे-धीरे अपनी स्वर-लहरियों का विस्तार करती हुई सामने बैठे हुए हजारों श्रोताओं के हृदय में उतरती चली जा रही थी। भुवन भी मन्त्र-मुग्ध होकर उसकी सुरीली, कामुक

तानों को सुन रहा था।

पर यह बात कुछ बाद की थी।

कुछ समय पहले जब उपर्युक्त कार्यक्रम शुरू नहीं हुआ था, पत्रकार-गैलरी में बैठा हुआ भुवन बायें-दायें झुक कर नीना को देखने की कोशिश कर रहा था पर एकाध झलक मिलने के सिवा उसे नीना के देखने में अधिक सफलता नहीं मिली थी।

पत्रकार गैलरी दस फीट ऊँचे स्टेज के बायीं ओर बनायी गई थी। स्टेज के निकट होते हुए भी वहाँ से किसी कलाकार को देखना मुश्किल था। वहाँ से सिर्फ तबला बजाने वाले की पीठ ही दिखायी देती थी।

नीना, नाटे कद की साँवली-सी नवयुवती थी। वह खड़ी होकर स्वयं हारमोनियम बजाती हुई गा रही थी। उसके दाहिनी ओर एक ऊँची मेज पर तबले वाला बैठा था और वह स्टेज के बांयी ओर बैठे हुए दर्शकों और श्रोताओं की नजर से बिलकुल छुपी हुई थी।

रह-रहकर भुवन की दृष्टि अपने दाहिनी ओर बैठे हुए विशिष्ट आमन्त्रित व्यक्तियों के कक्ष पर पड़ती थी।

बरसों के बाद कनकपुर लौटने पर वहाँ के विशिष्ट जनों तथा जन-साधारण के इतने बड़े समूह से साक्षात्कार का यह उसका पहला अवसर था। कनक-क्लब के उस विशाल मैदान में दस हजार से अधिक व्यक्तियों के बैठने का इन्तजाम था और सभी के लिए किसी-न-किसी प्रकार की कुर्सियों का प्रबन्ध किया गया था।

कनकपुर में नया होने के कारण भुवन को इतनी ज्यादा कुर्सियों के एक जगह एकत्रित किये जाने पर आश्चर्य हुआ था।

अपने सहयोगी सतीश से यह आश्चर्य प्रकट करते हुए उसने कहा था, "इतनी बड़ी संख्या में कुर्सियों का इन्तजाम तो आसानी से नहीं हो सकता, इस आयोजन के प्रबन्धकों की बड़ी क्षमता है।"

सतीश ने उत्तर दिया था "यह बी० जी० उद्योग समूह का प्रबन्ध है। इसके सब मिलों में पचास हजार से अधिक व्यक्ति काम करते हैं। इससे सम्बन्धित हर काम बड़े पैमाने पर होता है।"

आगे की पंक्तियों में बैठे हुए विशिष्ट दर्शकों के लिए सोफा-सेट और

फ़ाग-चेयर्स का प्रबन्ध था। उस एक सन्ध्या के लिए, इस कक्ष के पीछे के दो विभागों के दर्शकों की गैलरी का प्रवेश शुल्क क्रमशः पचास रुपये और पच्चीस रुपये था। भुवन के पत्रकार की दृष्टि बार-बार विशिष्ट आमन्त्रितों की पहली कतार में बैठे हुए नगर के शासनाधिकारियों पर अटककर रह जाती थी। इन दर्शकों के बारे में यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता था कि वह बगैर टिकिट लिए सपत्नीक और बाल-गोपाल सहित उपस्थित थे।

भुवन को यह भी मालूम था कि नगर के प्रमुख शासनाधिकारी होने के नाते कनकपुर में ज़िलाधीश विभिन्न नगर के सेठों द्वारा कनकपुर की मशहूर नाचने और गाने वाली सकीना बेगम के चोरी-छिपे आयोजित होने वाले मुजरों और उस समय चलने वाले शराब के दौरों में सम्मिलित होने में भी संकोच नहीं करते थे। कनक-क्लब का वह आयोजन तो देश के सर्वप्रिय फ़िल्मी पार्श्व गायक सुलतान अब्बासी और उसकी पार्टी का खुला कार्यक्रम था।

आयोजन की आय का एक भाग सुरक्षा-कोष में जाना था। यद्यपि वह आयोजन मुख्यतः सिनेमा-संगीत का था फिर भी उद्घाटन के समय ज़िलाधीश ने सुलतान अब्बासी के शास्त्रीय संगीत का भी ज़िक्र किया था। शास्त्रीय संगीत का नाम आते ही भुवन के दाहिनी ओर बैठे संगीत-प्रेमी हिन्दी लेखक और केन्द्रीय सूचना विभाग के भूतपूर्व अधिकारी तथा अब एक प्रदेशीय अंग्रेज़ी पत्र के संवाददाता रामकृष्ण ने धीरे से कहा, "मनोरंजन-कर की पूरी मार से बचने के लिए शास्त्रीय संगीत की चर्चा जरूरी है, क्योंकि शास्त्रीय संगीत पर मनोरंजन-कर केवल साढ़े बारह प्रतिशत है और और लाइट म्यूज़िक पर उसकी दर पच्चीस प्रतिशत है।"

रामकृष्ण की बात सुनकर भुवन के बायीं ओर बैठे हुए सतीश ने ज़रा हँसकर कहा, "हाँ, भाई यह तो ऐसे आयोजन करते ही रहते हैं इन्हें सब मालूम हैं।"

रामकृष्ण भी इस बात पर हँसा और उसने कहा, "यह सब 'ट्रिक्स आफ द ट्रेड' हैं।"

इसी समय नगर का तत्कालीन ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक अष्ठाना अपनी

पत्नी और दो पुत्रियों सहित आता दिखाई दिया। प्रबन्धक युवकों में से कुछ ने दौडकर उससे पूछा कि उसका टिकट किस श्रेणी का है। इस प्रश्न से अष्ठाना कुछ निष्प्रभ हो गया। वह उस समय अपनी वर्दी में नहीं था। प्रबन्धक युवको द्वारा रोके जाने पर कुछ दूर बावर्दी खड़े चार कास्टेबुलो, दो दारोगाओ तथा एक उप-पुलिस-अधीक्षक ने फौरन आगे बढकर अष्ठाना के सामने आकर सैल्यूट किया और विशिष्ट कक्ष की ओर इशारा करते हुए कहा, "हुजूर आपकी सीटें वहाँ हैं।"

इस शाही सैल्यूट के बाद प्रबन्धक युवक मण्डल अष्ठाना को पहचान गया और फिर अपनी आँखे बिछाए-बिछाए उसे आदर-सम्मान के साथ विशिष्ट कक्ष मे सोफो की सबसे पहली लाइन मे उस जगह बैठा दिया जो मंच के बिलकुल सामने थी।

भुवन ने बगल मे बैठे सतीश से कहा, "भले आदमियों के कपडे पहनने का यह नतीजा होता है।"

एक क्षण, भुवन की समझ मे उसकी बात नहीं आई तो सतीश ने उसे बताया, "अगर अष्ठाना साहब, अपनी पुलिस की वर्दी मे होते तब भी क्या कोई उनसे टिकट पूछता ?"

अपने परिवार को यथास्थान बैठा देने के कुछ देर बाद अष्ठाना कुछ लोगों को अभिवादन करता हुआ और बहुतो का अभिवादन लेता हुआ पत्रकार गैलरी की तरफ आया।

भुवन ने उठकर कहा, 'अष्ठाना साहब यह शरीफ आदमियों के कपडे न पहना कीजिये। इसमें हम लोगों की तरह कभी आपकी भी बेइज्जती होने का खतरा पैदा हो सकता है।"

अष्ठाना भी पहले भुवन का मतलब नही समझा पर फिर समझते ही वह बडे जोर से हँसा। भुवन की बात पर एक बार तो सन्नाटा छा गया था पर अष्ठाना के हँसने के साथ ही आस-पास बैठे लोगो ने भी जोर का ठहाका लगाया।

उस ठहाके को सुनकर पास ही खडे कनक-क्लब के एक नवयुवक मन्त्री गोपी टण्डन ने भुवन को आग्नेय नेत्रो से देखा और फिर दूर खडे बी० जी० उद्योग के प्रमुख हरबंस लाल के सुपुत्र तथा कनक-क्लब के

सभापति सुनन्दन लाल के पास जाकर भुवन की ग्रोर संकेत करके बात करने लगा।

उन दोनों को इस प्रकार बात करते देखकर सतीश ने भुवन से कहा, "लो अब निकाले गये इस महफिल से भी !"

भुवन ने कहा, "घबराओ नहीं, निकाले नहीं जाओगे, पर हाँ आगे से शायद कनक-क्लव के आयोजनों का निमन्त्रण नहीं मिलेगा।"

रामकृष्ण ने कहा, "लेकिन आयोजन समाप्त होने से जरा पहले ही निकल जाना नहीं तो भीड में प्रवन्धकों के दोस्तों की मोटरों से तुम्हारे रिक्शे को धक्का भी लग सकता है।"

इसी समय भुवन ने देखा कि सुनन्दनलाल ने अपने से कुछ दूर बाअदब खड़े अपनी मिलों के पहरेदारों के वर्दीधारी मुखिया को बुलाया ग्रौर उसे कुछ आदेश देकर आगे चला गया।

मिलों के पहरेदारों का वह मुखिया पत्रकार गैलरी की ओर देखता हुआ कुछ दूर टहलता रहा, फिर धीरे-धीरे आगे बढकर भुवन के पास आकर खड़ा हो गया। भुवन की वगैर हत्थे की कुर्सी पर हाथ रखकर उसने कहा, "कहिए सिनहा साहब, कैसे मिजाज हैं, पहचाना नहीं आपने ?"

भुवन ने तपाक से कहा, "अरे वाह किशन लाल, न पहचानने की क्या बात है। मैंने तो तुम्हें गेट पर ही नमस्कार किया था पर उस समय तुम व्यस्त थे।"

भुवन ग्रौर किशनलाल एक ही स्कूल में पाँचवें दर्जे से दसवें दर्जे तक साथ ही पढ़े थे। लम्बे शरीर का किशनलाल भुवन से डेढ इंच ऊँचा था। अब तो वर्दी में भी उसका शरीर थका-थका दिखायी देता था, पर आवश्यकता पड़ने पर आज भी वह हरवसलाल के परिवार, उनके कुल की परम्पराओं तथा उनके मान-सम्मान के एक सजग रक्षक की तरह उनकी कोठी के फाटक पर अट्ठारह घंटे वर्दी में खडा रहता था।

किशनलाल कुछ देर तक भुवन से इधर-उधर की बातें करके चला गया। किशनलाल के जाने के बाद सतीश ने कहा, "लो पहचनवा दिये गये। अब होशियार हो जाओ।"

रामकृष्ण ने कहा, "आज कुछ चिन्ता की बात नहीं है। हाँ, यह कहना मुश्किल है कि भविष्य में किस दिन तुम्हें किसी जीप या बड़ी गाडी से ऐसा धक्का लगे कि तुम्हारी हड्डी-पसली टूट जाय और चार-पाँच महीने बिस्तर पर पड़े रहो। फिर यह बढ-बढ़कर बातें करना भूल जाओगे।"

सतीश ने भी भुवन से कहा, "भुवन जी, यहाँ बड़े-बड़े लोग एकाएक गायब हो गये हैं। अभी तुम नये आए हो जरा संभलकर रहना।"

भुवन ने कहा, "नया तो नहीं हूँ, कनकपुर में ही जन्मा हूँ। किशनलाल मेरा सहपाठी है और इससे उस समय से घनिष्ठता है जब मैंने बीस वर्ष पहले इसके दुर्घटनाग्रस्त पिता को अस्पताल पहुँचाया था। उस समय से किशनलाल मुझे अपने छोटे भाई की तरह मानता है। किशनलाल से मुझे कोई डर नहीं है।"

आयोजन की समाप्ति के बाद किशनलाल ने भुवन के इस विश्वास को यथार्थ कर दिया था। वह स्वयं आयोजन के खत्म होने से पहले ही भुवन के पास आ गया था और कहा था, "आइये भुवन जी, भीड़ निकलने से पहले ही आप दूसरे रास्ते से निकल चलिए। मैंने एक मोटर वहाँ रोक ली है। वह आपको सही-सलामत घर पहुँचा आएगी।"

जब भुवन ने अपने दोनों साथियों, रामकृष्ण और सतीश की ओर भी उसका ध्यान दिलाया तो किशनलाल ने उन दोनों से भी उसी मोटर से समय से जरा पहले ही चले जाने का अनुरोध किया था।

जब किशनलाल ने तीनों को मोटर में बिठा दिया तब भुवन को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसको तथा उसके मित्रों को इस प्रकार विदा कर किशनलाल ने अपने किसी बड़े उत्तरदायित्व को पूरा कर दिया है। वह हल्के कदमों से बढ़कर भीड़ में विलीन हो गया था।

विजय पार्क में किशनलाल के चले जाने के बाद भुवन को कनक-बलब की वह रात याद आ गई जब किशनलाल उसे और उसके मित्रों को सही-सलामत मोटर में बैठाकर निश्चिन्तता की साँस लेता हुआ विदा हो गया था।

भुवन बरसों बाद कनकपुर लौटा था। इस बीच में कनकपुर ने बड़ी

प्रगति की थी। परन्तु भुवन उस प्रगति तथा उससे सम्बन्धित व्यक्तियों से अपरिचित रहा था। उन दिनों वह स्वयं अपनी जन्मभूमि से ही अपरिचित था। किशनलाल जैसे पुराने शुभेच्छुओं से एक अर्से के बाद मिलने पर उसे लगता था कि उसने बम्बई में अपनी नौकरी छोड़कर कनकपुर वापस आने का निश्चय ठीक ही किया था।

बम्बई में कोई किसी का नहीं था। उस विशाल नगरी में सब प्रवासी थे। पहले भुवन बम्बई के बारे में ऐसी बातें कहने वाले लोगों से बहस करता था। उसने बम्बई में पन्द्रह बरस काम किया था। शुरू में उसे वहाँ का वातावरण सदा ही उत्साहपूर्ण लगता था। रोज ही किसी-न-किसी उमंग के वशीभूत होकर वह कुछ-न-कुछ आगे बढ़ने के काम में लगा रहता था। आगे बढ़ने के माने होते थे कुछ और आमदनी के जरिये ढूँढना, अपने से कुछ बड़े लोगों का परिचय प्राप्त करना, उनके साथ बैठने-उठने के अवसर ढूँढना तथा नित्य प्रति आमोद-प्रमोद में अधिकाधिक संलग्न होना और अपनी जीविका के लिए एक अच्छी तनख्वाह की नौकरी करना। ऐसी नौकरी जिसे उससे कम वेतन पाने वाले बहुत अच्छी समझते थे और उससे ज्यादा वेतन पाने वाले बहुत मामूली समझकर कुछ विशेष ध्यान नहीं देते थे, जबकि बराबर का वेतन पाने वाले उसे अपना प्रतिद्वन्द्वी मानकर उसकी टाँग खींचने में लगे रहते थे।

बरसों बम्बई का दम भरने के बाद एक दिन भुवन को लगा कि वह भी वहाँ एक प्रवासी ही था।

उसे कनकपुर की वह कचहरी याद आई जहाँ उसके पिता मुन्शी बलदेव प्रसाद ने अपनी अट्ठारह बरस की उमर से जाना शुरू किया था और जहाँ वह पचास बरस तक, इनी-गिनी छुट्टियों को छोड़कर, रोज ही जाते रहे थे। जिस दिन उनके पार्थिव शरीर को चिता को समर्पित करने के लिए भुवन कनकपुर पहुँचा था उस दिन तीस बरस बाद भुवन को पहली बार फिर कनकपुर का मोह हुआ था। कनकपुर की स्नेह-भरी पुकार उसके कानों में वस्तुतः उसी दिन पड़ी थी जब उसके पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर क़रीब दो-ढाई सौ आदमी बिना बुलाए ही उसके घर पर जमा हो गए थे।

वह एक साधारण-सी बात थी लेकिन किशनलाल को उन बातों पर न सिर्फ़ आपत्ति ही थी वरन् उसने यह भी स्पष्ट संकेत दिया था कि उसने कई बरस पहले कनक-क्लब में नीना धर्मदास के गायन के समय तत्कालीन ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक के साथ हँसी-मज़ाक द्वारा उस आयोजन के प्रबंधकों के प्रति की गयी धृष्टता को तो एक मित्र के नाते नज़र-अंदाज़ कर दिया था पर उसके माने यह नहीं थे कि वह सदा ही ऐसा कर सकेगा।

भुवन को ऐसा लगा कि विभिन्न प्रभावशाली सम्पन्न व्यक्तियों के शिकंजे कनकपुर के जनजीवन के विभिन्न अंगों को किसी-न-किसी रूप में जकड़े हुए हैं। विजय पार्क के उस उत्फुल्ल वातावरण में कनकपुर के जीवन की यथार्थता का उसे पहली ही बार ज्ञान हुआ। उसे अपने चारों ओर एक ऐसे दमघोंटू वातावरण का अनुभव होने लगा जिसमें स्वच्छन्दता से साँस लेना भी मुश्किल था।

देश को आज़ाद हुए बीस वर्ष से अधिक हो चुके थे पर आज़ादी कहीं गायब हो गयी थी और उसकी जगह छोटे-छोटे शक्तिमान-स्वार्थ-समूहों ने अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों का विस्तार कर जन साधारण को एक नयी गुलामी में जकड़ लिया था।

अनमना-सा भुवन स्थानीय प्रेस-दीर्घा पार कर खिलाड़ियों के मंडप की ओर बढ़ गया।

शोक संवेदनाओं को प्रदर्शित करने के लिए आये हुए उन नाते-रिश्तेदारों तथा इष्ट-मित्रों के समूह को देखकर भुवन को एकाएक यह लगा था कि यदि कहीं बम्बई में उसके परिवार में कोई ऐसा शोकाकुल अवसर आए तो उसके घर पर शायद ही बीस-पच्चीस व्यक्ति जमा हों।

जब उसने अपने बहत्तर वर्षीय पिता की अर्थी को उठाया था तभी उसके मन में यह विचार कौंध गया था कि अब उसे कनकपुर वापस आ जाना चाहिए।

यह कोई समझदारी की बात नहीं थी, क्योंकि उन दिनों उसे दवाइयाँ बनाने वाले एक बड़े उद्योग समूह में उपव्यवस्थापक नियुक्त हुए पाँच वर्ष ही हुए थे और उसके वेतन तथा सुविधाओं को सुनकर उसके इष्ट मित्रों ने कहा था, "बरसों बाद अब भुवन को अपनी तबीयत का अच्छा काम मिला है।"

पर उस अच्छे काम से भी धीरे-धीरे भुवन का मन ऊब गया था। कनकपुर की कशिश से मजबूर होकर वह बंबई छोड़कर कनकपुर लौट आया था। कई वर्ष तक अत्यधिक परिश्रम करके उसने यहाँ भी अपनी जीविका के लिए पर्याप्त साधन जुटा लिये थे यद्यपि उसकी आमदनी बंबई के मुकाबले में अब भी कम थी पर कनकपुर का जीवन बबई से सस्ता था और उसके मन में संतोष था कि अब वह अपनों के बीच में है।

लेकिन, उस दिन विजय पार्क के हज़ारों दर्शकों के बीच किशनलाल की अप्रत्यक्ष धमकी ने भुवन के मन पर से कनकपुर में मिली आत्मीयता का वह आवरण उसी प्रकार उड़ा दिया जिस तरह से पक्षी रूप पांसे राजा नल के अंतिम आवरण, दमयन्ती की आधी साड़ी को लेकर उड़ गये थे।

किशनलाल के चले जाने के बाद एक क्षण के लिए भुवन को लगा कि वह विजय पार्क के हज़ारों दर्शकों से भरे क्रीडांगन में अकेला असहाय खड़ा है।

भुवन से रोज़ ही मिलने-जुलने वाले सी क्लास के दर्शकों ने वहाँ की व्यवस्था के बारे में जो विचार व्यक्त किये थे तथा अन्य खेलों की अपेक्षा क्रिकेट को मिली हुई प्राथमिकता पर जो विरोध प्रकट किया था

वह एक साधारण-सी बात थी लेकिन किशनलाल को उन बातो पर न सिर्फ आपत्ति ही थी वरन् उसने यह भी स्पष्ट संकेत दिया था कि उसने कई बरस पहले कनक-क्लब मे नीना धर्मदास के गायन के समय तत्कालीन ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक के साथ हँसी-मज़ाक द्वारा उस आयोजन के प्रबंधको के प्रति की गयी धृष्टता को तो एक मित्र के नाते नजर-अंदाज कर दिया था पर उसके माने यह नही थे कि वह सदा ही ऐसा कर सकेगा।

भुवन को ऐसा लगा कि विभिन्न प्रभावशाली सम्पन्न व्यक्तियो के शिकंजे कनकपुर के जनजीवन के विभिन्न अगो को किसी-न-किसी रूप में जकड़े हुए है। विजय पार्क के उस उत्फुल्ल वातावरण मे कनकपुर के जीवन की यथार्थता का उसे पहली ही बार ज्ञान हुआ। उसे अपने चारो ओर एक ऐसे दमघोंटू वातावरण का अनुभव होने लगा जिसमें स्वच्छन्दता से साँस लेना भी मुश्किल था।

देश को आजाद हुए बीस वर्ष से अधिक हो चुके थे पर आजादी कही गायब हो गयी थी और उसकी जगह छोटे-छोटे शक्तिमान-स्वार्थ-समूहो ने अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रो का विस्तार कर जन साधारण को एक नयी गुलामी मे जकड लिया था।

अनमना-सा भुवन स्थानीय प्रेस-दीर्घा पार कर खिलाडियों के मडप की ओर बढ गया।

संपन्नता का रहस्य

खिलाडियों के मडप के पास ही भारतीय क्रिकेट संघ का सुरक्षित कक्ष था। इस कक्ष के प्रवेशद्वार पर खडे कपड़े के व्यवसायी, मेसर्स राम गोपाल गगा प्रसाद नामक फर्म के भागीदार, रामगोपाल ने भुवन का हाथ पकडकर कहा, "अरे, सिनहा साहब, कहाँ खोये-खोये से चले जा रहे हैं, आइये थोड़ी देर मेरे साथ बैठकर खेल देखिये।"

भुवन ने उसके स्नेहपूर्ण निमंत्रण का जवाब देते हुए कहा, "रम्मू बाबू, मेरी सीट तो प्रेस-दीर्घा मे है, मैं वही जा रहा हूँ। फिर यहाँ तो हर जगह सुरक्षित है।"

रामगोपाल ने उसे अन्दर करते हुए कहा, "अरे, आपके लिए सब कक्षों में जगह है, मुझे यहाँ के दो पास मिले थे, मेरे मित्र गंगा बाबू चले गये हैं। मेरे साथ बैठिये और विट्ठल का खेल देखिए। यह पुराना खिलाडी अब जमकर खेलेगा और एक शतक जरूर पूरा करेगा।"

भुवन रामगोपाल को बरसों से जानता था और उसका अनुग्रहीत भी था क्योंकि यदाकदा जरूरत पड़ने पर वह उसे आसानी से उधार रुपये दे दिया करता था। उसकी बात भुवन न टाल सका और अन्दर जाकर प्रथम पंक्ति मे उसके पास की खाली सीट पर बैठ गया। इस कक्ष में अधिकतर वह लोग बैठे थे जो उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ के सदस्य थे और संघ को सालाना चन्दे में अच्छी रकम देते रहते थे। इस कक्ष मे हर प्रकार की सुविधा थी। कोई भीड नही थी। सभी दर्शक अपनी-अपनी सुरक्षित जगह पर बैठे थे। कुछ कुर्सियाँ खाली भी थी।

क्रीड़ांगन में खेल शुरू हो गया था। हेस्टिंग्स विट्ठल की ओर गेंद फेंक रहा था और दूसरी ओर मेहता खड़ा था। विट्ठल उस समय तक बानवे रन बना चुका था। उसने हेस्टिंग्स की पहली ही गेंद को एक विश्वस्त वार से उड़ाकर सीमा के पार पहुँचा दिया था और इस मैच में प्रथम बार अपनी षड्गुणी प्रतिमा का प्रदर्शन कर इस बात का भी संकेत दिया था कि अब वह रन बनाने के लिए निर्द्वन्द होकर प्रहार करेगा। विट्ठल के इस छक्के पर, स्टेडियम में जमा हज़ारों उत्साहपूर्ण हृदयों से आनंद की किलकारियाँ फूट पड़ी।

इसी बीच में रामगोपाल ने भुवन का ध्यान पहली पंक्ति में उससे कुछ दूर बैठे एक मोटे से व्यक्ति की ओर आकर्षित करते हुए कहा, "वह देखिए, सिनहा साहब, मुरलीधर जी आपको सलाम कर रहे हैं।"

भुवन ने उस ओर देखा तो मुरलीधर ने भुवन से कहा "सिनहा साहब, आपको तो मैं कई बार फ़ोन कर चुका हूँ पर मुलाकात ही नहीं हुई। क्या कहीं बाहर चले गये थे।"

भुवन उठकर उनके पास गया तो मुरलीधर ने कहा, "आपसे कुछ काम की बात करनी थी ज़रा बाहर चलें।"

मुरलीधर किसी जमाने में एक सूती मिल का मालिक था पर दुर्भाग्य-वश द्वितीय महायुद्ध से पहले की भयंकर मंदी में उसे इतना घाटा लगा था कि उसने वह मिल बेच दिया था। महायुद्ध की तेज़ी में उस मिल ने सोना उगला था और मुरलीधर अपने भाग्य पर हाथ मलते रह गया था। मिल बिक जाने पर भी उसकी संपन्नता में कोई कमी नहीं आयी थी क्योंकि उसके और भी कई कारोबार थे और एक आटे के मिल तथा तेल मिल से उसे अब भी अच्छा मुनाफ़ा होता था।

रामगोपाल से माफ़ी माँगकर भुवन मुरलीधर के साथ बाहर गया तो उसने कहा, "सिनहा साहब, प्रदेश पुलिस के नये महानिरीक्षक अहमद साहब से आपके अच्छे ताल्लुकात हैं, मेरा एक काम करा दीजिये।"

भुवन के पूछने पर उसने बताया कि उसका कोई भतीजा किसी पूर्वी जिले में पुलिस का उप-अधीक्षक है, वह चाहता है कि उसका तबा-दला कनकपुर हो जाय।

भुवन के यह कहने पर कि उसकी अहमद से बरसों बाद इस मैच में ही मुलाकात हुई है और अहमद ने अभी हाल में ही चार्ज लिया है, मुरलीधर ने कहा, "कोई जल्दी नहीं है, पर मैच के दौरान आप यह *बात अहमद साहब के कान में डाल दें।"*

फिर उसने कहा, 'आप यह रामगोपाल के साथ कैसे बैठे है। इसकी हरकतें ऐसी है कि कोई भला आदमी इसके साथ उठना-बैठना भी पसंद *नहीं करता।"*

जब भुवन ने आश्चर्य से कहा कि उसे तो कुछ मालूम नहीं और बताया कि रामगोपाल का उसके साथ बड़ा अच्छा व्यवहार है, तब मुरली-धर ने भुवन को जो किस्सा सुनाया उसे सुनकर वह दंग रह गया और उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि मुरलीधर की बतायी हुई बातें किसी सभ्य समाज में सत्य भी हो सकती है।

पर सत्य बड़ा विलक्षण होता है। बाद में जब मुरलीधर की बातें सुनकर भुवन ने अपने मित्रों से यथासमय उन बातों की पुष्टि करनी चाही तो उसे पता चला कि रामगोपाल की संपन्नता का रहस्य कनकपुर में प्रत्येक व्यक्ति को मालूम था और वह सचमुच ही कनकपुर के सभ्य समाज में एक प्रकार से बहिष्कृत था।

उस दिन मुरलीधर के बताये हुए किस्से को सुनकर भुवन टैस्ट मैच के बाद भी अक्सर उस किस्से के बारे में सोचता रह जाता था और उसकी याद आने पर उसका मन अनिर्वचनीय विक्षोभ से भर जाता था।

वह बात दस बरस पुरानी थी।

मालूम हो चुका था कि पूंजी छोटी होने पर सूझबूझ और व्यापारिक कुशलता एक हद तक ही काम आ सकती है। वास्तविक सफलता जिससे आदमी करोड़पति हो सके, बड़ी पूंजी अथवा किसी अरबपति की कृपा से ही मिल सकती है।

उन दिनों वह किसी बड़े कपड़े की मिल की एजेन्सी के लिए नगर के प्रमुख धनपति मगतराम के परिवार वालों की खुशामद मे लगा रहता था। मगतराम की कलकत्ते, बम्बई और दिल्ली मे कई कपडे की मिले थी और एक पुरानी मिल कानपुर मे भी थी। मगतराम अपने काम-काज मे इतना व्यस्त रहता था कि उसे ग्रमोद-प्रमोद के लिए समय ही नहीं मिलता था। वह अधिकतर कनकपुर के बाहर ही रहता था। लेकिन उसका छोटा भाई शोभारामजो उसका बराबर का भागीदार भी था कनकपुर मे ही रह कर कार-बार देखता था। वह खाने-पीने का शौकीन था और उसके निवास "शोभाकुंज" मे ऊँचे दर्जे के नाच-मुजरे भी होते थे।

रामगोपाल धीरे-धीरे शोभाराम के साथ घुल-मिल गया। शहर की सीमा के बाहर के एक बगले में रामगोपाल अक्सर नाच-मुजरे का प्रबध करता था। इन आयोजनों में नगर और प्रदेश के बड़े-बड़े सरकारी अफसर निमन्त्रित किये जाते थे और यह सब किया जाता था शोभाराम के मनोरंजन के लिए।

शोभाराम को इस तरह से खुश करके रामगोपाल उसके कपडे के मिल की एजेन्सी लेना चाहता था।

अरसे तक इस आमोद-प्रमोद का क्रम चलने के बाद भी शोभाराम रामगोपाल को एजेन्सी देने की बात टालता रहा। इस बीच मे रामगोपाल ने देश-भर की सभी चुनी हुई गानेवालियों को एक-एक करके शोभाराम को समर्पित किया। पर शोभाराम चाहते हुए भी उसकी एजेन्सी की माँग को पूरा करने मे हिचकिचाता रहा। उसकी हिचकिचाहट का कारण भी था। उसके बड़े भाई मगतराम ने वह एजेन्सी अपने किसी रिश्तेदार को दे रखी थी और उसकी आमदनी मे दोनों भाइयों का भी कुछ हिस्सा था।

इसी बीच मे रामगोपाल के इकलौते लड़के अरविन्द कुमार का विवाह आगरे के एक धनाढ्य परिवार की परम सुन्दरी उन्नीस वर्षीया कन्या अर्चना से तय हो गया था।

शादी बड़ी धूमधाम मे हुई। वहू की मुंह-दिखायी के अवसर पर सारे नगर मे उसके सौदर्य की चर्चा हुई। शादी के दौरान नाच-मुजरो और महफ़िलो की धूम रही। शोभाराम सभी मौको पर प्रमुख अतिथियों के रूप मे शामिल होते रहे। बहू के साथ आये हुए दहेज से रामगोपाल की कोठी भर गयी। पर भाग्य ने रामगोपाल के साथ कुछ ऐसा दाँव चला कि न सिर्फ उसका परिवार बल्कि सारा नगर सुहागरात के दूसरे दिन शोक मे डूब गया।

सोहागरात के दूसरे दिन ही वहू ने अपने घर से मिली हुई अँगूठी मे जडी हीरे की कनी खाकर आत्महत्या कर ली और उसका पति भी हमेशा के लिए घर छोड कर चला गया।

बहू की आत्महत्या के बाद पुलिस की सरगर्मियों ने रामगोपाल को परेशान कर दिया। बेटे के घर छोडकर चले जाने से शोकविह्वल रामगोपाल विक्षिप्त सा हो गया। ऐसे संकट के समय शोभाराम ने उसे संभाला और मित्रता का उत्तरदायित्व निभाते हुए उस पर आई हुई आपत्तियों मे सदा सामने आकर उनका मुकाबिला किया। रुपयो से मुँह भर जाने के बाद पुलिस ने आत्महत्या के कारणो की ज्यादा छानबीन नही की। यह बताया गया कि बहू को अरविन्द से मिलकर कुछ ऐसी निराशा हुई कि उसने उतावली में आत्महत्या कर ली। पर, शहर मे अफ़वाहो का बाजार अरसे तक गर्म रहा। कुछ लोगो ने कहा कि बहू ने अरविन्द की नपुंसकता के कारण आत्महत्या कर ली। परन्तु जब इस दुर्घटना के कुछ ही दिन बाद शोभाराम ने रामगोपाल को अपने मिल की एजेन्सी बड़ी आसान शर्तों पर दे दी तो अफ़वाहों का रंग बदल गया और लोगो ने कहना शुरू किया कि वास्तव में रामगोपाल ने अपनी बहू अर्चना को सुहागरात के दिन शोभाराम को पेश कर दिया था।

अर्चना ने उस दिन तक अपने पति का मुँह नही देखा था और शोभाराम को ही अपना पति समझ कर उस अभागी रात को उसने शोभाराम को

अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। दूसरे दिन रात को जब शोभाराम के बजाय उसका पति अरविन्द उसके पास आया तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और पूरी बात मालूम होने पर उसने अरविन्द के मुँह पर थूक कर उसके सामने ही हीरे की कनी खा ली थी।

इस बात पर नगर में सबको धीरे-धीरे विश्वास हो गया और अपनी सम्पन्नता के बावजूद रामगोपाल नगर में बहिष्कृत-सा हो गया। लोगों ने उसके यहाँ आना-जाना और उससे मिलना-जुलना छोड दिया। रामगोपाल को भी इतना धक्का लगा कि उसने कुछ समय बाद अपना कार-बार समाप्त कर दिया। वह अपनी पुरानी पूँजी के ब्याज और मकानों के किराये पर ही गुजर करता था। वह अकेले ही अपनी कोठी मे पड़ा रहता था या उसके लॉन में घूमा करता था।

क्रिकेट मैच जैसे मौकों पर ही वह कभी-कभी शहर में आता था। शोभाराम के ऊपर भी नगर में इतनी उँगलियाँ उठी थीं कि वह भी कनकपुर छोड़कर बम्बई चला गया था और वहीं का काम-काज देखने लगा था।

एक अरसे से सुना जाता था, कि शोभाराम बम्बई जाकर अपाहिज हो गया था। किसी जीने से गिर कर उसके दोनों पैरों की हड्डियाँ टूट गयी थीं, दिमाग़ भी कुछ ख़राब हो गया था। अब वह अर्धविक्षिप्त अवस्था मे अपनी कोठी में ही एक व्हील-चेयर पर घूमा करता था। उसकी ऐसी असहाय अवस्था में उसकी पत्नी शालिनी ने भी उसकी पुरानी रंगरेलियों का पूरा प्रतिशोध कर लिया था।

शालिनी बम्बई की सोसाइटी मे ऐसी घुलमिल गयी थी कि वहाँ की मद-भरी रातों और बॉल-डांस से आधी-आधी रात गुजरने के बाद ही कोठी लौटती थी और वह भी नित नये प्रेमी के साथ। कभी-कभी वह स्वयं कोठी मे कॉकटेल पार्टी और बॉल-डांस का आयोजन करती थी। ऐसे अवसर पर पौ फटने तक कोठी के एक भाग में रंगरेलियाँ होती रहती थीं और दूसरे भाग मे शोभाराम अकेले नौकरों के सहारे बिस्तर पर पड़े हुए गाने-बजाने और पार्टी के शोर को सुनकर अपने भाग्य को कोसता रहता था।

मुरलीधर से रामगोपाल और शोभाराम की कहानी सुनकर भुवन का मन विपण्ण हो गया।

विजय पार्क के उल्लासपूर्ण वातावरण से हटकर भुवन का मन बम्बई में शोभाराम की अपग देह की ओर चला गया। पुरुष की देह वास्तव में नारी के प्रति अपनी कोमल तथा पुनीत प्रेमाभिव्यक्ति निवेदन करने का माध्यम होती है। शोभाराम ने उस देह को केवल अपनी पैशाचिक काम-पिपासा की तुष्टि का साधन मात्र समझा था। पुरुष-देह के प्रथम पवित्र रूप के सपर्क में आने वाली स्त्री आजीवन उसकी अनुग्रहीत रहती है और उसके दूसरे कुत्सित रूप को मजबूरी मे झेलने वाली स्त्री उसको अवसर मिलते ही ठुकरा देती है। शालिनी ने भी यही किया था।

शोभाराम ने सुकुमार अर्चना के नवजीवन के प्रस्फुटन की मंगलमय वेला के अवसर पर ही उसे अपने राक्षसी आलिंगन में समेट कर मसल दिया था। भुवन को उस हृदयहीनता पर उबकाई-सी आने लगी।

विजय पार्क में क्रिकेट का खेल अपने उत्कर्ष पर था क्योंकि चाय के बाद विट्ठल और मेहता के खेल को देखकर लगता था उन्हे उनके नायक देशमुख ने रनो का योग बढ़ाने के लिए उन्मुक्त होकर खेलने के आदेश दिये हैं। पर भुवन यह सोच रहा था कि क्या मानव जीवन मे क्रिकेट खेल की भावना कभी सही ढंग से समादृत हो सकती है?

उसने सोचा, विजय पार्क के पचास हजार दर्शकों और रेडियो से क्रिकेट समीक्षा सुनने वाले लाखों श्रोताओं तथा देश के और भी दूसरे करोड़ों लोगों मे शालिनी जैसी समर्थ नारी के समान प्रतिशोध लेने मे कुशल आक्रामक खिलाडी जीवन में कितने हो सकते है? उसे खयाल आया कि शालिनी तो एक अपवाद ही हो सकती है, और ऐसे कुछ अपवादों को छोडकर बाकी भीड मे तो असहाय अर्चनाओ की ही भरमार है। ऐसी स्थिति मे स्वस्थ स्पर्धा एक सुखद परन्तु कल्पना मात्र ही हो सकती थी।

अपने विचारों मे डूबा हुआ भुवन क्रिकेट नियत्रण बोर्ड के सुरक्षित कक्ष के बाहर लगी हुई कॉफी की दूकान पर बैठ गया। उसे यह भी पता न चला कि मुरलीधर कब अपने मतलब की बात कहकर और उससे अपने भतीजे के तबादले के बारे मे अहमद से बात करने का आश्वासन

लेकर, वापस खेल देखने के लिए अपने कक्ष में चला गया।

खेल जोर पर था।

विट्ठल उस समय तक अट्ठानवे रन बना चुका था। उसका शतक पूरा होने में केवल दो रनों की कमी थी और वह संपूर्ण मनोयोग से हेस्टिंग्स के आक्रमण को निष्फल करने के लिए कृत संकल्प होकर खेल रहा था।

सारे क्रीड़ांगन की आँखें विट्ठल की कुशल बल्लेबाजी देखने के लिए लगी हुई थी। बाहर की सब भीड़ सिमटकर विभिन्न कक्षों के अंदर चली गयी थी।

स्टेडियम में व्याप्त उत्साह से मुँह मोड़े हुए, कॉफी की दूकान पर प्रायः अकेला बैठा हुआ भुवन, जीवन के उस निरीह स्पंदन को सुन रहा था जो उत्साह के उस कृत्रिम आवरण के पीछे उत्पीडनजनित दिल दहलाने वाली पीड़ा से दम तोड़ रहा था। जो नादहीन कराह भुवन को उस समय क्रीड़ांगन में सुनायी पड़ रही थी वैसी ही कराह उसे तब भी सुनायी देती थी जब वह किसी फ़िल्म मे नायिका के साथ उसकी सहेलियो का सहगान सुनता और उनकी उल्लासपूर्ण उछल-कूद को देखता था। तब भुवन की नजर, सुडौल, सुगठित, जीवन के मद और चंचलता से परिपूर्ण उछलतीं-कूदती और तरह-तरह के हाव-भाव करती, नायिका पर नही, बल्कि उसके साथ और उसके आगे-पीछे या अगल-बगल की क़तारों मे खड़ी, हिलती-डुलती और उसकी अदाओं की नकल करने वाली तथा उसकी आवाज को दोहराने वाली, उन एक्सट्रा लड़कियों की ओर चली जाती थी जिनकी मजबूरियों, भग्न आशाओं और पददलित आकांक्षाओं पर फिल्मी नायिका और नायक ख्याति और ऐश्वर्य की सीढियो पर चढते है।

एक ऐसी ही शब्दहीन कराह उसे उस समय भी सुनायी पड़ती थी जब वह कनकपुर के बड़े-बड़े औद्योगिक संस्थानों की वार्षिक बैलेन्स-शीटों मे लाखों रुपयो का लाभ देखता था। उन बैलेन्स-शीटों में हजारो श्रमिकों को अपने अमानवीय परिश्रम का कोई उपयुक्त मुआवजा नहीं मिलता था, और इसी कारण उद्योगपतियों की पूँजी उसी अनुपात से बढ़ती रहती थी जिस अनुपात से श्रमिकों के जीवन का ह्रास और उनके स्वास्थ्य का क्षय

होता था।

रजत पट पर सहगान के दृश्यो को देखकर उसे ऐसा लगता था कि फिल्म उद्योग मे सफलता, 'एक्सट्रा' अभिनेता वर्ग की हड्डियों की बनी हुई सीढियों पर चढती है। इसी कारण से वह फिल्मों से अपना मनोरंजन नही कर पाता था। वह सोचता था कि सरासर झूठ तथा स्पष्ट कृत्रिमता को देखकर कोई कैसे खुश हो सकता है। इसी प्रकार के राष्ट्रीय झूठ और धोखे की कानूनी स्वीकृति उसे औद्योगिक संस्थानों की बैलेन्स-शीटों मे भी दिखायी देती थी। पर धन प्राप्ति के लिये प्रतियोगिता और स्पर्धा को आदर्श मानकर जीवन यापन करने वाले करोड़ो दो-पायो को यह समझ स्वयं टूटकर भी नही आती कि अपनी जिस आशा और विश्वास के सहारे वह थोड़ा-सा धन पाने के लिये अपने परिश्रम को बेचकर पूंजी संकलन का प्रयास करते है, उसमे वे किसी अन्य कुशल वाहक की प्रगति के पहिये मात्र बनकर रह जाते हैं। जब उन्हे होश आता है तब वह चलते-चलते, घिस-घिसकर टूट जाते है और अन्त मे अपने भाग्य को दोष देते हुए विखडित जीवन भोगते रह जाते है।

क्रिकेट देखने वाले भी यह नही समझ पाते कि खेल की जिस भावना के नाम पर क्रिकेट को इतना महत्त्व इसलिये दिया जाता है कि मानव जीवन मे भी समुचित प्रतियोगिता के आधार पर ही शान्तिपूर्ण प्रगति हो, उस समुचित न्यायपूर्ण प्रतियोगिता का जीवन में कही कोई स्थान ही नही है। जीवन तो जिया जाता है असमान व्यक्तियों की खीचातानी मे, सबल व्यक्ति आदि-काल से हर क्षेत्र में निर्बल व्यक्तियों की हड्डियों की सीढ़ी पर चढ़ता हुआ ऊपर बढता रहा है और निर्बल उसके भार से नीचे धँसता रहा है।

भुवन ने सोचा क्या जीवन को सुधारा नहीं जा सकता? क्या उसे सही दिशा नहीं दी जा सकती?

अर्चना तो केवल उस असहाय वर्ग की प्रतीक मात्र थी जिसके उत्पीडन से उच्च वर्ग का बड़प्पन जन्म लेता और पनपता है। उसने सोचा ऐसे असहाय वर्ग के जीवन को कोई दिशा नहीं हो सकती क्योंकि वह यह समझता ही नही कि वह किधर जाय?

रनों की कमी

भुवन ने हताश होकर अपना सर मेज पर रख दिया और आँखें मूंद ली। उसे अपने चारों ओर फैले हुए हर्ष और उल्लास मे भ्रमित मानव के दिशाभ्रम के अतिरिक्त कुछ नही दिखायी दिया।

इसी समय एक नारी कंठ से आवाज आयी, "कहिये, सिनहा साहब क्या बात है ? आप ऐसे उदास से अकेले सिर झुकाये कैसे बैठे हैं। क्या सिर में दर्द है ?"

जब तक भुवन इन प्रश्नों के उत्तर मे सिर उठाये तब तक किसी ने उसके सिर के पास मेज पर हाथ रखते हुए कहा, "नही आप आराम से सिर टिकाये रहिए, मेरे पास सैरीडॉन की टिकियां है। दो आप भी खा लीजिए। आप जानते हैं, मुझे तो अक्सर तेज सिर-दर्द से वास्ता पडता है।"

भुवन ने झेंप कर सिर उठा कर देखा, लाजपत राय गर्ल्स कॉलेज की प्रिन्सिपल मिसेज डेनियल उसके पास आकर दूसरी कुर्सी पर बैठ गयी थीं। अपना पर्स खोल कर मिसेज डेनियल ने दो टिकियां सैरीडॉन की निकाली और बेयरा से पानी लाने को कहा, भुवन को सैरीडॉन की दोनों टिकियां देते हुए मिसेज़ डेनियल ने कहा, "मुझे तो यह सिर-दर्द अक्सर हो जाया करता है, सैरीडॉन की कुछ टिकियां साथ ही रखती हूँ।"

बेयरा पानी ले आया, और कोई उपाय न देखकर भुवन ने वह दोनों टिकियां खाकर पानी पिया, फिर मिसेज़ डेनियल को धन्यवाद देते हुए कहा, "आप खेल नही देख रही हैं ? मैं जब बाहर आया था तब तो विट्ठल

खेल रहा था, क्या स्कोर है उसका ?"

"विट्ठल ही खेल रहा है, उसके शतक में अब सिर्फ दो रन की कमी है। उसके साथ सुरजीत खेल रहा है।" मिसेज डेनियल ने उत्तर दिया, "मेहता तो नया था और उससे ज्यादा आशा भी नहीं की जा सकती थी। लेकिन सुरजीत ने *सन् उन्नीस सौ पचपन में अपने प्रथम टैस्ट में ही जिस* प्रतिभा का परिचय देकर नाबाद शतक बनाया था वह फिर कभी नहीं दिखायी दी। अब वह अपनी आक्रामक विलंबित गेंदबाजी के कारण टीम में सम्मिलित किया जाता है। उससे अधिक रन बनाने की आशा तो नहीं है। पर हाँ, उसके पिछले पाँच टैस्ट मैचों में खेलने के कारण यह विश्वास किया जा सकता है कि वह विट्ठल का अच्छा साथ देगा।"

मिसेज डेनियल का गोल, गौरवर्ण चेहरा बेदाग पूर्णमासी के चाँद की तरह चमकता था। उनकी बातों में इतनी मिठास और उसके चेहरे में इतना सम्मोहन था कि उससे मिलने वाले समय का ध्यान भूलकर उसके पास बैठे रह जाते थे। उनके हल्के भौंराले, काले घने बालों की मोटी-सी चोटी उनके नितंबों के नीचे तक पहुँचती थी। उनके भरे बदन में ऐसा लोच और उनकी आँखों में ऐसा विकुंचित समर्पण था कि वह जितनी भी देर जिस किसी से बात करती थी उतनी देर उस व्यक्ति को लगता था कि वह उन्हीं की है। वह इतिहास और मनोविज्ञान में एम० ए० पास थी पर बातचीत में वह अपनी विद्वत्ता को उठाकर ताक पर रख देती थी और एक भोली अल्पज्ञ महिला की तरह जीवन की छोटी-छोटी बातों में स्वाद भरे चटखारे लेती हुई बात करती थी। वह सरदार हरमोहन सिंह एडवोकेट के नियंत्रण में चलनेवाले लाजपतराय गर्ल्स डिग्री कालेज की प्रिंसिपल की हैसियत से नगर भर में अपने मिलन-*सार स्वभाव के कारण प्रसिद्ध थी। जो कोई भी उनसे मिलने जाता था,* उसे ऐसा लगता था कि वह उसके ही इंतजार में बैठी हुई थी। उसका काम हो या नहीं पर वह मिसेज डेनियल का मुरीद होकर लौटता था।

उनके पति मिस्टर फ्रेडरिक डेनियल कहीं बैरिस्टर थे पर उनका किसी को पता नहीं था। कहा जाता था, कि सरदार हरमोहन सिंह अपना सब काम खत्म करने के बाद अपना रात का खाना अधिकतर

मिसेज डैनियल के कालेज से मिले हुए बँगले में रात को ग्यारह बजे के बाद ही खाते थे। उस समय मिसेज डेनियल सरदार हरमोहन सिंह के मनपसन्द व्यंजन गर्म रखती थी और सरदार हरमोहन सिंह खाना खाकर उसके यहाँ थोड़ी बहुत देर आराम भी करते थे।

आठ-दस बरस पहले मिसेज डेनियल और एक अन्य प्रोफेसर के इश्क के चर्चे हर जबान पर थे। पर, अब बात पुरानी हो गयी थी और उनके प्रेम-संबंधो मे किसी को विशेष दिलचस्पी नही थी। नगर मे भी इस प्रकार के अनेक संबंधो का औचित्य अब विवाद का विषय नही रह गया था। उस समय, मिसेज डेनियल एक कालेज मे सिर्फ लेक्चरर की हैसियत से काम करती थी और उस स्थिति मे उनके यहाँ उनके किसी भी सहयोगी का आना-जाना संदेहास्पद था।

कुछ समय बाद कुछ मित्रो के अनुरोध से सरदार हरमोहन सिंह ने मिसेज डेनियल को अपने कालेज मे जगह दे दी थी। वहाँ वह कुछ बरसो में ही लगन और परिश्रम से काम करने के कारण पदोन्नति कर प्रिंसिपल हो गयी थी। तब से अपने नये विधुर संचालक सरदार हरमोहन सिंह से उनका मिलना-जुलना बढ़ गया था। सरदार साहब की खैर-खबर के साथ ही उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखकर समुचित भोजन की व्यवस्था करना वह अपना कर्त्तव्य समझती थी। भुवन सदा से मिसेज डेनियल का बड़ा आदर करता था। उन्होंने टूटे से लाजपतराय गर्ल्स कालेज को अपनी मेहनत से नगर का प्रमुख कालेज बना दिया था। अब लाजपतराय गर्ल्स कालेज नगर मे अपने अनुशासन के लिए प्रसिद्ध था। वहाँ से पास होने वाली लडकियो की विद्वत्ता की भी धाक थी। जैसे-जैसे कालिज की उन्नति होती गयी मिसेज डेनियल के व्यक्तिगत जीवन पर होने वाली टीका-टिप्पणी भी कम हो गयी। अब तो उनके बाल भी एक-आध सफ़ेद हो चले थे और पढ़ते समय वह आँखो पर सुनहरा चश्मा भी लगाने लगी थी। दस बरस पहले जब भुवन कनकपुर लौटा था उस समय मिसेज डेनियल की योग्यता और पाण्डित्य के बजाय उनके सौन्दर्य तथा नारी सुलभ आकर्षण की अधिक चर्चा थी। अब स्थिति बिलकुल विपरीत थी। अब उनकी अनुशासनप्रियता, कार्यकुशलता तथा

विद्वत्ता की चर्चा होती थी और जिस लगन के साथ वह अपनी छात्राओं, अपने मातहत कर्मचारियों तथा अपने कालेज के व्यवस्थापकों के प्रति अपना उत्तरदायित्व निबाहती थी उसकी नगर के सभी क्षेत्रों में प्रशंसा होती थी।

जब भुवन कुछ स्वस्थ हुआ तो उसने देखा कि मिसेज डेनियल के साथ नगर कांग्रेस के अध्यक्ष रामशंकर शर्मा और उनके द्वारा संचालित कमला नेहरू मान्टेसरी स्कूल की हैडमिस्ट्रेस श्रीमती कान्ति मिश्रा भी थीं। दोनों मिसेज डेनियल के साथ ही भुवन के पास पड़ी हुई कुर्सियों पर बैठ गये थे।

श्रीमती मिश्रा ने कहा, "सिनहा साहब, आप कभी हमारे स्कूल भी तो आने की कृपा करें। हमारे पिछले वार्षिकोत्सव पर शिक्षा मंत्री पधारे थे। आपको भी निमंत्रण भेजा था पर आप नहीं आ सके थे। इस बार मुख्यमंत्रीजी के आने की संभावना है। अबकी बार आप जरूर आइयेगा।"

श्रीमती मिश्रा स्कूल चलाने के मामले में श्रीमती डेनियल से सलाह मशविरा लेती रहती थीं। वह स्वयं इण्टरमीडियेट तक पढ़ी थी और कुछ बरस हुए मिसेज डेनियल के कालेज में लाइब्रेरियन का काम करती थी। उसका पति एक स्थानीय औद्योगिक संस्थान में क्लर्क था।

अपनी सुन्दरता और प्रगल्भता के कारण कमउम्र श्रीमती कान्ति मिश्रा की सामाजिक समारोहों में बड़ी पूछ होती थी। क्योंकि कान्ति मिश्रा ऐसे समारोहों में न केवल 'वन्दे मातरम्' या 'जनगण मन' बड़े सुरीले स्वर में गा देती थी बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी देश प्रेम की कविताएँ भी पढ़कर मुख्य अतिथि के आने में विलंब होने पर, उख-ड़ती हुई मीटिंगों को जमा देती थी। उसकी 'सीमा पर' कविता की बड़ी माँग थी। श्रीमती मिश्रा का क़द छोटा था। गोरे रंग पर लालिमा लिये उसका लंबा लावण्यपूर्ण चेहरा उस समय और भी दमकने लगता था जब वह अपनी कविता का पाठ करते हुए शत्रु को चुनौती देते हुए कहती थी—

'आँचल में लेकर आग,
और नयन में ज्वाला।

मैं सीमा पर खडी हुई हूँ
' सावधान हो शत्रु कि,
मैं सीमा पर अड़ी हुई हूँ'

सारी सभा तालियों की गड़गडाहट से गूंज उठती थी।

मिसेज़ डेनियल ने कहा, "सिनहा साहब, हो आइये एक दिन इसके स्कूल। जबसे इसने स्कूल खोला है यह रात-दिन उसी की उन्नति के सपने देखा करती है। इसकी आकाक्षा है कि हर मोहल्ले मे इसके ढंग का एक मान्टेसरी स्कूल हो।"

रामशंकर शर्मा ने मिसेज़ डेनियल की बात को बढा कर कहा, "इनका तो यह कहना है कि बच्चे की शुरू की पढाई ही में तो शिक्षक की योग्यता परखी जाती है। उस समय वह हर प्रकार से शिक्षक पर निर्भर रहता है। उन दिनो यदि शिक्षक काले को सफेद बताये, तो बच्चा जन्म-भर काले को सफ़ेद ही समझता रहेगा। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनको ठीक से समझने पर बच्चा बडा होकर आजकल के लड़ने-झगड़ने वाले इन्सान के बजाय नये युग का ऐसा इन्सान बन सकता है जिसमें ईर्ष्या के बजाय प्रेम की अन्तर्धारा बहे।"

"कितनी सुन्दर कल्पना है।" पास ही खड़े मजदूर नेता जगदीश गुप्ता ने रामशंकर शर्मा के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "यहाँ काले को सफेद तो बताया ही जाता है, और यही कारण है कि वर्तमान संसार की प्रगति का मूलाधार सहयोग के बजाय संघर्ष है जिसमे सबल प्रतिपल निर्बल को पीसता रहता है।"

जगदीश गुप्ता की बात सुनकर रामशंकर शर्मा ने हँस कर कहा, "अरे भाई जगदीश, आजकल तो निर्बल ही सबल है और इसको तुमसे ज्यादा कौन जानता है।"

रामशंकर शर्मा और जगदीश गुप्ता पुराने मित्र तथा सहपाठी भी थे।

उन्नीस सौ इकतीस के आन्दोलन में दोनों इण्टरमीडियट प्रथम वर्ष मे पढते थे। दोनों ही छात्र आन्दोलन के नेता होने के कारण कॉलेज से निकाल दिये गये थे। बाद मे दोनों जेल भी गये थे। परन्तु जेल से निक-

लने के बाद जहाँ रामशंकर पढ़ाई छोड़कर धीरे-धीरे कांग्रेस के नेतृत्व की सीढ़ियों पर चढ़ता चला गया था वहाँ जगदीश ने जेल से निकलकर अपनी पढ़ाई फिर जारी कर दी थी और एम० ए०, एल० एल० बी० पास करने के बाद वकालत करने लगा था। पर शीघ्र ही वकालत के बजाय वह मजदूरों के आन्दोलन में ऐसा रम गया था कि वकालत छोड़कर वह मजदूरों में ही काम करने लगा था।

समय के साथ जब जगदीश ने देखा कि केवल मजदूरों में काम करने से कोई विशेष राजनीतिक स्थान नहीं मिल सकता तो पहले उसने कांग्रेस में घुसने की कोशिश की पर जब वहाँ रामशंकर शर्मा जैसे लोगों ने उसका रास्ता रोका तो वह प्रजा समाजवादी दल में शामिल हो गया। अब वह उस दल तथा उससे संबंधित मजदूर संस्था का नेता हो गया था। इस हैसियत से, आजादी के बाद भी वह कई बार जेल हो आया था। कई मिलों में उसकी यूनियनें इतनी प्रबल थीं कि उसके इशारे पर उन मिलों का काम बन्द हो सकता था। इस शक्ति के कारण उसका मिल मालिकों में आदर था और प्रदेशीय सरकार के श्रम विभाग में भी उसकी अच्छी धाक थी।

रामशंकर ने उसकी इसी शक्ति को ध्यान में रखकर निर्बल के बल की ओर संकेत किया था। संगठित यूनियनों की स्थिति अब कुछ अंशों में मालिकों से ज्यादा मजबूत हो गयी थी और उन्हें मजबूरन यूनियनों की माँगों को मानना पड़ता था। किसी समय रामशंकर ने कांग्रेस संगठन में अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर जगदीश को उसमें कोई महत्वपूर्ण स्थान पाने से रोक दिया था, पर अब स्थिति ऐसी थी कि जन साधारण में रामशंकर की प्रतिष्ठा कम हो गयी थी और विरोधी दल से संबद्ध सशक्त मजदूर नेता होने के कारण जगदीश गुप्ता को नगर के सभी सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अधिक मान्यता मिली हुई थी।

श्रीमती कान्ति मिश्रा के साथ मान्टेसरी स्कूल चलाने के बाद से तो रामशंकर की ओर उँगलियाँ भी उठने लगी थीं। कान्ति मिश्रा हर जगह आगे बढ़कर बात करती थी। अपनी बातचीत, हाव-भाव तथा वेश-भूषा में वह नारी सुलभ मर्यादा का अतिक्रमण करती हुई हर प्रभाव-

फिर उसने सबकी तरफ देखकर कहा, "तो फिर बात पक्की रही आप सब लोग तेरह नवंबर की शाम को मेरे यहाँ ही खाना खाएं।"

कमल किशोर ने कहा, "मैं तो मिसेज़ डेनियल का हुक्म मानता हूँ। जहाँ यह जाने को कहेंगी, पहुँच जाऊँगा। पर मिसेज डेनियल सरदार हरमोहनसिंहजी को भी बुला लीजियेगा। उनसे मुझे आपके कॉलेज के बारे में भी कुछ बातें करनी है।" फिर उसने बात बदलने की गरज से कहा, "अच्छा, यह तो हुआ पर इस समय स्कोर क्या है, कौन-कौन खेल रहा है, मैं तो अभी बाहर से आ रहा हूं।"

मिसेज़ डेनियल का छोटा-सा ट्रॉंजिस्टर भुवन के पास रखा था। उसने कहा, "स्कोर तो अब चार सौ चार है और इस समय विट्ठल जम कर खेल रहा है। वह ह्वाइट की गेंद पर बहुमुखी प्रहार कर प्राँगन की हर दिशा को बडी निपुणता से रेखांकित कर रहा है। अगले बाकी आध घंटे में रनों की संख्या न बढ़ने देने के लिये ह्वाइट, विट्ठल के चारों ओर क्षेत्ररक्षको की सुदृढ़ भित्ति बनाकर गोलंदाजी कर रहा है पर विट्ठल ने अपनी मार से उसकी व्यूह रचना को विदीर्ण कर रखा है।"

एकाएक आकाशवाणी के समीक्षक की आने वाली आवाज़ उत्तेजना से भर गयी :—

"रोजर्स और ह्वाइट की सुरक्षात्मक गोलदाजी को तिलांजलि देकर मैकगिल ने चार सौ रन बनते ही नयी गेंद लेकर अपनी रणनीति मे परिवर्तन कर आक्रामक रूख अपनाया था और इसका उसे तुरन्त लाभ हुआ है। ह्वाइट की गेंद पर प्रहार करने मे चूक जाने से सुरजीत का विकेट उड गया और उसकी जगह पर नरीमैन खेल रहा है। यह इक्कीस वर्षीय खिलाडी पिछले वर्ष ही भारतीय टीम के आस्ट्रेलिया के दौरे के समय प्रथम बार टैस्ट मैच मे सम्मिलित किया गया था और भारत का बडा कुशल विकेट रक्षक समझा जाता है।

"नरीमैन ने विदेशी टीम के सुदृढ़ वृत्त-वेष्ठन से बिना आतंकित हुए रोजर्स की गेंद पर निस्संकोच प्रहार कर उसे दक्षिणी सीमा का आलिंगन करने के लिए प्रेरित किया है। पर हार्पकिस ने दौडकर उसका मार्ग अवरुद्ध कर दिया और उसकी यह लालसा पूरी नही होने दी। नरीमैन

के लिये तैयार रहना पड़ता है, ज़रा चूके और गये'''''

भुवन के मन में जीवन-क्रिकेट का वह वृत्त-चित्र चलने लगा जिसमें एक अनजान कुरूप स्त्री को जीवन प्रांगण मे प्रवेश भी नही मिला था। दूसरा चित्र था अर्चना का जिसकी यष्टि पहले ही निर्दय वार मे भू-लुंठित हो गयी थी। तीसरा चित्र था शालिनी का जिसने अपनी हारी हुई वाजी को भी एक अलभ्य अवसर पाते ही पलट दिया था और अब सिद्धहस्त खिलाडी की तरह निखरकर सामने आ गयी थी। पृष्ठभूमि में कही डॉ० मोहन भी था जो अपने यष्टि-पतन के बाद भी अपने आत-तायियो को पाल रहा था। सामने रामशकर, जगदीश और कमल-किशोर भी थे जो बहुमुखी प्रतिभा के समर्थ खिलाडी थे। जीवन-क्रिकेट में अपनी कुशल वल्लेवाज़ी और तीव्र क्षेपण दोनो ही के कारण इन्हे जिदगी के हर दाँव पर जीत का सेहरा पहनने को मिलता था। मिसेज डेनियल और श्रीमती कान्ति मिश्रा स्वयं ही अपनी छोटी-छोटी महत्वाकांक्षाओ के कारण इनके स्थिर गति संपातो का शिकार बन गयी थीं, वह किसी वार पर उड़ती भी थी तो किसी क्षेत्रक की सपुटी मे सिमटकर रह जाती थी।

मिसेज डेनियल ने अपनी मेहनत के सहारे उन्नति की थी और एक कॉलेज की प्रिंसिपल हो जाने पर भी अभी तक इस-उस की मेहरबानी की मोहताज रहती थी। उनके साथ भी कमोवेश वही गुज़रा था जो किसी अन्य रूप मे अर्चना अथवा शालिनी को भोगना पडा था पर वह उखडी नही थी। न वह अर्चना की तरह एक झोंके से मिटने को तैयार थी और न शालिनी की तरह प्रतिरोध मे उद्दंड साहस ही प्रदर्शित कर सकती थी। उसने अपने भाग्य से समझौता कर अपनी जिन्दगी को उसी रग में ढाल लिया था जिस रग में दुनिया उसे स्वीकारना चाहती थी।

कान्ति का इस अक्ष-क्रीड़ा में अभिनव प्रवेश था वह भी उसी पथ पर बढ रही थी जिस पर चलकर मिसेज डेनियल के कुछ बालो ने अब सफेदी से प्रथम साक्षात्कार किया था। कान्ति को किसी बात में सकोच नही था। वह जानती थी कि आर्थिक दृष्टि से साधनहीन महत्वाकांक्षी स्त्री की एकमात्र पूंजी उसकी देह है और उसी के प्रदर्शन अथवा सौदे से

लाभ उठाकर वह आगे बढ़ सकती है। वह यह भी जानती थी कि सदा देह का सौदा करना भी आवश्यक नहीं होता और बहुधा उसकी आकर्षक भाव-भंगिमाओं से भी काम चल जाता है। वह किसी मजबूरी को स्वीकार नहीं करती थी। यही कारण था कि वह मजबूर होकर समर्पण करने का अवसर ही नहीं आने देती थी। वह जीवन का सुख पाने के लिये जीवन सुख देना भी जानती थी। उसके मन में अपने व्यतीत के विषय में कोई ग्लानि की भावना नहीं थी, वर्तमान में भी वह खुलकर अपने से की हुई मांगों को पूरी तरह नाप-तौल कर स्वेच्छा से स्वीकार करती थी। वह अपना भविष्य सँवारना चाहती थी और उसे सँवारने वालों को यथोचित मूल्य भी देने के लिए तत्पर थी। कमजोर आर्थिक स्थिति और नीचे के सामाजिक स्तर के कारण अभी उसका मोल भी कम था। पर वह इस कमी को पूरा करने के लिए भरसक प्रयत्न और परिश्रम करने से भी पीछे हटने वाली नहीं थी क्योंकि वह सस्ती सौदेबाजी का शिकार होने से बचना चाहती थी।

वह जानती थी कि एक दिन सफलता उसके चरण चूमेगी और उस दिन वह न केवल अपने ऊपर कृपालु मिसेज डेनियल को पीछे छोड़ देगी वरन् उसका अपना मोल भी इतना बढ़ जायगा कि आसानी से उस मोल को देने वाला नहीं मिलेगा और वह स्वयं किसी भी समय अपने ऊपर कृपा करने वालों पर कृपा करने के योग्य हो जाएगी।

अपने जीवन की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये पहला क़दम उठाने का सहारा उसे रामशंकर से मिला था। पर वह जानती थी कि आगे की मंजिलों में रामशंकर की उपयोगिता समाप्त हो जाएगी। वह नये संबल ढूंढ रही थी और मिसेज डेनियल के माध्यम से कमल किशोर तथा सरदार हरमोहन सिंह से घनिष्ट परिचय का अवसर मिलते ही उसने आगे बढ़कर शाम का वह आयोजन पक्का कर लिया था जिससे वह, कमलकिशोर, सरदार हरमोहन सिंह, जगदीश, भुवन, मिसेज डेनियल तथा रामशंकर सभी का एक साथ स्वागत कर उनकी उस संध्या को विविध रंगीनियों से भरकर, निकट भविष्य में मिसेज डेनियल के हाथ से छूटने वाली अप्रत्याशित सरल गेंद पर समयानुसार अपना चित्ताकर्षक छक्का

लगाकर स्वयं आवश्यक मान्यता प्राप्त कर ले।

कान्ति ने अपने आयोजन मे सबकी दिलचस्पी बढाने के लिये कहा, "सिनहा साहब, मेरे स्कूल की दो अध्यापिकाएँ कमल शर्मा और इन्द्रा वशिष्ठ बडा सुन्दर गाती है, और एक अध्यापिका रत्ना खन्ना की कविताएँ भी प्रसिद्ध है। वह बड़े ही मधुर स्वर मे कविता पाठ करती है। मैं इन तीनो को भी बुला लूंगी। कुछ गाना और कुछ कविता पाठ होगा। मिसेज डेनियल की शायरी भी होगी और इनकी ताजा नज़्मे भी सुनी जायेंगी।"

उस सन्ध्या के आयोजन के प्रति कान्ति के उत्साह को देख कर तथा उस शाम की सम्भावनाओं को सुनकर जगदीश की दिलचस्पी बढ गयी।

उसने कहा, "अरे अब आप सब कुछ यही न बता दीजिये थोड़ा-बहुत हमे वहाँ जाकर पता लगाने का भी अवसर दीजिये। रह गयी आने की बात वह तो पक्की है। क्यों कमल किशोर जी।"

कमल किशोर भी कान्ति के संध्या के मनोरजन को प्रस्तुत करने की क्षमता को जानकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने भी पूर्ण स्वीकृति देते हुए कहा, "बिलकुल, जब कान्ति जी हर प्रकार का प्रबन्ध कर रही है तब इनका अनुरोध मानना हमारा फ़र्ज हो जाता है।"

कान्ति की सन्ध्या के मनोरजन की रूपरेखा सुनकर भुवन स्तब्ध रह गया।

उसे विश्वास नही हुआ कि एक बाल-विद्यालय की प्रधान अध्यापिका स्वयं को, अपनी शिक्षण सस्था को तथा अपनी अन्य अध्यापिकाओ को इस सीमा तक नगर के कछ प्रभावशाली व्यक्तिओं के मनोरंजन का साधन बनाकर अपनी आगे की सफलता का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। वह यह अश्वासन भी समझ गया था कि जगदीश ने इशारे ही इशारे में रामशंकर से यह अश्वासन ले लिया था कि उस शाम को निमन्त्रित लोगों को पीने के लिए शराब भी मिलेगी।

भुवन की कल्पना में वह रंगीन शाम उभर आई जब जगदीश, राम शंकर, कमल किशोर, सरदार हरमोहन सिंह और वह स्वयं सब शराब के जाम के साथ लच्छेदार बातें करेंगे। आपस में एक-दूसरे से मिल कर

अपने जीवन के भावी दाँव-पेचों के बारे में सलाह मशविरा करेंगे। शराब के नशे में शिष्टाचार के बन्धन कुछ ढीले होंगे और दौर चलते रहेंगे। इस बीच में शाम से आधी रात के बाद खाना खाने के समय तक वह अध्यापिकाएँ और कान्ति अतिथियों के मनोरंजन और सेवा में तत्पर रहेंगी। कभी कोई गाना गायेगी, कभी कोई कविता पढ़ेगी और कभी कोई नज़्म कहेगी। कभी कोई तो कभी कोई साक़ी भी बनेगी। संभव है उनमें से कोई नाच भी दे।

कान्ति और मिसेज डेनियल ने तो अरसा हुए अपने बन्धन खोल कर फेंक दिये थे। जीवन-यष्टि के खेल में उन्होंने समर्थ नारियों की तरह अपने समय की चुनौती स्वीकार कर ली थी। उनकी बातों से, उनका रातों को देर तक शराबी शामों में उपस्थित रहना साधारण-सी बात मालूम पड़ती थी। पर कमल शर्मा, इन्द्रा वशिष्ठ, तथा रत्ना खन्ना जिन तीन अन्य अध्यापिकाओं को गाने तथा कविता सुनाने के लिए बुलाने की बात कान्ति ने कही थी, "क्या वह भी ऐसे मनोरंजन के कार्य-क्रमों में बहुधा उपस्थित रहती हैं ?"—यह प्रश्न भुवन के मन में भी कौंध गया। उसका समाधान उसे शीघ्र ही मिल गया। ज़रा गौर करने पर यह स्पष्ट हो गया कि कान्ति ने जिस आत्मविश्वास के साथ इन तीनों को भी बुलाने की बात कही थी, उसके कहने के ढंग से लगता था कि वह तीनों उसकी आज्ञा का पालन करेंगी और जब, जहाँ बुलायी जायेंगी वहाँ वह समय पर हाज़िर होंगी। शायद वह भी कान्ति की तरह अपने जीवन की दिशा पा चुकी थी।

भुवन ने सोचा प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन की दिशा की तलाश करनी पड़ती है। जब तक उसे वह दिशा नहीं मिलती वह व्याकुल रहता है। अपनी दिशा मिल जाने पर वह निश्चिन्त हो जाता है। भुवन को एकाएक यह लगा कि वह खुद केवल इसीलिए उद्विग्न रहता है क्योंकि उसे न तो पैतृक रूप में अपने जीवन को कोई दिशा मिली थी और न अब तक वह स्वयं अपने लिए कोई दिशा निर्धारित कर पाया था।

मिसेज डेनियल ने अपनी दिशा ही नहीं ढूँढ ली थी वह अपनी मंज़िल पर भी पहुँच चुकी थी। उनके सामने अब कोई आकांक्षा नहीं थी।

बहुत-कुछ झेलकर वह एक कालेज की प्रिंसिपल हो गयी थी ग्रौर ज़िंदगी के बाक़ी दिन ग्राराम से थोड़ा-बहुत काम कर, प्रिंसिपल बने रहकर, सरदार हरमोहन सिंह की चाकरी में गुज़ार देने थे। यही उसकी नियति थी ग्रौर वह पूरी हो गयी थी।

कान्ति ने ग्रभी नये-नये पैर निकाले थे। वह मिसेज़ डेनियल की ग्रपेक्षा ग्रधिक महत्वाकांक्षी थी। ग्रपनी उर्ध्वगामी ग्रभिलाषाग्रों की पूर्ति के लिए वह न केवल ग्रावश्यक परिश्रम करने के लिए तैयार थी वरन् इसके ग्रतिरिक्त वह ग्रपनी सफलताके लिए हर प्रकार का मोल भी देने को तैयार थी, क्योंकि वह स्वयं सफलता का मोल जानती थी। उसे भी ग्रपने जीवन की दिशा मिल गयी थी। ग्रब वह निस्संकोच भाव तथा ग्रबाध गति से उस ग्रोर बढ़ते हुए, हर प्रकार के ग्राक्रमण का प्रतिरोध कर ग्रपना योग बढ़ाते हुए जीवन-यष्टि के खेल में ग्रपने प्रथम शतक की उपलब्धि के लिए ग्राकुल थी।

मिसेज़ डेनियल की समाप्त प्रायः यष्टि पर कान्ति मिश्रा उत्साहपूर्वक उसका स्थान लेने के लिये ग्रागे बढ़ रही थी ग्रौर सरदार हरमोहन सिंह, कमलकिशोर, जगदीश तथा रामशंकर जैसे कुशल क्षेपताग्रों के क्षेपण का मुकाबला करने को तत्पर थी।

भुवन जैसे लोगों को, वह, जीवन की यष्टि-भूमि पर बल्ले ग्रौर गेंद की निरंतर चलने वाली इस प्रतियोगिता में संवेदनशील मध्यस्थ की भूमिका ग्रदा करते हुए ग्रपने कर्म ग्रौर ग्रपनी नियति के द्वन्द में ग्रपनी विजय के साक्षी के रूप में देखना चाहती थी। इसीलिए कान्ति ने भुवन को भी खींचतान कर ग्रपने ग्रायोजन में सम्मिलित करने का प्रयास किया था।

इस खेल में उसे प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिल रही थी तथा ग्रधिकाधिक ग्रधिकार भी प्राप्त हो रहा था, ग्रौर जो ग्रप्रत्यक्ष मूल्य उसे चुकाना पड़ रहा था उसके भुगतान में भी उसे कोई दुविधा नहीं थी। कान्ति ग्रपने शोभे शिक्षा जगत में वह सौदा कर रही थी जो न केवल राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हो चुका था वरन् जिसे राष्ट्र जीवन के सभी मार्गों पर मान्यता मिली हुई थी, क्योंकि उन सभी

मार्गों पर छद्मवेशी असत्, सत् को पछाड़ कर आगे बढ़ रहा था।

भुवन ने सोचा, क्या एक दिन यही मार्ग उसको भी अपनाना पड़ेगा क्योंकि जिस व्यवस्था में वह जी रहा था उसमें आगे बढ़ने के लिए और कोई रास्ता नहीं रह गया था। उसने सोचा यदि इसे अस्वीकार किया गया तो फिर जीवन के क्रीड़ांगन से हट कर, दर्शक दीर्घा में बैठकर, दूसरों की सफलता पर तालियाँ बजाने या उनकी असफलता पर आहें भरने के अतिरिक्त कुछ और हाथ नहीं आ सकेगा।

हाँ, यदि पहले ही से हार मान कर संघर्ष-विमुख होने के बजाय वह निहित स्वार्थों द्वारा निर्मित व्यवस्था से संघर्ष करना ही श्रेयस्कर समझे, तो फिर उसे उन सुदृढ़ भित्तियों पर कुशल प्रहार कर किसी ऐसी रंध्र का अनुसंधान करना होगा जिससे प्रगति का कोई नया मार्ग मिल सके।

भुवन को लगा कि यदि कोई अपने संपूर्ण विश्वास के साथ उस अजेय व्यूह-रचना से जूझे भी तो अपना ही सर फोड़ने के सिवा और क्या फल निकलेगा। उसने अपनी कल्पना में देखा कि सिर फोड़ने वाले धीरे-धीरे मिट चुके थे या फिर चारों ओर तीव्र गति से उठती हुई निहित स्वार्थों की दीवारों में स्वयं चुन गये थे।

उसके मन में प्रश्न उठता रहा, "…क्या और मार्ग नहीं हो सकता, क्या कोई और दिशा नहीं हो सकती ?"

समीक्षा और सुरभि

प्रति मिनट चालीस शब्द टंकन करने वाले ग्यारह टाइप राइटर एक साथ चल रहे थे। इन मशीनों की टप-टप-टप और खटर-खटर की आवाज़ों के अतिरिक्त तारघर के उस कमरे में और कोई आवाज़ नहीं थी। दो चार आने-जाने वाले तारघर के अधिकारियों के पैरों की आवाज़ भी फर्श पर बिछे मोटे कालीन में विलीन हो जाती थी। तारघर के उस ताप-नियोजित-प्रेस कक्ष की बारह मेजों पर लिखने और टाइप करने का सामान करीने से सजा हुआ था। इनमें से ग्यारह मेजों पर एक-एक अंग्रेजी का टाइप राइटर रखा था और सामने की कुर्सी पर किसी-न-किसी समाचार पत्र अथवा किसी-न-किसी समाचार एजेन्सी का संवाददाता प्राणपण से टाइप करने में लगा हुआ था। कमरे में होने वाली टाइपराइटरों की आवाज़ों ने पूरे तारघर को आतंकित कर रखा था। क्रिकेट मैच के समाचारों को अन्य सभी तारों के ऊपर न केवल प्राथमिकता मिली हुई थी बल्कि तारघर के अधिकारियों तथा कर्मचारियों, सभी का ध्यान बाहर से आए हुए क्रिकेट के समीक्षकों तथा संवाददाताओं की ओर लगा हुआ था।

कनकपुर में उस दिन मरने वालों की खबर भी उनके दूसरे शहरों में रहने वाले इष्ट-मित्रों को पहुँचाना आसान नहीं था, क्योंकि मरने वालों के बजाय खेलने वालों के अच्छे-बुरे खेल को अधिक महत्ता मिली हुई थी।

कृष्णास्वामी, हावर्ड स्टीवेन्सन, जार्ज वाटरहाउस तथा अन्य आस-पास की मेजों पर दूसरे राष्ट्रीय समाचार-पत्रों तथा विदेशी पत्रों के

संवाददाताओं के साथ बैठे हुए अपने संवाद-लेखों को टाइप कर रहे थे। सबके सामने टाइपराइटरों की बगल में मैच के दौरान में अपने लिखे हुए नोट्स और दूसरे आँकड़े रखे थे। इसके अतिरिक्त सबके पास क्रिकेट सम्बन्धी विभिन्न वार्षिक प्रकाशनों के नवीनतम संस्करण रखे थे। वह अपने संवाद टाइप करते समय उन वार्षिक प्रकाशनों में क्रिकेट की पिछली अर्द्ध-शताब्दी के इतिहास के पुराने आँकड़ों को भी देखते जाते थे।

क्रिकेट-संवाद भेजने वाले खेल के उन रिपोर्टरों में ऐसे वरिष्ठ पत्रकार थे जो कनकपुर में होने वाले खेल पर, एक विशेषज्ञ के नाते केवल अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए ही आये थे। इन विशेषज्ञों में कई पुराने भारतीय टैस्ट खिलाड़ी और भारतीय टीम के एक-दो पुराने कप्तान भी थे। इनके क्रिकेटसम्बन्धी संवाद-लेखों अथवा संवाद-आख्यानों को बड़ा महत्त्व दिया जाता था। इनसे सम्बन्धित पत्रों की दैनिक वितरण-संख्या पर इनकी लेखनी का बड़ा प्रभाव था। देश के विभिन्न भागों में क्रिकेट शौकीनों को खेल की प्रगति जानने के अतिरिक्त अपने प्रिय क्रिकेट पत्रकार की प्रतिक्रिया जानने की भी उत्सुकता रहती थी। रोज़मर्रा की बातचीत में क्रिकेट के विशद ज्ञान का परिचय देने के लिए वरिष्ठ पत्रकारों की राय को उद्धृत करना भी उन दिनों एक फ़ैशन बन गया था। कुछेक पत्र केवल किसी-न-किसी विशिष्ट पत्रकार की समीक्षा पढ़ने के लिए ही खरीदे जाते थे। इन वरिष्ठ पत्रकारों की समीक्षा पर क्रिकेट के आयोजकों और पुराने तथा नये खिलाड़ियों का भविष्य भी बहुत हद तक निर्भर करता था। जब यह बाहर से आए हुए संवाददाता टाइपराइटरों पर बैठे हुए अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार शब्दावली के चयन में मगन थे, तभी मैच के बाद कृष्णास्वामी से मिलने के लिए मुरली भी वहीं पहुँच गया।

उसने देखा कि ग्यारह डेस्कों पर टाइपराइटरों के सामने राष्ट्रीय अंग्रेज़ी पत्रों के जाने-माने कुछ विदेशी समाचारदाता बैठे अपने काम में मग्न हुए थे। उनके कमरे के दरवाज़े पर तारघर के कर्मचारी, बालू लोग और सन्देशवाहक दौड़-दौड़कर उनका हुक्म बजाते हुए किसी को पानी, किसी को चाय या किसी को सिगरेट पहुँचा रहे थे।

सिर्फ एक मेज पर बाहर से आया हुआ एक हिन्दी पत्र का संवाददाता बैठा था। उसके पूछने पर बताया गया था कि तारघर में हिन्दी के टाइपराइटर का प्रबन्ध नहीं है और उसके लिए टाइपराइटर की व्यवस्था नहीं हो सकी थी। वह हाथ से अपना समाचार लिख रहा था। तारघर में उस हिन्दी पत्र के संवाददाता के कई बार कहने पर भी चपरासी उसे पानी नहीं पहुँचा पा रहा था, क्योंकि जब-जब वह उसकी ओर बढ़ता था तब-तब किसी अंग्रेजी संवाददाता की दबंग आवाज के कारण वह उस हिन्दी पत्र-संवाददाता को पानी देने के बजाय कोई और हुक्म पूरा करने लगता था।

भुवन को देखते ही कृष्णास्वामी ने आवाज देकर उसे अपने पास बुला लिया और कनकपुर टैस्ट मैच की आयोजन समिति के बारे में पूछताछ करने लगा। उसके दूसरे साथियों, भरुचा, हावर्ड स्टीवेन्सन तथा जार्ज वाटरहाउस, ने भी समिति के काम में दिलचस्पी दिखायी। वह सभी कनकपुर के टैस्ट मैच के प्रबन्ध से असन्तुष्ट थे। उनकी विशिष्ट पत्रकार दीर्घा में भी इतने ज्यादा मुफ्तखोरे दर्शकों को बैठा दिया गया था कि भीड़ के कारण उनका काम करना मुश्किल हो गया था। प्रायः सभी संवाददाता आयोजकों के इस रवैये से असन्तुष्ट थे और टैस्ट मैच के प्रबन्ध की तीव्र आलोचना भी करना चाहते थे, परन्तु सभी कुछ-न-कुछ संकोच में थे और वह मैच के प्रबन्ध की त्रुटियों पर केवल एक विहगम-सी दृष्टि डालकर अपने कर्तव्य की इतिश्री करना चाहते थे।

जब वह लोग यह बातें पूछ ही रहे थे तभी सतीश और बलराज भी अपने-अपने पत्र के विशिष्ट संवाददाता की खैर-खबर लेने के लिए वहाँ आ गये।

सतीश ने कृष्णास्वामी के प्रश्नों को सुनकर कहा, "प्रबन्ध तो इस बार भी बहुत ही अनियोजित है, परन्तु ऐसा तो हमेशा ही होता है। आश्चर्य है कि आप लोगों ने इस कुप्रबन्ध के बारे में पहले कभी कुछ नहीं लिखा और यही कारण है कि प्रत्येक टैस्ट मैच के साथ यहाँ का प्रबन्ध बदतर होता जाता है।"

बलराज ने सतीश का समर्थन करते हुए कहा, "आप लोग इस बद-

इन्तजामी के बारे मे बहुत-कुछ लिख सकते है, पर आप लोग ऐसा नही करेंगे।"

कृष्णास्वामी ने आश्चर्य से पूछा, "आप ऐसा क्यो सोचते है ?"

सतीश से कहा, "इसलिए कि बाहर से आने वाले आप जैसे सुप्रसिद्ध क्रिकेट के सवाददाताओ के ठहरने, रहने और खाने-पीने का प्रबन्ध प्रदेशीय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष अपने हाथ में रखते हैं। आपको अपने साथ ही एक आलीशान बँगले मे ठहरा लेते हैं। शाम को शराब के दौरो से अपनी कठिनाइयो को भी आपके गले के नीचे कुछ ऐसे उतार देते हैं कि आप सबको उनके साथ सहानुभूति हो जाती है। इसी कारण आज वर्षो से यहाँ के कुप्रबन्ध के विषय मे आप लोगो ने कभी कुछ नही लिखा।"

कृष्णास्वामी और भरुचा इस अभियोग से स्तब्ध रह गये।

कृष्णास्वामी ने कुछ अप्रतिम होकर कहा, "यह बात तो हम लोगों के खयाल में कभी नही आई। हमें तो बताया जाता है कि इस नगर में अच्छे होटल नही है, इसीलिए हमारे लिए यह प्रबन्ध किया जाता है। हम लोगो का ध्यान भी हमेशा क्रीडांगन में होने वाले खेल पर ही रहता है और दूसरी बातो को हम सोच भी नही पाते।"

भरुचा ने कहा, "अब तक जो हुआ सो हुआ पर आगे हम ठहरने का इन्तजाम किसी होटल ही में किया करेंगे।"

कृष्णास्वामी ने भी उसका समर्थन किया और फिर भुवन से कहा, "मैंने अपना संवाद-लेख लिख डाला है। अब अलग मे दो-एक छोटी-मोटी बातें और लिखनी हैं। मैं उन्हें टाइप करता हूँ, तब तक तुम जरा पढकर देख लो कि इसमें कोई टाइप की गलती तो नही रह गयी है"—और उसने टाइप किये हुए तीन लम्बे कागज भुवन को पढने को दे दिये।

कृष्णास्वामी समाचार-पत्र-जगत मे क्रिकेट का बड़ा ही विख्यात समीक्षक माना जाता था। उसके प्रशंसक कहते थे कि वह क्रिकेट का समीक्षक ही नही क्रिकेट का कवि भी है।

उसके संवाद-लेखो मे क्रिकेट का खेल मानवीय द्वन्द्व का रूप बन जाता था। क्रिकेट के सामने सदा बल्लेबाज किसी दुर्ग-रक्षक के रूप मे

दिखायी देता था। विपक्षियों द्वारा फेंकी हुई गेंदें ऐसी आक्रमणकारी टुकड़ियाँ मालूम पड़ती थीं जो या तो लक्ष्य-भेद कर उस यष्टि-दुर्ग को धराशायी कर देती थीं या फिर उसके पास पहुँचने से पहले ही बल्लेबाज के प्रबल प्रतिरोधात्मक प्रहारों से चूर-चूर होकर क्रीडांगन में चारों ओर बिखर जाती थीं। वर्षों से क्रिकेट का भाष्य करते रहने के कारण कृष्णास्वामी के संवाद-लेखों की भाषा में प्रकृति और पुरुष के चिरंतनकाल से चले आने वाले संघर्ष का संगीतमय निनाद प्रतिध्वनित होता था।

भुवन ने जब कृष्णास्वामी का संवाद-लेख पढ़कर उसे वापस दे दिया तब दूर एक कोने में बैठ कर दिन-भर के खेल पर हाथ से अपनी समीक्षा लिखने वाले हिन्दी के अकेले, और क्रिकेट विशारदों के उस समूह में अपरिचित से, क्रिकेट के उस हिन्दी संवाददाता ने भुवन के पास आकर उससे अनुरोध किया कि वह जरा उसका भी संवाद-लेख पढ़कर देख ले कि कहीं जल्दी में उससे कोई भूल तो नहीं हो गयी है। उसने अपना परिचय देते हुए बताया कि वह पटना के हिन्दी दैनिक 'देशवाणी' का खेल संवाददाता है और कनकपुर पहली ही बार आया है।

अंग्रेज़ी भाषा पर अप्रतिम अधिकार तथा क्रिकेट के विशद् ज्ञान के आधार पर लिखी कृष्णास्वामी की समीक्षा में उस दिन के क्रिकेट के खेल का हर महत्त्वपूर्ण अथवा आकर्षक दृश्य कुछ इस तरह प्रस्तुत किया गया था कि सारे दिन का खेल एक चलचित्र की तरह भुवन की आँखों के सामने घूम गया था। उस सप्राण विवरण को पढ़ कर भुवन को लगा था कि ऐसी समीक्षा अंग्रेज़ी के शब्द वैभव के कारण ही संभव है। कृष्णास्वामी का संवाद-लेख पढ़ने के बाद भुवन ने बड़े कुतूहल से हिन्दी में लिखी उस नवपरिचित संवाददाता की क्रिकेट समीक्षा पर यह सोचकर नज़र डाली कि हिन्दी में क्रिकेट के वाङ्मय के अभाव में उस समीक्षा में उस दिन के खेल का अधिक-से-अधिक एक ऐसा क्रमबद्ध वर्णन देखने को मिलेगा जिसमें क्रिकेट की अंग्रेजी शब्दावली तथा निष्प्राण आँकड़ों की भरमार होगी।

जब भुवन ने उस संवाद-लेख को पढ़ना शुरू किया तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उस अजनबी संवाददाता ने उस दिन के खेल का हिन्दी में ऐसा सजीव चित्रण किया था कि भुवन को पहली बार यह पता

चला कि अर्थाभिव्यक्ति तथा शब्दगरिमा में हिन्दी अंग्रेजी की अपेक्षा कहीं अधिक सामर्थ्यवान है। उस समीक्षा में भुवन को सौहार्दपूर्ण स्पर्धा की अनंतकालीन परंपरा के दर्शन हुए और उस दिन के खेल में प्रत्येक खिलाडी का क्रीडाकौशल, हस्तलाघव तथा पदांतर, प्रकृति के पल-पल परिवर्तित होने वाले चित्ताकर्षक अंगविन्यास की तरह चित्रित दिखायी दिया। उस दिन के खेल की अंतर्धारा ने उभर कर कम-से-कम भुवन के लिए, एक नयी अनुभूति का प्रवेश द्वार खोल दिया। क्रिकेट की वह अंग्रेजी शब्दावली जिसके बगैर हिन्दी में क्रिकेट समीक्षा लिखना असंभव-सा लगता था, गौण स्थान लेकर कोष्टकों में बंद हो गयी थी और हिन्दी के परंपरागत शब्द नये-नये परिधानों का धारण कर खेल की भावना को नव-निखार दे रहे थे। जहाँ कृष्णास्वामी की समीक्षा विदेशी सांस्कृतिक आधार पर टिकी होने के कारण कुछ दुरूह हो गयी थी वहाँ वह हिन्दी समीक्षा अपने भारतीय परिवेश के कारण पूर्व परिचित-सी लगती थी।

उस अजनबी हिन्दी संवाददाता ने लिखा था—

"विट्ठल के विक्रम से विनिर्मित उसके द्वादश अपराजित टैस्ट-शतक ने आज भारतीय पाली को न केवल प्रेरणा तथा गति प्रदान की वरन् उसकी उपलब्धि से दिवसांत पर भारत का सामर्थ्यपूर्ण, चार सौ बयालीस का समग्र योग इतना सक्षम था कि यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि कल विजय पार्क की यष्टि-भूमि पर खेल के प्रारंभ में ही भारत अपने उद्घोष से विदेशियों को शीघ्र ही ललकार कर क्रिकेट के खेल की भावना का समादर करेगा। यदि ऐसा न हुआ तो स्वस्थ स्पर्धा का निरादर होगा क्योंकि केवल इसी प्रकार से यह दूसरा टैस्ट, जिसका अनिर्णीत अंत अवश्यंभावी है, दोनों ओर के खिलाड़ियों को कुछ कौशल दिखाने का अवसर दे सकेगा।

"आज भारत ने जो उत्साह-वर्धक प्रदर्शन किया उसका श्रेय प्रमुख रूप से विट्ठल को ही है। वह आज सारे दिन क्रीडांगन के प्रत्येक कोने से रन बटोर कर अपने बारहवें शतक का निर्माण करता रहा। जब उसका उद्देश्य पूरा हो गया तब उसने अपने यष्टि-पताका में ऐसे कौशल पूर्ण विभ्रजित रनों को जड़ा जिससे प्रारम्भ के खेल में उसका मंद रन-संग्रह

स्वत: क्षम्य हो गया। उसने अपने विरोधियों को बत्तीस, बावन ग्रौर पैंसठ पर तीन प्राणातक ग्रवसर देकर उन्हे स्वयं को पराजित करने की चुनौती भी दी। परन्तु इन तीनो ग्रवसरों पर वह उज्जीवन प्राप्त कर ग्रपराजेय रहा। प्रत्येक सिद्धहस्त यामिक (बल्लेबाज) को ऐसे सकट उठाने ही पडते हैं। यदि विट्ठल ने ग्रपने दाँव के ग्रारम्भ में इस प्रकार का साहस किया होता तो संभवत भारत को ग्राज के क्लिप्ट ग्रत से पहले ही भ्रमणार्थियो को खेलने की चुनौती देने का सुग्रवसर मिल जाता।

"विदेशी टीम की नियति ग्रारम्भ मे ही स्पष्ट हो गयी थी।

"ग्राज का द्वन्द्व ग्रपनी निर्धारित मलिन भाग्य-रेखा पर मंदगति से ग्रग्रसर होता रहा। ग्रंसारी, विट्ठल का चौथे यष्टि-ग्रनुपग (विकेट स्टैंड) के उनहत्तर रनों के योग में, साहसी सहायक सिद्ध हुग्रा ग्रौर कुमार ने ग्रपने पूर्व खिलाड़ियो से कम समय खेल कर भी भारतीय लडी मे बाईस रन पिरो दिये। उसके उत्तराधिकारी मेहता ने बनाये तो केवल उनतीस रन लेकिन कौशल वह दिखाया जिससे भारतीय टीम मे उसका यह प्रथम चयन सार्थक सिद्ध हुग्रा। ग्राज दोपहरिया को विट्ठल के साथ छठी यष्टि की भागीदारी मे ग्रठहत्तर रनो की उपलब्धि मे मेहता के योगदान से यह स्पष्ट हो गया कि भारत को एक नया तथा उच्चस्तरीय ग्राहनक (बल्लेबाज) मिल गया है। यह उसका ग्रभिनव ग्रभिरक्षण था। इससे ग्रधिक सफलता का ग्रवसर समयानुसार भविष्य में ही उसके सामने ग्रायेगा।

"विजय पार्क की हृदयहीन यष्टि-भूमि (विकेट) पर टिके रहने के लिए ग्रपरिमित संतोष तथा ग्रडिग सकल्प, केवल यह दो ही संबल हो सकते है। ग्रागन्तुकों ने इन दोनों गुणों का भरपूर प्रदर्शन कर ग्राज चार यष्टियाँ (विकेट्स) प्राप्त भी की फिर भी यदि विदेशी क्षेत्रकों ने ग्रपने बम्बई के हस्तलाघव की पुनरावृत्ति की होती तो ग्राज की कहानी का ग्रंत ही भिन्न होता।

"वर्तमान द्वन्द्व में किसी नयनाभिराम स्फूर्तिदायक संघर्ष की संभावना उतनी ही क्षीण थी जितनी राधा के नृत्य के लिए नौ मन तेल का समायोजन, ग्रतएव इसकी इयत्ता का विचार ही इस समीक्षक के लिये

कुछ उत्फुल्लतादायक था अन्यथा यह सोचकर तो अन्तर का कोना-कोना काँप उठता है कि उसके अभाव में हमें जलप्लावन तक इस निष्प्रभ क्रीड़ांगन में बैठे रहना पड़ता।"

भुवन ने जब पूरा सम्वाद-लेख पढ़ लिया तब उसे उस दिन खेल की रूपरेखा का पहली बार ऐसा ज्ञान हुआ जो उसे समर्थ अंग्रेज़ी भाषा में लिखे कृष्णास्वामी के सम्वाद-लेख को पढ़ कर भी नहीं हुआ था। वह दिन-भर क्रीड़ा-भूमि में रहा था। अपनी और दूसरी दर्शक-दीर्घाओं में बैठकर उसने खेल के विभिन्न पहलुओं को देखा भी था। दूसरे समझदार दर्शकों की टिप्पणी तथा आकाशवाणी से प्रसारित होने वाला सचल-वृत्तान्त भी सुना था, पर उस दिन के खेल की वास्तविक भावना और दोनों पक्षों के संघर्ष के अन्त -प्रवाह को उस हिन्दी सवाददाता ने जिस अनोखी शब्दावली में मानवीय द्वन्द्व के रूप में निखार कर रख दिया था उससे भुवन क्रिकेट में अन्तर्निहित उस स्वस्थ स्पर्धा से प्रथम बार परिचित हुआ जिसके कारण क्रीड़ा-संसार क्रिकेट को इतना महत्व देता है कि उसके नासमझ वैरी भी उसके विरोध में कुछ कहने का साहस नहीं करते।

जब प्राय. सभी संवाददाता अपना-अपना समाचार पूरा कर चलने की तैयारी में थे उसी समय अहमद के ड्राइवर शमशाद ने अन्दर आकर भुवन से कहा, "साहब, वाहर गाडी में अजरा बीबी बैठी हैं और आप को बुला रही है।" ड्राइवर की बात सुनकर भुवन बाहर जाने के लिए उठा पर इससे पहले ही अजरा स्वयं अन्दर आ गयी।

अजरा उस समय गहरे नीले रंग का गरारा और उसी रंग की तीन चौथाई बाहों की कोटनुमा ढीली कमीज पहने थी। गरारे पर घुटनों के चारों ओर तथा पैरों के पास पायचों पर सुनहरी तारकशी के चौड़े बूटे बने थे। कमीज़ पर भी सामने और पीछे की तरफ नीचे किनारों पर तथा बाहों पर कुहनी से जरा नीचे कफ़ों पर ढीली तथा लटकती बाहों के कंधों पर भी सुनहरा काम था। कमीज के गले पर दो इंच चौड़े गुलूबन्द-नुमा कालर पर भी सुनहरी तारकशी की एक बेल थी, जो गले के ठीक बीच से नीचे की ओर आती हुई वक्ष के मध्य में ... ीं बाईं ओर विभाजित होकर कमर के पास से होती हु... ...भाग

वाली तारकशी की बेल के दोनों ओर के सिरों से मिल गयी थी।

अजरा के ऊँचे कटे हुए बाल सामने माथे पर और पीछे गर्दन पर पड़े थे। आँखों में आँजे काजल का कनपटी की ओर विस्तार, एक रहस्य-मंजूषा की तरह उन बालों से अध-ढँका था जो उसके बात करते समय उनींदी-सी लगने वाली आँखों पर झुक-झुक पड़ते थे और उनके बीच मे कानो से लटकते कर्णफूलों की चमक, नीली जाली की ओढ़नी मे बुने सुनहरे सितारों की झिलमिलाहट तथा बिंबोष्ठी पर कृत्रिम गहरा रक्ताभ रोपण, सब मिल कर नवयौवन से समय से पहले ही आने का अनुरोध कर रहे थे।

भुवन अजरा की उस वेश-भूषा को मुग्ध होकर कुछ क्षणों के लिए देखता ही रह गया।

दिन में मैच के दौरान मातृविहीना अजरा को जगह-जगह कूदते-फिरते देखकर उसके हृदय मे वात्सल्य का भाव उमड़ पड़ा था, पर उस डूबती संध्या के समय बिजली के अधूरे प्रकाश में वही अजरा एक मन-मोहनी मायाविनी का उत्तप्त, पर मूक निमंत्रण लिए खड़ी थी।

भुवन पर अपनी अभिसार-सज्जा का स्पष्ट प्रभाव देखकर अजरा कुछ लजा गयी, फिर उसने अपनी पुरानी चंचलता बिखेरते हुए कहा, "अंकल कल तो खेल होगा नहीं। आज शाम को नगर के क्रिकेट प्रेमी सेठ शंकर दत्त ने दोनों टीमों के लिए अपने निवास 'नीहारिका' में 'एट होम' दिया है। मैं भी वहाँ जा रही हूँ। पापा ने कहा है कि अगर आप वहाँ जायें तो अधिक देर न ठहरें क्योंकि वह आपका खाने पर इन्तजार करेंगे।"

फिर उसने बाहर से आये संवाददाताओं की तरफ इशारा करते हुए कहा, "अंकल, आप ने बाहर से आए हुए क्रिकेट संवाददाताओं से मेरा परिचय कराया ही नहीं। सुना है, आपके अखबार के प्रसिद्ध क्रिकेट-समीक्षक कृष्णास्वामी भी आये हैं उनसे तो मैं खासतौर से मिलना चाहती हूँ।"

जब भुवन ने अजरा का परिचय सबसे कराया तो उसने कृष्णास्वामी मरुचा, स्टीवेन्सन, और जार्ज वाटरहाउस के सामने अपनी ऑटोग्राफ़-बुक

रखकर कहा, "मुझे आप लोगों के भी ऑटोग्राफ़ चाहिएँ।"

कृष्णास्वामी, मरुचा, स्टीवेन्सन, और जार्ज वाटरहाउस पहले भी अजरा को दोपहर के खाने के समय देख चुके थे, परन्तु उस समय वह अपने क्रिकेट के उत्साह में तितली की तरह उड़ रही थी और उसका ध्यान इन लोगों की तरफ़ बिल्कुल ही नहीं गया था।

ऑटोग्राफ लेते हुए उसने उन लोगों को भी अपने यहाँ रात के खाने का निमंत्रण दिया और भुवन से कहा कि वह "नीहारिका" जाकर अपनी कार उसके लिए भेज देगी जिससे वह चाय-पान में सम्मिलित होने के बाद आसानी से खाने के समय तक सरकिट हाउस पहुँच सके और वह स्वयं अपनी किसी सहेली की कार से सरकिट हाउस पहुँच जायेगी। साथ ही उसने भुवन के द्वारा सतीश और बलराज से भी अनुरोध किया कि वह दोनों भी खाना खाने आयें क्योंकि उसके पापा ने कहलाया था कि भुवन अपने उन मित्रों को भी साथ लायें जो दोपहर में पूरा खाना नहीं खा सके थे।

अजरा के उत्साह और उसके निस्संकोच सरल निमंत्रण में कुछ ऐसा अपनापन था कि सब ने उसके अनुरोध भरे निमंत्रण के उत्तर में शिष्टाचारवश आने का प्रयास करने का आश्वासन दिया।

उन लोगों की अनिश्चित स्वीकृति से ही संतुष्ट होकर अजरा सबका अभिवादन करती हुई अपनी ठुमकती हुई चाल से तारघर के संवाददाता कक्ष से बाहर चली गयी और संवाददाताओं के टाइपराइटर जो कुछ समय के लिए रुक गये थे फिर चलने लगे।

अजरा के जाने के बाद भुवन को ध्यान आया कि उस समय संवाद दाता अपना-अपना समाचार भेजने के लिए इतनी जल्दी में थे कि यदि उनके काम में कोई एक-दो मिनट का भी व्यवधान डालता तो सभी उस पर रोष प्रकट करते हुए बरस पड़ते। इसके विपरीत अजरा ने, उन लोगों की दृष्टि में, ऑटोग्राफ जैसी नगण्य बात के लिए सबका काम पन्द्रह मिनट से भी ज्यादा समय के लिए रोक दिया था, पर फिर भी किसी को कोई शिकायत नहीं हुई थी।

अजरा ने एक सुवासित वायु उत्तोलिनी की तरह घूमते हुए आकर

उस कृत-श्रम कक्ष मे चतुर्दिक सुरभि-सपात कर अपनी मादक गध से सबको उत्फुल्ल कर दिया था।

"क्या लड़की है ?" मरुचा ने अजरा के जाने के बाद कहा।

कृष्णास्वामी ने कहा, "कितना साहस है इसमे, विट्ठल के शतक बनाने पर विद्यार्थी कक्ष से दो लडके क्रीडागन मे कूदकर विट्ठल को बधाई देने के लिए उसकी यष्टि रेखा की ओर दौडे थे और जब पुलिस वाले उन दोनो को खदेड़ कर बाहर निकाल रहे थे तब यह लडकी भी दूसरी ओर से प्रथम श्रेणी से क्रीड़ांगन मे कूद पड़ी थी। एक पुलिस वाले ने इसे रोका तो यह उसे धक्का देकर आगे बढ गयी और दौड़कर विट्ठल से हाथ मिलाकर उसे बधाई देकर ही वापस लौटी।"

सतीश ने कहा, "सारे दिन यह क्रीडाभूमि की हर श्रेणी मे थोडी-थोडी देर के लिए दिखायी देती रही। हर जगह इसको आदर और स्नेह मिलता था। इसके हमउम्र लडके इसके आगे-पीछे चक्कर लगाते हुए कुछ उद्दंड भी हो जाते थे। पर इसके क्रीडा-प्रेम में कही कोई उच्छृंखलता नही थी केवल किशोर वय का उत्साह था, कुलागत शालीनता थी और थी वस्तुत: खेल की स्वस्थ भावना।"

स्टीवेन्सन ने भी अजरा की तारीफ करते हुए कहा, "मैंने इसे चाय के समय भी राज्यपाल-मडप के पास देखा था। उस समय इसके चारो ओर खड़ी लडके-लडकियों की भीड से ऐसा लगता था कि यह उतनी ही जनप्रिय है जितना कोई क्रिकेट खिलाड़ी।"

वाटरहाउस ने कहा, "यह लडकी तो अपनी पीढी की जन्मजात नायक है। किसी भी माता-पिता को इस पर गर्व हो सकता है।"

"मैं भी इसे सारे दिन, मैच भर देखता रहा। इस लड़की में चचलता और शालीनता का अनोखा समन्वय है।" बलराज ने कहा।

मरुचा ने कहा, "इतनी कम उम्र में इसमे हर प्रकार की समझ है। इसने अपने शृङ्गार में जिस सुगध का प्रयोग किया है उसकी खूबी यह है कि उ[illegible]का प्रभाव इसके जाने के बाद ही मालूम पड़ रहा है। इस समय यह कपडे भी इस तरह के पहने थी जिससे मुस्लिम संस्कृति की सुरुचि तथा आधुनिकता, दोनो का एक ही साथ आभास मिलता है।"

सभी संवाददाताओं ने उस समय तक अपने-अपने संवाद-लेख प्रायः समाप्त कर लिये थे और उनका पुनरावलोकन कर रहे थे। ऐसे समय किसी भी संवाददाता को एक-एक मिनट भारी लगता है। क्रीड़ा-भूमि में बैठे रह कर दिन-भर यष्टि-द्वन्द्व पर आँखें जमाये-जमाये वह शारीरिक रूप से अब तक बुरी तरह थक चुके थे। इस लम्बी थकान के बाद वह घंटे-दो घंटे अपने-अपने दृष्टिकोण से समाचार लिखने के कारण मानसिक रूप से भी शिथिल हो गये थे।

अजरा ने अपनी एक सौरभी झलक से उन सब में ताजगी भर दी थी। उस समय कुछ संवाददाताओं के समाचार देश के विभिन्न भागों को तार द्वारा भेजे जा रहे थे। प्रत्येक संवाददाता अपने समाचार का प्रेषण समाप्त होने के बाद ही वहाँ से हटना चाहता था। साधारणतया किसी प्रमुख समाचार भेजने के इन अन्तिम क्षणों में समय की स्पर्धा के कारण संवाददाताओं में बहुधा आपस में इतना तनाव बढ़ जाता है कि वह एक-दूसरे से बिना बात ही उलझ पड़ते हैं। पर उस दिन अजरा ने अपनी थोड़ी देर की उपस्थिति से ही सबकी चित्तवृत्ति को बदल दिया था और सबका मन उल्लसित हो गया था।

स्टीवेन्सन ने कहा, "यह लड़की सवेरे हमारी टीम के सदस्यों के ऑटोग्राफ लेने के लिए भी आयी थी और सभी उपस्थित सदस्यों ने इसे हँसी-खुशी अपने हस्ताक्षर दे भी दिये थे। यद्यपि इसके आने से पहले जितने लड़के-लड़कियाँ उनके पास पहुँचे थे उन सबकी ऑटोग्राफ़ की प्रार्थना को उन्होंने ठुकरा दिया था।"

वाटरहाउस ने बताया, "इस लड़की को मैकगिल, हैस्टिंग्स और रोजर्स के ऑटोग्राफ़ नहीं मिल सके थे क्योंकि वह लोग उस समय बाहर गए हुए थे। मैं स्वयं इससे इतना प्रभावित हूँ कि यदि यह उन लोगों के ऑटोग्राफ लेने के लिए फिर आई तो मैं खुद जोर देकर इसे उन लोगों के भी ऑटोग्राफ़ दिलवा दूँगा।"

स्टीवेन्सन ने भुवन से कहा, "मैं इस लड़की के कुछ चित्र लेना चाहता हूँ। तुम तो इसे जानते हो। जरा इस काम में मेरी मदद करना।"

भुवन ने उत्तर दिया, "मेरा ख़याल है कि आज शाम को दोनों

टीमों के स्वागत आयोजन के समय वह तुम्हारी टीम के बाकी तीनों सदस्यों के ऑटोग्राफ भी प्राप्त कर लेगी। इस सजधज से उस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए वह इसी उद्देश्य से गयी है कि वहाँ उसे तीनों के ऑटोग्राफ आसानी से मिल जायँ। रह गयी उसके चित्र की बात तो तुम अपने जाने से पहले अहमद की सहमति से सरकिट हाउस में उसके मनचाहे चित्र ले लेना।"

स्टीवेन्सन भुवन की बात सुनकर खुश हो गया।

इसी समय अजरा के ड्राइवर शमशाद ने लौटकर कहा, "हुजूर गाड़ी आ गयी है। मैं अजरा बीबी को सेठ शंकरदत्त जी की कोठी पर छोड़ आया हूँ।"

मैच के बाद

करोड़पति सेठ शंकरदत्त की नौलखा कोठी 'नीहारिका' नव वधू की तरह सजी थी।

हल्के नीले रंग के हजारों छोटे-छोटे बिजली के बल्वों की मालाओं से आच्छादित सेठ शंकरदत्त का बीस एकड़ में फैला हुआ वह निवास-स्थान मादक मद्धिम नीले प्रकाश में अनदेखे नन्दन-वन का एक भाग-सा प्रतीत होता था। उसके विशाल प्रवेश द्वार से दो सौ गज अन्दर तक दोनों ओर लगे अशोक के पेड़ों मे गुँथी हल्की नीली प्रकाश-मालाओं से अन्दर जाते समय दूर से शहनाई पर बजने वाली मालकोश की हल्की-हल्की स्वर-लहरी कानों मे पड़ रही थी।

नीहारिका के लम्बे-चौड़े मखमली घास के मैदान पर सैकड़ों स्त्री-पुरुष जमा थे। एक ओर चाय-पान का आयोजन था।

भुवन जब अपने संवाददाता मित्रों के साथ वहां पहुँचा तो सेठ शंकरदत्त के छोटे भाई विष्णुदत्त ने सबका स्वागत किया।

भुवन ने विष्णुदत्त से कृष्णास्वामी, मरुचा, स्टीवेन्सन और वाटर-हाउस का परिचय कराते हुए कहा, "इन लोगो के पास आपका निमंत्रण तो सवेरे ही पहुँच गया था, पर आप से परिचय न होने के कारण यह लोग यहां आने मे झिझक रहे थे। मैं इन्हें जोर देकर यहां ले आया हूँ।"

विष्णुदत्त ने भुवन को धन्यवाद देते हुए सबको लॉन पर भीड़ के बीच मे खड़ी भारतीय टीम के पास ले जाते हुए कहा, "आप लोगों को आने में कुछ देर हुई। विदेशी टीम तो आकर भी चली गई। उनके मैने-

जर ने कहा, 'हमारी टीम के सदस्य दिन-भर क्षेत्र-रक्षण तथा गेंददाजी के कारण थक गये हैं, और आराम करना चाहते हैं, इसके अतिरिक्त हम लोगों को एक व्यक्तिगत मुलाकात के लिए भी जाना है। यहां हम आपके निमन्त्रण के लिए अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने के उद्देश्य से आ गये थे और आप से इस आयोजन में पूरी तरह से सम्मिलित न होने के लिए क्षमा मांगते हैं।"

भुवन ने अपने चारों ओर नजर डाली तो देखा कि नगर के सभी क्षेत्रों के सैंकड़ों विशिष्ट स्त्री-पुरुषों के अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न नगरों से आये हुए अनेक अधिकारीगण भी वहां उपस्थित थे। अंसारी और नरीमन को किशोर लड़के और लड़कियों के समूह अलग-अलग घेरे हुए थे। वह दोनों ही सजीले नवयुवक थे। अंसारी के कसरती बदन पर कसी कमीज और स्वेटर से उसका सुडौल शरीर फूटा पड़ता था। नरीमन अपने छः फुट लम्बे कद, लम्बी बाँहों और नीली आँखों के कारण अपने चारों ओर खड़ी नवयौवनाओं के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बन गया था।

विट्ठल, मनकेकर और देशमुख तीनों साथ ही खड़े थे और उनके चारों तरफ प्रौढ़ाओं का जमघट था।

इसी तरह अन्य खिलाड़ियों के चारों ओर भी अलग-अलग भीड़ जमा थी। 'रश्मि' जलपान गृह के बीसियों बेयरे कॉफी, चाय और अन्य खाने-पीने का सामान वितरित कर रहे थे।

अंसारी के चारों ओर लड़कियों की भीड़ में खड़ी सौदामिनी की बासन्ती साड़ी उसके कूल्हे के नीचे ऐसी टिकी हुई थी कि नितंब-संधि तक दिखायी देती थी। कंचुकी की पतली-पतली तनियों के अतिरिक्त बाकी पीठ बिलकुल नंगी थी। उसकी साड़ी कन्धों से खिसक कर उसके हाथों पर ही रुकी हुई थी।

भुवन के साथ पहुँचनेवाले संवाददाताओं के आगमन पर सौदामिनी का ध्यान उन लोगों की ओर आकर्षित हुआ। उसके घूमकर, बलराज को अपने पास आने का इशारा करने पर भुवन ने देखा कि सामने की ओर भी, उसकी साड़ी पेट के नीचे ऐसी बँधी हुई थी कि उसकी नाभि के अतिरिक्त उसकी त्रिवली भी पूरी तरह दिखायी दे रही थी। सौदामिनी की

अदम्य गुलाबी मांसलता उसके माथे पर बने काले पतले अर्धचन्द्र के बीच मे लगी एक चौडी लाल बिन्दी से और भी निखर रही थी।

सौदामिनी के पास ही सेठ शकरदत्त की अट्ठारह वर्षीय पुत्री चाँदनी भी खडी थी। वह नीली जीन के ऊपर एक कसा लाल स्वेटर पहने थी। उसके लम्बे साँवले चेहरे पर उसके कटे, घने काले बाल, कन्धों पर पड़े थे। वह असारी पर अधिकार प्रदर्शित करती हुई उससे भिडी खड़ी थी।

उन लडकियो की भीड़ से अजरा की सहेली सलमा ने आगे आकर भुवन से कहा, "अंकल, अजरा तो चली गयी और कह गयी है कि आप लोग यहाँ से उसकी गाडी पर सीधे सरकिट हाउस में पहुँच जायें। उसको कोई दूसरी गाडी मिल गयी है और वह कुछ देर बाद सरकिट-हाउस पहुँच जायगी।"

भुवन ने सलमा की बात सुनकर पूछा, "क्या तुम उसके साथ सर-किट हाउस नही जाओगी ?"

सलमा ने कहा, "नही अंकल, अभी तो यहाँ बड़ी देर लगेगी। चाँदनी ने अपनी सहेलियों के साथ गाने-बजाने का भी प्रोग्राम बनाया है। मुझे भी उसमें शामिल होना है।"

भुवन ने कहा, "लेकिन यहाँ तो थोडी देर के लिए सिर्फ़ चाय का आयोजन था।"

सलमा ने उत्तर दिया, "चाय तो बस खत्म हो रही है। इसके बाद खाने-पीने और गाने-बजाने का प्रोग्राम है जो बहुत देर तक चलेगा और उसमे भारतीय टीम के अलावा कुछ और थोड़े-से लोग ही निमन्त्रित हैं।"

इसी समय सेठ शंकरदत्त ने आकर भुवन, बलराज और सतीश से कहा, "आप लोग चले न जाइएगा। भारतीय टीम के सदस्य क्रीडाँगन से सीधे यहाँ आये हैं, वह कुछ देर बाद इस भीड़ से विदा लेकर अपने होटल चले जाएँगे और फिर वहाँ से हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदलकर थोड़ी ही देर में पीछे वाले लॉन में वापस आ जाएँगे। यहाँ लखनऊ से आये हुए कुछ अधिकारी भी जमा हैं,"—फिर उसने धीरे से कहा, "ड्रिंक्स का भी प्रबन्ध है तुम लोग धीरे-से वहाँ पहुँच जाना।" दबी आवाज में अपनी बात कहकर शंकरदत्त आगे बढ गया।

मुझे यहाँ ठहरने के लिए कह रही है, वह अकेली है और मुझसे कह रही है कि यदि मैं ठहर जाऊँगा तो वह भी रुक सकेगी क्योंकि फिर वह मेरे साथ वापस जा सकेगी। अगर मैं नहीं ठहरूँगा तो उसे भी जल्दी ही चला जाना पड़ेगा।"

भुवन ने उत्तर दिया, "सौदामिनी तुम्हें अपने रक्षा-पुरुष की भूमिका अदा करने के लिए रोक रही है, और मनमोहनी सतीश को शंकरदत्त के विज्ञापनों का लोभ दिखा कर रोक रही है। सतीश को तो ठहरने से कुछ फ़ायदा हो सकता है, इसलिए उसका रुकना तो ठीक है। पर तुम सौदामिनी के संग-साथ के लालच में ठहरकर बेकार ही उलझन में पड़ोगे।"

बलराज ने कहा, "अब तुम यह नहीं समझ सकोगे कि बेकार कामों के दौरान ही जिंदगी के वह लमहे भी आते हैं जिनकी वजह से जीना सार्थक होता है।"

भुवन ने हँसकर कहा, "जिंदगी की सार्थकता मिलती है तो जरूर ठहरो, पर देखो किसी नयी उलझन में मत फँस जाना।"

जब सतीश और बलराज क्रमशः मनमोहनी सहगल और सौदामिनी के साथ हो लिए तब भुवन ने कृष्णास्वामी से कहा, "यहाँ चाय-पान का आयोजन तो एक दिखावा मात्र है। थोड़ी देर में यहाँ भारतीय टीम के मनोरंजन के लिए गाने-बजाने की महफ़िल जमेगी और साथ में शराब के दौर भी चलेंगे जिनमें कुल पचास-साठ विशिष्ठ व्यक्ति और कुछ थोड़ी-सी वह व्यवहार कुशल स्त्रियाँ भी शामिल होंगी जिनकी चंचल तथा कामुक मिलनसारिता ही ऐसी गोष्ठियों की प्राण होती है। आधी रात तक बॉल-डांस भी होगा......"

कृष्णास्वामी ने भुवन की बात काटी, "लेकिन नियमानुसार भारतीय खिलाड़ी ऐसे आयोजन में अधिक देर तक नहीं ठहर सकते और न ज्यादा शराब ही पी सकते हैं। मैच के दौरान के लिए उनके आचरण के नियम बने हुए हैं और उनका उल्लंघन करने पर उनके खिलाफ कार्यवाही की जा सकती है।"

भुवन ने कहा, "नियम की पूर्ति के लिए ही तो भारतीय टीम के खिलाड़ी थोड़ी देर में वहाँ से अपने होटल वापस चले जायेंगे और फिर

वाद में इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए वापस लौट आयेंगे। तुम्हारे और मरुचा के सामने वह लोग इस आयोजन मे सम्मिलित नही हो सकते, इसलिए तुम्हे और मरुचा को रात को देर तक चलने वाले आयोजन के लिए कोई निमंत्रण नही मिला है।"

इसी समय स्टीवेन्सन ने कहा, "हमारी टीम अपने निवास-स्थान वापस चली गयी है, इसलिए मुझे और वाटरहाउस को भी उनके पास ही वापस चले जाना चाहिए। हम लोग मि० अहमद के यहाँ नही जा सकेंगे।"

उस समय तक आधी से ज्यादा भीड छँट चुकी थी और भारतीय खिलाड़ी भी अपने-अपने प्रशंसकों से विदा ले रहे थे।

भुवन ने स्टीवेन्सन की बात सुनकर कहा, "चलिए, पहले आप लोगों को छोड आऊँ, उसके बाद हम लोग अहमद के यहाँ चले जायेंगे।"

स्टीवेन्सन ने उत्तर दिया, "हम लोगो ने दिन-भर के लिए टैक्सी की थी। वह तारघर से यहाँ तक हमारे पीछे-पीछे आयी है और बाहर खडी है। हम लोग उसी से चले जायेंगे।" फिर वह दोनो भुवन से विदा लेकर बाहर चले गये।

जब भुवन उन लोगों के चले जाने के बाद नीहारिका के फाटक की ओर बढ रहा था तभी मिसेज डेनियल और कान्ति मिश्रा उस भीड़ से निकल कर उसके पास आयी।

मिसेज़ डेनियल ने कहा, "सिनहा साहब आप जा रहे हैं। आपके पास तो कोई कार होगी। आप कृपा कर हम दोनो को रास्ते मे छोड दीजिए।

भुवन ने कहा, "शौक से, हम लोग तो अब जा ही रहे है आप दोनों भी चलिए।"

जब वह दोनों भुवन के साथ चलने लगी तब उन्हें देखकर कुछ दूर पर खडे विष्णुदत्त ने पास आकर कहा, "यह कैसे हो सकता है मिसेज़ डेनियल आप तो ठहरिये। मैं आपके वापस जाने का इन्तजाम कर दूंगा और कान्ति जी आप भी ठहरिये। असली आयोजन तो अब शुरू होगा। फिर यहाँ प्रदेश के शिक्षा सचिव हरिशंकर गुप्ता भी आये हुए हैं। आप

दोनों ठहरें और उनसे भी मुलाक़ात करें।"

विष्णुदत्त की बात सुनकर वह दोनों ठिठक गयी। मिसेज़ डेनियल ने कहा, "आप चलें, सिनहा साहब हम लोग तो विष्णुदत्त जी का हुक्म टाल नहीं सकतीं।"

विष्णुदत्त ने कहा, "इसमें हुक्म की क्या बात है मिसेज़ डेनियल, आपसे इतने दिनों के बाद मुलाकात हुई है। इसलिए आप से दरख्वास्त है कि आप ठहरें और आप की यह सहेली कान्ति जी भी तो हैं। मैं तो इसलिए कह रहा हूँ कि आप दोनों को शिक्षा सचिव से काम पड़ सकता है, उनसे इस तरह से मिलने का मौका फिर कब मिलेगा?"

तब तक प्रदेश के शिक्षा सचिव हरिशंकर गुप्ता भी आ गये और विष्णुदत्त ने मिसेज़ डेनियल तथा कान्ति मिश्रा का हरिशंकर गुप्ता से परिचय कराया। फिर वह सबके साथ बंगले के पीछे वाले लॉन की तरफ़ चला गया। भुवन जब कृष्णास्वामी और मरचा के साथ फाटक की ओर बढ़ा तो उसने देखा कि शंकरदत्त की लड़की चाँदनी ने असारी का हाथ पकड़ लिया था और कह रही थी, "देखिये मिस्टर असारी लौट आइयेगा, यहाँ डांस भी होगा और मैं आपके साथ नाचूंगी।"

रास्ते में अनेक ऐसे जोड़े एक-दूसरे से ठहरने या लौट आने का अनुरोध कर रहे थे। शहनाई पर बजती रागिनी की मन्द मादकता तथा धुंधली नीली रोशनी में स्पष्ट न दिखाई देने वाले, स्त्री-पुरुषों के, जगह-जगह खड़े जोड़ों की पारस्परिक आकुलता ने छोटे-छोटे पेड़ों के झुरमुटों, तरह-तरह की लताओं और खूबसूरत फूलों के पौधों से भरे उस लम्बे-चौड़े मखमली घास के मैदान को एक ऐसा अनोखा अभिसार-कानन बना दिया था जहाँ प्रेमाभिनय और प्रणय-निवेदन के सभी प्रेरक तत्त्व विद्यमान थे और हर ओर मादकता के निर्झर स्वतः संचारित हो रहे थे।

वहाँ एकत्रित विशिष्ट स्त्री-पुरुष, क्रिकेट के कुशल खिलाड़ियों की भाँति ही अपने जीवन में संपालन तथा क्षेपण में चतुर थे। वह अनायास अपने सामने आने वाले प्रत्येक अवसर को अपनी संपुटि में समेट लेने में इतने समर्थ थे कि उनके हाथ से किसी को उज्जीवन मिलना प्रायः असम्भव था।

जगह-जगह पर नवयुवकों तथा नवयौवनाओं के जोड़े अथवा एक ही भाव में रगे आपस मे सिमटे हुए थोडी-थोड़ी दूर पर एकत्रित स्त्री-पुरुषों के भिन्न-भिन्न समूह रात के आयोजन मे अनिमन्त्रित व्यक्तियों के जाने का इन्तजार कर रहे थे जिससे वह स्वच्छन्द होकर बगले के पीछे वाले मैदान को, एक ऐसी सर्वथा नवीन मनोभूमि मे परिवर्तित कर दें जहाँ वह कम-से-कम अपनी रस-भरी बातो से, नर और नारी के आदिम खेल में यामिक और क्षेप्ता की काल्पनिक भूमिका तो अदा कर सके ।

धीरे-धीरे विभिन्न स्त्री-पुरुषों के जोड़े आपसी चयन के बाद, साथ होकर बंगले के पीछे वाले लॉन की तरफ बढने लगे और दूसरे लोग भीड़ से अलग होकर फाटक की ओर बाहर जाने लगे। बाहर जाने वाले स्त्री-पुरुषों की भीड़ मे श्याममनोहर कानोडिया भुवन के आगे-आगे चल रहा था।

उसे देखकर भुवन ने पूछा, "श्याम बाबू आप अकेले कैसे है ? क्या यहाँ आगामी प्रोग्राम के लिए ठहरने का इरादा नही है ?"

श्याम कानोडिया ने उस धुँधलके मे भुवन को पहचान कर उत्तर दिया, "क्या बताऊँ सिनहा साहब, इस बार आपकी मिसेज शाह ने बडा धोखा दिया। उसने आज रात के प्रोग्राम मे मेरे साथ यहाँ रहने का वादा किया था, पर जब अजरा ने उसे आज रात को सरकिट हाउस में खाने का निमन्त्रण दिया तो वह फौरन वहाँ जाने को तैयार हो गयी और यहाँ आने तक से इन्कार कर दिया। उसे घर पर ही छोड़कर मुझे यहाँ अकेले आना पडा क्योंकि मुझे तो इसी शहर मे रहना है। मैं शकुन्दत्त के निमन्त्रण को अस्वीकार नही कर सकता था।"

भुवन ने पूछा, "तो क्या मिसेज शाह, अहमद के यहाँ पहुँच गयी होगी ?"

श्याम कानोडिया ने उत्तर दिया, "अभी वह कहाँ जाएँगी, अभी तो वह तैयार हो रही होगी। आप तो शायद जानते ही होंगे कि ऐसी पार्टियों मे जाने के लिए तैयार होने में उन्हें घंटों लगते हैं।"

"ऐसा क्यो, पहले तो वह साज-शृङ्गार की ओर ज्यादा ध्यान नही देती थी।"—भुवन ने कहा।

"वह जमाना और होगा। अब तो वह अपने सिर पर जहाँ-तहाँ सफेद झलकने वाले बालों पर चुन-चुनकर काली पेंसिल फेरती हैं। जाने के लिए तैयार होने से पहले वह कम-से-कम आध घंटे अपने मुँह को बार-बार ठण्डे-गरम पानी में भीगे तौलिये से दाबती हैं और फिर चेहरे को भाप देती हैं। इसके बाद कम-से-कम पन्द्रह मिनट तक एक गुलाबी क्रीम पोत कर बैठी रहती हैं। नाखूनों पर पालिश, उँगलियों और बाहों तथा पेट और पीठ पर तरह-तरह के अलग-अलग लोशन लगाती हैं और ईश्वर जाने क्या क्या उपचार करती हैं।

"अच्छा!" भुवन ने आश्चर्य से कहा।

"और क्या"—श्याम कानोडिया ने हँसकर कहा, "मगर जो कुछ भी करती है खूब करती हैं, क्योंकि जब वह सज-धज कर निकलती है तो गजब ढाती है और ऐसा लगता है कि वह अपनी उम्र के दस वर्ष अपने शृङ्गारदान में बन्द कर आई है। आज तो वह और ज्यादा तैयारी में लगी है, क्योंकि वह अपने लड़के असगर की शादी की बात फिर करना चाहती है।" श्याम कानोडिया ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, "आपको तो मालूम होगा?"

"हाँ, हालूम तो है, पर अहमद का तो अभी अज़रा की शादी का कोई इरादा नहीं है। उसका ख़याल है कि अज़रा अभी बहुत छोटी है।"

"छोटी तो क्या? पर अहमद साहब अब मिसेज शाह के लडके से अज़रा की शादी करना ही नहीं चाहते होंगे। और, फिर सिनहा साहब मैं कहता हूँ कि कौन ऐसी औरत के लड़के को अपनी लडकी देना चाहेगा। ऊँचे मुसलमान खानदान की औरत थी। अपने नवाब पति से तलाक लेकर किसी हिन्दू के साथ बरसों बम्बई में रही और अब उसको छोड़कर इस नये शाह के साथ रह रही है जिसके मुसलमान बाप-दादे बरसों हुए ईसाई हो गये।"

श्याम कानोडिया की इस बात पर भुवन ने ... से उसकी ओर देखा। सब कुछ जानते हुए भी जो श्याम ... शाह के सामने असीम श्रद्धा और भक्ति से झुक ... प्रति इतना अनुदार होकर उस पर लाछन लगा र

"आप तो ऐसा न कहिए श्याम बाबू, विजय पार्क में तो आप उनके प्रति बड़ा आदर दिखा रहे थे और फिर कनकपुर मे तो वह आपकी अतिथि है और आपके ही सहारे यहाँ ठहरी भी है।"

"आदर दिखाना और बात है, सिनहा साहब, और आदर करना और बात है।" जिन्दगी का यह सिद्धान्त स्पष्ट कर श्याम मनोहर कानोडिया भुवन को नमस्कार कर अपनी गाडी की ओर बढा।

भुवन को श्याम कानोडिया की बात से सांसारिक सफलता का एक नया मंत्र ज्ञात हुआ और यह भी ध्यान आया कि वह स्वयं क्यों अपने जीवन मे इतना असफल रहा है। उसकी संसार-बुद्धि की कमी की तो यह हालत थी कि जो बात उसके दिल मे उठती थी वह खुद-बखुद जबान पर आ जाती थी और अक्सर कोई बनी-बनायी बात बिगड़ जाती थी।

मन-ही-मन उसने श्याम कानोडिया की प्रशंसा करते हुए कहा, "लेकिन अलबर्ट साहब और कमल किशोरजी का तो ऐसा खयाल नही मालूम पडता। यह दोनो तो उसकी बडी इज्जत कर रहे थे।"

श्याम कानोडिया ने हँसकर कहा, "वह मुझसे ज्यादा होशियार हैं इसलिए मुझसे अधिक आदर और सम्मान दिखा रहे थे। आप कभी मिसेज शाह की अनुपस्थिति मे उसके बारे मे उन लोगो की राय सुनें तो आपको पता चलेगा कि वह लोग भी कितना दिखावा करते हैं।"

"लेकिन इन लोगों को दिखावे की क्या जरूरत है ? यह दोनों तो इतने समर्थ हैं कि जिसे नापसद करें उससे कोई नाता ही न रखे।"

"दुनिया मे हर व्यक्ति या हर बात आपकी पसंद की नहीं हो सकती, सिनहा साहब ! संपर्क में आने पर आपको साधारण निभाव तो करना ही पड़ेगा। शिष्टाचार के नाते नम्र होकर दूसरे के प्रति कुछ आदर दर्शाने मे आपकी कोई हानि नही हो सकती और इस सर्वमान्य सिद्धान्त के प्रतिकूल व्यवहार करने मे आप अनावश्यक मानसिक तनावो में उलझ जायेंगे। अलबर्ट साहब और कमल किशोर दोनों ऐसे तनावों से दूर ही रहना पसंद करते हैं।" यह कहते हुए श्याम कानोडिया भुवन से विदा लेकर चला गया।

जब भुवन अहमद की कार मे बैठा तब उसके साथ कृष्णास्वामी और

भरुचा ही रह गये थे।

मोटर में बैठने के बाद कृष्णास्वामी ने सुबन से कहा, "हम दोनों भी भारतीय टीम के होटल में उतर जायेंगे। अब वहाँ टीम के मैनेजर और दूसरे सदस्य पहुँच गये होंगे। हम लोगों को भारतीय टीम के प्रारंभिक गेंददाज रघुनाथ की हालत का पता लगाना पड़ेगा। और यह देखना पड़ेगा कि वह कल के अवकाश के बाद परसों खेल सकेगा या नहीं।"

भरुचा ने बात बढ़ाते हुए कहा, "अगर रघुनाथ की तबीयत खराब रही तो भारतीय टीम में उसकी जगह किसी दूसरे गेंददाज को स्थान देना पड़ेगा और मेरा खयाल है कि टीम के चयनकर्ता पुराने गोलंदाज विनायक को ही खेलने के लिये पुनः निमंत्रित करेंगे।"

कृष्णास्वामी ने कहा, "सिनहा तुम अपने दोस्त अहमद साहब से हमारी तरफ़ से माफ़ी माँग लेना। हम लोगों के लिए रघुनाथ की हालत का पता लगाकर अपने अखबार को तार देना ज़रूरी है, उसकी गेंददाजी पर भारतीय टीम को बड़ा भरोसा है।"

खिलाड़ियों के खेल

जब भुवन सरकिट हाउस पहुँचा उस समय शाम के साढ़े सात बजे थे। चेतनसिंह और खन्ना सरकिट हाउस के पोर्टिको से मिले बरामदे में टहलते हुए आपस में बातें कर रहे थे।

उन दोनों ने आगे बढ़कर भुवन से हाथ मिलाया और पूछा, "आपके दोस्त लोग कहाँ हैं?"

भुवन ने बताया, "उन लोगों को पहले मालूम नहीं था, इसलिए वह लोग दूसरे कामों में उलझे होने के कारण नहीं आ सके हैं।'

खन्ना भुवन को सरकिट हाउस के पिछले भाग में वहाँ तक पहुँचा आया जहाँ अहमद ठहरा हुआ था। सरकिट हाउस का वह बड़ा कमरा अतिथि कक्ष की तरह सजाया गया था और उसके बाहर बरामदे में खाने की मेज लगी थी।

भुवन के पहुँचते ही लॉन में टहलता हुआ अहमद अन्दर आ गया और उसके साथ टहलने वाले वीरेन्द्र कुमार तथा कृष्णकान्त भी अन्दर आ गये।

अहमद ने भुवन का दोनों से परिचय कराने के उद्देश्य से कहा, 'भुवन, मेरे इन दो मित्रों से मिलो, यह'''

अहमद की बात काटते हुए वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "सिनहा साहब से हम लोगों की आज मुलाकात हो चुकी है। दोपहर में इनके साथ ही तो मिसेज शाह से भी मुलाक़ात हुई थी।"

अहमद ने सबसे बैठने का अनुरोध करते हुए कहा, "अउरा पर तो

मिसेज शाह ने जैसे कोई जादू कर दिया है। वह दिन-भर उसकी प्रशंसा के पुल बाँधती रही, और मुझसे पूछे बगैर ही उसे आज शाम को मेरी तरफ से यहाँ खाने का निमन्त्रण भी दे आयी है।" फिर अहमद ने अपनी बात रोककर बेयरे को ड्रिंक्स लाने का हुक्म दिया और वीरेन्द्र कुमार तथा कृष्णकान्त से कहा, "मैं तो बड़े असमंजस में था कि पता नहीं आप दोनों को मिसेज शाह का आना पसन्द आयेगा कि नहीं।"

कृष्णकान्त ने कहा, "ऐसी कोई बात नहीं है, हम लोगों की उससे दोपहर में मुलाकात हो गयी थी और जाहिरा तौर पर तो वह बड़ी कायदे की औरत है।"

वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "दोपहर में जैसा कुछ उसे देखा है उससे तो लगता है कि वह शाम के लिए बड़ी अच्छी संगत दे सकती है। पहले तो वह लखनऊ में ही रहती थी। हम लोग तो थोड़ी ही देर के लिए यहाँ हैं फिर हमें शंकर दत्त के यहाँ जाना है।"

अहमद ने राहत की साँस लेकर कहा, "भुवनेश्वर की तो कोई बात नहीं है, वह तो उसे पहले से जानता है। पर खुदा का शुक्र है कि आप दोनों को उसके आने पर कोई एतराज नहीं है, वरना मैं तो बहुत डर रहा था कि बरसों बाद हम लोगों की यह मुलाकात उसकी मौजूदगी की वजह से बेमजा न हो जाए।"

भुवन ने अहमद से कहा, "मुझे यहाँ आने से पहले पता चला है कि तुमसे मिलने के लिए बड़ी उत्सुक है। अजरा के दिये हुए निमंत्रण को तुम्हारा निमन्त्रण समझकर वह बहुत खुश है। उसने आज रात को सेठ शंकरदत्त के यहाँ भारतीय टीम के स्वागत में किये गए संगीत के प्रोग्राम के निमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया है।" फिर उसने पूछा, "तुमने और किस को बुलाया है। अज़रा ने तार-घर में मेरे दूसरे साथियों को भी निमन्त्रण दिया था पर वह तो काम में फँसे होने के कारण नहीं आ सके और तुमसे माफी माँगी है।"

अहमद ने कहा, "मैंने तो कोई खास इन्तजाम किया नहीं है। अलबर्ट से आने को कहा था, वह आता ही होगा। पर यह मैं नहीं जानता कि अजरा ने अपनी आन्टी शाह के अलावा और किसको किसको बुला लिया

है। वीरेन्द्र कुमार और कृष्णकान्त तो यहाँ सरकिट हाउस में ही दूसरी तरफ ठहरे है। मैंने सोचा हम लोग साथ ही खाना खा लेंगे इसलिए इनमे भी कहला दिया था। पर यह तो थोड़ी ही देर बाद शंकरदत्त के यहाँ चले जाएँगे।"

वीरेन्द्र कुमार ने पूछा, "तुम्हें मिसेज शाह से ऐसी क्या परेशानी है, मुझे तो वह ठीक ही लगी और खुशी है कि वह आ रही है।" फिर उसने कृष्णकान्त की तरफ़ देखकर कहा, "क्यो कृष्णकान्त तुम्हारी क्या राय है?"

कृष्णकान्त ने उत्तर दिया, "यह तो बहुत अच्छा है कि कम-से-कम आज अहमद की एक सूनी विधुर-संध्या मे उसकी उपस्थिति से कुछ रंगीनी आ जाएगी और फिर वह क्रिकेट के खेल की तो बड़ी जानकार है, उससे आज के खेल की बातें भी की जा सकती हैं।'

बेयरा चार गिलासो मे ह्विस्की ले आया था और उसने एक-एक गिलास सबके सामने रखकर सब गिलासो मे थोडा-थोड़ा सोडा डाल दिया था।

अहमद ने अपना गिलास उठाकर कहा, "अगर आप सब लोग उसके आने से खुश हैं तो फिर आइये हम सब यह जाम नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम की सेहत के लिए पियें।"

सबने गिलास अपने होंठों से लगाकर एक-एक घूंट शराब पी। वीरेन्द्र कुमार ने पूछा, "यार अहमद, यह नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम कौन है?"

अहमद ने ठहाका लगाया और कहा, "मिसेज शाह के गुण गाते हो और यह भी नही जानते कि नवाबजादी कमरुन्निसा कौन है! असल में तुम्हारा मन जीत लेने वाली मिसेज शाह ही वह नवाबजादी क़मरुन्निसा बेगम है जो दस बरस पहले लखनऊ फतह कर बम्बई-विजय के लिए मिसेज सत्येन्द्र कौशल बनकर वहाँ चली गयी थी, और अब इस टैस्ट मे कनकपुर के विजय पार्क पर छायी हुई है।"

"यह राज तो हमें नही मालूम, जरा हम लोगों को भी तो बताओ यह क्या माजरा है?" कृष्णकान्त ने पूछा।

अहमद ने नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम की जिन्दगी की कहानी बताकर कहा, "तुम्ही बताओ कृष्णकान्त क्या मैं अज़रा की शादी नवाब नसीर और नवाबजादी कमरुन्निसा के बेटे असग़र से कर सकता हूँ।"

"लडका तो ठीक है पर नवाबजादी की ज़िन्दगी को देखते हुए तो सोचना ही पड़ेगा।" वीरेन्द्रकुमार ने अपनी राय दी।

कृष्णकान्त ने ज़ोर देकर कहा, "मैं तो कहता हूँ अभी अज़रा की उम्र ही क्या है। सीनियर कैम्ब्रिज ही तो पास किया है। अभी तो शादी की बात भी उठाना गुनाह है, वह भी ऐसे लड़के से जिसकी माँ ने सामाजिक मान्यता को चूर-चूर कर दिया हो।"

उन दोनों की राय जानने के बाद अहमद ने भुवन से पूछा, "तुम क्या कहते हो भुवनेश्वर? तुम तो नवाबजादी कमर को हम लोगों से ज्यादा जानते हो।"

भुवन ने उत्तर दिया, "भाई अहमद मैं अज़रा की शादी की बात नहीं करता। उसकी उम्र अभी कम है। मैं तो चाहूँगा कि वह कुछ और बड़ी होकर हम-उम्र लड़कों से मिले-जुले और अपना जीवन-साथी स्वयं चुन ले फिर चाहे वह असगर ही हो। यही आजकल की रोशनी का तकाजा है। मेरे विचार से अज़रा भी यही पसंद करेगी। फिलहाल तुम्हें उसकी शादी की फिक्र ही नहीं करनी चाहिये।"

अहमद कुछ और कहता पर तभी चेतनसिंह और खन्ना कमलिनी को साथ लेकर वहाँ आ गये।

कमलिनी के आते ही सब खड़े हो गये और अहमद ने कहा, "बड़ी उम्र है आपकी, हम लोग आपकी ही बातें कर रहे थे नवाबजादी साहिबा।"

इससे पहले कि कमलिनी कुछ कहती खन्ना और चेतनसिंह अहमद से इजाजत लेकर सरकिट हाउस के दूसरे हिस्से की तरफ चले गये। जाहिर था कि वह दोनों सरकिट हाउस में उपस्थित रहते हुए भी अहमद के आमोद-प्रमोद के समय ज़रा दूर रहना ही उचित समझते थे। उनके जाने के बाद वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "बात ही नहीं, हम लोग तो यह जाम आपकी ही सेहत के लिए पी रहे हैं।"

कमलिनी ने हँसकर कहा, "बहुत-बहुत शुक्रिया, कि नियाज भाई और आप लोग मुझ जैसी नाचीज पर इतने मेहरबान हैं।" फिर उसने अहमद की तरफ़ घूमकर कहा, "नियाज भाई मुझे तो यह उम्मीद ही नहीं थी कि तुम कभी सपने में भी मुझे याद करोगे। इसलिये जब अजरा ने यहाँ आने के लिये तुम्हारा दावतनामा दिया तब पहले तो मुझे यकीन ही नहीं हुआ और जब अजरा के बार-बार कहने से उसकी बात पर कुछ इत्मीनान हुआ कि तुमने सचमुच मुझे याद किया है तो मैं तुमसे बयान नहीं कर सकती कि मुझे कितनी खुशी हुई। मगर वह खुशी ज्यादा देर तक न ठहर सकी क्योंकि मरहूम शाहिदा की याद आ गयी और दिल उदास हो गया। तुमसे मिलने की खुशी, और शाहिदा की याद से रंज, इन दोनों की रस्साकशी ने कुछ देर तक तो मेरा बुरा हाल कर दिया।"

"बुरा हाल हो आपके दुश्मनों का,"—कहते हुए अलबर्ट ने उस अतिथि-कक्ष में प्रवेश किया, "मगर आप सब खड़े क्यों हैं, मिसेज शाह क्या आपने इन लोगों को इनकी किसी गुस्ताखी की सजा दी है।"

"आइये आइये अलबर्ट साहब,"—अहमद ने अपना गिलास रख कर अलबर्ट का स्वागत किया और कमलिनी से बैठने का अनुरोध करते हुए कहा, "बैठो क़मर, तुम्हारी वजह से ही सब खड़े हैं।"

जब सब लोग बैठ गये और अलबर्ट के लिये भी व्हिस्की का गिलास आ गया, तब अहमद ने कमलिनी से कहा, "तुम भी कुछ पियोगी कमर? यहाँ व्हिस्की के अलावा पोर्ट वाइन भी है।"

"नहीं मैं भी थोड़ी सी व्हिस्की ही पिऊँगी,"—कमलिनी ने खुलते हुए कहा, "आज का दिन बड़ा मुबारक है। दोपहर में अजरा से मिल कर और इस शाम को तुमसे मिलकर मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरी ज़िन्दगी की रूठी हुई खुशियाँ जो बरसों हुए मुझसे मुँह मोड़ गयी थीं आज फिर अपनी नाराजगी भूलकर वापस लौट रही है। मैं भी उनकी वापसी की खुशी में थोड़ी सी ह्विस्की पिऊँगी।" फिर उसने बेयरा के लाये हुए व्हिस्की और सोडा के गिलास को उठाकर कहा, "यह जाम हम अजरा के मुस्तकबिल की कामयाबी के लिए पियें, खुदा करे कि उसके अब्रुओं पर कभी परेशानी का साया भी न पड़े।"

था। उसके गले में पड़ा फ़ीरोज़ा चोकर, उसी रंग के कानो के बूंदें और सिर्फ दाहिनी कलाई में पड़ी उसी रंग की चूड़ियों का मुखर हास्य उसकी देहगंध को उमगा कर, सभी उपस्थित लोगों को बता रहा था कि सतत् आगे बढ़ने वाले जिस समय-क्रम को एक क्षण के लिए भी रोकना किसी के लिए संभव नही होता, वह पीठ-खुली-चोली से दोनो ओर निकली हुई नंगी बाहों की नरमाई में खो जाने की आकाँक्षा मात्र से स्वयं ही कैसे थमकर वक्ष के नीचे नाभि तक खुले पेट की गुदाज गहराइयों मे विलीन हो जाता है।

शृङ्गार-दक्ष कमलिनी ने काजल से अपनी आँखो की कोरों को कनपटी तक खींच दिया था। घने बालो को घुमाकर उसने अपनी आयु को अपने उस ऊँचे जूडे मे बंदी कर दिया था जिसके ऊपर कानोडिया-कानन का एक अलभ्य आसमानी गुलाब खिला हुआ था। समय को समेटकर, और अपने सौंदर्य को निखार कर; अपनी उम्र को बटोरे हुए कमलिनी अब भी किसके इन्तजार मे थी यह कहना तो मुश्किल था पर उसकी निगाहों की गहराइयों को देखकर यह अवश्य कहा जा सकता था कि वह उस समय भी कुछ खोज रही थी।

कमलिनी ने सिर्फ हँसकर इतना कुछ एक साथ कह दिया था कि सब खामोश होकर उसे देखते ही रह गये।

कुछ देर ख़ामोशी के बाद जब कमलिनी ने देखा कि उसने अपना मनवांछित प्रभाव उत्पन्न कर लिया है तब उसने पूछा, "नियाज भाई, अजरा कहाँ है ?"

"अजरा तो मैच खत्म होने के बाद ही शाम को सेठ शंकरदत्त द्वारा दोनों टीमो के स्वागत में दिये गये एटहोम मे चली गयी थी। उसने कहा था कि उसके बाद वह अपनी सहेली सईदा के यहाँ उसकी सालगिरह मे जायगी। वहाँ से या तो वह किसी की कार में स्वयं यहाँ आ जायगी या फिर टेलीफ़ोन कर गाड़ी मँगा लेगी। अभी तक तो उसका टेलीफ़ोन आया नही है, मेरा ख़याल है कि वह आती ही होगी"—अहमद ने जवाब दिया।

कमलिनी ने कहा, "माशाल्लाह, अब तो अजरा जवान हो रही है।

आज बरसों बाद उसे देखकर मेरी आँखें सिक गयी।"

कृष्णकान्त ने कहा, "मिसेज शाह, माफ़ कीजियेगा मैं आपकी साड़ी पर बनी इन नागिनों से नज़र नही हटा पा रहा हूँ। ग़ज़ब का डिजाइन है।"

वीरेन्द्रकुमार ने कहा, "मिसेज़ शाह, यह लगता है कि कुंडली मारे बैठी हुई यह नागिनें अभी अपनी कुंडली के घेरे से निकल कर किसी से लिपट कर उसे डस लेंगी। पर जिस किसे भी यह डसेंगी वह भाग्यशाली ही होगा, क्योंकि इन नागिनों के लावण्य को देख कर ऐसा लगता है कि इनके दाँतो मे ज़हर नही अमृत है।"

कमलिनी ने हँसकर उत्तर दिया, "आप इन्हें गलत समझ रहे हैं। यह तो अपने चारों ओर खिंचे हुए घेरों में बंद हैं। यह घेरे भी इसी बात को ज़ाहिर करते है कि यह उसमें हमेशा-हमेशा के लिए कैद रहेगी।"

भुवन अब तक चुप था। उसने पूछा, "फिर इन घेरों में बंद कुंडली मारे बैठी हुई नागिनों का क्या मकसद है? जाहिर है कि यह डिज़ाइन आपने खुद ही तजवीज किया होगा। ऐसा डिज़ाइन बाजार मे तो मिल नही सकता।"

कमलिनी ने जवाब दिया, "आप ठीक कहते हैं भुवन भाई, यह डिज़ाइन मैंने खुद ही सोचकर बनवाया है। घेरे में बंद होने के कारण यह नागिनें किसी और को तो डस नही सकतीं। यह तो मेरी ही वह खलिशें हैं जिन्होने कही मेरे अंदर ही घर कर लिया है और इन नागिनों की तरह कुंडली मार कर अपने उस घेरे मे बैठ गयी हैं जहाँ से वह भीतर ही भीतर मुझे ही डसती रहती हैं।"

भुवन को छोड़कर बाकी सब कमलिनी की बात सुनकर ताज्जुब मे पड गये क्योंकि कमलिनी को देखकर और उसके बारे मे कही जानेवाली कुछ थोडी बहुत बातों को सुनकर सबने यह नतीजा निकाल लिया था कि कमलिनी की जिन्दगी सुख-चैन से भरी हुई है और वह हर तरह से चिन्ता-मुक्त है।

कृष्णकान्त ने बात बदलते हुए कहा, "मिसेज़ शाह, आज हम लोगों का दिल, दिन-भर विट्ठल की बल्लेबाज़ी का कमाल देखकर उछलता रहा

है और हम लोग परसों होने वाले खेल की संभावनाओं के बारे में आपकी राय जानने के लिए उत्सुक है।"

अलबर्ट ने भी बात जोड़ी, "हाँ, मिसेज शाह आप तो कहती थीं कि यह मैच ड्रॉ रहेगा पर अब चार सौ बयालीस रन के इतने बड़े स्कोर के बाद तो भारतीय टीम जीत भी सकती है।"

कमलिनी ने उत्तर दिया, "मैच तो ड्रा ही रहेगा, क्योंकि भारतीय खिलाड़ियों ने इस मैच को जीतने का अवसर कल ही खो दिया था। कल इनका स्कोर इतना धीमा था कि सारा खेल ही बेजान हो गया। हमेशा की तरह कल भी भारतीय टीम मौके का फायदा नहीं उठा पायी। वह अपने लिए मौजू विकेट पर भी बचाव का खेल खेलती रही। अब समय की कमी से उसका इतना बड़ा स्कोर भी सिर्फ एक ऐसा खोखला ढोल साबित होगा जिसे आप परसों खेल शुरू होने तक बजाकर अपना मन खुश कर सकते हैं, पर आखिर में इससे कोई फायदा नहीं हो सकता। आप तो जानते ही हैं नियाज भाई, जिन्दगी की तरह क्रिकेट में भी आरम्भ ही अधिक महत्त्वपूर्ण होता है, जो टीम शुरू में मिले मौके से फ़ायदा नहीं उठाती वह मौके पर चूक जाने वाले इन्सान की तरह अंत तक लड़खड़ाती रहती है, उसका अधिक-से-अधिक प्रयास भी प्रायः निष्फल ही होता है। वक़्त की कमी की वजह से इस मैच में भारतीय टीम का भी यही हाल होगा।"

अहमद ने कहा, "अब क्रिकेट तो मैं ज्यादा जानता नहीं, हाँ जो बात तुमने जिन्दगी के बारे में कही है उसे मैं ठीक समझता हूँ। जो लोग शुरू में ही मिले अवसर का पूरा लाभ उठाकर आगे निकल जाते हैं उन्हें फिर मुड़कर यह देखने की जरूरत नहीं रहती कि उनके पीछे भीड़ में कौन-कौन आ रहा है और वह आखिर तक आगे ही बने रहते हैं, बशर्ते ठोकर खाकर गिर न पड़ें।"

वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "मगर भाई अहमद, इस दुनिया में हारी हुई बाजी जीतने वालों की भी कमी नहीं है।"

कमलिनी ने जवाब दिया, "ऐसे लोग बिरले ही होते हैं। फिर जो लोग शुरू में सही प्रारम्भ न करने के बावजूद भी आखिर में बाजी जीतने

हैं उनकी बड़ी-से-बड़ी कामयाबी भी उनकी असली लियाकत के माकूल नहीं होती।"

इसी समय खन्ना ने अंदर आकर अहमद को सलाम कर कहा, "अजरा बीबी का टेलीफोन आया है कि वह विदेशी टीम के निवास स्थान 'गोल्डन ओक' वाले बंगले जा रही हैं और वहाँ से वह खुद आ जाएँगी।"

अहमद ने खन्ना की बात सुनकर कमलिनी की तरफ देखकर कहा, "कमर मैं तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूँ कि तुमने अजरा को भारतीय टीम के सब खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ इतनी आसानी से दिलवा दिये। इन ऑटोग्राफ्स के लिए वह दो रोज से दोनों टीमों के आस-पास चक्कर लगा रही थी।"

कमलिनी ने पूछा, "अजरा गोल्डन ओक क्यों गयी है? मैंने तो उसकी ऑटोग्राफ बुक पर विदेशी टीम के सदस्यों के दस्तखत भी देखे थे।"

अहमद ने उत्तर दिया, "अभी उसे विदेशी टीम के सब खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ़ नहीं मिले हैं। दो-तीन विदेशी खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ लेने बाकी हैं, शायद वह इसीलिए गोल्डन ओक चली गयी है।"

वीरेन्द्र कुमार ने कहा, "मगर भाई अहमद, वह वहाँ इतनी दूर किसके साथ गयी है, ऐसे मौकों पर उसके साथ कोई इत्मीनान का आदमी होना बहुत जरूरी है।"

अहमद ने उत्तर दिया, "यही तो मुश्किल है, वह गयी तो अपनी गाड़ी से थी पर फिर ड्राइवर रामदास को, जो बड़े इत्मीनान का आदमी है, यह कह कर वापस कर दिया कि वह किसी सहेली की गाड़ी से खुद आ जायगी। वह अक्सर यही करती है। मैं पहले कनकपुर में दो बरस रह चुका हूँ इसलिए यहाँ उसकी सहेलियों की कमी नहीं है। वह दिन भर घूमती रहती है। मैं दिन-दिन-भर इंतजार करता हूँ और वह इसी तरह टेलीफ़ोन पर अपनी खबर देती रहती है।"

कमलिनी ने चिन्तित होकर कहा, "निसार भा[illegible] किसी को भेज कर अजरा को वापिस बुलवा लीजिये। कल [illegible] टीम के बाकी सदस्यों के हस्ताक्षर का भी इंतज़ा[illegible]

वीरेन्द्रकुमार और कमलिनी की [illegible]

उसने खन्ना से कहा, "खन्ना तुम शमशाद ड्राइवर के साथ उस हलके के डी० एस० पी० को गोल्डन ग्रोक भेज कर अज़रा को बुलवा लो।"

खन्ना ने कहा, "आप फ़िक्र न करें, मैं गोल्डन ग्रोक के आस-पास घूमने वाली पुलिस वायरलेस वैन को अभी खबर देता हूँ। उस पर तैनात दारोगा अंदर जाकर बीबी को ढूंढकर आपका सदेश दे देगा और उनकी निगरानी भी करेगा। तब तक मैं खुद आपके ड्राइवर शमशाद के साथ वहाँ जाकर अज़रा बीबी को लेकर आता हूँ।"

अहमद की परेशानी को देखकर भुवन ने कहा, "स्टीवेन्सन और वाटर-हाउस भी गोल्डन ग्रोक मे ठहरे है। मैं उन्हे टेलीफ़ोन करता हूँ।"

खन्ना के जाने से अहमद कुछ आश्वस्त हुआ। उसने सबके गिलासों की तरफ देखकर कहा, "अरे आप लोग कुछ पीजिये, यह पहला गिलास भी अभी खाली नही हुआ।"

वीरेन्द्र कुमार और कृष्णकान्त ने अपना गिलास खाली करके कहा, "भाई अहमद, हम लोग अब चलें। हम लोगों को सेठ शंकरदत्त के यहाँ भी जाना है। तुम अपने मेहमानों की खातिर करो।"

अलबर्ट ने भी अपना गिलास खाली कर कहा, "मुझे भी वहाँ जाना है, चलिये मैं भी आप लोगों के साथ ही चलता हूँ।"

अहमद ने उन लोगो से कुछ और ह्विस्की लेने का अनुरोध किया, पर उन तीनों ने यह कर माफी माँग ली कि उन्हें थोड़ी-बहुत ह्विस्की शंकरदत्त के यहाँ भी पीनी पड़ेगी।"

उन तीनों के जाने के बाद, कमलिनी ने अहमद से कहा, "नियाज़ भाई, मेरी पुरानी दरख्वास्त आपके सामने है। आपने अभी तक उस पर कोई गौर नही किया। फिर उसने भुवन की ओर घूमकर कहा, "भुवन भाई, आप ही मेरी सिफारिश कर दें। माशाल्लाह अब अज़रा बड़ी हो गयी है, सीनियर कैम्ब्रिज पास कर चुकी है। उधर असगर भी इस साल अमरीका में रासायनिक इंजीनियरिंग का आखिरी इम्तहान दे रहा है। इम्तहान के बाद वह इंगलैंड जायगा। फिर योरुप घूमकर दो महीने मे यहाँ लौट आयेगा। मैं चाहती हूँ कि उस वक्त अज़रा की शादी असग़र से हो जाय।"

भुवन बराबर 'गोल्डन ग्रोक' टेलीफोन मिलाकर स्टीवेन्सन या वाटर-हाउस से बात करने की कोशिश कर रहा था, पर उसे उस वक्त तक टेलीफोन नही मिल पाया था।

वीरेन्द्र कुमार आदि के जाने के बाद वेयरे ने अहमद और भुवन के गिलासों में ह्विस्की का दूसरा पेग डालकर थोडा सोडा भी मिला दिया था, पर कमलिनी ने अपना गिलास खाली नही किया था। उसने कहा, "मैं एक ही पेग पीती हूँ और ज्यादा नही लूंगी।"

अहमद के इसरार करने पर भी उसने अपनी मजबूरी जाहिर की और कहा, 'मैं तो बहुत कम लेती हूँ पर आज आपसे मिलने की खुशी में आप लोगो का साथ दे दिया है। अब अगर आप मेरी दरख्वास्त मंजूर करें तो मैं इस इस गिलास के खत्म होने के बाद अजरा और असगर की खुशी के लिए एक छोटा-सा जाम और ले लूंगी। इससे ज्यादा मै पी नहीं सकती। बस आपके जवाब की तलबगार हूँ।"

अहमद ने कमलिनी की बात का सीधा जवाब न देकर कहा, "अभी तो अजरा की उम्र सिर्फ सत्रह साल की है।"

कमलिनी ने कहा, "अजरा सत्रह साल पार कर चुकी है, असगर भी तेइस बरस का है। दोनो की उम्र ठीक है और दोनों की जोड़ी भी ठीक रहेगी।"

अहमद ने कहा, "आजकल के ज़माने मे लडके-लडकियाँ खुद-मुख्तार हो रहे हैं और अजरा की राय जाने बगैर मैं क्या कह सकता हूँ।"

कमलिनी ने मुस्कराकर कहा, "आपकी इजाजत हो तो मैं अजरा से भी बात कर सकती हूँ। उसकी मर्जी के खिलाफ कोई बात करने का तो सवाल ही नही उठता।"

इसी समय भुवन को गोल्डन ग्रोक का टेलीफोन मिल गया और वहाँ के केयर-टेकर ने बताया कि विदेशी टीम और उसके साथ आनेवाले संवाददाता कहीं खाना खाने गये है।

गोल्डन ग्रोक से अजरा की कोई खबर न मिलने से और यह जान कर कि विदेशी टीम भी वहाँ नहीं है, अहमद, कमलिनी और भुवन तीनों ही कुछ देर के लिए चुप हो गये।

देशमुख पड़ गया था। वह बेचारी तो अपने भारी बदन के कारण ज्यादा डांस भी नहीं कर सकती पर उसने भी दो बार देशमुख का मन रखने के लिए डांस किया।

"दूसरे डांस में देशमुख ने फर्श पर ही डांस करते-करते मनमोहिनी को कस कर अपने आलिंगन में बांध लिया। फिर शोर मच गया और देशमुख को भी अलग किया गया। पर खुदा का शुक्र है कि देशमुख एक ही बार कहने पर खुद चुपचाप शर्मिन्दा होकर अलग बैठ गया। कुछ भारतीय टीम के सदस्यों ने ऑटोग्राफ मांगने वाली लडकियों से कहा कि वह उन्हें चुम्बन दें तब वह ऑटोग्राफ देंगे। कुछ बेशर्म लडकियों ने अपना गाल आगे कर दिया पर तुम्हारी अजरा की सहेली सलमा ने इस बात पर मेहता के गाल पर एक तमाचा जड दिया।"

बलराज जल्दी-जल्दी टेलीफोन पर बात कर रहा था। उसने अपनी बात काटकर कहा, "लो सतीश भी आ गया। अब तुम बताओ कि तुम कितनी देर में आ रहे हो।"

भुवन ने कहा, "मैं तो आऊँगा नहीं। कृष्णास्वामी को टेलीफोन पर यह खबर बता दूंगा। वह भारतीय टीम के मैनेजर से बात कर सब कुछ पता लगा लेगा और जो मुनासिब समझेगा करेगा।"

उधर सतीश ने बलराज के हाथ से टेलीफोन लेकर भुवन से कहा, "भारतीय टीम के मैनेजर और अलबर्ट साहब भी यहाँ आ गये हैं। इन लोगों का अनुरोध है कि भारतीय टीम के सदस्यों के इस दुर्व्यवहार के बारे में हम लोग कोई खबर न भेजें। बडी बदनामी होगी और शायद मैच ही रोक दिया जाय। तुम्हारी क्या राय है?"

इसके पहले कि भुवन कोई जवाब देता, अलबर्ट ने सतीश से टेलीफोन लेकर भुवन से कहा, "सिनहा साहब, मैं आपसे हाथ जोड़कर दरख्वास्त करता हूँ कि इस मैच को भंग होने से बचा लें। भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने हद दर्जे की बदतमीजी की है। टीम के मैनेजर भी कहते हैं कि जांच के बाद उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायगी। पर यह मामला अन्दरूनी ही रहने दीजिये। इस वक्त तो आप अपने इन दोस्तों को यह खबर भेजने से रोक दीजिये और मेहरबानी करके आप भी इस वारदात के

बारे में कोई खबर न भेजें।"

भुवन ने कहा, "मैं तो यह समझता हूँ कि हम लोगों को अपने-अपने दफ्तर से आये हुए विशेष सवाददाताओं को यह बात बता देनी चाहिए और यह बात उन्ही पर छोड देनी चाहिए कि वह जो मुनासिब समझे, करें।"

अलबर्ट ने कहा, "आप यही करा दीजिये। मैं उन लोगों को समझा लूंगा। वह लोग तो कमोबेश ऐसी बातें हर मैंच मे, हर देश के, हरटैस्ट सेन्टर मे देखते ही रहते हैं और आपस मे ऐसी बातो की चर्चा करने के अलावा इन्हें कुछ अहमियत नहीं देते। लेकिन, इस शहर के अखबार वालो के लिए यह बातें बिलकुल नयी हैं। खुदा का शुक्र है कि इस पार्टी में सिर्फ आपके यह दो दोस्त ही मौजूद थे। इन दोनो को आप राजी कर लें तो हम लोगो की इज्जत बच जायगी क्योंकि इनके अलावा शहर के किसी और अखबारवाले को कोई खबर नही लगेगी। आपकी इस मेहरबानी के लिए हम सब आपके बहुत शुक्रगुजार होंगे, और आप लोग जो खिदमत हमारे लिए तजवीज करेंगे उसे पूरी तरह अंजाम देंगे।"

भुवन ने कहा, "अपनी राय तो मैंने आपको शुरू मे ही बता दी थी। जरा बलराज को फ़ोन दीजिये तो उन दोनों से भी कह दूँ।"

उधर बलराज ने अलबर्ट से फोन लेते ही बड़ी नाराजगी से कहा, "भाई भुवन, यह तो बडे गजब वाली बात है कि पहले तो हमारी टीम के सदस्य शराब पीकर इतनी बदतमीज़ी करें फिर हम लोगों पर ज़ोर डाला जाय कि हम इस खबर को दबा दें और कुछ न छापें।"

भुवन ने कहा, "देखो बलराज! इसमें खबर दबाने के लिए जोर देने की कोई बात तो है नही। यह तो केवल औचित्य की बात है। अगर तुम और सतीश जरूरी समझो तो इस घटना की खबर बनाकर उसे छपने के लिए जरूर भेजो। मैं तो सिर्फ़ अलबर्ट साहब की इस बात से सहमत हूँ कि इसमें सिवाय अपनी टीम की बदनामी के और कुछ हासिल नहीं होना है। खाने-पीने की पार्टियों में इस प्रकार की घटनायें अक्सर हो जाती हैं। इन घटनाओं को गंभीर नही समझा जाता और थोड़ी-बहुत लानत-मलामत करके नज़र-अन्दाज़ कर दिया जाता है। मैं तो समझता

मजबूरियों के दायरे

भुवन ने फोन रख कर अहमद और कमलिनी से कहा, "माफ कीजियेगा, बड़ी देर तक टेलीफ़ोन पर बात करनी पड़ी। बात ही कुछ ऐसी थी।" फिर उसने अहमद और कमलिनी को सेठ शकरदत्त की पार्टी में हुई घटनाओं का फोन पर सुना हुआ पूरा विवरण बताया।

उस पार्टी में हुए वाकयात को सुनकर दोनों हैरत मे पड़ गये।

अहमद ने कहा, "यार गजब है यह क्रिकेट का खेल भी। इसकी आड़ में हर तरह की गैर-मुनासिब बाते होती हैं और हम उन पर परदा डालना अपना फ़र्ज ही नही समझते बल्कि ऐसे नालायक लोगो को हर प्रकार की इज्जत भी देते रहते है।"

कमलिनी ने हँसकर कहा, "नियाज़ भाई आप अब इन दकियानूसी खयालात को छोड दीजिये। जवान-लड़के-लडकियाँ खा-पीकर कुछ बहक जाये, खुशगप्पियाँ करें और अगर कुछ छेड़छाड़ भी हो जाय तो इसकी वजह से क्रिकेट के खेल को ही बुरा समझने की तो कोई ज़रूरत नही है। यह तो हमारा आपका जमाना था कि लड़के-लडकियाँ एक-दूसरे को दूर से देख कर तरसते थे। उनका पास बैठ कर दो बातें करना भी जुर्म समझा जाता था। अब तो यह लोग आजाद है, आपस मे मिलने-जुलने से इन्हें कोई रोक नही सकता। हमारे आपके ज़माने की तो बात अलग थी।"

अहमद ने हँस कर कहा, "हमारे आपके ज़माने मे भी तो ऐसे मर्द-औरतों की कमी नही थी जिन्होने अपने मन के मुताबिक और अपने ज़माने के चलन के खिलाफ अपनी ज़िन्दगी की राह खुद बनायी और जब ज़रूरत

हुई तब उसको बदल भी दिया।"

अहमद की बात को अपने ऊपर व्यंग समझकर कमलिनी ने उत्तर दिया, "नियाज भाई, किसी को बाहरी तौर पर देखकर कोई नतीजा निकालना कभी-कभी सही नहीं होता। आप तो इतने बड़े पुलिस अफसर हैं। आपको तो ऐसे मौके बहुत पड़ते होंगे जब आपको जाँच-पड़ताल के बाद पता चलता होगा कि जाहिरा तौर पर कुसूरवार दिखायी देने वाला आदमी अक्सर बेकुसूर होता है। मेरे बारे में भी लोग यह कह सकते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में मैं दुनिया का खयाल किये बगैर अपने मन-पसंद तरीके से रह रही हूँ, और यह भी सही है कि इस बीच में मैंने अपनी जिन्दगी की राह भी कई बार बदली है। पर क्या यह मुमकिन नहीं कि मुझे यह सब अपनी तबीयत से नहीं बल्कि अपनी मजबूरियों की वजह से करना पड़ा हो?"

"यह तो गजब है कमर, भला मैंने तुम्हें क्या कहा है, और फिर किसी की जिन्दगी के बारे में रायजनी करने वाला मैं कौन हो सकता हूँ।" अहमद ने कहा।

"नहीं, नियाज भाई, इस दुनिया में सबको यह हक हासिल है कि वह हर किसी की जिन्दगी के तौर-तरीके के बारे में राय रखें और वक्त पड़ने पर उसका इजहार भी करें। मेरे मामले में तो कम-से-कम यह हक आपको एक अरसे से मिला हुआ है। जो औरत आपकी बीवी शाहिदा के साथ इतनी मिलती-जुलती रही हो, वह अब कैसे अपनी जिंदगी बसर करती है ? यह जानने का हक तो आपको है ही। फिर उसकी जिन्दगी का तरीका सही है या गलत, यह कहने का हक भी आप रखते है। इसके अलावा इस वक्त मैं अजरा की शादी असगर के साथ करने की बात भी कर रही हूँ, इसलिए आप यह सोचने के हकदार जरूर है कि मैंने अपनी जिन्दगी में क्या मुनासिब और क्या गैर-मुनासिब किया है। मगर मैं इतना जरूर कहना चाहूँगी कि अगर आप मेरी जिन्दगी के अच्छे-बुरे का फैसला करना ही चाहे तो यह फैसला मेरी पूरी दास्तान सुनकर ही कीजियेगा, वरना बेइंसाफ़ी होगी। इसके साथ मैं यह भी कहूँगी कि अगर मेरी पूरी बात सुनने के बाद भी आपको मेरी गलतियों पर यकीन आ ही जाय तो भी मेरे कुसूर की वजह से आप असगर को कुसूरवार

न ठहरायें।"

अहमद कमलिनी की बातें सुनकर पशोपेश में पड गया। वह उसके साथ अच्छे-बुरे की किसी बहस मे नहीं पड़ना चाहता था। उसने कहा, "तुम तो जानती हो क़मर कि मैं तुम्हारी कितनी इज्ज़त करता हूँ, पर इस शादी की बात को तुम कुछ अरसे के लिए टाल दो। जब अज़रा कुछ और बडी हो जायेगी और अपना अच्छा-बुरा आप समझने लगेगी तब उससे बात करके ही मैं इस मामले में कोई फ़ैसला ले सकूँगा। इस वक़्त तो अज़रा के अब तक न आने की वजह से मेरी तबीयत वैसे भी बहुत परेशान है।"

कमलिनी ने कहा, "वह तो ठीक है, मैं भी इस वक़्त उसके न आने से परेशान हूँ और यहां आने की ख़ुशी पर भी पाला पड़ गया है। मन ही मन ख़ुदा से दुआ माँग रही हूँ कि वह जल्दी ही सही-सलामत वापस आ जाय।" फिर उसने कुछ रुक कर कहा, "असारी को चोट लग गयी है, बंबई मे उसकी माँ से मेरा बड़ा मिलना-जुलना है। मैं ज़रा उसके होटल जाकर उसकी ख़बर लेना चाहती हूँ।"

अहमद ने कहा, "खाना खाकर लौटते वक़्त उसके होटल होती हुई चली जाना।"

कमलिनी ने कहा, "नही नियाज भाई, खाना तो मैं अजरा के लौटने के बाद ही खाऊँगी। उसके आने तक मैं असारी को देखकर लौट आऊँगी। तुम भुवन भाई के साथ एक-आध पेग और लो, मुझे ज्यादा देर नही लगेगी।" यह कहती हुई कमलिनी उठ कर खड़ी हो गयी। अहमद भी, उसकी बात मान कर, उसे मोटर तक पहुँचाने के लिए उसके साथ बाहर चला गया।'

भुवन कुछ देर के लिये कमरे में अकेला रह गया था। उसके सामने ह्विस्की का अधभरा गिलास था। अपनी तबीयत के बजाय अपनी मजबूरियों की जिन्दगी जीने की कमलिनी की बात से उसका ध्यान बरबस ही कमलिनी की पिछली जिन्दगी और उससे पिछले दस-पांच वर्षो मे उससे जब-तब हुई बातो की तरफ़ चला गया।

अरसे से कमलिनी को जानते हुए भी भुवन कभी उसे पूरी तरह

समझ नहीं पाया था। हां, उसकी बातों ने भुवन के ऊपर एक गहरा असर डाला था। दुनिया और उस पर अपनी जिन्दगी बसर करने वाले दो-पायों के बारे में कमलिनी की अपनी अलग राय थी जो संसार के बहुत-से जाने-माने सिद्धान्तों के बिलकुल विपरीत थी। सोचने पर उसकी बातें बिलकुल ऊलजलूल लगती थीं पर जब कभी कमलिनी उन बातों को खुद कहती थी तब वही बातें किसी नये अर्थ से अर्थवान होकर बड़ी सही तथा विचारोत्तेजक लगती थीं।

मसलन एक दिन, जब वह कौशल के साथ बंबई में रहती थी, तब उसने कहा था, "इस दुनिया की हर बात मान कर चलने से तो भला-चंगा आदमी भी जल्दी ही पागल हो सकता है। इस दुनिया के मुताबिक तो अगर तुम किसी गलत वजह से कैद में भी डाल दिये जाओ तो तुम्हें कैद से निकलने की कोशिश तक नहीं करनी चाहिए, कानूनन तुम्हें कैद में ही पड़े-पड़े मर जाना चाहिए।"

हुआ यह था कि कौशल के पड़ोस में रहने वाले एक धनाड्य ब्राह्मण परिवार के लड़के की नयी-नयी शादी हुई थी। पढ़ी-लिखी बहू ने ससुराल आकर कुछ महीने बाद ही एक लड़कियों के कॉलेज में नौकरी कर ली थी। फिर वह होस्टल में जाकर रहने लगी थी और ससुराल में रहने से इन्कार कर दिया था।

पास-पड़ोस और परिवार के समझाने-बुझाने का उस पर कोई असर नहीं हुआ था। न उसने अपनी इस अजीब हरकत का किसी को कोई कारण ही बताया था।

सिर्फ कमलिनी से उसने अपने दिल की बात बतायी थी, "मिसेज कौशल," उसने कहा था, "शादी से पहले मेरे जीवन पर एक रहस्यमय रंगीन पर्दा पड़ा हुआ था और मुझे पता नहीं था कि उस रंगीन पर्दे के पीछे क्या है। शादी के पहले यह लगता था कि उस समय तक का जीवन किसी विशिष्ट उपलब्धि के लिए तैयारी मात्र है। उन दिनों मैं सोचती रहती थी कि यह तैयारी ऐसी होनी चाहिए कि अवसर मिलने पर चूक न जाऊं। मैं चाहती थी कि विवाह के बाद जीवन को जो नवीन अर्थ-वत्ता मिले उसको मैं सम्पूर्ण रूप से सार्थक कर सकूं। विवाह के पहले मैं

एक क़ैद में थी और पर उस क़ैद के समय की एक सीमा थी। उसका अन्त ज्ञात था और उस अन्त की प्रतीक्षा में वह क़ैद भी कुछ विशेष कष्टकर नहीं लगती थी, क्योंकि उसमें सिर्फ़ कुछ थोड़ा सिमट कर रहने का बन्धन मात्र था। बन्धन भी इसलिए कि आगे चलकर मैं स्वतन्त्र रूप से खिल सकूँ। उस समय मैं अपनी सीमाओं में रहकर बड़े कुतूहल से अपने सामने पड़े उस रहस्यमय रंगीन पर्दे को देखती रहती थी जो शीघ्र ही उठने वाला था। उस समय जो वर्ष, दिन और घंटे बीतते थे वह किसी समय-कोष में जमा होते मालूम होते थे। प्रति घंटा, प्रति दिन या प्रति वर्ष बीतने पर मुझे सन्तोष होता था कि मेरा समय-योग दिन-प्रति दिन बढ़ता जा रहा है और मैं जीवन के प्रगति-पथ पर निरंतर बढ़ रही हूँ।

"एक दिन जब बड़ी धूम-धाम से और गाजे-बाजे के साथ विवाह के बाद, वह रहस्यमय रंगीन पर्दा उठ गया तो मैंने देखा कि मैं एक ऐसी नयी क़ैद में पहुँच गयी हूँ जिसकी कोई सीमा नहीं है और जहाँ मैं अपनी अन्तिम साँस तक बंद रहूँगी। उस क़ैद में मुझे लगा कि विवाह के पूर्व की मेरी समस्त उपलब्धियाँ निरर्थक हो गयी हैं। पहले तो मेरे ऊपर एक सीमा में रहकर भविष्य के लिए उपयोगी बनने मात्र का बन्धन था पर विवाह के बाद मिली हुई नयी क़ैद में हर क़दम पर चारों ओर एक लक्ष्मण-रेखा खिंची हुई थी।

"मैं दिन-भर बेकार पड़ी रहती थी। नौकर-चाकर घर का सब काम देखते थे। मेरे पतिदेव सवेरे से शाम तक अपने व्यापार में व्यस्त रहते थे। वह सिर्फ़ रात को उस घर में आते थे जहाँ वह अन्य हर प्रकार की सुविधाओं के अतिरिक्त अपने साथ सोने के लिए पत्नी कहलाने वाली एक सुन्दर पढ़ी-लिखी स्त्री भी रखते थे। पढ़ी-लिखी भी इसलिए कि आजकल पढ़ी-लिखी ऐसी पत्नी रखना भी एक फ़ैशन हो गया है जिसकी पढ़ाई-लिखाई का कोई उपयोग न हो। मैं दिन-दिन भर घर की दीवारों में बन्द रहकर इन्तज़ार करती रहती थी। जीवन की जिन उपलब्धियों को मैंने अथक प्रयास कर अपने भविष्य के लिए संजोया था वह सब अर्थहीन हो गयी थीं। समय मेरी उँगलियों से रेत की तरह छनता चला जा

रहा था।

"मैं भूलने लगी कि मैंने कुछ पढ़ा-लिखा भी था। अन्तर में उठने वाले इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था कि मैंने क्यों पढ़ा-लिखा था? मैं बैडमिन्टन में प्रदेश की चैम्पियन थी पर मेरी ससुराल में खेलने की कोई सुविधा मिलना तो दरकिनार, वहाँ खेलना भी बुरा समझा जाता था। विवाह से पहले मुझे गाने-बजाने का शौक था और मैंने उसमें विशेष योग्यता भी प्राप्त की थी, पर विवाह के बाद मैं अपने घर में भी गा-बजा नहीं सकती थी क्योंकि घर के बड़े-बूढ़ों के कानों में मेरे गाने की आवाज़ पड़ने से वह समझते थे कि मैं निर्लज्ज हूँ। मैं ऐसी क़ैद में अधिक दिन रहती तो विक्षिप्त हो जाती। मैंने सोचा कि यदि लक्ष्मण-रेखा को लाँघ कर रावण के साथ ही संसार में व्याप्त उन्मुक्त आकाश को देखा जा सकता है तो यही सही, और मैं घर छोड़कर चली आयी। अब मैं भविष्य के प्रति फिर प्रतीक्षा-रत हूँ, चाहे उस भविष्य के परदे के पीछे का अज्ञात कैसा भी भला-बुरा क्यों न हो।"

पास-पड़ोस और परिवार के लोगों में सिर्फ कमलिनी ने ही उसका समर्थन किया था। और उस स्त्री की बात भुवन को सुनाते हुए कहा था, "भुवन भाई, वह बहू, कम-से-कम इस संसार में अपनी नियति से जूझी तो। जिन्दगी जब खुद धीरे-धीरे तुम्हारा दम घोटने के लिए बढ़ती जा रही हो और तुम यह भी समझो कि तुम उस दमघोटू बवंडर से छुटकारा नहीं पा सकते तब भी क्या उससे जूझकर मिट जाने के सिवाय तुम्हारा और कोई फर्ज नहीं हो सकता। जब तुम खुद को मजबूरियों में जकड़ा हुआ पाओ तब तुम्हारे सामने कोई और रास्ता नहीं होता कि तुम उन मजबूरियों को तोड़कर अपनी तबीयत के मुताबिक जिन्दगी जीने की कोशिश करो।"

कमलिनी अपनी बात कहते-कहते कुछ जोश में आ गयी थी। उस दिन अपने दृष्टिकोण से मानव-जीवन के उद्देश्य की उसने जो व्याख्या की थी उसका तात्पर्य यह था कि साधारणतया शारीरिक वासना कही जाने वाली रागात्मक वृत्ति की पूर्ति ही जीवन की सार्थकता है। प्रेम-प्रेरित शारीरिक वासना की पूर्ति से मनोरम इस संसार में और कुछ

मिल गया, उसने बताया कि तुम यहाँ सरकिट हाउस में बैठे हो। अब तुम फ़ौरन गाड़ी लेकर सीधे यहाँ गोल्डेन ओक के दक्षिण-पश्चिम में उसी की सीमा से मिले छोटे-से काटेज 'वेस्ट उड' में चले आओ।"

"क्यों क्या बात है?" भुवन ने घबराकर पूछा।

"बात बड़ी गम्भीर है। मैंने आज अपने इस काटेज में टैस्ट मैच देखने के लिए बाहर से आए हुए अपने कुछ दोस्तों को पार्टी दी थी और उसके बाद अपने पति के साथ आज रात यहीं ठहर जाने का इरादा था। जब मेरे दोस्त खा-पीकर चले गये तो मैं कुछ टहलने के खयाल से काटेज के उस पीछे वाले लॉन में चली गयी, जो 'गोल्डेन ओक' के पश्चिमी भाग के बाग से मिला हुआ है। कुछ देर टहलने के बाद मुझे उस बाग से किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी। मेरे हाथ में टॉर्च थी। जब मैं कराहने की आवाज़ की ओर कान लगाकर उस बाग में कुछ दूर गई तो देखा एक बेहोश-सी लड़की वहाँ पड़ी कराह रही है। उसके कपड़े फटे हुए हैं और उन अस्त-व्यस्त फटे कपड़ों पर जहाँ-तहाँ खून के धब्बे हैं। ऐसा लगता था कि उस छोटी-सी सत्रह-अट्ठारह साल की लड़की के साथ कुछ वहशी आदमियों ने बलात्कार किया है। यह भी मालूम पड़ता है कि वह लड़की आखिर दम तक उनसे लड़ती रही, क्योंकि उसके मुँह को जबरदस्ती बन्द किये जाने की वजह से उसके मुँह के चारों तरफ़ गालों पर नीले-नीले गढे पड़ गए हैं और नाखनों के भी निशान हैं। उसकी दाहिनी बाँह भी छीना-झपटी में उतर गई मालूम पड़ती है क्योंकि वह बेजान-सी होकर लटकी हुई है। मैं उस लड़की को उठाकर अपने काटेज में ले आई हूँ। यहाँ वापस आने के बाद से ही तुम्हें टेलीफ़ोन मिला रही हूँ। अब तुम देर न करो फ़ौरन चले आओ। मैं लेडी डॉक्टर प्रतिभा कपूर को फ़ोन कर चुकी हूँ कि वह अपने साथ डॉक्टर मलहोत्रा को लेकर फ़ौरन आ जाए।"

भुवन का मन आशंका से भर गया, "पर यह लड़की कौन है, और आप मुझे ही क्यों फ़ोन पर बुला रही हैं?" भुवन ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम वह लड़की कौन है। मैंने आज उसे विजय पार्क में टैस्ट मैच के समय कई बार देखा था। वहाँ इसे किसी लड़के ने छेड़ा

फटी हो रही हैं।

जब भुवन टेलीफ़ोन पर बातें कर रहा था तभी कमलिनी को मोटर तक पहुँचा कर अहमद अन्दर आ गया था। उसने टेलीफोन पर होने वाली बातों को सुन कर अजरा की हालत का कुछ अन्दाज लगा लिया था।

भुवन के टेलीफोन रखने पर उसने मरे मन से पूछा, "क्या हुआ है, भुवनेश्वर?"

भुवन ने सब बातें बतायीं तो उसने सामने की मेज पर अपना सिर दे मारा और फिर रुंधे गले से कहा, "जाओ, भुवनेश्वर तुम्हीं उसे ले आओ। मेरे जाने से वह लोग उसे पहचान जायेंगे। अभी तो वह लोग यह नहीं जानते कि वह कौन है। तुम उन्हें कुछ बताना भी नहीं।"

पाप के राज़दाँ

जब भुवन मिसेज़ मिस्त्री के कॉटेज 'वेस्ट उड' पहुँचा तब तक वहाँ लेडी डॉक्टर प्रतिमा कपूर और डॉक्टर मलहोत्रा पहुँच चुके थे और दोनों अजरा के उपचार में लगे हुए थे।

'वेस्ट उड' एक छोटा-सा तीन कमरों का पुराना बंगला था जो सड़क से दो फ़र्लांग की दूरी पर बड़े से बाग में बना था। सड़क से 'वेस्ट उड' के दरवाज़े तक लम्बी पतली सड़क थी जिसके दोनों ओर घने छायादार पेड़ लगे थे। कनकपुर के पुराने अंग्रेज़ उद्योगपति बर्टेंड उड ने अपना साप्ताहिक अवकाश व्यतीत करने के लिए इस बंगले को शहर के बाहर बनवाया था। मि० उड ने अपने भारत छोड़कर जाने के समय वेस्ट उड को उसके साज-सामान के साथ मि० मिस्त्री को बेच दिया था।

भुवन को देखते ही मिसेज़ मिस्त्री ने उसे अलग ले जाकर कर कहा, "देखो मिनहा, मुझे मालूम नहीं यह लड़की कौन है और न मैं जानना ही चाहती हूँ। इस दुखांत घटना की सबसे बड़ी बदकिस्मती यह है कि इस बेचारी फूलों-सी नव-उम्र लड़की की ज़िंदगी हमेशा के लिए बरबाद हो सकती है। इसलिए तुम मुझे भी न बताओ कि यह कौन है और किसकी लड़की है।"

मिसेज़ मिस्त्री की बात सुन कर भुवन कुछ आश्वस्त हुआ। वह वेस्ट-उड आते समय यही सोच रहा था कि बिना अजरा का नाम बताये, वह मिसेज़ मिस्त्री की स्त्री-सुलभ उत्सुकता को कैसे शांत कर सकेगा। स्वयं मिसेज़ मिस्त्री द्वारा अजरा का नाम और पता न पूछने की बात सुन कर

भुवन के मन में मिसेज मिस्त्री के प्रति आदर का ऐसा भाव जाग्रत हुआ जो पहले कभी न हुआ था। अपनी स्वाभाविक उत्सुकता को दमन कर अजरा से सदा अपरिचित रहने की बात कह कर मिसेज मिस्त्री भुवन के सामने एक नये रूप में खड़ी हो गयी।

मिसेज मिस्त्री ने आगे कहा, "प्रतिमा कपूर और डॉक्टर मलहोत्रा अन्दर उस लड़की का उपचार कर रहे हैं। तुम्हें उनसे मिलने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि तुमको देख कर शायद वह चौंके या अन्दाज लगायें कि यह कौन लड़की है? मैंने उनसे कह दिया है कि मुझे नहीं मालूम कि यह कौन लड़की है। मैं तो सिर्फ एक समाज-सेविका के नाते, इसको इस हालत में पाकर अपने घर ले आयी हूँ। प्रतिमा और मलहोत्रा की प्रैक्टिस ही अवैध गर्भपात की है, इसलिए वह दोनों राज रखना जानते हैं। वह दोनों भी नहीं जानना चाहते कि यह लड़की कौन है। उन दोनों ने खुद ही मुझे आगाह भी किया है कि अगर मैं जानती भी हूँ तो किसी को न बताऊँ कि वह कौन है। अगर धोखे से भी किसी के सामने उसका नाम या वल्दियत की बात निकल गयी तो बेचारी की जिन्दगी बरबाद होने में कोई कसर नहीं रह जायेगी।"

अपनी बात खत्म कर मिसेज मिस्त्री वापस जाने को हुई, पर फिर कुछ रुक कर कहा, "सिनहा, प्रतिमा और मलहोत्रा इन दोनों के व्यक्तिगत जीवन के बारे में कोई कुछ भी कहे पर मैं इतना जानती हूँ कि यह दोनों बड़े नेकदिल हैं और अपने काम में बड़े होशियार हैं।"

जाने से पहले मिसेज मिस्त्री ने भुवन को अलग कमरे में बैठा दिया और बोली, "तुम यहाँ बैठो, मैं प्रतिमा और मलहोत्रा के जाने के बाद तुम्हें उस लड़की के पास ले चलूँगी।"

भुवन अजरा के भाग्य के बारे में सोचते हुए वहाँ बैठा रहा। उसे ध्यान आया कि थोड़ी देर पहले कमलिनी अपने लड़के असगर के साथ अजरा की शादी करने के लिए हर तरह से जोर दे रही थी। उसके मन में प्रश्न उठा, "क्या कमलिनी इस दुर्घटना को जान कर भी असगर से अजरा की शादी करना चाहेगी?"

अपने विचार-लोक से वह तब लौटा जब बरामदे से प्रतिमा कपूर

गले से समझाते हुए उसे चुप करने की कोशिश की तो मिसेज़ मिस्त्री ने भुवन से धीरे से कहा, "नही, सिनहा इसको रोने दो। जब से मैं इसे यहाँ लायी हूँ, यह अपनी इतनी बडी तकलीफ के बावजूद, एक लफ़्ज भी नही बोली है। न किसी किस्म की चीख-पुकार या रोना-धोना ही किया है। इसके साथ जो हुआ है उसका सदमा इसके दिल मे ऐसा बैठ गया है कि यह बिलकुल चुप हो गयी थी। प्रतिमा कपूर ने जाते समय इसकी हालत देखकर पूछा था कि यह रोयी है या नही। मेरे यह कहने पर कि यह बिलकुल नही रोयी, प्रतिमा ने कहा था कि इसकी चुप्पी ठीक नही है। इससे बातें करके इसको रुलाने की कोशिश कीजियेगा। मैं इसमें क्या बात कर सकती थी। मैं तो इसे जानती ही नही। अब तुमको देखकर इसे कुछ अपना आपा याद आया है, तो इसे रोने दो। ऐसी बदक़िस्मती के बाद तो, बेचारी को ज़िंदगी-भर रोना पड़ सकता है।"

मिसेज मिस्त्री की बात सुनकर भुवन ने अजरा को समझा कर चुप करने का प्रयास छोड़ दिया। वह चुपचाप उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरता रहा। अजरा ज़ोर-ज़ोर से फूट-फूट कर रोती रही, फिर उसकी हिचकी बँध गयी और हिचकी रोकने के लिए पानी दिये जाने पर, वह पानी पीकर स्वस्थ होकर चुप हो गयी।"

कुछ देर के बाद अज़रा ने पूछा, "पापा कहाँ है,"—पर फ़ौरन ही बगैर भुवन के जवाब का इंतजार किए हुए रोते हुए चीख पडी, "हाय अंकल, अब मेरा क्या होगा।'

"कुछ नहीं होगा बेटी, कुछ नही होगा,"—भुवन ने रुँधे गले से कहा, "घबराने की कोई बात नही है। इस दुनिया में हैवानों के अलावा कुछ इन्सान भी रहते हैं। वह सब तुम्हारी इस आपत्ति मे तुम्हारे साथ खड़े होंगे और उनके हजार-हजार हाथ तुम्हारा बाल भी बाँका न होने देंगे। विश्वास रखो इस दुनिया मे अब भी दूसरे की बुराई चाहने वालों की अपेक्षा भलाई करने वालों की संख्या कहीं अधिक है।" भुवन कहने को तो यह बात कह गया, पर उसे खुद ही अपनी बात पर शक होने लगा।

भुवन की बातों से अज़रा को कुछ ढाढ़स बँधा। उसकी उफनती

हुई सिसकियाँ कुछ थमीं श्रौर उसने कहा, "अच्छा, अंकल अब तुम मुझे पापा के पास ले चलो।"

थोड़ी देर बाद जब भुवन अजरा को लेकर चलने को हुआ तो मिसेज़ मिस्त्री ने उसे दवाओं के कुछ पैकेट देकर उनका उपयोग बताते हुए कहा, "प्रतिमा इसे दो-दो घंटे बाद यह दवायें देने को कह गयी थी, इन्हें लेते जाओ।" फिर उसने अजरा का हैंडबैग श्रौर कागज़ का एक पैकेट देकर कहा, "इस पैकेट में इसके कपड़े है श्रौर यह हैंडबैग इसके पास पड़ा था। अपनी घबराहट में मैंने इसे खोलकर भी नही देखा है।"

बेगुनाह का गुनाह

जब भुवन अजरा को लेकर सरकिट हाउस पहुँचा तब अहमद बेसब्री से बरामदे में उसका इन्तजार कर रहा था। चेतनसिंह, खन्ना उसके पास खड़े थे।

मोटर के पोर्टिको में रुकते ही अहमद ने बढ़कर अजरा को अपनी गोद में भर लिया। उसका स्नेह-स्पर्श पाते ही अजरा ने अपने दोनों हाथ उसके गले में डाल दिये और चीख पड़ी, "हाय पापा" और फिर कुछ क्षणों के लिए निस्पंद हो गयी।

अहमद उसे गोद में लिये-लिये अंदर चला गया और अपने सोने वाले कमरे में बिस्तर पर लिटा कर स्वयं उसके पास बैठ गया।

भुवन भी अहमद के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।

बिस्तर पर लेटने के बाद अजरा ने फिर आँखें खोलीं और अहमद को देखकर मुँह फेर लिया फिर हिचकी बाँधकर रो पड़ी। हिचकियों के दौरान उसके मुँह से बार-बार दो ही शब्द निकल रहे थे, "हाय पापा, हाय पापा।"

अहमद चुपचाप उसके सिरहाने बैठा हुआ उसके सिर पर हाथ फेरता रहा। अजरा के "हाय पापा" कहने पर वह यंत्रवत कह देता था, "घबराओ नहीं बेटी, खुदा सब ठीक करेगा।"

उसके हाथ फेरने और तसल्ली देने से अजरा को कुछ राहत सी मिली। धीरे-धीरे उसकी आँखों में नींद आ गयी।

अजरा के सो जाने पर, अहमद ने बाहर जाकर चेतनसिंह और खन्ना

से कहा, "अब आप लोग जाइये। अजरा के हाथ में जो चोट लगी थी उस पर डॉक्टर ने प्लास्टर तो चढा ही दिया है, और डॉक्टर ने भुवनेश्वर को आवश्यक दवायें भी दे दी हैं। अब आप घर जाकर आराम करें। खुदा ने चाहा तो अब कोई जरूरत नही पड़ेगी और अगर हुई भी तो मैं आपको फोन करके बुला लूंगा।"

अहमद की बात सुनकर, वह दोनों चुपचाप उसे सलाम कर यह कहते हुए चले गये, "एक उप-पुलिस अधीक्षक और पुलिस वैन की ड्यूटी रात को यहाँ लगी रहेगी। वैन पर छः कान्सटेबुल और एक दारोगा रहेगा। इसके अलावा बारह और कान्सटेबुल तथा दो दारोगा सरकिट हाउस की ड्यूटी पर है। एक गाड़ी भी आपकी सेवा के लिए यहाँ रहेगी। हम लोग सवेरे ही यहाँ आ जायेंगे।"

अहमद के उठ कर जाने के बाद सोती हुई अजरा नीद में फिर कुल-बुलाने लगी थी, पर चेनर्नासिह और खन्ना जाने के बाद जब अहमद दोबारा पास बैठकर धीरे-धीरे उसके सिर पर हाथ फेरने लगा तो वह फिर सो गयी।

कुछ देर बाद अहमद ने अपना हाथ फेरना बंद कर दिया, और कुछ देर वह अजरा के सिर पर हाथ रखे बैठा रहा। फिर उसने अपना हाथ हटा लिया और चुपचाप उसके सिरहाने बैठा हुआ थोड़ी देर तक उसे देखता रहा। जब अहमद को यकीन हो गया कि अजरा गहरी नीद में सो गयी है तब वह उठ खड़ा हुआ और भुवन को बाहर आने का इशारा कर बरामदे में निकल गया।

भुवन अहमद के पीछे-पीछे बरामदे में जाकर खड़ा हुआ ही था कि अहमद बेसाख्ता फूट-फूट कर रो पड़ा और निढाल होकर बरामदे में पड़े एक सोफे पर बैठ गया। कुछ देर बाद भरी हुई आवाज में उसने कहा, "यह क्या गजब हो गया भुवनेश्वर, मेरे किस गुनाह की यह सज़ा खुदा ने इस बच्ची को दी है।"

भुवन अजरा को तो धीरज बँधाने के लिए एक शब्द भी न कह सका था अब फूट-फूट कर रोते हुए अहमद के पास चुपचाप बैठ गया।

अहमद रोते-रोते भुवनेश्वर के कंधे पर सिर रखे-रखे कहता रहा,

'भुवनेश्वर, शाहिदा के मरने के वक्त यह अजरा सिर्फ़ दो बरस की बच्ची थी। मैंने कैसे-कैसे इसे पिछले पन्द्रह-सोलह बरस से पाला है—उसे देखकर बहिश्त में शाहिदा की रूह भी यही कह सकती है कि वह भी इसे इस लाड में नहीं रख सकती थी। कई बार अपनी तरक्की के मौके छोड़ कर मैं बरसों इसे गोद में लिये-लिये ड्यूटी करता रहा हूँ और रातों को जागता रहा हूँ। झिड़कने की बात ही क्या है, अजरा को मैंने कभी तेज़ आँखों से भी नहीं देखा है।"

अहमद के दु:ख को कोई बाँट नहीं सकता था। भुवन खोया-खोया सा उसकी पीठ पर हाथ फेरता उसकी बातें सुनता रहा।

अहमद ने रुँधी आवाज़ में आगे कहा, "इससे तो यही बेहतर था कि साल-भर पहले जब नवाबजादी कमर ने मुझे, अजरा की शादी असगर से करने के लिए लिखा था तो मैं उसकी बात मान जाता। फिर आज मुझे यह दिन तो न देखना पड़ता। उफ, अब अजरा का क्या होगा?"

अहमद की बात पूरी भी न हुई थी कि एक मोटर पोर्टिको में रुकी और कमलिनी ने उसमें से उतरते हुए पूछा, "क्या हुआ है, नियाज भाई, क्या अजरा को कुछ चोट लग गयी है। आप दोनों ऐसे ग़मगीन क्यों हैं?"

अहमद कमलिनी की आवाज़ सुनकर खड़ा हो गया और पथरायी हुई आँखों से उसे देखने लगा।

उसकी हालत देखकर कमलिनी ने घबरा कर कहा, "अरे नियाज भाई, आप इस तरह क्या देख रहे हैं? ऐसा क्या गज़ब हो गया है, भुवन जी? जरा मुझे भी तो बताइये? अजरा कहाँ है? क्या वह अभी तक नहीं आयी? मैं तो उसी को देखने के लिये भागी-भागी चली आयी हूँ, नहीं तो अंभागी, "आँटी-आँटी" कहकर मुझे आने ही नहीं दे रहा था।"

जब कमलिनी की आवाज सुनकर भी अहमद और भुवन दोनों कुछ नहीं बोले तब उसने बढ़कर अहमद को झकझोर दिया और कहा, "कुछ तो बताओ नियाज क्या हुआ है?"

कमलिनी ने कुछ तेज होकर फिर पूछा, "अब खुदा के लिए कुछ तो बताइये भी, क्या हुआ है ?"

अहमद ने बगैर उसका सवाल सुने अपनी बात जारी रखी, "तुमसे इतना ही कह सकता हूँ कि अफ़सोस सिर्फ इस बात का है कि खुदा ने मुझे अजरा की मारफत यह सज़ा दी है। मैं खुदा को ही गवाह बनाकर कह सकता हूँ कि अगर उसने अपनी सख्त से सख्त सज़ा सिर्फ मुझे ही दी होती और अजरा को बख्श दिया होता तो मैं उस सजा को जिन्दगी-भर हँसते-हँसते झेलता। मगर यह सजा तो मैं हिमालय का दिल रखकर भी नही झेल सकूँगा, और अब सारी ज़िन्दगी गम में गलता रहूँगा।"

अहमद की हालत देखकर कमलिनी ने उसका हाथ पकड कर बरामदे में पड़े दीवान पर बैठा दिया। फिर खुद उसके पास बैठकर उसने अहमद को खीच कर अपनी गोद मे लिटाते हुए तथा उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "मत बताओ नियाज, मत बताओ। अगर नही बताना चाहते हो तो मत बताओ पर मेरी इतनी बात समझ लो कि अजरा मुझे अपनी उस अजन्मी बेटी से ज्यादा अजीज है जो मेरी कोख से पैदा ही नही हुई। वह कुछ भी करे पर मेरे लिए वह हमेशा-हमेशा मेरी बेटी रहेगी और मैं उसकी खुशी में ही अपनी खुशी समझूँगी।"

कमलिनी की बात सुनकर अहमद एक दम उठकर खड़ा हो गया और कहा, "यही तो अफसोस है, कमर, यही तो अफसोस है कि उस बेचारी ने तो कुछ किया ही नही। अगर वह खुद अच्छा या बुरा कुछ भी करती तो मुझे कोई गम नही होता क्योंकि मैं तो उसकी खुशी के लिए ही जिंदा हूँ।"

अपनी बात कह कर वह फिर बैठ गया। उसके बदन में कँपकँपी आयी। उसकी मुट्ठियाँ बँध गयी, और वह 'या खुदा' चीखकर कमलिनी की गोद मे बेदम-सा होकर लुढक गया।

अहमद की हालत देखकर कमलिनी भी घबरा गयी। उसने झुँझला कर भुवन को फटकारते हुए कहा, "क्या अपने गम को बरदाश्त न कर सकने की वजह से जब नियाज का दिल फट जायेगा, तभी आपका मुँह खुलेगा। दुनिया में ऐसी कौन-सी मुसीबत है जो झेली नही जा सकती ?

फिर, नियाज अकेला तो है नहीं । उसके साथ दुनिया का हर तरह से मुकाबला करने वाले कम-से-कम हम दो जने हैं। हम दोनों यहां मौजूद भी हैं। फिर ऐसी कौन-सी मुसीबत है जिसका हम तीनों मिलकर मुकाबला नहीं कर सकते—"

कमलिनी की बातें सुनकर भुवन कुछ कहने ही जा रहा था कि अहमद की चीख और कमलिनी की तेज आवाज से जाग कर अजरा ने रोते हुए पुकारा, "अरे आंटी, तुम कहाँ हो ?"

अजरा की आवाज सुनकर कमलिनी ने धीरे से अहमद का सिर दीवान पर रख दिया और भुवन से कहा, "आप जरा नियाज भाई को सँभालें मैं अजरा को देखती हूँ।"

भुवन अहमद के पास बैठकर उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ उसे ढाढ़स देने की कोशिश करने लगा और कमलिनी उठकर अजरा के पास चली गयी।

कमलिनी को देखते ही अजरा, 'हाय, आंटी' चीखती हुई उठने को हुई पर अपने जख्मों पर जोर पड़ने के कारण वह कराह कर फिर वापस लेट रही।

कमलिनी ने जल्दी से उसके सिर पर हाथ रख कर कहा, "लेटी रहो बेटी, लेटी रहो। तुमने मुझे पहले ही क्यों नहीं बुला लिया। मैं तुमसे मिलने के लिए यहाँ बहुत पहले ही आ गयी थी। पर तुम यहाँ थी ही नहीं। इसलिए कुछ देर बाद यह सुनकर कि अंसारी को चोट लग गयी है, मैं उसे देखने चली गयी थी।"

कमलिनी के सिरहाने बैठने पर अजरा उसकी गोद मे सिर डालकर फिर सुबकने लगी थी। कमलिनी ने अंसारी की बात जानकर कही थी। उसने सोचा था कि अजरा अंसारी की चोट की बात सुनकर क्रिकेट के खिलाड़ियों में अपनी दिलचस्पी के कारण खुद अंसारी की चोट के बारे मे कुछ पूछेगी पर जब अजरा बगैर कुछ कहे उसकी गोद में सुबकती ही रही, तब कमलिनी ने कहा, "अंसारी के सिर में चोट लग गयी है, कहते हैं, उसने शाम की पार्टी में शराब के नशे मे शंकरदत्त की लड़की चाँदनी के साथ छेड़खानी की थी, इसलिए कुछ लोगों ने उसे बहुत मारा।"

अजरा ने कमलिनी की बात सुनकर अपनी पथरायी हुई सी आँखें खोली और बदहवासी से पूछा, "सिर्फ मारा ही, किसी ने उसका खून नहीं कर दिया।" फिर उसने तेजी से कहा, "यह वहशी लोग यहाँ क्रिकेट खेलने आते हैं कि···" आगे वह कुछ न कह सकी और उसकी आवाज़ उसके गले में ही अटक कर रह गयी। उसने फिर कमलिनी की गोद में सिर छुपा लिया और हिचकी बाँधकर फूट-फूट कर रोने लगी।

अंसारी के प्रति अजरा का रोष देखकर कमलिनी ताज्जुब में पड़ गयी। उसने अंसारी का नाम कुछ बात शुरू करने की गरज से लिया था, पर जब उसने अजरा का गुस्सा देखा तो वह सकते में पड़ गयी और उसने सिर पर हाथ फेरते हुए प्यार से बात बदलते हुए कहा, "गोली मारो अंसारी को, तुम बताओ कि तुम कहाँ चली गयी थी। यह तुम्हारे हाथ में क्या हुआ है। इस तरह मारे-मारे फिरने के बजाय तुमने विदेशी टीम के बाकी खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ़ के लिए मुझसे क्यों नहीं कहा, मैं उन्हें यहाँ तुम्हारे पास ही बुला कर उनके ऑटोग्राफ दिलवा देती।"

कमलिनी की बात सुनकर अजरा फिर चीख पड़ी, "मुझे नहीं चाहिएँ उनके ऑटोग्राफ! उन सबको तो गोली मार देनी चाहिए आंटी, सबको सूली पर चढ़ा देना चाहिए। यह तो मेरी बेवकूफी और बदकिस्मती थी जो मैं उन्हें इन्सान समझकर उनके पीछे दौड़ती रही···" और फिर उसने रोते हुए कमलिनी की गोद में सिर डालकर कहा, "उनकी बात मत करो आंटी, ऐसे वहशियों को तो जहन्नुम रसीद कर देना चाहिए।"

"अच्छा, अच्छा, मैं उनकी बात नहीं करूँगी।" अजरा की उत्तेजना देखकर कमलिनी ने प्यार से कहा, "पर तुझे क्या हो गया है—यह चोटें कैसे लग गयीं, तू कहाँ पहुँच गयी थी? क्या वक्त पर मोटर नहीं मिली और तू कहीं गिर गयी, या फिर मोटर का कोई एक्सीडेंट हो गया?"

"कोई एक्सीडेंट हो जाता और मैं उसमें मर जाती या फिर लूली-लंगड़ी या अंधी ही हो जाती तो भी कोई बात न होती। पर आंटी वह सब तो कुछ हुआ नहीं—हुआ वह जिससे मैं इस दुनिया में जिन्दा रहते भी मरी से बदतर रहूँगी क्योंकि मैं किसी को अपना मुँह दिखाने के काबिल नहीं रही।" वह फिर फफक कर रोती हुई कमलिनी के गले लग गयी

ग्रौर फटी ग्रावाज में कहा, "मैं कहीं की नहीं रह गयी ग्रांटी । मेरे लिए तो तुम थोड़ा ज़हर ला दो ।"

ग्रपनी बदकिस्मती की बात ग्रपनी ज़बान से निकल जाने के बाद ग्रजरा एकदम शांत होकर कमलिनी की गोद में चुप पड़ गयी ।

ग्रजरा की बात समझकर कमलिनी भी सन्नाटे में ग्रा गयी । उसके मुंह से हमदर्दी के शब्द निकलने बंद हो गये । ग्रजरा के सिर पर प्यार से फिरने वाला उसका हाथ एकाएक रुक गया ।

उसके मुंह से सिर्फ निकला, "या ख़ुदा, रहम कर"—कमरे में सन्नाटा छा गया ।

हैवानों का खेल

अपनी जिल्लत की बात जब अजरा के मुंह से फूट पड़ी तब उसे लगा कि उसके दिल पर पड़ा पत्थर, जिसका बोझ उसके अंतर मे हर क्षण बढ़ता ही जा रहा था, कुछ हल्का हो रहा है। पर साथ ही उसे यह भी लगा कि अपनी बदक़िस्मती की बात मुंह से निकलते ही उसकी दुनिया में अंधेरा छा गया है। उस अंधेरे मे उसे कुछ लमहों तक कुछ सूझा ही नही। फिर उस कुछ न दिखायी देने वाले अंधेरे में ऐसी सांय-सांय की आवाज़ आने लगी है जैसे हजारों नागिनें अपनी-अपनी जीमे निकालकर फूत्कार छोड़ती हुई उसे डसने के लिए बढ रही हैं।

उस घने अंधेरे मे अज़रा को लगा कि उसके साथ कोई नही है और उन फुफकारती हुई नेज़े की नोक-सी पतली और तेज़ जहर भरी हजारों ज़बानों के आगे वह बेबस है जो कुछ ही देर में उसे डसकर बेदम कर देंगी और इस बेरहम दुनिया में उसे हमेशा-हमेशा के लिए तड़पने के लिए छोड़ देंगी।

अजरा ने घबरा कर कमलिनी की गोद में मुंह छुपा लिया। उसके मुंह से बरबस ही चीख निकल गयी "अरे मेरी मम्मी।"

अजरा के मुंह से यह चीख पन्द्रह बरस पहले अपनी मां के मरने के बाद निकली थी और उसके बाद अब तक उसकी ज़बान पर मम्मी का नाम नही आया था। पर अब वह फूट-फूटकर बार-बार कह रही थी, "हाय मेरी मम्मी, तुम कहां हो,"—अजरा की चीखों को सुनकर कुछ क्षणों के लिए अपना हाथ रोककर गुमसुम बैठी हुई कमलिनी को फिर

होश आ गया और उसने अजरा को सहारा देकर अपनी बाहों मे ले लिया।

अजरा के 'मम्मी, मम्मी' कहकर रोने से कमलिनी को अजरा की माँ और अपनी मरहूम सहेली शाहिदा की वह बात याद आ गयी जो उसने एक दिन अजरा को कमलिनी से लिपटते देखकर कही थी। "ऐसा लगता है कि अजरा मेरी कोख से सिर्फ तुम्हारे लिये ही जन्मी है, इसकी एक नही दो माँ हैं।"

कमलिनी ने ऐसा महसूस किया कि शाहिदा ने फिर बरसों बाद उसके कान मे धीरे से कहा, "अजरा की एक नहीं दो माँ हैं।"

कमलिनी के दिल में अजरा के लिये उसका प्यार एकाएक दूना होकर उमड़ पडा।

उसने-अजरा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "घबराओ नही बेटी। तुम्हारी वह मम्मी न सही, मैं तो हूँ। मेरे रहते तुम्हारा बाल भी बाँका नही हो सकता। नियाज भाई और मैं तुम्हारी हर मुसीबत का मुकाबला कर उसे शिकस्त दे सकते है। मगर यह तो बताओ कि यह कैसे हुआ और किसने यह हैवानियत का काम किया है, जिससे उन्हे माक़ूल सज़ा दी जा सके।"

अजरा फिर फफक-फफककर रो पड़ी। उसने रुक-रुककर रोते-रोते कमलिनी को जवाब दिया, "मुझे कुछ नही मालूम आंटी, मैं नही जानती वह कौन थे।"

उस लम्बी मनहूस रात को अजरा ने हिचकी भर-भरकर रोते हुए, कमलिनी के सीने से लगकर जो कुछ कहा, वह भुवन ने भी सुना। वह सारा हैबतनाक किस्सा उसके दिलो-दिमाग में ऐसा नक्श हो गया था कि अक्सर एक डरावने सपने की तरह उसकी आँखों के सामने नाच जाता था।

जब अजरा सईदा की गाड़ी से गोल्डेन ओक पहुँची तो विदेशी टीम वहाँ नही थी। सब तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। उस समय वहाँ के गेटमैन के अलावा अंदर बाग़ में कोई दिखायी नही पड़ता था।

जब अजरा पोर्टिको की तरफ बढी तो बाहर जाती हुई एक मोटर

पर बैठे हुए एक आदमी ने उसे बताया कि टीम कहीं खाना खाने गयी है और कुछ ही देर में लौटने वाली है।

अजरा ने गोल्डेन ओक के फाटक पर पुलिस की बेतार की गश्त करने वाली गाडी खड़ी देखी थी। उसे मालूम था कि उस गाडी की ड्यूटी रात-भर वहीं रहेगी। चेतनसिंह ने उससे पहले ही दिन कह दिया था कि वह अपना नाम बताकर किसी भी पुलिस की गाडी से घर लौट सकती है। उसने सोचा कि वह लौटते वक्त उस उस गाड़ी पर तैनात दारोग़ा से कहकर उसी गाडी से घर चली जायेगी या फिर वायरलैस से खबर भिजवा कर कोई गाडी मँगवा लेगी।

वह सईदा की गाड़ी रोकना नहीं चाहती थी क्योंकि सईदा के यहाँ उसकी सालगिरह का झम्मड़ था। उसने सईदा की गाड़ी वापस कर दी और गोल्डेन ओक के बाग मे, रास्ते से दूर पडी एक बेंच पर बैठ कर इन्तज़ार करने लगी।

उसे सिर्फ मैकगिल, हैस्टिंग्स और रोजर्स के ऑटोग्राफ की जरूरत थी।

जहाँ वह बैठी थी वहाँ से करीब चार फर्लांग पर वह बंगला था जिसमे विदेशी टीम ठहरी हुई थी। घने पेड़ों की वजह से वह बंगला उसके बैठने की जगह से साफ नहीं दिखाई देता था। वह बंगले तक नही गयी। उसने सोचा कि वह टीम की मोटर को अन्दर जाते समय ही रोक लेगी और उन तीनों खिलाडियों के ऑटोग्राफ ले लेगी।

वह खुश थी कि वहाँ उस समय कोई नही था और भीड न होने की वजह से उसे उन तीनों विदेशी खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ आसानी से मिल जायेंगे। उसके मन मे कोई शंका नही थी क्योंकि सवेरे जब उसने विदेशी टीम के बाकी सभी खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ लिये थे तब हर खिलाडी ने उसके साथ बडा अच्छा व्यवहार किया था।

बल्कि मैसन और जेम्स ने तो यह भी कहा था कि वह उसको शाम को बाकी तीनों खिलाड़ियो के ऑटोग्राफ भी दिलवा देंगे।

अजरा के गोल्डेन ओक पहुँचने के कुछ देर बाद ही एक स्पेशल बस विदेशी टीम को लेकर लौटी। अज़रा के आवाज़ देने पर वह रुक भी

गयी। उस समय टीम के सभी खिलाड़ी ज़ोर-ज़ोर से हँस बोल रहे थे। अज़रा को देख कर सबने अपनी खुशी का इज़हार किया। जब अज़रा ने मैसन और जेम्स से उनके सवेरे के वायदे की बात याद दिला कर मैकगिल, हैस्टिंग्स और रोजर्स के ऑटोग्राफ़ के लिए कहा तो मैसन के कहने से हैस्टिंग्स और रोजर्स बस से उतर पड़े और बस आगे बढ़ गयी।

हैस्टिंग्स ने बताया कि मैकगिल पश्चिमी फाटक से पैदल आ रहा है क्योंकि वह खाने के बाद कुछ टहलना चाहता है।

रोजर्स ने यह भी कहा कि वह दोनों उसे ऑटोग्राफ देकर टहलते हुए बगले चले जायेंगे।

वह दोनों थोड़ी देर तक अज़रा से हँस-हँस कर बातें करते रहे। इस बीच में उन दोनो ने अज़रा की ऑटोग्राफ बुक पर हस्ताक्षर भी कर दिये।

उनके ऑटोग्राफ लेकर जब अज़रा चलने लगी तो हैस्टिंग्स ने कहा कि अगर वह मैकगिल के भी ऑटोग्राफ चाहती है तो वह बाग़ को पार कर पश्चिमी फाटक की तरफ़ चली जाय। रास्ते मे मैकगिल मिल जायेगा और उसके भी ऑटोग्राफ़ मिल जायेंगे।

अज़रा को उस तरफ का रास्ता मालूम नही था। हैस्टिंग्स ने उसे रास्ता दिखाते हुए कहा कि अगर वह पेडों के झुरमुट से जायेगी तो बहुत जल्दी पहुँच जायेगी।

अज़रा उनका शुक्रिया अदा कर उनके बताये रास्ते पर चल पडी और वह दोनों लौट पड़े।

जब अज़रा कुछ दूर पर पडने वाले पेड़ो के अन्धेरे झुरमुट को पार कर रही थी तब एकाएक किसी आदमी ने पेडो से निकल कर उसके मुँह पर हाथ रख दिया। उसकी आवाज नही निकल सकी। फिर किसी दूसरे आदमी ने अज़रा को अपनी बाहो मे उठा लिया। उसे लगा कि एक आदमी उसे उठाये हुए जल्दी-जल्दी चल रहा है। एक दूसरा आदमी उसका मुँह बन्द किए साथ-साथ चल रहा है। जब कभी अज़रा अपने हाथ इधर-उधर मारती थी तब वह उन्हें पकड़ लेता था और कभी-कभी उन्हें मरोड़

भी देता था। मजरा को यह पता नही चल सका कि वह दोनो उसे कितनी दूर ले गये क्योंकि मारे डर के उसकी घिग्घी बँध गयी थी।

मजरा की उस बदहवासी में उन दोनों ने उसका मुंह बन्द किये-किये उसे एक जगह ज़मीन पर पटक दिया। उस वक़्त उसके हाथ छूट गये थे और उसने अपने हाथ से अन्धेरे में अपने मुंह पर रखे हाथ को हटाने की कोशिश की पर किसी ने उसका हाथ इस बेरहमी से मरोड़ दिया कि उसे लगा कि उसका हाथ टूट ही जायेगा। बेहद दर्द में मुंह बन्द होने की वजह से वह चीख भी न सकी। फिर एक आदमी ने उसे वहशियाना तरह से चूमना, चाटना, नोचना और उसके कपड़ों को खीच-खीच कर उसे नंगा करना शुरू कर दिया।

जब वह बेदम-सी हो गयी तब उस आदमी ने उसके मुंह से हाथ हटा कर उस पर अपना शराब से गंधाता हुआ मुंह इस बुरी तरह से रख कर दबा दिया कि उसकी सांस ही रुक गयी। उनमे से एक ने उसे एसे शिकंजे में कस लिया कि वह बिलकुल बेबस हो गयी—फिर उस आदमी ने उसके साथ बलात्कार किया। वह ग्लानि और पीड़ा के मारे बेदम-सी हो गयी। उसी हालत मे दूसरे आदमी ने भी उसके साथ बलात्कार किया और तब वह बिलकुल बेहोश हो गयी। जब उसे होश आया तो वह दोनों जा चुके थे। उसने उठने की कोशिश की पर उठने की कोशिश करने पर उसका दाहिना हाथ दर्द के मारे हिल भी नही सका और जांघो मे इस ज़ोर का दर्द हुआ जैसे वह दो ऐसे टुकड़ो मे काट दी गयी है जो कहीं एक दूसरे से नाम मात्र को जुडे हुए हैं। वह फिर निढाल होकर लेट गयी। उसने अपने बायें हाथ को अपने ऊपर फेरा तो लगा कि उसके कपड़े बुरी तरह से फटे हुए हैं और जांघो पर, जिन्हे वह हिला भी नही सकती थी, ख़ून बह रहा है।

उठ न सकने की वजह से जब वह पड़ी-पडी कराह रही थी तब उसने देखा कि एक रोशनी उसकी तरफ आ रही है। जब वह रोशनी उसके पास आ गयी तब वह डर के मारे चीख कर फिर बेहोश हो गयी। जब उसे होश आया तो उसने देखा कि उसकी मरहम-पट्टी हो गयी है और और एक अनजानी औरत तथा भुवन उसके पास बैठे हैं। भुवन को देख

ने सवाल किया, "कमर क्या मैं इस मुसीबत को दूर करने के लिए कुछ नहीं कर सकता ?"

"कर क्यों नहीं सकते,"— कमलिनी ने कहा, "सब-कुछ कर सकते हो। अब मैं तुमसे क्या कहूँ, मेरी जिंदगी भी एक ऐसे ही हादसे से शुरू हुई थी। मेरे ऊपर यह मुसीबत बरपा की थी मेरे एक चचाजान ने,"— कमलिनी अपने खयालों में डूब कर कहती चली गयी···

"आज इस बात को अब मेरे सिवा कोई नहीं जानता···क्योंकि जानने वाले इस दुनिया में नहीं हैं···

"मेरा दिल फट कर रह गया था। मुझे तो हमल तक रह गया था। बहुत दिनों तक मैं किसी से कुछ कह भी न सकी। जब वह बात जाहिर हुई तो अम्मीजान ने सिर पीट लिया। पर, अब्बा बुजुग ने हिम्मत से काम लिया। यह उन्ही की हिम्मत का नतीजा है कि जो मैं आज बाइज्जत अपनी मरजी की हँसी-खुशी की जिंदगी बसर कर रही हूँ। खुदा ने जो कुछ दिया, अच्छा या बुरा उसे ही उसका रहमो-करम समझकर जीती हूँ। अब मैं बाल बराबर भी इस बात की फ़िक्र नहीं करती कि मेरे बारे में, कौन क्या कहता है। जब यहाँ आ रही थी तो शाह साहब को बड़ा एतराज हुआ। बोले, "यह श्याम कानोडिया कौन है, जिसके साथ तुम जा रही हो और जिसके बगले पर ठहरने का दावतनामा भी तुमने मंजूर कर लिया है।" पर मैंने उनकी एक न सुनी।

अहमद और भुवन दोनों कमलिनी की बात सुनकर चकित रह गये।

अहमद ने कहा, "मगर अब क्या हो सकता है, कमर, अब मैं क्या कर सकता हूँ···।"

कमलिनी ने उसकी बात काट कर कहा, "क्या करो ? यह तुम्हें सोचने की जरूरत नहीं है। शाहिदा अजरा को गोद में लेकर मुझे दिखा कर कहती थी, 'यह तेरी दूसरी माँ है'।"

"शाहिदा अब नहीं है। मैं हूँ। मैं जानती हूँ [illegible] क्या करना चाहिए। तुम इजाजत दो तो मैं कल [illegible] अजरा [illegible] दिल्ली चली जाऊँगी और फिर वह [illegible] चली जाऊँगी। वहाँ हम लोगों [illegible]

नया ज़माना

भुवन के उपचार से जब अहमद कुछ सँभला, तब वह दोनों भी दबे कदम चल कर कमलिनी के सामने पड़ी हुई कुर्सियों पर बैठ गये।

उस समय अज़रा अपनी बात कह रही थी। वह दोनों बिना एक शब्द बोले अपने हाथों पर सिर रखकर आँखें बंद किये चुपचाप उसकी दुःख-भरी कहानी सुनते रहे।

जब कमलिनी की थपकियों से अज़रा फिर सो गयी। तब अहमद ने अपनी कुछ भरी आवाज से कहा, "सुन लिया कमर! क्या और कैसे हुआ है। मैं उन दोनों का पता लगवाकर, उन दोनों को जिन्दा ही दफना भी दूँ तो क्या कोई हल निकल सकता है। मेरी तो अक्ल ही काम नहीं कर रही है।"

कमलिनी ने कहा, "नियाज, मुसीबत इंसान ही पर पड़ती है और इंसान ही उसका मुकाबला कर उसे शिकस्त भी देता है। बेजान चीजों को तो मुसीबत का एहसास ही नहीं होता और जानवर मुसीबत पड़ने पर फ़ना हो जाता है। मुसीबत तो सिर्फ़ इन्सान के लिए बनी है क्योंकि वही उस पर फ़तह हासिल कर सकता है।"

अहमद ने कहा, "मगर क़मर यह तो एक ऐसी मुसीबत है जिसका कोई इलाज ही नहीं। इस लड़की को दुनिया में क्या-क्या भुगतना पड़ेगा। यह मुझसे ज़्यादा तुम समझ सकती हो। हर कूम इसके लिए काँटा बन जायगा। इसका कलेजा हमेशा चाक रहेगा। इसकी खुशी तो अब हमेशा-हमेशा के लिए काफ़ूर हो गयी है।" फिर कुछ चुप रहकर अहमद

कर उसे जरा सहारा हुआ।

धीरे-धीरे रुक कर अजरा ने बड़ी हिम्मत कर अपनी बात तो कह दी पर उसके बाद उसके रुके हुए आंसू फिर बेसाख्ता बहने लगे। वह "हाय, आंटी अब मैं क्या करूंगी" कह कर चुप हो गयी।

"तुम क्या करोगी अजरा ? तुम्हें कुछ नहीं करना होगा। जो कुछ करेंगे वह हम लोग करेंगे। अब तुम सारी फिक्र छोड़ कर सोने की कोशिश करो।" कमलिनी ने उसे ढाढस बँधाते हुए कहा। अधलेटी-सी होकर उसने अजरा को अपनी बाहों में ले लिया और थपकियाँ दे देकर उसे फिर सुलाने की कोशिश करने लगी।

नया ज़माना

भुवन के उपचार से जब अहमद कुछ सँभला, तब वह दोनों भी दबे कदम चल कर कमलिनी के सामने पड़ी हुई कुर्सियों पर बैठ गये।

उस समय अजरा अपनी बात कह रही थी। वह दोनों बिना एक शब्द बोले अपने हाथों पर सिर रखकर आँखें बंद किये चुपचाप उसकी दुःख-भरी कहानी सुनते रहे।

जब कमलिनी की थपकियों से अजरा फिर सो गयी। तब अहमद ने अपनी कुछ भरी आवाज से कहा, "सुन लिया कमर! क्या और कैसे हुआ है। मैं उन दोनों का पता लगवाकर, उन दोनों को जिन्दा ही दफना भी दूँ तो क्या कोई हल निकल सकता है। मेरी तो अक्ल ही काम नहीं कर रही है।"

कमलिनी ने कहा, "नियाज, मुसीबत इंसान ही पर पड़ती है और इंसान ही उसका मुकाबला कर उसे शिकस्त भी देता है। बेजान चीजों को तो मुसीबत का एहसास ही नहीं होता और जानवर मुसीबत पड़ने पर फ़ना हो जाता है। मुसीबत तो सिर्फ इन्सान के लिए बनी है क्योंकि वही उस पर फ़तह हासिल कर सकता है।"

अहमद ने कहा, "मगर कमर यह तो एक ऐसी मुसीबत है जिसका कोई इलाज ही नहीं। इस लड़की को दुनिया में क्या-क्या भुगतना पड़ेगा। यह मुझसे ज्यादा तुम समझ सकती हो। हर फूल इसके लिए काँटा बन जायगा। इसका कलेजा हमेशा चाक रहेगा। इसकी खुशी तो अब हमेशा-हमेशा के लिए काफ़ूर हो गयी है।" फिर कुछ चुप रहकर अहमद

ने सवाल किया, "कमर क्या मैं इस मुसीबत को दूर करने के लिए कुछ नहीं कर सकता ?"

"कर क्यों नहीं सकते,"— कमलिनी ने कहा, "सब-कुछ कर सकते हो। अब मैं तुमसे क्या कहूँ, मेरी जिंदगी भी एक ऐसे ही हादसे से शुरू हुई थी। मेरे ऊपर यह मुसीबत बरपा की थी मेरे एक चचाजान ने,"— कमलिनी अपने खयालो में डूब कर कहती चली गयी···

"आज इस बात को अब मेरे सिवा कोई नहीं जानता···क्योंकि जानने वाले इस दुनिया मे नहीं हैं···

"मेरा दिल फट कर रह गया था। मुझे तो हमल तक रह गया था। बहुत दिनों तक मैं किसी से कुछ कह भी न सकी। जब वह बात ज़ाहिर हुई तो अम्मीजान ने सिर पीट लिया। पर, अब्बा बुजुग ने हिम्मत से काम लिया। यह उन्ही की हिम्मत का नतीजा है कि जो मैं आज बाइज्जत अपनी मरजी की हँसी-खुशी की जिंदगी बसर कर रही हूँ। खुदा ने जो कुछ दिया, अच्छा या बुरा उसे ही उसका रहमो-करम समझकर जीती हूँ। अब मैं बाल बराबर भी इस बात की फ़िक्र नहीं करती कि मेरे बारे में, कौन क्या कहता है। जब यहाँ आ रही थी तो शाह साहब को बड़ा एतराज हुआ। बोले, "यह श्याम कानोडिया कौन है, जिसके साथ तुम जा रही हो और जिसके बंगले पर ठहरने का दावतनामा भी तुमने मंजूर कर लिया है।" पर मैंने उनकी एक न सुनी।

अहमद और भुवन दोनो कमलिनी की बात सुनकर चकित रह गये।

अहमद ने कहा, "मगर अब क्या हो सकता है, कमर, अब मैं क्या कर सकता हूँ···।"

कमलिनी ने उसकी बात काट कर कहा, "क्या करो ? यह तुम्हें सोचने की जरूरत नहीं है। शाहिदा अजरा को गोद में लेकर मुझे दिखा कर कहती थी, 'यह तेरी दूसरी माँ है'।"

"शाहिदा अब नहीं है। मैं हूँ। मैं जानती हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए। तुम इजाज़त दो तो मैं कल सवेरे ही अजरा को अपने साथ लेकर दिल्ली चली जाऊँगी और फिर वहाँ से इसे लेकर हवाई जहाज से मद्रास चली जाऊँगी। वहाँ हम लोगों को कोई नहीं जानता, और इत्तफ़ाक से

इन दिनों मेरी पुरानी सहेली लेडी डॉक्टर जोजेफ वहाँ एक अस्पताल की इन्चार्ज है। जब मद्रास में अजरा की तबीयत कुछ संभल जायेगी तब मैं लेडी डॉक्टर जोजेफ को दिखाकर हर तरह से इत्मीनान कर लूंगी और अगर इसे कुछ हुआ तो डॉक्टर जोजेफ से उसे साफ भी करवा दूंगी। मैं समझती हूँ कि अगर अजरा की सेहत ठीक रही तो यह सब काम ज्यादा-से-ज्यादा महीने भर में बखूबी पूरा हो जायेगा।"

'और उसके बाद, अहमद ने पूछा, उसकी आवाज से लगता था कि कमलिनी की बातों से उसे कुछ राहत मिली है।

कमलिनी ने जवाब दिया, "उसके बाद तुम्हारी मर्जी है, अगर तुम कहोगे तो मैं अजरा को वापस तुम्हारे पास पहुँचा दूंगी। और अगर मेरी बात मानोगे···,"

"तुम्हारी सब बात मानूंगा, कमर, तुम तो ऐसे मौके पर खुदा की नियामत बनकर आयी हो, वरना कितना अरसा हुआ तुमसे मिले हुए। अब तुम्हीं बताओ उसके बाद और क्या हो सकता है?"

कमलिनी ने कहा, "उसके बाद अगर तुम इजाजत दोगे तो मैं अजरा को लेकर अमरीका चली जाऊँगी। तब तक असगर का इम्तहान भी खत्म हो जायेगा। उसे मालूम है कि मैं अजरा से उसकी शादी करना चाहती हूँ। उसने कभी यह नहीं कहा है कि उसे यह बात मंजूर नहीं है। बल्कि जहाँ तक मैं समझती हूँ वह भी अजरा को पसंद करता है और उसे यह रिश्ता कुबूल ही होगा। मैं वहीं इनकी शादी करके, दोनों को पाकिस्तान भेज दूंगी। वहाँ अपने मिलने वालों के जरिये मैंने ऐसा इंतजाम कर रखा है कि असगर को कराँची में मेरी खरीदी हुई बहुत-सी जायदाद और बैंक में जमा रुपया मिल जायेगा और दोनों आराम से अपनी जिंदगी बसर कर सकेंगे। मैं जब से अजरा के पास बैठी हूँ तब से यही सोच रही हूँ, हाँ अगर तुम असग़र से इसकी शादी न करना चाहो तो फिर मैं अजरा को मद्रास के बाद कुछ दिन अपने पास बम्बई रख कर तुम्हारे पास वापस पहुँचा दूंगी।"

अहमद ने कहा, "नहीं, नहीं ऐसी कोई बात नहीं है, पर सोचता हूँ कि क्या यह, असगर के साथ ग़ैर-इंसाफ़ी नहीं होगी।" फिर उसने

भुवन की तरफ़ देखकर कहा, "क्यों भुवनेश्वर, तुम्हारा खयाल है।"

भुवन ने जवाब दिया, "अगर अमरीका में अजरा और असगर आपस मे मिलने के बाद एक-दूसरे को पसन्द करें तो यह ठीक होगा। रह गयी गैरइंसाफ़ी की बात, तो वह मामी साहबा ही ज्यादा ठीकसमझ सकती हैं।"

कमलिनी ने हँस कर कहा, "इस दुनिया में इंसाफ़ है कहाँ, जो हम इंसाफ और गैरइंसाफ की बात सोचें या करें। मुझे ही देखो, मैं कब बम्बई मे अपना घर-बार छोड़ कर एक बेगाने की तरह रहना चाहती थी। अपनी मजबूरियों की वजह से वहाँ बरसों इस-उसके सहारे ज़िंदगी बसर करनी पडी है और अब मैं अपने मन मे रंजोगम को बिना कोई जगह दिये जी रही हूँ। मैं तो कहती हूँ, नियाज तुम इसी समय अजरा और असगर के बारे मे मेरी बात मान लो, पर अब मैं कोई जोर नही देना चाहती, कि कही तुम इसे अपनी और अजरा की बदकिस्मती का फ़ायदा उठाना न समझो। हाँ यह मेरी दिली ख्वाहिश जरूर है।"

अहमद ने कहा, "मै तो तुम्हारी राय से इत्तफाक रखता हूँ पर अगर कभी असगर को यह बात मालूम होने के बाद बरदाश्त नहीं हुई तो वह कहेगा कि हम लोगों ने उसके खिलाफ़ साजिश कर उसकी ज़िंदगी को बरबाद कर दिया। अजरा को फिर एक और नयी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा।"

कमलिनी ने उत्तर दिया, "नियाज तुम अभी भी पर्दे वाले जमाने की बात कर रहे हो। असगर बचपन से अमरीका मे रह रहा है। वह जिस लड़की से शादी करेगा वह तलाकशुदा भी हो सकती है या उन लोगो का आपस में आगे चलकर तलाक भी हो सकता है। अजरा के साथ हुए जिस हादसे को तुम जो इतनी अहमियत दे रहे हो, वह सिर्फ़ मर्द की खुदगर्ज़ी है। असल मे यह बात ज़िन्दगी के मेल मे किसी औरत को अचानक चोट लगने से अलावा कुछ है नही। असल सवाल तो यह है कि अजरा एक नयी खुशगवार ज़िन्दगी जी सके।"

कुछ रुककर कमलिनी ने फिर कहा, "अगर हम इस चोट का दिलेरी से सामना नहीं करते तो अजरा को वह नयी ज़िन्दगी नही मिलेगी।

वह इसी एक हादसे से हमेशा के लिए जिन्दगी से अलग हो जाएगी। मैं तो समझती हूँ कि असग़र को किसी भी हालत में कभी कोई एतराज नहीं होगा। पर फिर भी अगर तुम चाहते हो तो मैं अमरीका पहुँचकर असग़र से इसका जिक्र कर कर दूंगी कि अजरा को इस हादसे के बाद जरा तबदीली की जरूरत थी। इसलिए मैं उसे अमरीका ले आयी हूँ, तुम भी जरा खयाल कर इसका मन बहलाने की कोशिश करो। शादी की कोई बात नहीं करूँगी, वह इन दोनों पर ही छोड दूंगी। मैं समझती हूँ कि इससे असग़र के मन मे हमदर्दी पैदा होगी और अजरा भी उसका सहारा पाकर कुछ राहत महसूस करेगी। दोनो कुछ पास आएँगे और इसकी वजह से दोनो में आपस मे मुहब्बत भी पैदा होगी। फिर वही होगा जो मैं चाहती हूँ और इस तरह तुम्हारा एतराज भी दूर हो जाएगा।'

अहमद ने कहा, "यह ठीक है। हम लोगों को कोशिश करके देख लेना चाहिए, वरना वहाँ कुछ सँभल जाने के बाद अजरा खुद अपनी जिन्दगी का कोई रास्ता चुन लेगी। इसमे तो कोई शक नहीं है कि अमरीका या योरुप में रहकर अजरा के मन पर इस बात का वह असर भी नहीं रहेगा जो इस वक़्त है या यहाँ हिन्दुस्तान मे रहने से होगा।"

"तो ठीक है मैं यही करूँगी और अब तुमसे सवेरे मिलूँगी,"—यह कहते हुए कमलिनी ने अजरा को धीरे से अपनी गोदी से अलग कर दिया और खडी हो गयी।

कमलिनी के खडे होते ही अजरा की नीद उचट गयी। उसने अपनी नींद भरी आँखें थोडी-सी खोली और नीद में ही कहा, "कहाँ जा रही हो आटी ? तुम लखनऊ क्यों नही लौट आती ?" और वह फिर करवट लेकर सो गयी।

कमलिनी ने झुककर उसे थपथपाते हुए कहा, "लौट तो आऊं बेटी, पर मुझे वहाँ तेरे सिवा अब बुलाने वाला कौन है और अब तो तू भी वहाँ न रहेगी।"

अहमद ने कमलिनी की बात काटकर कहा, "क़मर, अजरा नीद में भी ठीक बात कह रही है, तुम अब लखनऊ ही लौट आओ।"

कमलिनी ने कहा, "लौटना तो बहुत चाहती हूँ नियाज पर, लगता

है कि जिनकी वजह से लौटने को मन करता है वही मुझे नफरत की निगाह से देखते हैं।"

भुवन बड़ी देर से चुप था, कमलिनी की बात सुनकर उसने चौंककर कहा, "नफ़रत, तुमसे नफ़रत मामी ? तुमसे तो वही नफ़रत कर सकता है जो खुद नफरत के क़ाबिल हो।"

ग्रहमद ने कहा, 'कमर तुम क्या कह रही हो कि कोई बुलाता नहीं ! दूसरों की तो मैं नहीं जानता, श्रौर न पहले के उस वक़्त की बात करता हूँ जब मैंने भी तुम्हें समझने में ग़लती की थी। पर, इस वक़्त तो मेरे दिल की सबसे बड़ी श्रारज़ू यही है कि तुम लौट श्राश्रो। फिर नफ़रत करने वालों का हम दोनों मिलकर मुकाबला कर लेंगे।"

ग्रहमद की बात से कमलिनी का चेहरा खिल गया उसने कहा, "तुम श्रब यह कह रहे हो नियाज़ ! कभी पहले कहकर देखते ? तुमको नहीं मालूम कि जब शाहिदा के न रहने के बाद, मैंने नसीर से तलाक़ लिया था, श्रौर पहली बार बम्बई गयी थी उस वक़्त भी मैं तुमसे यही बात सुनना चाहती थी श्रौर इसीलिए लखनऊ लौटी भी थी। लेकिन श्रब बहुत दूर जा चुकी हूँ। शायद ही लौट सकूँ, लेकिन कहने को तो एक बार कोशिश जरूर करूँगी। कामयाबी खुदा के हाथ है।"

मैदान में उपद्रव

तारघर पहुँचकर भुवन ने जल्दी-जल्दी विजय पार्क में होने वाले उपद्रव की खबर लिखकर तारघर के प्रेस क्लर्क को अपने दिल्ली स्थिति अखबार 'नेशनल ऑबजर्वर' को भेजने के लिए दे दी। उसने लिखा था :—

"कनकपुर, सात दिसम्बर। आज एक दिन के अवकाश के बाद भारतीय और विदेशी टीमों के बीच खेला जाने वाला दूसरा टैस्ट मैच तीसरे दिन आरम्भ होने से पहले ही रद्द कर दिया गया। क्योंकि पचास हज़ार के क़रीब बेकाबू भीड़ ने विजय पार्क मे आग लगा दी। खेल आरम्भ होने से पहले, आज सवेरे टिकट खरीदने के लिए खेल-प्रेमी टिकट की खिडकियों पर इस कदर उमड़ पड़े कि दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गई तथा पचास व्यक्ति घायल हो गये, जिनमें दस की दशा गंभीर है।

"भारतीय क्रिकेट तथा भारतीय खेलों के इतिहास में आज एक अभूतपूर्व दिवस था—एक 'काला दिवस'—जब अनियंत्रित भीड़ ने खेल देखने के बजाय दंगा करना पसन्द किया और क्रिकेट के इस नवोदित केंद्र को भस्मीभूत करने का प्रयास किया।

"एक समय तो स्थिति नियन्त्रण के इतनी बाहर हो गयी थी कि कुछ समय के लिए तो सेना को बुलाने की जरूरत पड़ी, जिससे फ़ायरब्रिगेड जलते हुए विजय पार्क को बचा सके और भारतीय तथा विदेशी खिलाड़ी सही-सलामत निकल कर जा सकें।

"आज जब अवकाश के पहले दिन दिवसांत पर खेलने वाले भारतीय

बल्लेबाज विट्ठल और नरीमैन तथा भ्रमणार्थी खिलाड़ी क्रीड़ांगन में प्रवेश कर रहे थे तभी पुलिस द्वारा किये गए लाठी-चार्ज तथा अश्रुगैस के प्रयोग से उत्तेजित भीड़ मैदान मे उतर आयी और उसने जम कर पुलिस से संघर्ष किया तथा खिलाडियों के मंडप के पास की उच्च श्रेणियों के शामियानों मे आग लगा दी।

"पुलिस ने भीड़ पर कई बार लाठी चार्ज तथा अश्रुगैस का प्रयोग किया जिससे भगदड मच गयी। भागती हुई भीड़ ने पांच बसों, दो जीपों तथा स्टेडियम के बाहर खडी एक मोटर मे आग लगादी।

"आज सवेरे से वातावरण मे उत्तेजना थी। पुलिस के अनुसार गत रात से ही पन्द्रह हजार से अधिक खेल-प्रेमी टिकट खिड़कियों को छेंके खडे थे जबकि तीन-चार हजार टिकट ही बिकने थे। सुबह से ही तरह-तरह की अफवाहें फैल गयी थी—'आज बहुत कम टिकट बिकेंगे'—'अब कम दामों के कक्षों मे जगह नहीं है'—'प्रबन्धकों ने पहले ही से जगह से ज्यादा टिकट बेच दिये है'—'जबकि पहले ही से बिके हुए टिकट ब्लैक मे ड्योढ़े और दूने दामों में बिक रहे हैं।'

"टिकट की खिडकियों पर खडी भीड़ ने सवेरे से ही संघर्ष शुरू कर दिया था तथा कई लोग धक्कम-धक्का में गिरकर कुचला जाने के कारण बेहोश हो गये थे। जब उपद्रव बढ गया तो पुलिस ने विभिन्न टिकट-खिड़कियों पर खडी भीड़ो को तितर-बितर करने के लिए लाठी चार्ज किया। इस पर भीड ने पथराव शुरू कर दिया। उत्तर में पुलिस ने कई बार अश्रुगैस का प्रयोग किया और भीड़ छँटने लगी। लेकिन भागती हुई भीड़ को जगह-जगह यह अफवाह सुनने को मिली कि परसों खिलाड़ियों को दी गयी एक पार्टी में खिलाडियो ने ऑटोग्राफ मांगने वाली लडकियों के साथ दुर्व्यवहार किया था। इस अफवाह ने आग मे घी का काम किया। भागने वाली भीड़ लौट पडी। उसने विजय पार्क में घुसकर खिलाड़ियों पर आक्रमण करने का प्रयास किया और मंडप तथा उच्च श्रेणियों के फर्नीचर तथा शामियानों में आग लगा दी।

"अन्त में घंटे भर के उपद्रव के बाद दोनों टीमों की प्रबन्ध समितियों ने आपस में बात कर कानपुर में होने वाले दूसरे टैस्ट मैच के आगे के

दो दिनों के खेल को रद्द कर दिया क्योंकि प्रांगन मे उपद्रवियो और पुलिस के संघर्ष में पिच ही नष्ट हो गयी थी।"

अपने अखबार को सवेरे के उपद्रव की खबर भेजने के बाद जब उसका मन कुछ हल्का हुआ तो पहले दो दिनो की घटनायें उसकी आँखो के सामने फिर उस पुराने प्रश्न के साथ एक चल-चित्र की तरह नाच गयी, 'क्या यह क्रिकेट है ?'

बी० पी० सिनहा
(संवाददाता के हस्ताक्षर)

• • •